वन्दे वीरम्

आदर्श रामायण

रचयिता—

जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता पंडित मुनि श्री

चौथमलजी महाराज

प्रकाशक—

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति,

रतलाम

प्रथमावृत्ति २००० } मूल्य एक रुपया
सजिल्द डेढ़ रुपया { वी० २४६२
वि० १९९३

प्रकाशक-
मास्टर मिश्रीमल
ऑ० मंत्री
श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति
रतलाम

卐

मुद्रक-
श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस,
रतलाम.

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम.

के

जन्म दाता

श्रीमान् प्रसिद्ध वक्ता पंडित मुनि
श्री चौथमलजी महाराज

सदस्य गण

स्तम्भ

श्रीमान् दानवीर राय बहादुर सेठ कुंदनमलजी
लालचन्दजी सा० ब्यावर

,, सेठ नेमीचन्दजी सरदारमलजी सा० नागपुर

,, ,, सरूपचन्दजी भागचन्दजी सा० कलमसरा

,, ,, पुनमचन्दजी चुन्नीलालजी सा० न्यायडोंगरी

,, ,, बहादरमलजी सूरजमलजी सा० पाथर्डी

,, ,, हसतमलजी सौभागमलजी सा० आगरा

संरक्षक

,, ,, प्रेमराजजी लालचन्दजी सा० गुलेदगढ़

,, ,, लाला रतनलालजी सा० मित्तल आगरा

,, ,, उदेचन्दजी छोटमलजी सा० मूथा उज्जैन

,, ,, छोटेलालजी जेठमलजी सा० कनेरा (मेवाड़)

,, ,, मोतीलालजी सा० जैन वैद मांगरोल

,, ,, सूरजमलजी साहेब मयानीगंज

,, वकील रतनलालजी सा० सर्राफ उदयपुर

प्रकाशक—
मास्टर मिश्रीमल
ऑ० मंत्री
श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति,
रतलाम

卐

मुद्रक—
श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस,
रतलाम.

श्रीमान् सेठ छगनमलजी बस्तीमलजी	ब्यावर
,, ,, रतनचन्दजी हीराचन्दजी	बांद्रा बम्बई
श्री श्वे० स्थानकवासी जैन श्री संघ	सिहोर
,, ,, ,, ,,	बोलिया
,, ,, ,, ,,	झालरापाटन कम्प
श्री जैन महावीर मंडल,	गरोठ (होल्कर स्टेट)
श्रीमान् दोलाजी सोहनलालजी	भवानीगंज
,, हरकचंदजी मघमलजी	पचपहाड़
,, भैंवरलालजी जीतमलजी	सिरवोह
,, गुलाबचंदजी पुनमचंदजो	रायपुर
,, रोडमलजी बाबेल	ब्यावर
,, गुलाबचंदजी इन्द्रमलजी मारू	मल्हारगढ़
,, किसनलालजी हजारीमलजी	पिपलगाँव
,, उगमचंदजी दानमलजी	बोदवड़
,, राजमलजी नंदलालजी	धरणगाँव
,, पन्नालालजी हरकचंदजी	नसीराबाद
,, अमनालालजी रामलालजी सा० कीमती	हैद्राबाद
,, धनराजजी हीराचन्दजी सा०	बैंगलोर
,, हजारीमलजी मुलतानमलजी	बैंगलोर
,, हीरालालजी सा० बोका	यादगिरी
,, कन्हैयालालजी मोतीलालजी सा०	शोलापुर
,, गणेशलालजी चत्तर	सियनी मालवा
,, सुरजमलजी जैन वैद	माँगरोल
,, उम्मेदमलजी भैंवरलालजी वैद	माँगरोल
,, घासीलालजी श्रीनारायनजी सा०	पेतेड़
,, सेठ रामचन्द्रजी सा० पल्लीवाल जैन	गंगापुर सीटी
,, ,, रिखबदासजी बालचंदजी	बम्बई

श्रीमान् सेठ कालूरामजी सा० कोठारी	ब्यावर
,, ,, कुन्दनमलजी सरूपचन्दजी सा०	ब्यावर
,, ,, देवराजजी सा० सुराना	ब्यावर
,, ,, नाथूलालजी छगनलालजी सा० दूगड़	मल्हारगढ़
,, ,, ताराचन्दजी हाडजी पुनमिया	सादड़ी
श्री महावीर जैन नवयुवक मण्डल,	चित्तौड़गढ़
श्री श्वे० स्था० श्रीसंघ, बड़ी सादड़ी	(मेवाड़)
श्रीमती पिस्ताबाई, लोहामण्डी	आगरा
,, राजीबाई, बरोरा	सी० पी०
, अनारबाई, लोहामंडी	आगरा
, चन्द्रपतिबाई	सब्जी मंडी, देहली
श्रीमान् मोहनलालजी सा० वकील	उदयपुर
श्रीमान् सेठ मिश्रीलालजी नाथूलालजी सा० बाफणा	कोटा
,, ,, लखमीचन्दजी सतोकचन्दजी सा०	मु० भुसर
श्रीमान् सेठ चम्पालालजी सा० अलीजार	ब्यावर
,, ,, भेमाचन्दजी शंकरचन्दजी सा०	शिवपुरी

सहायक

श्रीमान् सेठ सागरमलजी गिरधारीलालजी	सिकंदराबाद

मेम्बर

श्रीमान् सेठ मन्नालालजी चाँदमलजी	ताल
सजनराजजी साहब	ब्यावर
,, चंदनमलजी मिश्रीमलजी गुलेछा	ब्यावर
मिश्रीमलजी बाफेल	ब्यावर
रिखबदासजी चपिसरा	ब्यावर
हरदेवमलजी सुगालालजी	ब्यावर
, , दौलतरामजी बागायत	भोपाल
,, दुगमलालजी सोजतिया	उदयपुर

दो शब्द

संसार में महापुरुष आते और चले जाते हैं। वे आते हैं, उनके साथ एक ज़माना आता है। वे जाते हैं, उनके साथ ज़माने का आख़िरी दरवाज़ा भी बन्द हो जाता है। पर उन महापुरुषों की आत्माएँ शरीरों के साथ छूटने पर भी पुस्तकों में जीवनियों में सदा वर्तमान् रहती हैं। इसलिए महापुरुष अमर होते हैं, उनकी जीवनियाँ अमर होती हैं।

उनकी जीवनियों में हम शक्ति शिक्षा प्रकाश-सभी कुछ पाते हैं। हमारे जीवन की अँधेरी रात में इन्हीं जीवनियों का प्रकाश जगमगाया करता है—जिससे हम अपना रास्ता आसानी से टटोल लेते हैं। आज संसार में महापुरुषों की जीवनियाँ न होतीं तो मनुष्य के लिये चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा होता। सिवाय अँधेरे के, इस विस्तृत संसार में उसका स्वागत करने वाला और कोई न होता। पर यह इन्हीं महापुरुषों की जीवनियों की महिमा है कि मनुष्य ज्ञान उपदेश और शिक्षा का सतत अभ्यासी बना हुआ है।

भगवान ऋषभ देव, नेमिनाथ रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र को गुज़रे हज़ारों वर्ष होगए, पर उनके जीवन-चरित्रों की बदौलत वे आज भी हमारे सम्मुख वर्तमान हैं। भगवान रामचन्द्र मुनि सुव्रतस्वामी के शासन काल में हुए थ। उनकी जीवनी आदि कवि वाल्मीकि ने श्लोकों में तुलसीदास ने दोहे-चौपाइयों में और जैनाचार्यों ने ढालों' में लिखी है। इन में शैली-भेद अवश्य है पर उद्देश्य सभी का एक ही है।

जैनाचार्यों ने जो जीवनी लिखी वह महत्वपूर्ण है, पर आधुनिक जैन-जनता उससे उतना लाभ नहीं उठा सकती जितना उसे उठाना चाहिए। वह युग के अनुसार कुछ ऐसी चीज़ चाहती है जो उसे बहुत पुरानी या क्लिष्ट न लगे। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज के सम्प्रदाय के पाटानुपाट पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज के पदाधिकारी पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज के संप्रदाय के कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराज के सुशिष्य) जगद्वल्लभ जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज ने भगवान रामचन्द्र की जीवनी चौपाइयों में तैयार की है। आगरा निवासी कविरत्न पं॰ मोहनलालजी ने संशोधनादि कार्य्य में सहायता पहुँचाई। इतने कम समय में हम इसका प्रकाशन कर रहे हैं। आशा है लोग इससे धार्मिक लाभ उठायेंगे।

—प्रकाशक

श्रीमान्	सेठ	खुशीलालजी माईचंदजी	बम्बई
,,	,,	रसिकलालजी हीरालालजी	बम्बई
,,	,,	खेमचंदजी ओघराजजी वेयद	औरंगाबाद
,,	,,	पनजी दोलतरामजी भण्डारी	अहमदनगर
,,	,,	पुखराजजी नहार	बम्बई

दो शब्द

संसार में महापुरुष आते और चले जाते हैं। वे आते हैं उनके साथ एक ज़माना आता है। वे जाते हैं। उनके साथ ज़माने का आखिरी दरवाजा भी बन्द हो जाता है। पर उन महापुरुषों की आत्माएँ शरीरों से साथ छूटने पर भी पुस्तकों में जीवनियों में सदा वर्तमान् रहती हैं। इसलिये महापुरुष अमर होते हैं। उनकी जीवनियें अमर होती हैं।

उनकी जीवनियों में हम शक्ति शिक्षा प्रकाश-सभी कुछ पाते हैं। हमारे जीवन की अँधेरी रात में इन्हीं जीवनियों का प्रकाश जगमगाया करता है—जिससे हम अपना रास्ता आसानी से टटोल लेते हैं। आज संसार में महापुरुषों का जीवनियाँ न होतीं तो मनुष्य के लिये चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा होता। सिवाय अँधेरे के, इस विस्तृत संसार में, उसका स्वागत करने वाला और कोई न होता। पर यह इन्हीं महापुरुषों की जीवनियों की महिमा है कि मनुष्य ज्ञान उपदेश और शिक्षा का सतत अभ्यासी बना हुआ है।

भगवान ऋषभ देव, नेमिनाथ रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र को गुज़रे हज़ारों वर्ष होगए; पर उनके जीवन-चरित्रों की बदौलत वे आज भी हमारे सम्मुख वर्तमान हैं। भगवान रामचन्द्र मुनि सुव्रतस्वामी के शासन काल में हुए थे। उनकी जीवनी आदि कवि वाल्मीकि ने श्लोकों में तुलसीदास ने दोहे-चौपाइयों में और जैनाचार्यों ने ढालों में लिखी है। इन में शैली-भेद अवश्य है पर उद्देश्य सभी का एक ही है।

जैनाचार्यों ने जो जीवनी लिखी वह महत्वपूर्ण है। पर आधुनिक जैन-जनता उससे उतना लाभ नहीं उठा सकती जितना उसे उठाना चाहिए। यह युग के अनुसार कुछ ऐसी चीज़ चाहती है जो उसे बहुत पुरानी या क्लिष्ट न लगे। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज के सम्प्रदाय के पाटानुपाट पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज के पदाधिकारी पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज के संप्रदाय के कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराज के सुशिष्य) जगद्वल्लभ जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज ने भगवान रामचन्द्र की जीवनी चौपाइयों में तैयार की है। आगरा निवासी कवि रत्न पं० मोहनलालजी ने संशोधनादि कार्य्य में सहायता पहुँचाई। इतने कम समय में हम इसका प्रकाशन कर रहे हैं। आशा है लोग इससे आत्मिक लाभ उठायेंगे।

—प्रकाशक

पाभोग्युर्ण भगवता मुनि सुन्दरस

आदर्श रामायण

पूर्वार्द्ध

मंगलाचरण

सोरठा

श्री मुनि सोव्रतनाथ * करम कटक को टालिये।
दीजे शुभ संग साथ * भव समुद्र से तट लगा ॥१॥
जनम मरण की लार * त्रास जान फांटो प्रभु।
करम कटक का भार * कीजे मम सिर से पृथक् ॥२॥

दोहा

शासन प्रकाशन प्रभू * भावण स्वामी समान।
दासन सिर आसन करो * देव धाम निधान ॥१॥
वाणी महारानी सुघर * विजय भगवती मात।
होय सदा तब दास की * विमल सौगुनी बात ॥२॥

सोरठा

वीणा पुस्तक धार * मात भगवती दर्श दे।
करो मेरा उद्धार * पूरण कृत करके सभी ॥३॥

कवित्त

चारों वेद अष्टादश पुराण और षट दर्शन,
द्वादशांग वानी शिवगामी गनेश को।

गणादश पद मद्य अग में न काहू को,
रक्ष रक्षपाल प्रजा पालन हमेश को ॥
अगम विकाश तिहूं लोक में प्रकाश आशु,
भावत सुभावदास श्रीमन् जिनेश को ।
ऐसो गणनायक सुखदायक शुभ लायक अति,
पायक मुनि 'चौथमल' गणपति गणेश का ॥ १ ॥

दोहा

सुर तरु महा सु राम की * देत सदा सुख धाम ।
मम हृदये आसीन हो * सुखरामन श्री राम ॥ ३ ॥
'र' में अनुपम 'म' में मगट * महावीर शुभ नाम ।
उभय अक्षरों को मिला * नित्य जपो श्री राम ॥ ४ ॥
सज्जन जन करके कृपा * मम कविता अपनाय ।
भूल चूक सब क्षमा कर * दीजै पार लगाय ॥ ५ ॥
वीर जिनन्द पधारिया * राजगृही के बहार ।
श्रेणिक नृप परिवार स * आय नमे चरणार ॥ ६ ॥
गणपति गौतम प्रभु से * अर्ज करें सिर नाय ।
राम कथा फरमाइये * मेहर करी गुरुराय ॥ ७ ॥
धार ज्ञान सयुक्त शुभ * अजिन जीन समाम ।
राम कथा कहने लगे * सुने भूप धर ध्यान ॥ ८ ॥

प्रारम्भ

दोहा

द्वितीय तीर्थंकर हुये * अजितनाथ सुखकार ।
जिनके शासन में रहा * होता जै जै कार ॥ १ ॥

सोरठा

जम्बू द्वीप मझार * भरत क्षेत्र अति सुहावना ।
तहां रहे नर नार * जप तप धर्मी संयमी ॥ ४ ॥

दोहा

घनवाहन हुये नृपत * थके प्रतापी भूप ।
मान लुपे लोचन लखत * मकरध्वज सम रूप ॥ १० ॥

चौपाई

घनवाहन सुन्दर सुख धामी * लंका राज करत निश कामी ।
महा राक्षस सुत तस प्रतापी * तासु राज तिलक दियो थापी ॥
घनवाहन तप हित वन जाई * मुक्त गये कीनी चतुराई ।
महा राक्षस कर न्याय समारा * प्रजा वत्सल्य भूपत भारा ॥
सुर राक्षस हुओ सुत आके * दियो राज तप कियो अघा के ।
आपन हूप महाव्रत धारे * अथिर जगत् स किये किनारे ॥
मुगत गये गति पचम पाई * कारज सिद्ध किया मन साई ।
सुर राक्षस नीति अनुसारा * करे काज मन हर्ष अपारा ॥

दोहा

असख्यात भूपत हुये * थके थके बलवान् ।
तप संयम मन आदरो * कीनो मोक्ष पयान ॥ ११ ॥

चौपाई

शीतलनाथ हुये उपकारी * दशम तिर्थंकर सुखकारी ।
तिन शासन वर्त्तो सुख साजा * कारत धवल नरेंद्र विराजा ॥
राय आडम्बर है अति भारी * लकपुरी के नृप अधिकारी ।
यहाँ काल समय अति नीका * पर्यत रजत सुगर शुभ टीका ॥
नगर सुमिघनापुर अधिशेषा * जहँ राज करे भूप खगेशा ।
तासु नारि श्रीमती अति प्यारी * श्री कंठ सुत अति हितकारी ॥
विद्याधर भूपत अति भारी * गुणवन्तो तस सुता विचारी ।
नारी कुल मय चातुर नीकी * कुमति कुविद्या को नहीं सीकी ॥

गणाधीश पद भक्त जग में न काहू को,
रक्त रक्षपाल प्रण पालन हमेश को ॥
भगन विकाश तिहूं लोक में प्रकाश जासु,
भाषत सुभापदास श्रीमन् जिनेश को ।
ऐसो गणनायक सुखदायक शुभ लायक अति,
पायक मुनि 'चौथमल' गणपति गणेश का ॥ २ ॥

दोहा

सुर तरु मङ्गल सु राम की * देत सदा सुख धाम ।
मम हृदये भासीन हो * सुखरानन श्री राम ॥ ३ ॥
'र' में ऋषभ 'म' में प्रगट * महावीर शुभ नाम ।
उभय अक्षरों को मिला * नित्य जपो श्री राम ॥ ४ ॥
सज्जन जन करके कृपा * मम कविता अपनाय ।
भूल चूक सब क्षमा कर * दीजै पार लगाय ॥ ५ ॥
वीर जिनन्द पधारिया * राजगृही के बहार ।
श्रेणिक नृप परिवार स * आय नमे धरप्यार ॥ ६ ॥
गणपति गौतम प्रभु से * अर्ज करें सिर नाय ।
राम कथा फरमाइये * महर करी गुरुराय ॥ ७ ॥
धार ज्ञान सयुत शुभ * अजित जीन समान ।
राम कथा कहने लग * सुने नृप धर ध्यान ॥ ८ ॥

प्रारम्भ

दोहा

द्वितीय तीर्थंकर हुये * अजितनाथ सुखकार ।
जिनके शासन में रहा * होना अ जै कार ॥ ९ ॥

सोरठा

जम्बू द्वीप मझार * भरत क्षेत्र अति सुहावना ।
तहां रहे नर नार * जप तप धर्मी संयमी ॥ १० ॥

दोहा

घनवाहन हूये नृपत ॥ बड़े प्रतापी भूप ।
मान छुपे लोचन लखत ॥ मकरध्वज सम रूप ॥ १० ॥

चौपाई

घनवाहन सुन्दर सुख धामी ॥ लंका राज करत निश कामी ।
महा राक्षस सुत तस प्रतापी ॥ तासु राज तिलक दियो थापी ॥
घनवाहन तप हित मन जाई ॥ मुक्त गये कीनी चतुराई ।
महा राक्षस कर न्याय समारा ॥ प्रजा वत्सल्य भूपत भारा ॥
सुर राक्षस हुओ सुत जाके ॥ दियो राज तप किया अघा के ।
आपन हर्ष महामत धारे ॥ अथिर जगत् स किये किनारे ॥
मुगत गये गति पंचम पाई ॥ कारज सिद्ध किया मन लाई ।
सुर राक्षस नीति अनुसारा ॥ करे काज मन हर्ष अपारा ॥

दोहा

असंख्यात भूपत हुये ॥ बड़े बड़े बलवान् ।
तप संयम मन भावरो ॥ कीनो मोक्ष पयान ॥ ११ ॥

चौपाई

शीतलनाथ हुये उपकारा ॥ दशम तिर्थंकर सुखकारी ।
तिन शासन वर्तों सुख साजा ॥ कीरत धवल नरेंद्र विराजा ॥
वाय आडम्बर है अति भारी ॥ लंकपुरी के नृप अधिकारी ।
यही काल समय अति नीका ॥ पर्वत रजत सुगर शुभ टीका ॥
नगर सुमिधमापुर अभिशेषा ॥ जहँ राज करे भूप खगेशा ।
तासु नारि धर्मती अति प्यारी ॥ श्री कंठ सुत अति हितकारी ॥
विद्याधर भूपत अति भारी ॥ गुणवन्ती तस सुता विचारी ।
नारी कुल मय चातुर नीको ॥ कुमति कुरिया को नहीं साँको ॥

दोहा

अति सुन्दर शुभ रतनपुर ☆ पुष्पोतरन नरेन्द्र ।
पद्मोतर नृप के तनय ☆ शीतल यों शुभ चन्द्र ॥ १२ ॥

चौपाई

तासु हितार्थ राय मन सोचा ☆ पत्र लिखा नहिं करी सकोचा।
कन्या मम सुत को परिनायो ☆ हृदय परस्पर प्रेम बढ़ायो ॥
यह पढ़ मम नृपत झुंझलायो ☆ उत्तर कटुक तासु लिखवायो।
लंकपुरी देखी निज आई ☆ लंकापति कन्या परनाई ॥
खेचर पति मन में झुंझलायो ☆ दल बल साज रतनपुर आयो।
कीरत धवल नरेन्द्र जुझारो ☆ पाय सूचना आय मझारो ॥
सखी दोउ नृप में करवाई ☆ पद्मोतर रामो मित्र भ्याई।
लंकापति के अनन्द अपारा ☆ मंगल रंग होय नृप द्वारा ॥

राजगीत छन्द

आनन्द मंगल अति किये, श्री कीर्ति धवल नरेन्द्र ने ।
दयी व देवी सदा सुखदा सची संग सुरेन्द्र ने ॥
त्रिकूट में रक्खा नृपति, पति राक्षस के हेत है ।
तुम हो अभय यहां पर रहो, निश दिवस शिक्षा देत है ॥ १ ॥

दोहा

पुष्पोत्तर की कन्य का ☆ पदम कुमारी नाम ।
रतनपुरी थी कंठ पति ☆ ले गयो हर निज धाम ॥ १३ ॥

चौपाई

प्रात धवल भूप उठ धायो ☆ दसयक्ष सकल कटक सजवायो।
भूमि हिल रथिरथ धुप आई ☆ सागर नीर उछल तट धाई ॥
हय गय रथ पायक भट नामा ☆ शूर वीर कर धनु सन्धाना।
मारग तय कर घुरे दयावे ☆ पद्म नृपत के तट पहुँचावे ॥

ी फठ वोली निज सेना ॥ मारो मरो कहे यह वैना ।
कापति देखा दल आता ॥ किया यत्न जो दल मन भाता।
टे मुन्ड भुसएड गिराए ॥ बड़े बड़े भट गय पलाई ।
जय आन कीरत ध्वज राजा ॥ लगे निरखने सकल समाजा ॥

दोहा

कीर्ति धवल की विजय सुन ॥ हुआ लंक में चैन ।
आये शरण श्री कंठ भी ॥ मान भूप के वैन ॥ १४ ॥

चौपाई

रण लंक पति की नृप आये ॥ कीरत धवल बहुत समझाये ।
ास करो भूपति यहि ठामा ॥ कहा अन्य देखोगे ग्रामा ॥
ानर द्वीप बहुत सुखकारी ॥ रहें आपके सब आभारी ।
चन मान कपि द्वीप सिधारे ॥ आय किष्किन्धा आसन डारे ॥
ाग महल भवन आत सुन्दर ॥ रचना लखत सिहात पुरन्दर।
ापी कूप तड़ाग उछंगा ॥ निर्मल नीर बहे जिम गंगा ॥
ाम अति आचार सुहाया ॥ धर्म कर्म सब के मन भाया ।
ास सुमति सत संग निहारें ॥ कुमति कुभाव चित्त नहीं धारें ॥

दोहा

सुगुरु सेव अरिहन्त का ॥ करें सदा चित धार ।
ध्यान सिद्ध भगवान का ॥ होय सदा जयकार ॥ १५ ॥

चौपाई

ामर राय मिले हर्षाई ॥ प्रेम परस्पर लीन बढ़ाई ।
ेभ विलेखी भूप अति मारे ॥ वानर भेष छत्र सिर धारे ॥
े बड़े नृप तह से हारे ॥ वानर द्वीप नाम विस्तारे ।
प जप संयम करें अपारा ॥ धर्म कर्म स हित है भारा ॥
ी कंठ नृप रहें सुखारे ॥ वज्र सुकंठ तनय तसु प्यारे ।

नृप विचार मन में यस कीना ० राजभार नन्दन को दीना ॥
अधिक विद्वता से समझाया ० पुत्र सु गादी पर बैठाया ।
यज्ञ सुकठ भूप अति भारे ० राज कर आनन्द सुधारे ॥

दोहा

भरत द्वीप निहारने ० श्रीकंठ नृप राय ।
गमन कियो मन समझ के ० अति ही हृष बढाय ॥ १६ ॥

चौपाई

गिरि ते गिरी न मन घबरायो ० साधु तपी को दर्शन पायो ।
सयम ले तप कियो अभार्ड ० भूप पचमी गति शुभ पाई ॥
यज्ञ सुकठ अनेकों राजा ० हुये लकपति नीति समाजा ।
समय बीस में जिनको आयो ० घनो घघोघर नृप अति भायो ॥
राक्षस घानर प्रेम बढ़ायो ० बैठ परस्पर मन हुलसायो ।
एक दिवस लकापति राजा ० चले मन सुविनोद के काजा ॥
मधुन बन में जाय मझारे ० प्रिय सग करे आनन्द भारे ।
रागिन के सग रमे सुखारी ० कपि कुच खेंच दियो दुख भारी

दोहा

नृपत निरख यह कृत को ० कीनो क्रोध अपार ।
सर सधानो रोष वश ० दीनो कपि को मार ॥ १७ ॥

चौपाई

परम पवित्र साधु एक आये ० कपि को देख दया दिल लाये ।
परम मन्त्र नवकार सुनाया ० श्रद्धा कर कपि सुरपुर धाया ॥
उदधि कुमार हुआ कपि जाके ० लखे ग्राम निज ठाम लगा के ।
लकापति को लख रिपि पायो ० यानर सुर तज लोक सिधायो ॥
ऋषि की मद पर अति धाई ० बोले मुनि मे प्रेम बढाई ।
इनी प्रजा लकापति करी ० तब नृप मन आपनी करी ॥

वानर देव मन लाय आती ॥ कपि सग माया मैन सुहाती ।
क्रोधित कपितरु शिला उपारी ॥ हने आन कर राक्षस मारी ॥

दोहा

विकट मार लख भूप ने ॥ कपि को लिया मनाय ।
मित्र बने दोनों सुजन ॥ साधु समीपे आय ॥ १८ ॥

चौपाई

वानी सुनी छप मन पाया ॥ साधु युगल मिथन समझाया ।
पूर्व-कथा ऋषिराज सुनाई ॥ छाया मनो नैन दिखलाई ॥
मुनिवर पासे दीक्षा धारी ॥ साधु हुए तप कीनो भारी ।
घनोदधी नृप अति तप कीनो ॥ राज सुकौशिल सुत को दीनो ॥
निमल सयम भूपत पाला ॥ हुआ सुज्ञान आत्म उजियाला ।
केशराज ऋषि की प्रति पाई ॥ तद आशय पर कविता ठाई ॥
भूपत पाप छार कर सारे ॥ पचम गति शुचि मोक्ष पधारे ।
सब्भि कुमार गये निज ठामा ॥ करें सुकौशिल लख आरामा ॥

राजगीत छन्द

रजित गिरि वैताढ्य सुन्दर, रतनपुर शुभ राज की ।
अशमवेग सु सूर भूपत, न्याय युत अति साज की ॥
तस पुत्र युग शोभित महा, विजयी विजयसिंह आनिये ।
मुख तेज विद्युति वेग के दिनकर समान सु मानिये ॥ २ ॥

चौपाई

आदितपुर महि पर्वत ठामा ॥ नृप माली तहि भूप सु नामा ।
पुत्री एक सुगर अति ताकी ॥ सुन्दर रूप अनूप प्रमा की ॥
श्रीमाला शुभ नाम पियारा ॥ तासु स्वयवर करन विचारा ।
मडप मन्डित कर नृपाला ॥ नाना भांति कुसुम की माला ॥
रचना रची सुगर अधिकाई ॥ लख सुन्दरता मन हा लजाई ।

नृप विचार मन में अस कीना ॥ राजभार नन्दन को दीना ॥
अधिक विद्वता से समझाया ॥ पुत्र सु गादी पर बैठाया ।
वज्र सुकंठ भूप अति भारे ॥ राज करें आनन्द सुधारे ॥

दोहा

अष्टम द्वीप निहारने ॥ श्रीकंठ नृप राय ।
गमन कियो मन समझ के ॥ अति ही हर्ष बढ़ाय ॥ १६ ॥

चौपाई

गिरि ते गिरो न मन घबरायो ॥ साधु तपी को दर्शन पायो ।
संयम ले तप कियो अघाई ॥ भूप पंचमी गति शुभ पाई ॥
वज्र सुकंठ अनेकों राजा ॥ हुये लंकपति नीति समाजा ।
समय बीस में जिनको आयो ॥ घनो दधीधर नृप अति भायो॥
राक्षस वानर प्रेम बढ़ायो ॥ बैठ परस्पर मन हुलसायो ।
एक दिवस लंकापति राजा ॥ चाले मन सुविनोद के काजा ॥
नंदन बन में जाय अमारे ॥ त्रिय संग करें आनन्द भारे ।
रमणिन के संग रमें सुखारी ॥ कपि कुच खैंच दियो दुख भारी

दोहा

नृपत निरख यह छल को ॥ कीनो क्रोध अपार ।
सर संभानो रोष धर ॥ दीनो कपि को मार ॥ १७ ॥

चौपाई

परम पवित्र साधु पर आये ॥ कपि को देख दया दिल लाये ।
परम मंत्र नवकार सुनाया ॥ श्रद्धा धर कपि सुरपुर भाया॥
उदधि कुमार हुआ कपि जाके ॥ लखे ध्यान निज ठाम लगा के ।
लंकापति को लख रिपि पायो ॥ वानर सुर तज लोक सिधायो॥
ऋषि की सेव करे अति भारे ॥ बोले मुनि से प्रेम बढ़ाई ।
हमी प्रजा लंकापति करी ॥ तब नृप मैन आपनी फेरी ॥

वानर देव सैन लख ग्राती ❀ कपि सग माया सैन सुहाती।
मोधित कपितरु शिला उखारी ❀ हने ग्रान कर राक्षस भारी ॥

दोहा

चिफट मार लख भूप ने ❀ कपि को लिया मनाय ।
मित्र बने दोनों सुजन ❀ साधु समपे ग्राय ॥ १८ ॥

चौपाई

वानी सुनी भूप मन पाया ❀ साधु युगल मित्रन समझाया।
पूर्व-कथा मुनिराज सुनाई ❀ छाया मनो नैन दिखलाई ॥
मुनिवर पासे दीक्षा धारी ❀ साधु हुए तप कीनो भारी।
घनोदधी नृप अति तप कीनो ❀ राज सुकौशिल सुत को दीनो॥
निमल सयम भूपत पाला ❀ हुआ सुज्ञान ग्रातम उजियाला।
केशराज ऋषि की प्रति पाई ❀ तह ग्राशय पर कविता ठाई ॥
भूपत पाप छार कर सारे ❀ पचम गति शुचि मोक्ष पधारे।
उदधि कुमार गये निज ठामा ❀ करें सुकौशिल लक्ष ग्ररामा ॥

राजगीत छन्द

रजित गिरि वैताढ सुन्दर रतनपुर शुभ राज ही ।
ग्रसनवेग सु भूर भूपत, न्याय युत ग्रति साज ही ॥
तस पुत्र युग शोभित महा, विजयी विजयसिंह जानिये ।
मुख तेज चिचलि वेग के, दिनकर समान सु मानिये ॥ २ ॥

चौपाई

ग्रादितपुर नहि पर्वत ठामा ❀ नृप माली तहि भूप सु नामा।
पुत्री एक सुगर ग्रति ताकी ❀ सुन्दर रूप ग्रनूप प्रभा की॥
श्रीमाला शुभ नाम पियारा ❀ तासु स्वयवर करन विचारा।
मडप मडित कर नृपाला ❀ नाना भाति कुसुम की माला ॥
रचना रची सुगर ग्रधिकाई ❀ लख सुन्दरता मन हो लजाई।

देश नगर नय रीति बसाये * पुर पाटन जो मन में भाये।
सहस्रार को नृप पद दीनो * आपन हर्ष सुसयम लीनो॥
सुमति शुद्धि ग्रसका प्रतिपालक * घना कर्म रिपु का नृप घालक।
आतम काज सार नृप राया * शुद्ध गति को सहज सिधाय॥

दोहा

राय सुकेशी भूप की * इन्द्राणी घर नार ।
सुसत्र शिरोमणि सुशीला * अति हा सुन्दरकार ॥ २२ ॥

चौपाई

तान पुत्र सुन्दर बलवाना * मालि सुमालि सुगुरु सुजाना।
माल्यवान तीजा सुत प्यारा * देस तिनै नृप रहे सुखारा॥
किष्किन्धा पत्नीवर घर्नासा * धाम आमाला सुख मनीला।
युगल पुत्र तस के सुखमाला * युग पुत्रन की मात विशाला॥
आदित्यरज रुक्षरज युग नामा * मित्रनुकूल करें सब काम।
मधु पर्वत नृपराय विराजें * सुन्दर रूप अनोपम साजें॥
राय सुकेशी सुत चढ़ आयो * मालि भूप को मार भगायो।
सहस्रार नृप की अर्द्धांगी * पतिव्रत धर्म पूर चित सगी॥

दोहा

सुन्दर रुप अनूप स्वच्छ * पतिव्रता गुणवान ।
जायो नन्दन इन्द्र सम * इन्द्रनाम सुखमान ॥ २३ ॥

चौपाई

माल्यराज यस मन मे भायो * लका पे पुनि रपि चढ आयो।
फर अधिकार लक पे हूवा * आनद की मन वर्षा थया॥
वैश्रवण नृप मन हुवा के * दीनो लकपुरी तस आके।
रहे सुमाली लक वियाला * तस घरनी अति ही गुणमाला॥
रत्नश्रवा सुत तासे जायो * सुन्दर रुप स्वरुप सुहाये।

कानन कुसुम एक अति भारी ❀ वृक्ष लता शुभ सुन्दरकारी ॥
रत्नश्रवा के मन में भायो ❀ विद्या साधन विपिन सिधायो।
अडिग ध्यान मन बीच लगायो ❀ साधन कर अति मन सुख पायो॥

दोहा

मम हरनी खेचर सुता ❀ आइ विपिन मझार ।
रत्नश्रवा के मन बसा ❀ लखत सुन्दरी नार ॥ २४ ॥

चौपाई

शोभित विपम सु सुंदर नारी ❀ विद्या साधन चित्त विचारी।
रत्नश्रवा तन दृष्टि पसारी ❀ देखी पास पद्मनी नारी ॥
कहि कारण सुंदर तू आई ❀ मम की व्यथा देऊ समझाई।
कौन पिता किन माता जाई ❀ सत्य सत्य सब देऊ बताई ॥
हो प्रसन्न सुन्दर कहि बानी ❀ बोली बैन प्रेम रस सानी ।
व्योम बिन्द मम पिता कहाये ❀ पुर घर नभ तासु मम भाये ॥
मात केकशा है सुन धाता ❀ रूप कला गुण जग विख्याता।
पै भ्रमण सुत है तस बंका ❀ राज करे हो निर्भय लंका ॥

दोहा

गणितयों ने अस कहा ❀ सुनो लगाकर कान ।
रत्नश्रवा तुम को मिले ❀ घर दीनो धर ध्यान ॥ २५ ॥

चौपाई

भूप सुता पुन मन्दिर धाइ ❀ माता के सनमुख जब आइ ।
सत्य सत्य सब दिया सुनाई ❀ सुन कर के जननी हर्षाई ॥
रानी भूपत को बुलवायो ❀ ब्यौरा सविस्तार सुनायो ।
सुन कर वचन हर मन दीनो ❀ पाणिग्रहण सुता को कीनो ॥
पुर कुसुमान्तर नभ बसायो ❀ देख देख कर मन हर्षायो।
धम सुखम सुमन माने है ❀ जमम एनारथ निज आमे है ॥

सैया सैन करे नृप रानी * अर्द्ध निशा बीतत जय जानी।
तृतीय पहर हुआ प्रारम्भा * स्वप्न एक देखा नृप रम्भा॥

दोहा

वन पति देखो स्वप्न में * गज को रहो विहार ।
कुम्भस्थल को भेदता * रानी लियो निहार ॥ २६ ॥

चौपाई

स्वप्न विलोक भूप ढिग धाई, * विवरण सफल सुनायो आई ।
श्रवण करी नृप मन हर्षाये * प्रिय को मीठे वचन सुनाये॥
प्रसन्न चित्त रानी पुनः आई * महलों में आकर हर्षाई ।
गर्भवती शुभ सुन्दर रानी * भाषे वाणी अति असुहानी ॥
मोहे अग कटुक वच भाषे * मान अतुल अपने मन राखे ।
देखे मुख मन हर्ष कृपाना * दर्पण मयक करन मन ठाना ॥
अरि सिर पांव देऊ मन भावें * ऐसा गर्भ प्रभाव जमावें ।
प्रति पक्षी घर त्रास पड़ता * प्रगट होय लक्ष्मण जयवंता ॥

दोहा

शुभ महूरत शुभ समय * शुभ लग्न धर ध्यान ।
सुत आयो नृप की प्रिया * आगे करू बयान ॥ २७ ॥

चौपाई

चौदह वर्ष सहस्र अधिकाई * पूरण प्रमाण आयुप पाई ।
लालन पालन में दिन जाता * क्रीड़ा बाल करें मन माता ॥
मात पिता को अति सुख दाता * भूपत देख देख हर्षाता ।
दिन दिन तेज बढ़े आनन पे * शस्त्र उठा धरे निज पानन पे ॥
हार सुवन माणिक का पायो * हर्ष सहित निज हाथ उठायो ।
लीना पहन कंठ हर्षाई * माना मोद हृदय अधिकाई ॥

कानन कुसुम एक अति भारी ० वृक्ष लता शुभ सुन्दरकारी ॥
रत्नप्रभा के मन में भायो * विद्या साधन विपिन सिधायो।
अडिग ध्यान मन बीच लगायो * साधन कर अति मन सुख पायो॥

दोहा

मन हरनी खेचर सुता * आइ विपिन मझार ।
रत्नप्रभा के मन बसी * लगत सुन्दरी नार ॥ २४ ॥

चौपाई

शोभित विपन सु सुन्दर नारी * विद्या साधन चित्त विचारी।
रत्नप्रभा तन दृष्टि पसारी * देखी पास पदमनी नारी ॥
कहि कारण सुन्दर तू आई * मन की व्यथा देऊ समझाई।
कौन पिता किन माता जाई * सत्य सत्य सब देऊ बताई॥
हो प्रसन्न सुन्दर कहि बानी * बोली बैन प्रेम रस सानी ।
व्योम बिन्दु मम पिता कहाये * पुर घर नभ वासु मन भाये ॥
मात केकशा है सुन भ्राता * रूप कला गुण जग विख्याता।
वे श्रवण सुत है तस बंका * राज करे हो निर्भय लंका ॥

दोहा

गणितज्ञों ने अस कहा * सुनो लगाकर कान ।
रत्नप्रभा तुम को मिले * वर दीनो वर दान ॥ २५ ॥

चौपाई

भूप सुता पुन मन्दिर धाई * माता के सनमुख जय आई ।
सत्य सत्य सब दिया सुनाई * सुन कर के जननी हर्षाई ॥
रानी भूपत को बुलवायो * ब्यौरा सविस्तार सुनायो ।
सुन कर वचन हर्ष मन दीनो * पाणिग्रहण सुता को कीनो ॥
पुर कुसुमान्तर नभ बसायो * देख देख कर मन हर्षायो ।
धर्म सुकुम सुमन माने है * जनम सुकारथ निज जाने है ॥

सैया सैन करे नृप रानी ॥ अर्द्ध निशा बीतत जय जानी।
तृतीय पहर हुआ प्रारम्भा ॥ स्वप्न एक देखा नृप रंभा ॥

दोहा

धन पति देखो स्वप्न में ॥ गज को रहो विचार ।
कुंभस्थल को भेदता ॥ रानी लियो निहार ॥ २६ ॥

चौपाई

स्वप्न विलोक भूप ढिग धाई, ॥ विवरण सकल सुनायो आई ।
श्रवण करी नृप मन हर्षाये ॥ प्रिय को मीठे वचन सुनाये ॥
प्रसन्न चित्त रानी पुनः आई ॥ महलों में आकर हर्षाई ।
गर्भवती शुभ सुन्दर रानी ॥ भाषे वाणी अति असुहानी ॥
मोड़े अग कटुक वच भाषे ॥ मान अतुल अपने मन राखे ।
देखे मुख मन हर्ष छुपाना ॥ दर्पण प्रथक करन मन ठाना ॥
अरि सिर पांव देऊ मन भावे ॥ ऐसा गर्भ प्रभाव जमावें ।
प्रति पक्षी घर त्रास पड़ता ॥ प्रगट होय लक्ष्मण जयवंता ॥

दोहा

शुभ महूरत शुभ समय ॥ शुभ लग्न धर ध्यान ।
सुत जायो नृप की प्रिया ॥ आगे करू बयान ॥ २७ ॥

चौपाई

चौदह धप सहस्र अधिकाई ॥ पूरण प्रमाण आयुष पाई ।
लालन पालन में दिन जाता ॥ क्रीड़ा बाल करें मन भाता ॥
मात पिता को अति सुख दाता ॥ भूपत देख देख हर्षाता ।
दिन दिन तेज बढ़े आनन पे ॥ शस्त्र उठा धरे निज पानन पे ॥
हार सुयन माणिक का पायो ॥ हर्ष सहित निज हाथ उठायो ।
लीना पहन कंठ हर्षाई ॥ माना मोद हृदय अधिकाई ॥

कानन कुसुम पत्र अति भारी ॥ वृक्ष लता शुभ सुन्दरकारी ॥
रत्नश्रया के मन में भाया ॥ विद्या साधन विपिन सिधायो।
अडिग ध्यान मन बीच लगायो ॥ साधन कर अति मन सुख पायो॥

दोहा

मन हरनी खचर सुता ॥ आइ विपिन मझार ।
रत्नश्रया के मन बसी ॥ लखत सुन्दरी नार ॥ २४ ॥

चौपाई

शोभित विपन सु सुंदर नारी ॥ विद्या साधन चित्त विचारी।
रत्नश्रया तन दृष्टि पसारी ॥ देखी पास पदमनी नारी ॥
कहि कारण सुंदर तू आई ॥ मन की व्यथा देऊ समझाई।
कौन पिता किन माता जाई ॥ सत्य सत्य सब देऊ बताई ॥
हो प्रसन्न सुन्दर कहि बानी ॥ बोली बैन प्रेम रस सानी ।
व्योम बिन्द मम पिता कहाये ॥ पुर घर नाम तासु मन भावे ॥
मात केकशा है शुभ गाता ॥ रूप कला गुण जग विख्याता।
है श्रवण सुत है तस बंका ॥ राज करे हो निर्भय लंका॥

दोहा

गणितज्ञों ने प्रश्न कहा ॥ सुनो लगाकर कान ।
रत्नश्रया तुम को मिले ॥ वर दीनो वर दान ॥ २५ ॥

चौपाई

नृप सुता पुन मन्दिर धाई ॥ माता के सनमुख जाय आई।
सत्य सत्य सब दियो सुनाई ॥ सुन कर के जननी हर्षाई ॥
रानी भूपत को बुलवायो ॥ ब्यौरा सविस्तार सुनायो।
सुन कर वचन हर्ष मन कीनो ॥ पाणिग्रहण सुता को कीनो ॥
पुर कुसुमान्तर नाम बसायो ॥ देख देख कर मन हर्षायो।
धर्म सुकर्म सुमन माने है ॥ जनम सुवारथ निज जाने है ॥

भान समान तेज सुत जायो * भानकरण तस नाम धरायो ॥

दोहा

पूर्व पुण्य से पुत्र ने * पाये शुभ द्वो नाम ।
कुम्भकरण के नाम से * विकसित हुओ ललाम ॥३०॥

चौपाई

तीजे प्रगट हुई एक कन्या * रूप स्वरूप सुगढ़ सम्पन्ना ।
सूपनखा दियो नाम सुता का * प्रेम अधिक प्रगटा माता का ॥
चौथे स्वप्न चन्द्र अवलोका * सुखकारी सुत मात विलोका ।
नाम विभिषण दे शुभकारा * मन आनन्द बढ़ा अति भारी ॥
चन्द्र समान चन्द्र मुख प्यारा * मात पिता जीवन आधारा ।
नीतिवान पुण्यवान अपारी * विश्व विषे सबको सुखकारी ॥
प्रेम रखे तीनों मन भ्राता * बलि पौरुष हुआ जग विख्याता
मात पिता लख कर सुख माने * विनयगुण तीनों सुतको आने ॥

दोहा

एक दिवस माता निकट * रावण मन हर्षाय ।
पूछे युग कर जोड़ के * जननी मुझे बताय ॥३१॥

चौपाई

वायुयान कौन का साजा * बैठा जाय कौन यह राजा ।
उत्तर दियो पुत्र को माता * वायुयान में जो नृप जाता ॥
मम भगनी सुत है यह आया * पुत्र तुम्हारा भ्रात कहाया ।
वैश्रवण शुभ नाम सुजाना * इन्द्र राव का तनय बखाना ॥
इन्द्र पितामह हना तुम्हारा * लंका छीन लई एक बारा ।
यह अपमान याद जब आवे * उठे हूक जी अति घबरावे ॥
राक्षस भीम कृपा कर भारी * लंका दीनी पुन हमारी ।
ईश करी कृपा अधिकाई * गई वस्तु पुन दई गहाई ॥

माता देख अचम्भा पाया ☆ मन में अधिक विचार बढ़ाया ।
रत्नश्रवा भूपत अविलोका ☆ मन हर्ष मिट गयो सु शोका ॥

दोहा

सुरपति ने प्रसन्न हो ☆ नव माणिक का हार ।
घनवाहन नृप को दियो ☆ प्रेम मुदित मन धार ॥

चौपाई

अचंभ कियो भूप हरषाई ☆ कुल में यही रीति चली आई ।
रत्नश्रवा बोले प्रभु बानी ☆ श्रवण लगा कर सुनिये रानी ॥
पद्मापति नवा करें हजारा ☆ ग्रीवा हाथ धरी सुत डारा ।
नव माणिक मानव मुख दीखे ☆ दशमी सहज आप मुख सीखे ॥
दश मुख नाम पिता तब दीनो ☆ उत्सव बहुत हर्ष कर कीनो ।
देखो सुत अतुलित बल धारी ☆ तेजवन्त पूरण तप भारी ॥
अरि बहुलाय शरण में आये ☆ बड़े बड़े नृप राय झुकाये ।
भाम समान तेज बढ़ता है ☆ निशवासर सु पुण्य चढ़ता है ॥

दोहा

पूछा ज्ञानी ऋषी से ☆ मन्दिर गिरि पर जाय ।
नव माणिक के हार का ☆ विवरण देऊ बताय ॥२६॥

चौपाई

बोले सुन कर ऋषिवर बानी ☆ भेद बतायो पूरण ज्ञानी ।
तीन खण्ड का जो हो नायक ☆ उसको हार अति सुखदायक ॥
यही ग्रीवा में यही धारे ☆ देखे मुनिवर वचन उचारे ।
सुन कर के ऋषिवर की बानी ☆ भूप चले मन में सुख मानी ॥
रत्नश्रवा के अति प्रिय रानी ☆ स्वप्न लखा मन में सुखदानी ।
भान तेजमय गगन निहारा ☆ शुभ सुपना अति चित्त में धारा
प्रथमी गर्भ की पूरण कीनी ☆ सुखी बहुत अति मन में लीनी

दिन दिन तप बढ़ता रहा * काटा निज संताप ॥ ३४ ॥

चौपाई

दिन कर उदित होय जहि बारा * उडुगणवृन्द लोप होय सारा ।
चन्द्र पलास पात सम होई * नाश तम जाने सब कोई ॥
रावन बठ भुवन सुख पावें * कुम्भ करण बलवन्त कहावें ।
अष्टापद सम हैं बलवन्ता * सिंह हाय लख कर नियलन्ता ॥
दशकन्धर सविनय उचारे * माता श्रवण कर वचन हमारे ।
जोर युगल कर वचन सुनाऊँ * विद्या साधन के हित जाऊँ ॥
दीजे अनुशाशन अब माता * सिद्धकरे मम काज विधाता ।
माता पुत्र वचन चित्त दीना * हर्षयका मन आयुष दीना ॥

दोहा

सुखारा घन साधन के * विद्या एक हजार ।
मोद मान आया तुरत * दशकन्धर उसबार ॥ ३५॥

चौपाई

हर्षे चरन जननी के परसे * नमन किया अति मन में हर्षे ।
लाई मात प्रेम अति मन में * लख नन्दन फूली अति तन में ॥
करें सिंह सम रावण राजा * विनय सहित सब सारें काजा ।
लोचन ललित लाल लखाये * हास विलास हर्ष हिये छाये ॥
मगर युत निशवासर बीते * डीठ विलोक शत्रु भय भीते ।
आये कुम्भकरण कर काजा * गये तुरत भये सुख समाजा ॥
रावण भ्रात विभीषण आये * विद्या साधन करी तुरत सारे ।
और आगे का सुनो बयाना * दीजे अब आगे कुछ ध्याना ॥

दोहा

षट उपवास कर साधना * हो प्रसन्न मन मांहि ।
चन्द्रहास खांडो सुगर * मन में भ्रांत ही नांहि ॥३६॥

दोहा

दीनी है लंका पुन * दया हृदय में धार ।
भूपत का है शीश पर * बहुत बड़ा उपकार ॥ ३२ ॥

चौपाई

भमि छुटे जो नर पर फरस * मान महातम जाय सुगर से।
हाय सधन से निरधन जो नर * तहके वचन लगे हैं ज्यों सर ॥
अन्य देश के हो रखवारे * नीति मनोगमती यह धारे ।
अनुचर ऐश निवासा होते * नीति अनीति सु नैनन जोते ॥
ऐसे विवस नैन से देखे * कष्ट सहे तन पर असह पेखे ।
तरी सेना बन्दी खान * दीनी डार जगत् सब जाने ॥
राज मुकुट छबि पाया सारा * देख दशा यह किया किनारा ।
दुखे पुत्र अब आप सरीखे * सुफल मनोरथ हों मम जी के ॥

दोहा

या समझू मैं मनोरथ * गगन कुसुम सम आस ।
या मानू यही सत्य मैं * जो तुम करो प्रमान ॥ ३३ ॥

चौपाई

सुन कर वचन विभीषण बोला * हृदय प्रेम तस घट में डोला ।
धीरज धरो मात मन मांही * यह कारज कुछ दुर्लभ नाहीं ॥
वचन आप के हम सिर धारे * सादर आज्ञा विनय हमारे ।
जो इच्छा तव मन में धारी * जो जननी चित बीच विचारी ॥
कर है काज आप मम चाहा * प्रण अपने का करो निबाहा ।
पितु का बैर जो सुत न लेही * वृथा कष्ट निज जननी देही ॥
ऐसे नर भू भार समाना * जो न करें मा पितु सनमाना ।
मात पिता जिनके दुख पावें * पुत्र जिन्हों के ध्यान न लावें ॥

दोहा

दशकन्धर राजा भये * चहुते तेज प्रताप ।

कन्या सम लख रावण राजा ॥ पाणि ग्रहण कर किया सुकाजा
इन्द्र सहित इन्द्राणी जैसे ॥ सोहत युगल सुभगल तैसे ।
घन दामिनी सम लख सुघराई ॥ मात हृदय पुलकावलि छाई ॥
षट सहस्र देवर की कन्या ॥ रूपमगार सुगर शुभ धन्या ।
वरी एक संग मन हर्षा के ॥ पूरब पुण्य उदय हैं ताके ॥
आनन्द मान रह सुख कारी ॥ देखे प्रेम दृष्टि सुख भारी
यह विधि लंकापति हर्षाई ॥ सैर करन की मन में आई ॥

दोहा

पोम विधाता को नृपत ॥ शुभ सुन्दर महाराज ।
अयर जनक को संग ले ॥ चला पटक को साज॥३६॥

चौपाई

यह लख यथा सुबोली रानी ॥ यहे पति से कोकिल बानी ।
शीघ्र विमान चढ़ाओ स्वामी ॥ वेग चलो अति अम्बरगामी ॥
आया दल भारी विकराला ॥ टालो देकर कोई टाला ।
दशकन्धर बोले भामिन से ॥ अभय रहो अस कह कामिन से
व्याल न व्यालन के जो कहुँ आवें ॥ गरुड़ विलोक तुरत टल जावें।
जो रण होय विजय मैं पाऊं ॥ भूर भयंकर समर दिखाऊं ॥
धनुष नाग सर कर जय साधू ॥ नृप को एक पलक में बांधू ।
यह विधि प्रियका समझा दीनी ॥ पूरण विजय कामना कीनी ॥

दोहा

भूप महोदर धीर अति ॥ कुम्भ पुराधिप मान ।
सुरुप मैन रानी सुगर ॥ सुन्दर रूप निधान ॥४०॥

चौपाई

पुत्री तासु तड़ित शुभ माला ॥ अति स्वरूप गुणशील विशाला
कुम्भ करण को दी परणाई ॥ बहु विधि मन में प्रीति बढ़ाई॥

चौपाई

गिरि बैताढ्य सु सुन्दर सोहे # दक्षिण दिश श्रेणा मन मोहे।
पुरधर नम्र सु सुन्दर कैसा # सुरपुर सम शुभ सुगर अर्लीका
मय भूपति ताको अति ज्ञानी # हेतुमती अति सुन्दर रानी।
मन्दोदरि कन्या शुभ जाके # सुन्दर रूप स्वरूप प्रभा के॥
शर्द चन्द्र सम सुन्दर आनन # जीते पचानन के यानन।
केशर सम कच सुन्दर प्यारे # शुभ सुढार कारे कोरारे॥
सिन्दुर बिन्दु गात अति नीका # देख मुदित मन होय पति का।
भृकुटी कुटिल चकाचक्ष हारे # काम धनुष लख हाय निहारे॥

दोहा

सुन्दर सर धर सुधा के # और हलाहल पैन।
मधुमाते पाते जियत # मुकत मरत वह नैन॥३७॥

चौपाई

नाश इक टक शुक ही निहारें # लज्जावश उड़ि गये विचारे।
मुत सुन्दर इशे मनी प्यारे # सीपी रुख कर गई किनारे॥
गोल कपोल लाल मलधार # लख गुलाब सुन्दरता हार।
सुधा सरोवर क युग प्याले # ए टके ध्यान मनो मतवाले॥
अधर अमी माधुर पन धारे # पिय परसत मन होत सुखारे।
ग्रीवा मयूर हंस सी प्यारी # कोकिल कण्ठ महासुखकारी॥
सु तन सुढार शची से सुन्दर # शर्माये लख तीय पुरन्दर॥
और कहु उपमा कहा बाकी # पटतर अखिल भूम नहिं ताकी।

दोहा

अमल अद्वितीयता समय # त्रियन की सिर मौर।
विमल विकच विमलाम्बरी # सी नहिं जग में और॥३८॥

चौपाई

मय भूपत दशकण्ठ निहारा # पुण्य तेज लख मन अस धारा।

रावण मिलन धनद के आये * मुनिवर को कर जोड़ समाये ॥
रूपा को रावण हुनियाई * समर भूमि भूपति जै पाई ।
लीना पुष्पक सुगर विमाना * वायु युक्त उड़े असमाना ॥
मात मनोरथ पूरा कीना * जननी के चरनों सिर दीना ।
मुदित मात देती आशीषा * अमर रहो मम सुत दश शीशा

दोहा

पुष्पक वायुयाम में * रावण मन हर्षाय ।
बैठ चले बैताड़ को * मन में मोद बढ़ाय ॥ ४३ ॥

चौपाई

भुवनालङ्कन देख लुभाये * ले गज शाला बीच पठाये ।
रावण तट यक खेचर आया * अपना सकट कहे सुनाया ॥
किष्किंधा नृप सुत बलधारी * समर बीच करे युद्ध करारी ।
रूप पयाला से चढ़ आया * यम को रण के बीच हराया ॥
यम को कारागार पठाया * कष्ट बहुत उसको दिखलाया ।
आप छुड़ाओ भूपत जाके * विन्ती मेरी सुनो मन लाके ॥
सेवक वह तुमरो कहलाये * और नृपत गिन्ती नहीं लावे ।
ऐसा काम करो नृप मेरा * होय अनुग्रह भूपत तेरा ॥

दोहा

मन विचार दश कठ नृप * चढ़े कोप मम लाय ।
यम को दिया छुड़ाय के * रण में युद्ध मचाय ॥४४॥

चौपाई

सुर सुन्दर रणबीच हराया * राजनू मध्य सु आदर पाया ।
कोपो इन्द्र राव वलि धारी * चढ़ आया शुभ समय विचारी
यम मे सुर सर्गा तक कीना * मिश्र भये आश्वासन दीना ।
आयु नगर लंका पति आये * मिश्र माव भरी मोद मनाये ॥

धीर नरेन्द्र नृपत अति भारी ॥ मदवत्ता रानी तसु प्यारी ।
नगर ज्योतिपुर सुन्दर धामा ॥ तापै राज करै अभिरामा ॥
कञ्ज था पुत्री सुकुमारी ॥ पङ्कज मुखी सुखी अति भारी ।
हो मन मुदित विभीषण ब्याह ॥ पतिव्रता पति को सुखदाई ॥
जग आनन्द बढ़ावें मन में ॥ धनपति सम विचरें कानन में।
परम प्रसन्न युगल मन माने ॥ दम्पति प्रेम परस्पर ठाने ॥

दोहा

शुभ महूरत शुभ घड़ी ॥ मन्दोदरी हर्षाय ।
सुत आयो सुन्दर सुगर ॥ आनन्द मन हर्षाय ॥४१॥

चौपाई

सुन्दर सुरपति सम सुकुमारा ॥ लख मन्दोदरि मन हर्ष अपारा।
रावण पुत्र जन्म सुख पाई ॥ अनुचर दीनी मान बधाई ॥
द्रव्य बहुत वकर खुश कीना ॥ आनन्द युत उत्सव मन दीना।
इन्द्रजीत रक्खा तस नामा ॥ मोद भरो शुभ अति सुख धामा॥
घन वाहन दूजो सुत प्यारा ॥ दक्ष देख मन सुख हो भारो ।
कुम करण कर जोरे ठाड़े ॥ लङ्का धनद सुमाल उजाड़े ॥
रावण कोप कियो अति भारी ॥ अपनी सेना को श्रृंगारी ।
लङ्का वकर करी चढ़ाई ॥ अहां भई अति विकट लड़ाई ॥

दोहा

विजय भई दश कण्ठ की ॥ हर्षा सैन समाज ।
धनद परा जय जानकर ॥ रण से दीयो भाज ॥ ४२ ॥

चौपाई

धनद चतुर चरित्र सु लीना ॥ चित्त शुभ तप सयम में दीना ।
धर्म शरीरी मन हुलसाये ॥ समता दृष्टि जीवों पर लाये॥
शत्रु मित्र सम एक निहारे ॥ अथिर विश्व मन बीच विचारे।

रावण निकट धनद के आवे * मुनिवर को कर जोड़ समावें ॥
रूपा को रावण हलियाई * समर भूमि भूपति जै पाई ।
लीनो पुष्पक सुगर विमाना * वायु युक्त उड़े असमाना ॥
मात मनोरथ पूरा कीना * जननी के चरनों सिर दीना ।
मुदित मात देती आशीषा * अमर रहो मम सुत दश शीशा

दोहा

पुष्पक वायुयान में * रावण मन हर्षाय ।
बैठ चले बैताड़ को * मन में मोद बढ़ाय ॥ ४३ ॥

चौपाई

भुवनालङ्कृत देख सुभाये * ले गज शाला बीच पठाये ।
रावण तट एक खेचर आया * अपना सङ्कट कहे सुनाया ॥
किष्किंधा नृप सुत बलधारी * समर बीच करे युद्ध करारी ।
लघ पयाला से चढ़ आया * यम को रण के बीच हराया ॥
यम को कारागार पठाया * कष्ट बहुत उसको दिखलाया ।
आप छुड़ाओ भूपत जाके * विन्ती मेरी सुनो मन लाके ॥
सेवक वह तुमरो कहलावे * और नृपत गिन्ती नहीं लावे ।
एता काम करो नृप मेरा * होय अनुग्रह भूपत तेरा ॥

दोहा

मन विचार दश कंठ नृप * चढ़े कोप मन लाय ।
यम को दिया छुड़ाय के * रण में युद्ध मचाय ॥४४॥

चौपाई

सुर सुन्दर रणबीच हराया * राजन् मध्य सु आदर पाया ।
कोपो इन्द्र राय बलि धारी * चढ़ आया शुभ समय विचारी
यम ने सुर सगी तक कीना * मित्र भये आश्वासन दीना ।
स्वर्ण नगर लंका पति आय * मित्र भाय भरी मोद मनाये ॥

शुभ महूरत रावण राजा ॥ रथ पर आय कर शुभ काजा।
घर घर नार बधाई गाय ॥ मंगल माद सभा सुख पावें ॥
सैना पति सैना सुख पावें ॥ भूपति की जय विजय मनावें।
आनन्द मंगल मोद विशेषा ॥ घर घर मंगल चारु सुदेशा ॥

दोहा

अति प्रवीन अति साहसी ॥ अति दाता बलवान ।
अति चातुर विद्वान अति ॥ शुभ गुण सकल निधान॥४५॥

चौपाई

सुरराज भूपति बलि कारी ॥ इन्दुमालिनी अति प्रिय नारी।
सुत बलवान बला निज जाया ॥ सुन्दर नाम सुमाली पायो ॥
लय विधी पुर गहा रण धीरा ॥ सुयशी शूर बली अरु धीरा।
समुद्रान्त प्रदक्षिण देइ ॥ भूमि प्रदक्षिण दे यश लेई ॥
अनुज एक जिसके बलधामा ॥ नाम सुकंठ सुग्रीव महाना।
सुगर स्वरूपा सुन्दर कन्या ॥ रुप अनुपम है अति धन्या ॥
अस राज ग्रह समुख सुनैनी ॥ हरिकन्ता शुभ कोकिल बैनी।
दो सुत शूर तासु ने जाये ॥ नाम नील नल सुन्दर पाये ॥

दोहा

सुर राजने दीक्षा लई ॥ बाली को दे राज ।
आप पधारे शिव नगर ॥ सारा आतम काज ॥४६॥

चौपाई

एक दिवस लंकापति रावण ॥ मन विचार करता शुभ हावण।
रैर कान को भूप सिधारे ॥ निजाम चलो न कोइ लारे ॥
मेरु गिरि लख मन हर्षाये ॥ मुदित भाव निज मन में लाये।
दशक घर भगनी सुकुमारी ॥ देख चपलता दामिन हारी ॥

सुर्पनखा तस नाम सुहाई ॥ खेचर खर लेगयो उठाई ।
पहुँचो लंक पयाला जाई ॥ मन में अति आनंद मनाई ॥
चन्द्रोदरी मन में रिप खाके ॥ सैन साज ले गयो चढ़ाके ।
खर को सुपनखा दी ब्याई ॥ हृदय बढ़ी युगल मिन्नाई ॥

दोहा

यनमा नदन के हुआ ॥ पुत्र एक बलवान ।
सकल कला प्रेमी हुआ ॥ विराध नाम सुजान ॥४७॥

चौपाई

जब विराध यौवन में आया ॥ पिता बैर लेना मन चाया ।
शीघ्र करी रण की तैयारी ॥ कटि कृपाण आपने धारी ॥
बाली की सेवा मन लाया ॥ प्रेम प्रीत लख मन हुलसाया ।
परामर्श बाली से कीना ॥ दूत भेज अरि के तट दीना ॥
कीर्ति धवल से मुझ मिन्नाई ॥ श्री कठ तुझ से मम भाई ।
अब अभिमान न कीजो भाई ॥ यह आज्ञा मम तुझे सुनाई ॥
बाली ने यों वचन उचारा ॥ मन में सोच समझ ललकारा
जन अपवाद करें जग माहीं ॥ यह विचार आवे मन माहीं ॥

दोहा

जा तू मान कहा मेरा ॥ अपने नृप के पास ।
कह दीजो सारी कथा ॥ जिसका है तू दास ॥४८॥

चौपाई

पहुँचो दूत लंक पति पासा ॥ समाचार कह दिये खुलासा ।
दूत वचन सुन रावण राजा ॥ कुपति होय सब दल बल साजा
घेरा बाली नग्र को जाकर ॥ कटक अमाया मन हर्षा कर।
कपि पति देखे दृष्टि पसारी ॥ सेना को नहीं वारा पारी ॥
लोक उपद्रव टालन चाहे ॥ श्रीपन श्रावक धर्म निवाहे ।

शुभ महूरत गादर राजा ॥ हुआ आय घर शुभ पाजा।
घर घर नार पधार गाय ॥ मगलमाद सभी सुख पायें ॥
सैना पति सैना सब पायें ॥ भूपति की जय विजय मनायें।
आनन्द मगन माद विशेषा ॥ घर घर मगल चारु सुदेशा ॥

दोहा

अति प्रवीन अति साहसी ॥ अति दाता बलवान ।
अति चातुर विद्वान अति ॥ शुभ गुण सकल निधान॥४२॥

चौपाई

मृगराज भूपति बलि कारी ॥ इन्दुमालिनी अति प्रिय नारी।
सुत बलवान बला निज जाया ॥ सुन्दर नाम सुमाली पायो ॥
सब विधी पुर महा रण धीरा ॥ सुयशी सूर बली अरु धीरा।
समुद्रान्त मर्दावण देई ॥ भूमि मब किया वे यश लेई ॥
अनुज एक जिसका बलधामा ॥ नाम दुर्कंठ सुमीष महाना।
सुगर स्वरूपा सुन्दर कन्या ॥ रुप अनुपम है अति धन्या ॥
श्राप राज मह समुख सुनैनी हरिकन्ता शुभ कोकिल बैनी।
दा सुत सूर तासु ने जाये ॥ नाम नील नल सुन्दर पाये ॥

दोहा

सुर राजन दीक्षा लई ॥ वाली को दे राज ।
आप पधार शिव नगर ॥ सारा आतम काज ॥४३॥

चौपाई

एक दिवस लकापति रावण ॥ मन विचार करता शुभ हावण।
सैर पान की भूप सिधारे ॥ निर्जन थलो न कोई लारे ॥
मरु गिरि लख मन हर्षाये ॥ मुदित भाय निज मन में लाये।
दशकन्धर भगनी सुकुमारी ॥ देख चपलता दामिन हारी ॥

दशकन्धर लियो अधर उठाई ॥ तब रावण की मत बौराई ।
दाबो कांख बाल दशकन्धर ॥ देख रहे यह खेल पुरन्दर ॥

दोहा

सागर की प्रदक्षिणा ॥ चारों ओर दिवाय ।
दियो छोड़ पुनः काख से ॥ अपने मन हर्षाय ॥ ४१ ॥

चौपाई

अपमानित हो मन खिसियाये ॥ दस कन्धर मन में मुरझाये ।
मन सन्ताप बढ़ा अति भारी ॥ लज्जायुत गये लंक सिधारी॥
बालि दियो सुग्रिव का राजा ॥ अपना सिद्ध कीना सब काजा
संयम ले तप कर अधिकाई ॥ पंचमी गति से प्रेम बढ़ाई ॥
मास मास तप करे सुजाना ॥ प्रतिमा धार स्वमन सुख माना।
लब्धिवान भयो ऋषि बाली ॥ समता हृदय बीच समाली ॥
अष्टापद गिरि पर ऋषि आया ॥ कायोत्सर्ग पर ध्यान लगाया।
योग ध्यान निश्चल मन धारे ॥ तप से कर्म रिपु संहारे ॥

दोहा

गिरि अष्टा पद पर गये ॥ रावण मन हर्षाय ।
दशकन्धर की राह में ॥ ऋषि बाली गये आय॥४२॥

चौपाई

रावण रोष कियो अति भारी ॥ मन में बैर पुरातन जागी ।
गिरिवर शीश लगाय हलावे ॥ नीचे ऋषि को गिरावन चावे ॥
ऋषि ने पैर अगुष्ठ जमाया ॥ रुदन लगा मन में घबराया ।
ध्यान ऋषि चरनन में दीना ॥ मन से रोष प्रथम सब कीना॥
जीता राग द्वेष मुनि राजा ॥ तारन हित निज आतम काजा ।
दशकन्धर मन में पछताये ॥ ऋषि को करी वन्दना आये ॥
भक्ति करी स्वमन चित लाई ॥ यह चरित्र धरयोन्द्र लखाई ।

द्वन्द्व युद्ध स्थापन कीना * और उपाय मधफ कर दीना
दोनों वीर करी स्वीकारी * दया धरम दोनों मन धारी ।
अस्त्र शस्त्र कर के तज दीना * मल्ल युद्ध मन में शुभ कीने ॥

दोहा

मल्ल युद्ध करने लगे * दोनों वीर महान् ।
धाली अरु दशकण्ठ यह * समर कुशल विद्वान॥४६॥

चौपाई

भिर गय आपस में भट मारे * करें युद्ध परस्पर जुझारे ।
जूझें युग कुंजर मतवारे * होय घटा पट युद्ध मचारे ॥
गिरह लपटे पेच कर मारे * कोई अड़गा दकर मारें ।
काज कोई झोली से सारे * कोइ इक लगा से भू डारे ॥
इकता तोड़ कोई ले आवे * कलाजग कइ के मन भावे ।
घिस्से पर खींचे कोइ वीरा * कोई भूमि मल देय शरीरा ॥
कोई करें माग विधारा * परीवन्द गोता कोइ मारा ।
कोइ मोती चूर समारे * कर लो कान कोई दे मारे ॥

दोहा

याल सांगड़ा डाल कइ * कइ पट देय उखाड़ ।
कोइ करें इस धून पर * पटके मनो पहाड़ ॥ ५० ॥

चौपाई

कोई कई धन्त पर लाके * धुर फलाग कई करे अघा के।
वगली झुपकी साँकी कोई * धरला कर रेले कई जोई ॥
आंटी असवारी कइ करता * कमरबन्द कोई मन में धरता ।
धर लपेट कोई कर झूमे * दम डाल कोई इत उत घूमे ॥
धना धी पर कोई उठाये * कोई झट भट्ट सखी लगाये ।
कइ दाटी कइ करे सुरामा * धक पच से है चलवामा ॥

दोहा

अधिक प्रेम दर्शाय के * करी याचना तास ।
उत्तर नरपति दियो * पूरण हुइ न आस ॥५५॥

चौपाई

सो कन्या कपि पति परनाई * ता सम नृप न दियो दिखाई ।
स्वल्पायुप साहस गति जानी * तासे नहीं याचना मानी ॥
तारा पति सग रहे सुखारी * पति को अति प्राणों से प्यारि।
दो सुत सुगर सु तारा जाये * नाम जयानन्द अगद पाये ॥
साहस गति मन होय मलीना * प्रम विवश मन में अति दीना।
मन में बहुत उपाय विचारे * दाय घात बहुतिक मन धारे॥
विन तारा नाहि मन में चैना * तड़फे विन जल झक दिन रैना।
बदला विद्या से निज रूपा * हेमवन्त पर्वत गयो भूपा ॥

दोहा

दशकन्धर दिग् विजय हित * हुओ तुरत तैयार ।
कटक साज कर आपनो * बान्धे सब हथियार ॥५६॥

चौपाई

तेज प्रतापी लंकपति भारे * उदय भान सब तेज बढ़ारे ।
लंक पयाला पहुँचे जाई * आनन्द बहुत हुआ मन मांही॥
खर दूषण युग भ्रात जुझारा * हुये सग चलन को त्यारा ।
चौदह सहस्र लिये सग खेचर * शस्त्र सभार हाश मन में घर॥
नृप सुग्रीव सग उठ धाये * प्रेम मगन रावण सग आये।
नदी नर्बदा के तट आये * सुख सहित दियो कटक टिका के
रावण कर दरबार बिराजे * सुभट विकट जिन के सग साजे
परामर्श सुभटों से करता * प्रेम प्रीत हृदय में भरता ॥

दोहा

पूछे रावण अधिपति * सब स प्रेम बढ़ाय ।

प्रेम दृष्टि रावण पर कीनी ॥ विजय अमोघ शक्ति इक दीना ॥

दोहा

विद्या साधन दी करा ॥ सुरपति मन दुराय ।
रावण से कर मित्रता ॥ इन्द्र चरण सहाय ॥४३॥

चौपाई

दशकन्धर मन हर्ष अपारा ॥ शत्रु विलोय शीष महि डारा ।
बैठ विमान लंकपति धाये ॥ हर्ष विनोद लंक में आये ॥
बाली ऋषिश्वर तप कर भारी ॥ तप संयम की लीक सिधारी ।
आतम काज सार ऋषि राई ॥ पहुँच मुक्तिपुरी के माँही ॥
आप तरे औरों को तारा ॥ जाना यह संसार असारा ।
धन्य धन्य अस ऋषि के पायें ॥ श्रद्धा सहित शीश पद नायें ॥
मन वच क्रम से जो गुण गायें ॥ कर्म रहित हो शिवगति पायें ।
बार-बार सिर पद में नामे ॥ वो नर अमर अचल गति पामे

दोहा

ज्योति पुर वर नग्र शुभ ॥ गिरि वैताढ़ सुधाम ।
विद्याधर नृप ज्वलनसिंह ॥ सब गुण शुभ अभिराम ॥४४॥

चौपाई

श्रीमती इस नाम पियारी ॥ शील वती इस गुण अधिकारी
पुत्री सुतार नाम शुभ तारा ॥ सुन्दर शुभ गुण रूप अपारा ॥
कनकलता सा तन अति सुन्दर ॥ लाजे इस लख नारी पुरन्दर ॥
नैन मैन जैसे युग प्यारे ॥ कच कौरारे अरु घूंघराले ॥
चोटी देख नाग विष हारी ॥ लट लटकी लटकी मतवारी ।
चित्रित चपल चित्राणी जैसे ॥ चाले चाल पशु शुभ तैसे ॥
साहस गति नृप ताहि निहारी ॥ मोहित भयो भूप अति भारी ।
साहस गति साहस तस छाया ॥ ज्वलनसिंह नृपके तट आया ॥

चौपाई

अनरण्य ने राज तज दीना * निज नन्दन को अधिपति कीना
दशरथ हुए अवध के राजा * करें पिता आयुष युत काजा ॥
अनरण्य हो चारित्र सिधारे * कीये तप अति मन हुलसारे।
यहि कारण नृप त्यागा राजा * पूरण किया सु आतम काजा ॥
नीति युक्त दशरथ भूपाला * पुत्र समान प्रजा को पाला।
लपट लट दृष्टि नहीं आवे * सुन्दर सुखद अवधि विलसावे ॥
प्रजा परम भूप हितकारी * वृद्धि नृपत की चहैं हरवारी।
अवधी भई सुख सम्पत्तिपूरी * मंगलमय घर दीसत रूरी ॥

दोहा

तड़ित धाय नारद चले * करते धूम अपार।
दश कन्धर तट आय के * कहन लगे उचार ॥ ६० ॥

चौपाई

करत अनीत भूप अति भारी * सुनिये नृप पति विनय हमारी।
मगर राज पुर को अधिकारी * भूप मरुत जिन नीत विसारी ॥
मिथ्यादृष्टि है तसु राजा * कुगुरु यश से करे अकाजा।
हिंसा करे यज्ञन में भारी * पशु वध में करे धर्म प्रचारी ॥
हित हवन के जीव मँगाये * उनके शब्द श्रवण मम आये।
करुणा कर नृप के तट धाया * नाना भाँति नृपत समझाया ॥
उत्तर दिया भूप सुन वानी * सुवेदों की सुना अयानी।
विप्रों ने जो कुछ उच्चारा * वही काज करूँ मैं सारा ॥

दोहा

असुरन पति के लिये * जीव होमना धर्म।
अन्दर वेदी वालि करे * है यही उत्तम कर्म ॥ ६१ ॥

नाम नगर पुन भूप का ० दीजे हमें बताय ।५७ ॥

चौपाई

उत्तर देने लगे हर्षाई ० सुनिये भूपति अथवा लगाइ ।
महिषमति नगरी को नामा ० सहस्त्रांश भूपति अभिरामा ॥
पाय हजार करें सब सेवा ० सादर अरसें जिम कुल देवा ।
एक सहस्र हैं सुन्दर नारी ० निज पति के प्राणों से प्यारी ॥
सैन कटक अति वाके भारे ० युगल लक्ष अति वीर जुझारे ।
यह विधि आनन्द रहे मनाई ० सुख भोगे मन में हर्षाई ॥
जल वह बन्ध बान्ध कर रोका ० नारि सहितें कर केल अशोका ।
रमें गजेन्द्र समान नृपाला ० निभय रहें सदा भूपाला ॥

दोहा

आकर दीनी सूचना ० सहस्त्रांश को वीर ।
रावण चढ़ आया नृपत ० समर जुझारा धीर ॥ ५८ ॥

चौपाई

सुन कर वचन भूप उठ धाया ० शस्त्र बान्ध समर में आया ।
विविध भांति शस्त्र नृप छाडे ० रावण रण से मुख नहिं मोड़े ॥
दशकन्धर लिया बांध नृपाला ० विजय समझ निज मन्दिर चाला
चारण ऋषि आये तहं चारी ० नभ पथ से उतरे ब्रह्मचारी ॥
नत बाहु तब दियो छुड़ाई ० ऋषि मन मुदित हुये अधिकाई
चले ऋषि नभ पथ निज कामा ० लांघो पवन सुगर शुभ धामा॥
दीनी रार मेट तहि भारा ० पुनः ऋषि ने पग धरो अगारो ।
देश-देश पर्यटन करते ० रीति अनेकन चित्त में धरते॥

दोहा

अनरण्य अरु नरेन्द्र सु ० दोनों मित्र सुजान ।
एक राम धारीम से ० हुये मगन महान ॥ ५६ ॥

चौपाई

नर्क वास परलोक मझारी ॥ सोच समझ मन देय विसारी
मरुत भूप मन में पहिचाना ॥ दशकन्धर का आयुष माना ॥
नारद से दशकन्धर बोला ॥ सुन्दर शब्द सु आनन खोला।
यज्ञ हवन में पशु वध कैसे ॥ हुआ आरम्भ कहो यह कैसे ॥
सुनकर नारद वचन उचारे ॥ सुना भूप लंका पति भारे।
चदी देश एक अति भारा ॥ शुक्ति मति नगरी शुभकारा॥
चारों ओर यहैं शुभ सरिता ॥ वन उपवन लख हृदय उमरता
कूप तड़ागन कीर्ति बड़ाई ॥ बहु प्रकारे शोभा पाई ॥

दोहा

अभिचन्द्र राजा महा ॥ शुभ गुण सकल निधान।
नीतिवान् धर्मवान् अति ॥ बल बुद्धि तेज निधान ॥ ६८॥

चौपाई

सुत सुन्दर वसु ताको नामा ॥ सत भाषी सुख रास सु रामा।
शिक्षा हेत गुरु तट आये ॥ मैं पर्वत वसु मित्र कहाये ॥
पर्वत नाम गुरु सुत पाया ॥ सम विद्या का भ्यास कराया।
गुरु के निकट रहे हम तीना ॥ श्रम से थक सो रहे प्रवीना ॥
गगन पथ मुनि चारण जाते ॥ रहे परस्पर युग बतराते ।
एक नर्क दो स्वर्ग सिधायें ॥ यही रीति बतराते जायें ॥
गुरु ने सुनी ऋषियन की बानी ॥ बड़ा सोच गुरु के मन आनी।
करन परीक्षा पास बुलाये ॥ याचन हित मन मते उपाये ॥

दोहा

कुकुट आटे के बना ॥ दीने हाथ गहाय।
जहां न देखत हो कोई ॥ वहां मार के लाय ॥ ६९ ॥

चौपाई

आज्ञा गुरु की शीश चढ़ाई ॥ तीनों मित्र चले हैं धाई।

चौपाई

इस कारण मम यज्ञ रचाया ❋ हामूँ पशु होय मन भाया ।
यह सुन कर उत्तर मम दीना ❋ उमड़ दयाभर आया साना ॥
यह शरीर है उत्तम वेदी ❋ आत्म सत यजमान सुभेदी ।
तप की अग्नि ज्ञान घृत नीका ❋ कर्म समिध है सुनो अलीका ॥
क्रोध कषायें पशुवत जानो ❋ यज्ञ स्तम्भन सत्त को मानो ।
रक्षा प्राणी मात्र की करना ❋ यही दक्षिणा त्रिरत्न धरना ॥
रत्नत्रय अनमोल भूपाला ❋ दर्शन ज्ञान चारित्र नृपाला ।
वेद कथित यह यज्ञ सुजानो ❋ मुक्ति पथ यह शुभ नृप मानो ॥

दोहा

सुन कर यह मेरे वचन ❋ विप्रवृन्द झुंझलाय ।
मार मार अति ही करी ❋ भूपति दियो गिराय ॥ ६२ ॥

चौपाई

प्राण बचाय वहां से धाया ❋ पास तुम्हारे मैं चल आया ।
जीवों का बल कर अपनाओ ❋ निरपराध पशु को बचाओ ॥
सुनकर लंक पति उठ धाये ❋ शीघ्र सु नारद के संग आये ।
सादर मरुत सिंहासन दीना ❋ शुभ सत्कार देव सम कीना ॥
देखी यज्ञ रावण ललकारा ❋ हिंसक कर्म हृदय क्यों धारा ।
तीन लोक के जो हित कर्ता ❋ दया भाव जीवों पर धरता ॥
श्री सर्वज्ञ सु शब्द सुनाया ❋ धर्म अहिंसा में बतलाया ।
हिंसा ये च धर्म कहो कैसे ❋ माना पुष्प गगन के जैसे ॥

दोहा

प्रथम करो हिंसा हवन ❋ मम अनुशासन मान ।
किन्तु कारागार में ❋ रहना पड़ निदान ॥ ६३ ॥

चौपाई

नर्क वास परलोक मझारी ॥ सोच समझ मन देय बिसारी
मरुत भूप मन में पहिचाना ॥ दशकन्धर का आयुष माना ॥
नारद से दशकन्धर बोला ॥ सुन्दर शब्द सु आनन खोला।
यज्ञ हवन में पशु वध कैसे ॥ हुआ आरम कहो यह कैसे ॥
सुनकर नारद वचन उचारे ॥ सुनो भूप लंका पति भारे।
यही देश एक अति भारा ॥ शुक्ति मति नगरी शुभकारा॥
चारों ओर वहाँ शुभ सरिता ॥ वन उपवन लख हृदय उमरता
कूप तड़ागन कीर्ति बड़ाई ॥ बहु प्रकारे शोभा पाई ॥

दोहा

अभिचन्द्र राजा महा ॥ शुभ गुण सकल निधान।
नीतिवान् धर्मवान् अति ॥ बल बुद्धि तेज निधान ॥ ६४ ॥

चौपाई

सुत सुन्दर वसु ताको नामा ॥ सत भार्या सुख रास सु रामा।
शिक्षा हेत गुरु तट आये ॥ मैं पर्वत वसु मित्र कहाये ॥
पर्वत नाम गुरु सुत पाया ॥ सम विद्या का भ्यास कराया।
गुरु के निकट रहें हम तीना ॥ श्रम से थक सो गये प्रवीना ॥
गगन पथ मुनि चारण जाते ॥ रहें परस्पर युग बतराते ।
एक नर्क दो स्वर्ग सिधायें ॥ यही रीति बतराते जायें ॥
गुरु ने सुनी ऋषियन की वानी ॥ बड़ा सोच गुरु के मन आनी।
करन परीक्षा पास बुलाय ॥ वाचन हित मन मते उपाये ॥

दोहा

कुक्कुट आटे के बना ॥ दीने हाथ गहाय।
जहाँ न देखत हो कोई ॥ वहां मार के लाय ॥ ६५ ॥

चौपाई

आज्ञा गुरु की शीश चढ़ाई ॥ तीनों मित्र चले हैं धाई।

जाकर वहु स्थान निहारे ☆ निजम वन में आकर ठारे ॥
वहुँ विश देखा दृष्टि उठाई ☆ वहे जीव महिं कोई दिखाई ।
पुन अपने मन सोच विचारा ☆ मैं देखूँ या देखन हारा ॥
ज्ञानी देख लोक अलोका ☆ मन विचार वह गये सशोका।
गुरु सन्मुख पुन पहुँचे जाई ☆ गुरु को सारी कथा सुनाई ॥
मुर्ग मार वसु पवत आये ☆ गुरु को लाकर के दिखलाये।
लाखे गुरु यह रौरव जायें ☆ वचे किसी के यह न बचायें॥

दोहा

मन विचार दीक्षा धरी ☆ गुरु कीना कल्यान ।
तप करके शुभ गति गये ☆ सुनिये आगे ध्यान ॥ ६६ ॥

चौपाई

पवत गुरु की गद्दी पाई ☆ पण्डित हो अति खुशी मनाई।
अभिचन्द्र नृप दीक्षा धारी ☆ वसु नृप हुये राज अधिकारी॥
प्रगट भये नृप वसु सतधारी ☆ कीरत विश्व विषे विस्तारी ।
ऐसे साँच सदा नृपाला ☆ न्याय नीति से किया उजाला॥
करन अखेट एक नर धाया ☆ गिरि विन्ध्याचल पर वह आया।
चाप चढ़ा चित्त मृग पर दीना ☆ दाण चढ़ाये लक्ष मन कीना॥
चूका लक्ष चतुर मुख लाया ☆ देखन हेत अगाड़ी धाया ।
देखी शिला सुश्वेत अमल सी ☆ क्षीर नीर या पद्म कमलसी ॥

दोहा

निर्मल स्फटिक शिला लखी ☆ मन में किया विचार ।
शशि की छाया से पड़ा ☆ प्रति बिम शिला मझार ॥६७॥

चौपाई

वसु भूपति है यह लायक ☆ ऐसा ध्यान किया मन पायक॥
शिला भूप को लाकर दीनी ☆ प्रेम सहित नृप अर्पित कीनी

दस शिला को नृप मन माँहि ॥ हो प्रसन्न बोले सुख पाई ।
दिया द्रव्य मन मुदित भुवाला ॥ लेकर द्रव्य शिकारी चाला ॥
सिंहासन ताको बनवाया ॥ धर गद्दी पर मन हुलसाया ।
बैठ न्याय करता सिंहासन ॥ अधर दीखता है शुभ आसन ॥
सुयश पाया जग में राजा ॥ शुभ होय भूपत का काजा ।
सुर प्रसन्न होय रहें पासा ॥ बड़े-बड़े नृप ताके दासा ॥

दोहा

समय पाय मैं भी गया ॥ देखा हटि पम्मार ।
पर्वत मुख भ्रगवेद को ॥ मिथ्या रहे उचार ॥ ६८ ॥

चौपाई

बकरा अज का अर्थ बताया ॥ सुनकर अधिक उन्हें समझाया।
गुरु त्रिवर्षा धान बताया ॥ शुद्ध अथ को नहीं समझाया॥
पक्ष पात वश वह नहीं माना ॥ वफ भाव मेरा पहिचाना ।
गुरु पत्नि ने भी समझाया ॥ मात वचन को भी ठुकराया ॥
पै माता सम कौन दयाला ॥ रक्षा गर्भ से गोदी पाला ।
वसु को जाकर विनय सुनाई ॥ भूपति मन में गये लजाई ॥
माता की आज्ञा नहीं टाली ॥ टाली भूपति राज प्रणाली ॥
लगी युगल प्राणों की बाजी ॥ भूपति करी मात को राजी ॥

दोहा

दोनों आ दरबार में ॥ हाल दिया समझाय ।
वसु भूपति कहने लगे ॥ अति मन में झुंझलाय ॥६९॥

चौपाई

नारद मिथ्यावचन तुम्हारा ॥ बिन सोचे कहि भाँति उचारा।
बिन विचार जो कारज करते ॥ ऐसे नर विपता सिर धरते ॥

जाकर वह स्थान निहारे ❀ निजम बन में जाकर ठारे ॥
चहुँ दिश देखा दृष्टि उठाई ❀ पड़े जीव नाहिं कोई दिखाई।
पुन अपने मन यांच विचारा ❀ मैं देखूँ या देखन हारा ॥
ज्ञानी देख लोक अलोका ❀ मन विचार पड़ गये, सग्राका।
गुरु सन्मुख पुन पहुँचे आई ❀ गुरु को सारी कथा सुनाई ॥
मुर्गे मार वसु पवत आये ❀ गुरु को लाकर के दिखलाये।
सोचे गुरु यह रौरव जायें ❀ बचे किसी के वह न बचायें॥

दोहा

मन विचार दीक्षा धरी ❀ गुरु कीना कल्याण।
तप करके शुभ गति गये ❀ सुमिये आगे ध्यान ॥ ६६ ॥

चौपाई

पर्वत गुरु की गद्दी पाई ❀ पठित हो अति खुशी मनाई।
अभियन्द्र नृप दीक्षा धारी ❀ वसु नृप हुये राज अधिकारी॥
प्रगट भये नृप वसु सतधारी ❀ कीरत विश्व विषे विस्तारी।
बोले सांच सदा नृपाला ❀ न्याय नीति से किया उजाला॥
करन अखेट एक नर धाया ❀ गिरि बिन्ध्याचल पर वह आया।
चाप चढ़ा चित मृग पर दीना ❀ बाण चढ़ाय लक्ष मन कीना॥
चूका लक्ष चतुर कुंभ लाया ❀ देखन हेत अगाड़ी धाया।
देखी शिला सुश्वेत अमल सी ❀ क्षीर नीर या पद्म कमल सी ॥

दोहा

निर्मल स्फटिक शिला लखी ❀ मन में किया विचार।
शशि की छाया से पड़ा ❀ प्रति बिम शिला मझार ॥६७॥

चौपाई

वसु भूपति हैं यह लायक ❀ देखा ध्यान किया मन पायक॥
शिला भूप को लाकर दीनी ❀ प्रेम सहित नृप अर्पित कीनी

जृमक सुर ने इन्हें पढ़ाया * लालन पालन कर बहलाया ॥
शास्त्र विशारद नारद कीना * कर्त्तव्य पर अपना चित्त दीना ।
गगन गामिनी विद्या दानी * मनसा पूरी सकल विधि कीनी॥
श्रावक व्रत भय रहो दिपाई * शिखा जटा रक्खी हर्षाई ।
कलह प्रिय मन ऋषि ने कीना * नृत्य गीत का अति शौकाना ।

दोहा

ऐसे ऋषि के नाम से * हुये विश्व विख्यात ।
नारद की उत्पत्ति की * तुम्हें सुनाई बात ॥

चौपाई

नित ही रहे स्व इच्छा चारी * ब्रह्मचारी हैं गगन विहारी ।
नारद का वृत्तांत सुनाया * मरुत राय मन श्रद्धा लाया ॥
कनक प्रभा कन्या सुख दाई * रावण नृप को दी परनाई ।
दशकन्धर ने किया पयाना * मथुरा ओर विचारा आना ॥
मथुरा नगरी आय निहारी * मन में मुदित हुए अति भारी ।
हरि वाहन नृप जब सुन पाया * भेंट करन रावण से आया ॥
प्यारा सुत मधु संग में लीना * पुत्र शूल से संग चल दीना ।
लंका पति मिल आनन्द पाया * पूछा शूल कहां से आया ॥

दोहा

चमरेन्द्र मम मित्र ने * किया शूल प्रदान ।
हो प्रसन्न मुझ से गया * पूरव प्रीत पछान ॥ ७२ ॥

चौपाई

कहा अन्य आगे सुन भाई * पूरव भव की कथा सुनाई ।
धात्रीखण्ड द्वीप रमणीया * शत द्वारा पुर उत्तम ठीया ॥
भूप सुमित्र तहां का राजा * प्रभव सुनाम मित्र सुख साजा ।
सांखे कला एक सी दोनों * गुरु के निकट रहें सुखमौनों ॥

कारज अपना आप बिगारे ❀ बिन विचार जो हत मन धारे।
धौले वह विद्वान सुजाना ❀ करो न्याय नृप जो सत जाना।
नृप अंध घबरा बतलाया ❀ मिथ्या वचन आन सुनाया।
कुपति हुये सुर' सत के रागी ❀ भूपति की अनुशासन त्यागी॥
स्फटिक शिला खण्ड कर डारी ❀ भूपति की बहु निन्दा कीनी।
नृप मर कर गये नर्क द्वारा ❀ यह दारुण हुआ विस्तारा॥

दोहा

मरुत भूप पूछन लगे ❀ लंका पति से आय।
इस ऋषि का वृत्तांत कुछ ❀ दीजे मुझे सुनाय॥ ७० ॥

चौपाई

यह ऋषि है मेरा उपकारी ❀ जीव छुड़ाय दया दिखारी।
सुन कर दशकंधर मुस्काये ❀ मरुत भूप को वचन सुनाये॥
ब्रह्मरुची ब्राह्मण तप धारी ❀ पास रखे था अपनी नारी।
स्त्री गर्भवती भई ताकी ❀ अन्य तपस्विन वेस ही आकी॥
विपिन में संग नार लगाई ❀ सो घर छोड़ कहा प्रभु ताई।
मुनि के वचन बाण सम लागे ❀ विषय भोग सब सब ही त्यागे॥
परम श्रेष्ठ जिनमत स्वीकारा ❀ मिथ्यामत का किया किनारा।
संयम ले तप करने लागे ❀ मिथ्या जगत् जाल सब भागे॥

दोहा

समय पाय कर ऋषि प्रिया ❀ जन्मा पुत्र विशाल।
जनमत ही रोया नहीं ❀ नारद का यह हाल॥ ७१ ॥

चौपाई

जृंभक सुर ने सुत हर लीना ❀ सुत वियोग दारुण दुख कीना।
दुर्गों मे की केशा धारण ❀ आतम काम सभागम कारण॥
स्वर्ग इन्दुमाला के तीरा ❀ मटी जनम मरण की पीरा।

मृगक सुर ने इन्हें पकड़ाया * लालन पालन कर बहलाया ॥
शास्त्र विशारद नारद कीना * कर्त्तव्य पर अपने चित्त दीना ।
गगन गामिनी विद्या दानी * मनसा पूरी सफल विधि कीनी॥
श्रावक व्रत अब रहो दिपाई * शिखा जटा रक्खी हर्षाई ।
कलह प्रिय मन ऋषि ने कीना * नृत्य गीत का अति शौकीना ।

दोहा

देव ऋषि के नाम से * हुये विश्व विख्यात ।
नारद की उत्पत्ति की * तुम्हें सुनाई बात ॥

चौपाई

मित ही रहे स्व इच्छा चारी * ब्रह्मचारी हैं गगन विहारी ।
नारद का वृतान्त सुनाया * मरुत राय मन श्रद्धा लाया ॥
कनक प्रभा कन्या सुख दाई * रावण नृप को श्री परनाई ।
दशकन्धर ने किया पयाना * मथुरा ओर विचारा जाना ॥
मथुरा नगरी जाय निहारी * मन में मुदित हुए अति भारी ।
हरि वाहन नृप जब सुन पाया * भेंट करन रावण से आया ॥
प्यारा सुत मधु संग में लीना * पुत्र शूल ले संग चल दीना ।
लंका पति मिल आनन्द पाया * पूछा शूल कहां से आया ॥

दोहा

चमरेन्द्र मम मित्र ने * दिया शूल मकाम ।
हो प्रसन्न मुझ से गया * पूरव प्रीत बखान ॥ ७२ ॥

चौपाई

कहा आन्य आगे सुन भाई * पूरव भव की कथा सुनाई ।
धातकीखण्ड द्वीप रमणीया * शत द्वारा पुर उत्तम दीया ॥
नृप सुमित्र वहां का राजा * प्रभव सुनाम मित्र सुख साजा ।
सीखे कला एक सी दोनों * गुरु के निकट रहें सुखमोनों ॥

कागज अपना आप बिगार ~ बिन विचार जो छत मन धा
काल बहु विहान सजाना करो न्याय नृप जो मत जान
भूप अथ वचन बतलाया ~ मिथ्या वचन आन सुनाया ।
नृपति दुख सुर मत क रागी ~ भूपति की अनुशासन त्यागी॥
स्फाटक शिला मगट कर मानी भूपति की बहु निन्दा कीनी ।
नृप मर कर गये नर्क आगे यह कारण हुआ विस्तारा ॥

दोहा

मरुत भूप पूछन लगे लंका पति से आय ।
इन ऋषि का वृत्तांत कुछ दीजे मुझे सुनाय ॥ ७० ॥

चौपाई

यह ऋषि है मेरा उपकारी ॥ अंब छुड़ा पर दया विचारी ।
सुन कर दशमुख धर मुस्काये ॥ मरुत भूप को वचन सुनाय ॥
ब्रह्मरुची ब्राह्मण तप धारी ॥ पास रखे था अपनी नारी ।
स्त्री गर्भवती भई ताकी ॥ अन्य तपस्विन ऐसे ही भाखी॥
विपिन में संग नार लगाई ॥ सो घर छोड़ कहा प्रभु ताई ।
मुनि के वचन बाण सम लागे ~ विषय भोग संग सब ही त्यागे॥
परम भ्रष्ट जिनमत स्वीकारा ॥ मिथ्यामत सो किया किनारा।
संयम ले तप करने लागे ~ मिथ्या जगत् आल सब भागे॥

दोहा

समय पाय कर ऋषि दिया ~ जन्मा पुत्र विशाल ।
जनमत ही रोया नहीं ॥ नारद का यह हाल ॥ ७१ ॥

चौपाई

जृंभक सुर ने सुत हर लीना ~ सुत वियोग कारण दुख कीना।
पुर्वी में की दीक्षा धारण ॥ आतम काज संभारन कारण ॥
मानी इन्दुमाला के तीरा ॥ भेटी जनम मरण की पीरा ।

जो मुझ पर इतना है स्नेहा * तापर देन सुधन मन देहा ॥
देते प्राण लखे यह राजा * प्राण प्रिय का दुर्लभ काजा ।
सो मम मित्र किया मुझ हेतु * भेजी निज प्रिय मेरे निकेतु ॥

दोहा

कल्पतरु सम मित्र मम * मैं नर नीच महान् ।
माता तुम घर आपने * करिये वेग पयान ॥७६॥

चौपाई

भूप गुप्त अवलोके काजा * मित्र वचन को सुनते राजा ।
मित्र वचन सुन हर्ष बढ़ाया * सत्य भाव लख मन हुलसाया ॥
वनमाला को शीघ्र मना के * भोजन प्रमय रहे करवा के ।
भेजी भूप महल वनमाला * खड्ग सु अपने हाथ समाला ॥
आन सुमित्र हाथ को थामा * मित्र नीच क्यों करते कामा ।
अन्य घातकी पापी होई * ऐसा जग कहते सब कोई ॥
मित्र घातक महा पापी जानो * यह दुस्साहस मन मत ठानो ।
देख प्रमय अति मन में लाजा * चरण पड़ा सब तज के काजा ॥

दोहा

मोद बढ़ाकर मित्र युग * रहें करें आनन्द ।
हर्षोत्फुल्लित अति मगन * माने मन मकरन्द ॥७७॥

चौपाई

नर पति सुमित्र सुदीक्षा लीनी * लालच लाभ सफल तज दीनी ।
लक्ष कर्मों से जै कुछ पाई * करके तप कुछ करी कमाई ॥
विमल सु संयम भूपति पाला * लोका लोक किया उजियाला ।
हाथ सदा समकित चित्त भाई * मर कर सुर हुआ नृप आई ॥
पुन हरिवाहन का सुत हुआ * कुछ दिन बाद प्रमय भी मूआ ।
विन्ध्याचल के जनमा जा के * श्री कुमार पुत्र हुआ ताके ॥

भये सुमित्र राय मुद बाढ़ा * हुआ मित्रन का रंग गाढ़ा।
अपसम अपना मित्र बनाया * मन में अन्तर साणिक न लाया॥
युगल मित्र कानन को धाये * पक्षिपति कन्या ब्याह लाये।
समय हुआ केयल सख रानी * बात रक्खी हृदय में ठानी॥

दोहा

नृप सुमित्र विलोक कर * कहा मित्र समझाय।
आन्तरिक संकट सकल * दो हम को बतलाय॥७४॥

चौपाई

चिन्ता मेरी अधिक लघु भाई * जो मुख नहीं बताई जाई।
करें कलंकित प्रकट कामा * इस से मत पूछो तुम नामा॥
सुन बोले भूपति हर्षा के * मनो भाव दीजे बतला के
आग्रह देख कहा सब हाला * तुमरी प्रिय जो है वनमाला॥
उस पर मुग्ध मेरा मन भाई * यह चिन्ता नहीं मुझे सताई।
रानी कौन वस्तु है प्यारे * प्राण राज सब पाट तुम्हारे॥
राय कहा रानी से जाकर * सुन्दर शुभ शृंगार सजा कर।
मेरे मित्र के मन्दिर जाओ * मोद मित्र के हृदय बढ़ाओ॥

दोहा

हर्ष सहित गई मित्र के * प्रियको दीना भेज।
मग्न भाव से जाय के * राना सुर लवरेज॥७५॥

चौपाई

भूपत ने भेजा तुम हीरा * आज्ञा तुम देखो गम्भीरा।
आशा पा पति की मैं आई * पालो निज कर्तव्य मन लाई॥
करूं काज जो आज्ञा पाऊं * तन मन से सब हुक्म उठाऊं।
समय कहे लाज युत बानी * है धिक्कार मुझे सुन रानी॥
मित्र सुमित्र महा बलवाना * कोमल जिसका हृदय महाना।

हुई आशक्ति रूप लख प्यारा * मिलने का मम मता विचारा ॥

दोहा

दासी पास बुलाय के * मन के कहे हवाल ।
भेजी रावण के निकट * चतुर सखी तत्काल ॥८०॥

चौपाई

दासी कहे सुनो लकेशा * नल कुँवर को चाहत देशा ।
जो मैं कहूँ यास सो मानो * निजहितकर मम शिक्ष पहिचानो
उपरमा रमा अनुहारा * कमला सम अति सुन्दर कारा ।
नल कुँवर की यह पटरानी * तुम से प्रेम करे जिय ठानी ॥
मुग्ध तुम्हारे गुण पर प्यारी * तन मन सौंप करे अधिकारी ।
विद्या देउ अशाली आके * देय सुदर्शन सिद्ध करा के ॥
तुम पे वार चुकी निज मन को * चाहे समर्पण करना तनको ।
दे कराय नृप को आधीना * अवश लगाय सुनो प्रवीना ॥

दोहा

सुन सन्देश लकेश मन * करने लगा विचार ।
तुरत विभीषण ओर को * देखा दृष्टि पसार ॥ ८१ ॥

चौपाई

बोले मधुर विभीषण वानी * कहा तुम्हारा मत हो ज्ञानी ।
भ्रातुर अति आओ तुम धाके * निज राना से कहो समझा के ॥
यह सुन वचन सुदासी धाई * रानी को सब कथा सुनाई ।
क्रुद्ध होय दशकन्धर बोले * तड़ित समान शब्द मुख खोले ॥
कुल विपरीत तुम वचन उचारा * पतित कर्म कीना स्वीकारा ।
प्रभु को पीठ दीठ परनारी * मम कुल में नहिं दीन अनारी ॥
हृदय भाव तक अस नहिं कीने * न यह वचन किसी को दीने ।
बिन सोचे तब वचन उचारा * पातिक युत कारज मम धारा ॥

कर नियाणा तप किया अघा के ❋ चमरेन्द्र हुआ पुनः आके ।
यों कह वचन शूल मम दीना ❋ यह उपकार मेरे सग कीना ॥

दोहा

युगल सहस योजन तलक ❋ करे शूल का काम ।
यह अमोल गुण शूल में ❋ सुनो भूप सुख धाम ॥७८॥

चोपाई

माह्रि शक्ति लख रावण राजा ❋ करे मोद युत उत्तम काजा ।
थी परनाय सुता अति प्यारी ❋ मधु को दीनी राज कुमारी ॥
दशकन्धर सिया बिनु बनाई ❋ मनोरमा तस कन्या ब्याई ।
घूमत वर्ष अठारह बीते ❋ देश साध कर मम के चाते ॥
इन्द्र भूप के दो दिग्पाला ❋ नल कुवर युग लखे भुपाला ।
निर्भय रहें सकल मय टाला ❋ राज करें मन हुय विशाला ॥
आशाली विद्या तिन भारी ❋ तहिने अग्नि कोट कियो जारी ।
कोट सु सौ योजन परमाना ❋ अग्नि मन्त्र तहि लागे नाना ॥

दोहा

अग्नि शिखा प्रज्वलित यहां ❋ दुर्लगपुर लख देश ।
देख देख बरनी प्रबल ❋ कोई न करे प्रवेश ॥७६॥

चौपाई

देख सुदृढ़ गढ़ करें विचारा ❋ इस पर वश नहिं चले हमारा ।
प्रज्वलित अग्निकुमार समाना ❋ जहां नल कुँवर का स्थाना ॥
कुम्भकरण मन हिम्मत हारे ❋ दशकन्धर तट गये विचारे ।
समाचार लंकापति पाये ❋ स्वयं विलोकन हित गढ़ आये ॥
यहुँ लग तुग के प्रज्वलित बरनी ❋ तपत बाजनों तप है धरनी ।
बहुत विचार किया मन मांही ❋ चले ज़ोर कछु गढ़ पर नाहीं ॥
नल कुँवर नृप की पट रानी ❋ लंकापति को लख हर्षानी ।

लिया बांध करा नहीं धारा * दश कन्धर की नज़र गुज़ारा।

दोहा

अजय हुये दशकंठ नृप * मार इन्द्र का मान ।
चक्र उठा लकेश ने * रक्खा अपने पास ॥ ८४ ॥

चौपाई

करी नम्रता शरण में आये * नल कुँवर ने शीश नवाये ।
देखी नम्रता मन हर्षा कर * दिया नगर पुन लौटा कर ॥
विजय मोद दश कंठ मनावे * हृदय मुदित म हर्ष समावे ।
उपरमा की ओर निहारा * नीति युक्त मुख वचन उचारा॥
भद्र! मानो वचन हमारा * निज पति प्रेम करो स्वीकारा।
योग्य पति के तुम ही कामिन * मरे योग्य नहीं मन भामिन ॥
गुरु सम तुम्हें निहारू माता * दे विद्या कीनी सुख साता ।
गुरु पत्नी नृप तिय पर दारा * नीति समान मात उच्चारा॥

दोहा

सम भगनी लघु सुता सम * ज्येष्ट सु मात समान ।
नीति वचन कैसे तजूँ * सुनो लगा कर कान ॥८५॥

चौपाई

दोनों है कुल शुद्ध तुम्हारे * हृदय रहो शुद्धता धारे।
युग कुल में नहीं लगे कलंका * मम वचनों पर करो न शंका॥
शिक्षा दे मन मुदित बनाया * नल कुँवर को पास बुलाया ।
उपरम्भा से आग्रह कीना * सौंप सु नल कुँवर को दीना॥
नलकुँवर मन सुख अपारा * लंकापति हित से सत्कारा ।
सन्माना सत्कारा राजा * भूपति हित स कीना काजा ॥
रावण करी गमन की त्यारी * आज्ञा दे सेना श्रृंगारी ।
सेना सहित पधारे आगे * मन में भाव विजय के जागे ॥

दुर्व्यसनी दुर्जन दुराचारी * दुर्दृष्टि दुर्नीति विचारी ।
इनसे करे मित्रता जोई * नाशे वेग न संशय कोई ॥

दोहा

सुन सकोप मान्यव वचन * कहे विभीषण बैन ।
निज मसख मन कीजिये * सुनिये मेरी कहैन ॥ ८२ ॥

चौपाई

जिनके शुद्ध हृदय सुन भाई * वचन दोष उनको कछु नाहीं ।
निष्कलंक मन होय सु जिनका * लगे वचन में नहीं कलंका ॥
यह मन सोच वचन में दीना * विजय कामना हित ग्रह कीना ।
उपरमा जब वन में आये * विद्या तुम्हें ज्ञान सिखलाये ॥
विद्या सिद्ध करो तुमसाई * देय पुनः उसको समझाई ।
नल कुँवर को वश में करके * विजय कामना मन में धरके ॥
पुनः स्वीकार वचन मत करना * कुल की मीति सुमन में धरना ।
मीति युक्त समझा रानी को * अमल रखो तुम निज बानी को

दोहा

श्रवण विभीषण के वचन * कर आया सन्तोष ।
मन विचार निश्चर धनी * प्रथक् किया सब रोष ॥ ८३ ॥

चौपाई

आलिंगन उत्सुक उपरम्भा * आई निजपति से कर दंभा ।
लंपट कपट सोच मन चाली * विद्या ज्ञान सिखाई अशाली ॥
एसक मंत्र बताये विधाना * व्यतर मंत्र दिये शुभ नाना ।
विद्या साधन करके रावण * लागा इत करने मन भावन ॥
अग्नि कोट दशकन्ध विदारा * सैना सहित नगर पग धारा ।
समर करन नल कुँवर आये * अस्त्र शस्त्र सज्जित ले धाये ॥
तुरत विभीषण सम्मुख आकर * देखा रिपु को दृष्टि उठा कर ।

लिया बांध करा नहीं वारा # दश कन्धर की नजर गुजारा।

दोहा

अजय हुये दशकंठ नृप # मार इन्द्र का मान ।
चमक उठा लकेश मे # रक्खा अपने पान ॥ ८४ ॥

चौपाई

करी नम्रता शरण में आये # नल कुँवर ने शीश नवाये ।
देखी नम्रता मन दया कर # दिया नगर पुन: लौटा कर ॥
विजय मोद दश कंठ मनाये # हृदय मुदित न हर्ष समाये ।
उपरभा की ओर निहारा # नीति युक्त मुख वचन उचारा॥
भद्र ! मानो वचन हमारा # निज पति प्रेम करो स्वीकारा ।
योग्य पति के तुम ही कामिन # मेरे योग्य नहीं मन भामिन ॥
गुरु सम तुम्हें निहारू माता # दे विद्या कीनी सुख साता ।
गुरु पत्नी नृप तिय पर दारा # नीति समान मात उच्चारा॥

दोहा

सम भगनी लघु सुता सम # ज्येष्ट सु मात समान ।
नीति वचन कैसे तजूँ # सुनो लगा कर कान ॥८५॥

चौपाई

दोनों है कुल शुध तुम्हारे # हृदय रहो शुचता धारे ।
युग कुल में नहीं लगे कलंका # मम वचनों पर करो न शंका॥
शिक्षा दे मन मुदित बनाया # नल कुँवर को पास बुलाया ।
उपरम्भा से आग्रह कीना # सौंप सु नल कुँवर को दीना॥
नलकुँवर मन सुख अपारा # लंकापति हित से सत्कारा ।
सम्माना सत्कारा राजा # भूपति हित से कीना काजा॥
रावण करी गमन की त्यारी # आज्ञा दे सेना शृंगारी ।
सेना सहित पधारे आगे # मग में भाग विजय के जागे ॥

दुर्व्यसनी दुर्जन दुराचारी * दुर्दृष्टि दुर्नीति विचारी ।
इनसे करे मित्रता जोई * नाश वेग न संशय कोई ॥

दोहा

सुन सकोप वान्धव वचन * कहे विभीषण बैन ।
निज प्रसन्न मन कीजिये * सुनिये मेरी कहैन ॥ ८२ ॥

चौपाई

जिनके शुद्ध हृदय सुन भाई * वचन दोष उनको कछु नाई ।
निष्कलंक मन होय सु जिनका * लगे वचन में नहीं कलंका ॥
यह मन सोच वचन में दीना * विजय कामना हित ग्रह कीना ।
उपरम्भा अब दल में आवे * विद्या तुम्हें आन सिखलावे ॥
विद्या सिद्ध करो दुखदाई * दैय पुनः उसको समझाई ।
नल कुँवर को वश में करके * विजय कामना मन में धर के ॥
पुनः स्वीकार वचन मत करना * कुल की नीति सुमन में भरना ।
नीति युक्त समझा रानी को * अमल रखो तुम निज बानी को

दोहा

श्रवण विभीषण के वचन * कर आया सन्तोष ।
मन विचार निश्चर धनी * मधव किया सब रोष ॥ ८३ ॥

चौपाई

आलिंगन उत्सुक उपरम्भा * आई निजपति से कर दंभा ।
लंपट कपट लोभ मन वाली * विद्या आन सिखाइ प्रशाली ॥
रक्षक मंत्र बताये विधाना * व्यंतर मंत्र दिये शुभ माना ।
विद्या साधन करके रावण * लागा कृत करने मन भावन ॥
अग्नि कोट दशकन्ध विदारा * सैना सहित नगर पग धारा ।
समर करन नल कुँवर आये * अस्त्र शस्त्र सज्जित ले धाये ॥
तुरत विभीषण सम्मुख आकर * देखा रिपु को दृष्टि उठा कर ।

लिया बांध करा नहीं वारा * दश कन्धर की नज़र गुज़ारा।

दोहा

अजय हुवे दशकंठ नृप * मार इन्द्र का मान ।
चक्र उठा लंकेश ने * रक्खा अपने पान ॥ ८४ ॥

चौपाई

करी नम्रता शरण में आये * नल कुँवर ने शीश नवाये ।
देखी नम्रता मन दया कर * दिया नगर पुनः लौटा कर ॥
विजय मोद दश कंठ मनाये * हृदय मुदित न हृष समाये ।
उपरंभा की ओर निहारा * नीति युक्त मुख वचन उचारा॥
भद्र ! मानो वचन हमारा * निज पति प्रेम करो स्वीकारा ।
योग्य पति के तुम ही कामिन * मेरे योग्य नहीं मन भामिन ॥
गुरु सम तुम्हें निहारू माता * दे विद्या कीनी सुख साता ।
गुरु पत्नी नृप तिय पर दारा * नीति समान मात उच्चारा ॥

दोहा

सम भगनी लघु सुता सम * ज्येष्ट सु मात समान ।
नीति वचन कैसे तर्जूं * सुनो लगा कर कान ॥८५॥

चौपाई

दोनों ही कुल शुद्ध तुम्हारे * हृदय रहो शुद्धता धारे ।
युग कुल में नहीं लगे कलंका * मम वचनों पर करो न शंका ॥
शिक्षा दे मन मुदित बनाया * नल कुँवर को पास बुलाया ।
उपरम्भा से आग्रह कीना * सौंप सु नल कुँवर को दीना ॥
नलकुँवर मन सुख अपारा * लंकापति हित से सत्कारा ।
सन्माना सत्कारा राजा * भूपति हित से कीना काजा ॥
रावण करी गमन की त्यारी * आज्ञा दे सेना शृंगारी ।
सेना सहित पधारे आगे * मन में भाव विजय के जागे ॥

दुर्व्यसनी दुर्जन दुराचारी * दुर्दृष्टि दुर्नीति विचारी ।
इनसे करे मित्रता जोई * नाशे वेग न संशय कोई ॥

दोहा

सुन सकोप बान्धव वचन * कहे विभीषण बैन ।
निज प्रसन्न मन कीजिये * सुनिये मेरी कहैन ॥ ८२ ॥

चौपाई

जिनके शुद्ध हृदय सुन भाई * वचन दोष उनको कछु नाई ।
निष्कलंक मन होय सु जिनका * लगे वचन में नहीं कलंका ॥
यह मन सोच वचन में चीना * विजय कामना हित यह कीना ।
उपरम्भा अब वश में आवे * विद्या तुम्हें आन सिखलावे ॥
विद्या सिद्ध करो हुलसाई * देय पुनः उसको समझाई ।
नल कुँवर को वश में करके * विजय कामना मन में धर के ॥
पुनः स्वीकार वचन मत करना * कुल की नीति सुमन में धरना ।
नीति युक्त समझ वामी को * अमल रखो तुम निज बानी को

दोहा

श्रवण विभीषण के वचन * कर आया सन्तोष ।
मन विचार निश्चर धनी * मयक किया सब रोष ॥ ८३ ॥

चौपाई

आलिंगन उत्सुक उपरम्भा * आई निजपति से कर दम्भा ।
लैपट कपट सोच मन चाली * विद्या आन सिखाइ प्रणाली ॥
रक्षक मंत्र बताये विधाना * व्यंतर मंत्र दिये शुभ नाना ।
विद्या साधन करके रावण * लागा दूत करने मन भावन ॥
अग्नि कोट दशकन्ध विदारा * सैना सहित नगर पग धारा ।
समर करन नल कुँवर आये * अस्त्र शस्त्र सज्जित से धाये ॥
तुरत विभीषण सम्मुख आकर * देखा रिपु को दृष्टि वक्र कर ।

लिया बांध करा नहीं वारा * दश कन्धर की नज़र गुज़ारा।

दोहा

अजय हुवे दशकंठ नृप * मार इन्द्र का मान ।
चमक उठा लंकेश ने * रक्खा अपने पान ॥ ८४ ॥

चौपाई

करी नम्रता शरण में आये * मल कुँवर ने शीश नवाये ।
देखी नम्रता मन हर्षा कर * दिया नगर पुन लौटा कर ॥
विजय मोद दश कंठ मनाये * हृदय मुदित न हर्ष समाये ।
उपरंभा की ओर निहारा * नीति युक्त मुख वचन उचारा॥
भद्र ! मानो वचन हमारा * निज पति प्रेम करो स्वीकारा ।
योग्य पति के तुम ही कामिन * मेरे योग्य नहीं मन मामिन ॥
गुरु सम तुम्हें निहारूं माता * दे विद्या कीनी सुख साता ।
गुरु पत्नी नृप तिय पर दारा * नीति समान मात उच्चारा ॥

दोहा

सम भगनी लघु सुता सम * ज्येष्ट सु मात समान ।
नीति वचन कैसे तजूं * सुनो लगा कर कान ॥८५॥

चौपाई

दोनों है कुल शुद्ध तुम्हारे * हृदय रहो शुद्धता धारे ।
युग कुल में नहीं लगे कलंका * मम वचनों पर करो न शंका ॥
शिक्षा दे मन मुदित बनाया * मल कुँवर को पास बुलाया ।
उपरम्भा से आग्रह कीना * सौंप सु मल कुँवर को दीना ॥
मलकुँवर मन सुख अपारा * लंकापति हित से सत्कारा ।
सम्माना सत्कारा राजा * भूपति हित से कीना काजा ॥
रावण करी गमन की त्यारी * आज्ञा दे सेना शृंगारी ।
सेना सहित पधारे आगे * मन में भाव विजय के जागे ॥

दुर्व्यसनी दुर्जन दुराचारी * दुर्दृष्टि दुर्नीति विचारी ।
इनसे करे मित्रता जोई * नाश वेग न संशय कोई ॥

दोहा

सुन सकोप याम्बव वचन * कहे विभीषण वैन ।
निज प्रसन्न मन कीजिये * सुनिये मेरी कहैन ॥८२॥

चौपाई

जिनके शुद्ध हृदय सुन भाई * वचन दोष उनको कछु नाहीं ।
निष्कलंक मन हृदय सु जिनका * लगे वचन में नहीं कलंका ॥
यह मन साथ वचन में दीना * विजय कामना हित यह कीना ।
उपरभा जब दल में आवे * विद्या तुम्हें आन सिखलावे ॥
विद्या सिद्ध करो हुलसाई * देय पुनः उसको समझाई ।
नल कुंवर को वश में करके * विजय कामना मन में धरके ॥
पुन स्वीकार वचन मत करना * कुल की नीति सुमन में धरना ।
नीति युक्त समझा रानी को * अमल रखो तुम निज पानी को

दोहा

श्रवण विभीषण के वचन * कर आया सन्तोष ।
मन विचार निश्चय धमी * प्रथक किया सब रोष ॥८३॥

चौपाई

आलिंगन उत्सुक उपरम्भा * आई निजपति से कर क्षमा ।
लपट कपट साथ मन चाली * विद्या आन सिखाई मशाली ॥
रचक मत्र बनाय विधाना * व्यन्तर मत्र दिये शुभ नामा ।
विद्या साधन करके रावण * लागा इन कारज मन भावन ॥
अग्नि कोट दशकन्ध बिनाशा * सेना सहित नगर पग धारा ।
नगर नरेश नल कुंवर आप * अस्त्र शस्त्र सज्जित ले धाये ॥
तुरत विभीषण सम्मुख आकर * दया रिपु को दृष्टि पडा कर ।

दोहा

चक्र सुदर्शन से लिया * लिया अग्नि का कोट।
नल कुँवर को पकड़ कर * कर लीना निज ओट ॥८८॥

चौपाई

यहु चलिया रावण चढ़ आया * तेज प्रताप विश्व में छाया।
प्रलय काल की अग्नि समाना * उछल रावण है मन माना ॥
मिष्ट वचन से आये मनाये * अपना प्रेम स्नेह जनाये।
रूपवती कन्या के सगा * करो विवाह यह प्रसगा ॥
उत्तम है सम्बन्ध विचारो * होय कुशल सन्धि मन धारो।
सुन पितु वचन क्रोध मन छाया * अरुण वर्ण निज वदन बनाया ॥
लोचन लाल लाल रतनारे * फरकत अधर सु वचन उचारे।
अस कहे करो पिता अब काजा * वधन योग्य है रावण राजा ॥

दोहा

परम्परा गति वैर है * नहीं आधुनिक वैर।
आया सनमुख इन्द्र के * अब मत समझो खैर ॥८६॥

चौपाई

स्मरण कुछ कीजे मन माँही * विजयसिंह तुमरे कुल माँही।
पुनः यह कुल माँहि तुम्हारे * उन सगी राजा मे मारे ॥
रिपु का मित्र है शत्रु समाना * यह हितकर अपना नहीं जाना।
पिता मात लंका पति केरे * माली ने वश किये घनेरे ॥
उस को जीत लिया समझाऊँ * इसकी वैसी कुगति बनाऊँ।
लका पति क्या मेरे समाना * रवि सन्मुख खद्योत निशाना ॥
सैना साज सकल चढ़ जाऊँ * यह रण कौशल आय दिखाऊँ।
धरती हिले कँपे असमाना * मेरु डिग मिग हिले सुजाना ॥

दोहा

सैना संग रजनी पति * चले शीघ्रता धार।
रथनूपुर लिया घेर कर * राके गढ़ के द्वार।

चौपाई

सुनकर सहस्रार नृप आये * निज नन्दन को पास बुलाये।
झूठो युद्ध न कर सुत प्यारे * मन में सोचो वचन हमारे॥
पुत्र आप को अति बल सागर * अपने कुल को किया उजागर।
यशोभति उत्कृष्ट दिखाई * कुल की ध्वजा आकाश उड़ाई॥
रिपु के उन्नति यश गिराय * निज प्राक्रम से कर दिखलाये।
नीति वचन अपने सिर धारो * लालन मानो वचन हमारे।
प्राक्रम रहा निरन्तर किस का * बली नित पराक्रम से जिसका॥
पौरुष का अभिमान न कीजे * वचन हमारे चित्त में दीजे॥

दोहा

उत्तर सुनकर लाइये * अपने मन में ज्ञान।
सुकर्म राक्षस वंश में * रावण हुआ सुजान॥८७॥

चौपाई

महा शक्ति शाली बलिकारी * शक्ति हरे रिपु गण की सारी।
जिन प्रताप सु भानु समाना * जीता सहस्रांस बलवाना॥
अष्टापद गिरी लिया उठाई * बल की तासु थाह नहिं पाई।
यज्ञ भंग करी नृप का दीना * नाम मरुत नृप का हर लीना॥
जम्बूद्वीप वरुण बलवाना * तिसका भी नहिं मन भय माना।
ऋषि की करी स्तुति आई * देख्या सुरपति ने दर्याई॥
शांति प्रभाव मुदित हो दीनी * शक्ति न गुनी जन कर धाली।
दो भुज जिस की हैं बलवाना * युगल भाल युग भुजा समाना॥

दोहा

कुल कलंक कायर अचल * दीन हीन भूपाल ।
दास बने होंगे वही * मैं हूँ बाहु विशाल ॥६२॥

चौपाई

दशकन्धर बहु दिन सुख पाये * उन के दिन दुख कर अब आये ।
आम पड़ा इन्द्र से पाला * सिंह गुहा में जो कर डाला ॥
अपने स्वामी से कह जाके * करी भेंट ले आन बचा के ।
दीन बने आये मम पासा * किन्तु होय क्षणिक में नाशा ॥
सुनकर वचन दूत चल दीना * स्वामी के तट का पथ लीना ।
समाचार दिये आय सुनाई * क्रोध वदन रावण के छाई ॥
रण भेरी बजवा उस वारा * कटक विकट सज गया जुझारा ।
जैसे श्याम घन चढ़े घुमड़ कर * निर्झर दल ज्यों चला उमड़कर ॥

दोहा

युगल सैन सम्मुख भई * देखा दृष्टि पसार ।
दो सागर ज्यों परस्पर * तजें नीर की धार ॥ ६३ ॥

चौपाई

सामन्तों से भिड़ सामन्ता * सैनिक से सैनिक बलवन्ता ।
घन सम गर्जे धीर जुझारे * एक-एक पर शस्त्र मारे ॥
खग अनी का हो चमकारा * ज्यों चपला का होय उजारा ।
सर सर सर बर्षे रण कैसे * पुष्करावर्त मेघ होय जैसे ॥
छोड़े बड़-बड़ के हथियारा * विकट युद्ध हो रहा अपारा ।
भुवनालंकार करी असवारी * चौंध शस्त्र रावण बलिधारी ॥
ऐरावत की कर असवारी * इन्द्र आन डट गये अगारी ।
दोनों गज भिड़ गये जुझारे * दो पर्वत ज्यों रहे टकरारे ॥

दोहा

सूडों में सूडें मिला * गज ने चरण अड़ाय ।

दोहा

चढ़ कर रण मैदान में * हूँ दिखाय कुशलात ।
लंकापति चरणों पड़े * अभय रहो तुम तात ॥६०॥

चौपाई

मेरे रोष कहो मैं कैसे * आज्ञाकारी हूँ पितु जैसे ।
वसुधा को चक्कर में लाऊं * मम को तोर मरोर दिखाऊँ ॥
मेरू को विसलाऊँ रज कर * रावण पचे न रण से भज कर।
देखूं कैसा धीर उद्दंडा * खण्ड-खण्ड कर दूँ भुज दण्डा ॥
मुदित होय दीजै अनुशासन * लूँ अपने कर उठा सरासन ।
मम विषय मत दुजै ताता * शीघ्र विजय मैं कर के आता ॥
तुच्छ पदार्थ सामने मेरे ऐसे नृप किये विजय घनेरे ।
पारुष सब मेरा तुम जानो फिर कैसे भय मन में मानो ॥

दोहा

इन्द्र निकट दशकण्ठ का * आया दूत सुजान ।
सूचित कर कहने लगा * सुनो लगा कर कान ॥६१॥

चौपाई

भुज बल का था जिन्हें गुमाना विद्याबल जिन निकट महाना।
उनका गर्व खण्ड कर लीना रण में उन्हें पराजय कीना ॥
दास भाव सबा स्वीकारी रावण की आज्ञा सिर धारी।
दया उन्हीं की से सब राजा * करते रहे राज के काजा ॥
अब बल कर भारि विरुदाओ * चक्र भेंट तुरत मिल जाओ ।
भाहि विमार लंकपति स्वामी * रीझें करें प्रेम अति नामी ॥
मान मर्दन ना शक्ति अपारा * करो प्रदर्शित सब संसारा ।
ना मन मोदा सा कोन कामा * विश्व बीच होय जैन नामा ॥

चौपाई

सहस्रार आयुष स्वीकारा * सघायुष युत हो छत सारा।
तीन खड पति मुदित अपारा * हित से सुरपति को सत्कारा॥
कारागार से मुक्त कराया * रथनुपुर को निज सग लाया।
राज लगा करने पुर आके * मन में चिन्ता रही अला के॥
कहे इन्द्र से अस दिगपाला * सुनिये विनय क्षणिक भूपाला।
आरत कौन हेत तुम करते * निश वासर अश्रु लोचन भरते॥
सुन प्रिय मित्र सु शब्द हमारे * नृपति मीत ने जो उचारे।
सो मैं तुम्हें सुनाऊँ सादर * सुन कर करना नहीं निरादर॥

दोहा

इन्द्र कहे मित्रों सुनो * मम थोरी कर ध्यान।
विनशे जो चिन्ता नहीं * तो कैसा कल्याण॥६७॥

चौपाई

प्रिया वियोग कुयश जग माँही * युद्ध पराजय शूर सिपाही।
कुत्सित भूपति की सियकाई * यह बिन अग्नि दग्ध करे भाई॥
यह सब कष्ट मिटे गुरुवर से * ज्ञानी हरे शोक अन्तर से।
आये इक अणगार कृपालु * जीव मात्र के मन से दयालु॥
सुन कर चले भूप हर्षा के * आनंद बढ़ा सुदर्शन पाके।
विनय सहित वदन नृप कीनी * शान्ति स्वभाव ऋषि छविचीनी
देख थी मुनि को निर्मानी * शान्ति स्वभाव तपस्वी ज्ञानी।
विनय करी सुनो दीन दयाला * मेरा दुख टालो कृपाला॥

दोहा

बोले ज्ञानी उस समय * सुनो भूप दे कान ।
अरजयपुर में ज्वलनसिंह * नृप था युद्ध निदान॥६८॥

ज्यों भुजग काले निपट * गहे युगल लिपटाय ॥ ६४ ॥

चौपाई

फणपति सर सम सूँड लपेटी * न कोइ दीर्घ न कोई हेटी।
करें परस्पर युद्ध शुभ्कारे * जैसे युग कुँअर मतवारे ॥
दोऊ वलवान शत्रु भुकभारे * खण्ड करें भूमि पर डारें।
रावण उछल गये गज पे से * जैसे गिरी मन्द्र अम्बर से ॥
टूटे वाज लवा पर जैसे * फीलवान पर रावण तैसे।
दियो महावत मार गिराई * इन्द्र भूप की मुश्क चढ़ाई ॥
इन्द्र बँधा दृष्टि में आया * सेना जै जै कार मचाया।
भागी सैन इन्द्र की सारी * दशकन्धर आनंदित भारी ॥

दोहा

इन्द्र पकड़ लीना तुरत * बचा न कोई शेष।
ऐरावत पुत लंकपति * किया कटक प्रवेश ॥६५॥

चौपाई

विजय बाज दशकंठ बजाया * हर्ष सहित लंका में आया।
मोदित पुर के सब नर नारी * हर्ष मना रही प्रजा सारी ॥
नमस्कार लंकापति कीना * लाकर बन्द इन्द्र कर दीना।
लज्जायुक्त कर मस्तक नीचा * करते भ्रम कारागृह बीचा ॥
इन्द्र पिता सुचित जब कीने * समाचार सेना ने दीने।
सहस्रांस सग ले दिग्पाला * लकापति के तट जब चाला ॥
पहुँचे जब लंका में जाई * हाथ जोड़ कर विनय सुनाई।
छोड़ इन्द्र को यो मम इच्छा * सहस्रांस माँगे सुत भिक्षा ॥

दोहा

इन्द्र बुहारे लंक को * कचरा फेंक बार।
दिव्य सुगंधित नीर से * सींचे हाट बजार ॥ ६६ ॥

चौपाई

सहस्त्रार आयुष स्वीकारा * तथायुष युत हो कुल सारा।
तीन खण्ड पति मुदित अपारा * हित से सुरपति को सत्कारा॥
कारागार से मुक्त कराया * रथनुपुर को निज संग लाया।
राज लगा करने पुर आके * मन में चिन्ता रही जला के॥
कहें इन्द्र से अस दिगपाला * सुनिये विनय वाणिक भूपाला।
आरत कौन हेत तुम करते * निश वासर जल लोचन भरते॥
तुम प्रिय मित्र सु शम्भु हमारे * नृपति नीत में जो उच्चारे।
सो मैं तुम्हें सुनाऊं सादर * सुन कर करना नहीं निरादर॥

दोहा

इन्द्र कहे मित्रों सुनो * मम थोरी कर ध्यान।
विनशे जो चिन्ता नहीं * तो कैसा कल्यान॥६७॥

चौपाई

त्रिया वियोग कुयश जग माँही * युद्ध पराजय शूर सिपाही।
कुत्सित भूपति की सिवकाई * यह विन अग्नि दग्ध करे भाई॥
यह सब कष्ट मिटे गुरुवर से * ज्ञानी हरे शोक अन्तर से।
आये इक अणगार कृपालु * जीव मात्र के मन से दयालु॥
सुन कर चले भूप हर्षा के * आनद बढ़ा सुदर्शन पाके।
विनय सहित वन्दन नृप कीनी * शान्ति स्वभाव ऋषि कुविधीनी
देख थी मुनि को निर्मानी * शान्ति स्वभाव तपस्वी ज्ञानी।
विनय करी सुनो दीन दयाला * मेरा दुःख टालो कृपाला॥

दोहा

बोले ज्ञानी तस्स समय * सुनो भूप दे कान।
अरजयपुर में ज्वलनसिंह * भूप था युद्ध निदान॥६८॥

चौपाई

कन्या एक अहिल्या नामा ॥ यौवन वय में कहा अस धामा।
सुन कर भूपति किया आडम्बर ॥ पुत्री का रचा दिया स्वयंवर॥
तड़ित प्रभा अरु आनन्दमाली ॥ मण्डल की द्युति देखी माली।
वरमाला ले कन्या चाली ॥ आनन्दमाली के गल डाली॥
तड़ित प्रभा समझा अपमाना ॥ चाहा मन तीय का हथियाना।
समय पाय के आनन्दमाली ॥ संयम ले शुद्ध समकित पाली॥
तीव्र तपस्या करी मुनिराया ॥ आतम का सत आनंद पाया।
रथवर्त पर्वत मुनि आके ॥ सिद्धों का लिया ध्यान लगा के॥

दोहा

तड़ित प्रभा आया वहाँ ॥ देखा दृष्टि पसार ।
कोप विवश मुनि को कसा ॥ पुन दीनी है मार ॥ ९९ ॥

चौपाई

वही पाप उदय यहां आया ॥ तड़ित प्रभा तू है यह राया ।
होय मस्त नर बान्धे कर्मा ॥ सोचे नहीं न्याय अरु धर्मा॥
भोगे फल वो-वो नर-नारी ॥ जीव मात्र नर जो संसारी।
हो अणगार तजा जिन गेहा ॥ उनके रहे कर्म नहिं देहा॥
मुनि उपदेश भूप मन भाया ॥ दीक्षा लेने को मन धाया ।
दसवीर नृप सुत प्रवीना ॥ राज भार प्रिय सुत को दीना॥
भूपति ने सुन दीक्षा धारी ॥ किया उग्र तप संशय टारी।
मोक्ष पधारे इन्द्र भुपाला ॥ शुद्ध भाव पर संयम पाला ॥

दोहा

त्याग मुक्त गिरि पर गये ॥ वन स्थित लंकेश ।
अमल धीय नहीं बयर्मी ॥ तज राग अरु द्वेष ॥१००॥

चौपाई

मोद सहित लङ्का पति धाये * हर्ष मगन हो सम्मुख आये।
नम्र भाव मुनि वन्दन कीना * ला मन चरण कमल चित दीना
सब बैठे नृप शुभ स्थाना * करे धर्मयुत श्रवण बखाना।
विनय सहित लंका पति बोला * विनय करन हित आनन खोला॥
भगवन विनय मेरी सुन लीजे * इतनी दया दास पर कीजे।
ज्ञानी हो कुछ करो उच्चारन * लंका पति मृत्यु का कारन॥
मुनिवर कहे वचन गंभीरा * सुन सरिचली मनो मांहि चीरा।
पर तिय हेत सुमय सुन पाई * वासुदेव से तब प्रभुताई॥

दोहा

मारेगा तुम को सही * वासुदेव अवतार।
सुनकर मुनिवर के वचन * मन में किया विचार॥१०१॥

चौपाई

जो विन सुमन न मुक्त को चाहे * उससे नृप नहिं प्रेम निबाहे।
लंकापति ने मत यह लीना * वन्दन कर चित पथ से दीना॥
पुष्पक यान हुए असवारा * और लंक को तुरत सिधारा।
पहुँच गये लंका के माँही * देखा भूपति दृष्टि उठाई॥
नीति युक्त इत करे लंकेशा * उन्नतिवान होय जिम देशा।
वैभव धन मुदित अति मन में * बड़े-बड़े नृप रह चरनन में॥
जितने नृप के हैं कर्मचारी * नीति वान अरु परोपकारी।
प्रजा सदा आनद मनावे * नीति भूप की हृदय लगावे॥

* दशकण्ठ दिग्विजय समाप्तम् *

श्री हनुमान जन्म

दोहा

आओ माई भगवती * हृदय करो निवास ।
अचल सुख दाता तुही * काटो जग की त्रास ॥१०२॥

बहर खड़ी

कर त्रास नाश माता जग की * सुख दाता आशा दासों की ।
कर पूर्ण आश मेरी अब तो * पूर्ण कर्ता विश्वासों की ॥
आसन कर कण्ठ मेरे मा के * शुभ अक्षर वर्ण बता दीजे ।
किस भाँति लिखूं हनुमत जीवन * सुपने में ज्ञान जता दीजे ॥
अरत्नपुर सा आदित्य नगर * यहाँ तेजस्वी बलवान् हुये ।
उस ही सुन्दरपुर में आकर * बलवान महा हनुमान हुये ॥
प्रहलाद भूप के सुगर तनय * पौरुष बल बुद्धि निधान हुये ।
उनकी अर्धांगनी महा सती * अंजनी के सुत हनुमान हुये ॥

दोहा

सुन्दर शोभा से सुगर * गिरि वैताढ्य निदान ।
बसा जहाँ आदित्यपुर * आदितपुर उनमान ॥१०३॥

बहर खड़ी

परजन पुरजन को सुख दाता * दुख हरता करता राज सुगर ।
मोहित कर लिये चतुरता से * यश गाते थे जिसका घर-घर ॥
हट हुक्म तेज लबरेज़ नीति * सबको प्रतीत थी राजा की ।
सुफना जहान चहु तेजवान् * गाते शुभ कीर्ति सुधाजा की ॥

लाखों थे वीर धीर उनके ❀ पुर का भूपत प्रहलाद हुआ।
लख केतुमति सुन्दर सुखान ❀ नृप के मन में अहलाद हुआ॥
फर गये किनारा दुख सारे ❀ अब सुखका समय निकट आया
विस्मित सब हुये राय राणा ❀ नृप प्रिय ने ऐसा सुत जाया॥

दोहा

सुगर पवजय नाम से ❀ हुआ सुत विख्यात।
गगन पथ में पवन सम ❀ चल अकून शुभ गात॥१०४॥

बहर खड़ी

गुण के समान शुभ नाम दिया ❀ भूपति सुत देख हरषते थे।
तोतल बोली के मधुर वचन ❀ बोले थे सुधा बरषते थे॥
वय बाल व्यतीत हुई जिस दम ❀ पग युवा अवस्था में धारा।
विद्या में निपुण हुये भारी ❀ सब पुरुष कला सीखा प्यारा॥
कर कौशल शीख मुदित मन में ❀ आगे सीखन का ध्यान धरें।
छोड़ें प्रसग यह इसी जगह ❀ आगे का और बयान करें॥
अब सिन्धु किनार पर चल कर ❀ वहाँ का भी दृश्य दिखात हैं।
गुण ग्राही गुण को ग्रहण करें ❀ सत गुण जहँ तहँ पद पाते हैं॥

दोहा

उसी समय उस काल में ❀ भरत क्षेत्र मझधार।
सिन्धु किनारे पर बसे ❀ पुर महेन्द्र नर सार॥१०५॥

बहर खड़ी

इस पुर का नाम करया सुन्दर ❀ सुन्दर नरेन्द्र के नाम पे था।
जैसा था नाम परम सुन्दर ❀ वैसे सुन्दर शुभ काम पे था॥
महि इन्द्र महेन्द्र नाम जिनका ❀ शुभ कामों में वह इन्द्र ही थे।
नभ में उडुगण के बीच शशि ❀ नर इन्द्रों में वह चन्द्र ही थे॥
पटरानी वेगा थी जिनकी ❀ शुचि भव्य स्वरूप सुरमा सी।

श्री हनुमान जन्म

दोहा

आद्या माई भगवती * हृदय करो निवास ।
मंगल सुख दाता तुही * काटो जग की त्रास ॥१०२॥

बहर खड़ी

कर त्रास नाश माता जग की * सुख दाता माता दासों की ।
कर पूर्ण आश मेरी अब तो * पूर्ण कर्ता विश्वासों की ॥
आसन कर कण्ठ मेरे मा के * शुभ अक्षर वर्ण बता दीजै ।
किस भांति सिंह हनुमत जीवन * सुपने में भाव जता दीजै ॥
अरवलापुर था आदित्य नगर * यहाँ तेजस्वी बलवान हुये ।
उस ही सुन्दरपुर में आकर * बलवान महा हनुमान हुये ॥
प्रह्लाद भूप के सुघर समय * पौरुष बल बुद्धि निधान हुये ।
उसकी अर्द्धांगी महा सती * अंजनी के सुत हनुमान हुये ॥

दोहा

सुन्दर शोभा से सुघर * गिरि वैताड़ निवास ।
बसा जहाँ आदित्यपुर * आदित्यपुर उनमान ॥१०३॥

बहर खड़ी

परजन पुरजन को सुख दाता * दुख हरता करता राज सुघर ।
आदित्य कर लिये वसुधा से * यश गाते थे जिसका घर घर ॥
हट दुश्मन तेज लबरेज नीति * सबको प्रतीत थी राजा की ।
सुकला जहान बहु तेजवान * गाते शुभ कीर्ति सुकाजा की ॥

लाखों थे वीर धीर उनके ❁ पुर का भूपत प्रहलाद हुआ।
लख केतुमति सुन्दर सुआन ❁ नृप के मन में अहलाद हुआ॥
कर गये किनारा दुख सारे ❁ अब सुख का समय निकट आया
विस्मित सब हुये राव राणा ❁ नृप प्रिय ने ऐसा सुत जाया॥

दोहा

सुघर पवनजय नाम से ❁ हुआ सुत विख्यात।
गगन पथ में पवन सम ❁ चल अकृम शुभ गात॥१०४॥

बहर खड़ी

गुण के समान शुभ नाम दिया ❁ भूपति सुत देख हरषते थे।
तोतल बोली के मधुर वचन ❁ बोले थे सुधा बरषते थे॥
वय बाल व्यतीत हुई जिस दम ❁ पग युवा अवस्था में धारा।
विद्या में निपुण हुये भारी ❁ सब पुरुष कला सीखा प्यारा॥
कर कौशल शीख मुदित मन में ❁ आगे सीखन का ध्यान धरें।
छोड़ प्रसंग यह इसी जगह ❁ आगे का और बयान करें॥
अब सिन्धु किनारे पर चल कर ❁ वहाँ का भी दृश्य दिखाते हैं।
गुण ग्राही गुण को ग्रहण करें ❁ सत गुण जहँ तहँ वह पाते हैं॥

दोहा

उसी समय उस काल में ❁ भरत क्षेत्र मझदार।
सिन्धु किनारे पर बसे ❁ पुर महेन्द्र सर सार॥१०५॥

बहर खड़ी

इस पुर का नाम करण सुन्दर ❁ सुन्दर नरेन्द्र के नाम पे था।
जैसा था नाम परम सुन्दर ❁ वैसे सुन्दर शुभ काम पे था॥
महि इन्द्र महेन्द्र नाम जिनका ❁ शुभ कामों में वह इन्द्र ही थे।
नभ में उडुगण के बीच शशि ❁ नर इन्द्रों में वह चन्द्र ही थे॥
पटरानी वेगा थी जिनकी ❁ शुचि भव्य स्वरूप सुरमा सी।

श्री हनुमान जन्म

दोहा

आओ माइ भगवती * हृदय करो निवास ।
अचल सुख दाता तुही * काटो जग की त्रास ॥१०२॥

बहर खड़ी

कर त्रास नाश माता जग की * सुखदाता माता दासों की ।
कर पूर्ण आश मेरी अब तो * पूर्ण कर्ता विश्वासों की ॥
आसन कर कण्ठ मेरे मां के * शुभ अक्षर वर्ण बता दीजै ।
किस भाँति सिरू हनुमत जीवन * सुपने में ज्ञान जता दीजै ॥
अरथलापुर सा आदित्य नगर * वहाँ तेजस्वी बलवान् हुये ।
उस ही सुन्दरपुर में आकर * बलवान महा हनुमान हुये ॥
प्रह्लाद भूप के सुगर तनय * पौरुष बल बुद्धि निधान हुये ।
उनकी अर्धांगनी महा सती * अञ्जनी के सुत हनुमान हुये ॥

दोहा

सुन्दर शोभा से सुगर * गिरि बैताढ निवास ।
बसा जहाँ आदित्यपुर * आदितपुर उनमान ॥१०३॥

बहर खड़ी

परजन पुरजन को सुख दाता * कुल हरसा करता राज सुगर ।
मोहित कर लिये चतुरता से * यश गाते थे जिनका घर घर ॥
हर हुक्म तेज सबरेज नीति * सबको प्रतीत थी राजा की ।
झुकता जहांन बहु तेजवान् * गाते शुभ कीर्ति सुकाजा की ॥

ज्योतिष विद्या के चतुर मनुष * यों बात काट कर कहन लगे।
जिस तरह सतो गुण के समुद्र * मर्याद त्याग कर बहन लगे॥

दोहा

सुन बरखा दरबार में * बोले चतुर सुजान।
जिसकी तुम कीरत करो * उसका सुनो बयान॥१०८॥

बहरतवील

जो मेघनाद सुन्दर स्वरूप * सब गुण सम्पन्न बताते हो।
सर्वाभियान पुन: बलशाली * कन्या के योग सुनाते हो॥
यह बरस अठारह का होकर * दीक्षा धारण कर जायेगा।
इस अल्प उम्र में योग साध * तप कर के पुण्य कमायेगा॥
छब्बीस बरस में ही समूल * कर्मों के दल को तोड़ेगा।
संसार से नाता दूर हटा * मुक्ति से नाता जोड़ेगा॥
ज्योतिष से भविष्य सुना दीना * विद्या में तो यही आता है।
मेरी नज़रों में राजकुँवर यह * आयु अल्प दिखाता है॥

दोहा

ऐसे राज कुमार से * कैसे होय सम्बन्ध।
रत्नपुरी के नृपति का * सुन्दर है फरजन्द॥१०९॥

बहरतवील

राजा हैं विद्याधारों के यह * उनका है सुघर कुँवर प्यारा।
है नाम पवनंजय विद्यमान * पहलाद की आँखों का तारा॥
विख्यात शुभ गुणों में यह है * अतिशय अनुकूल योग वर है।
रति के समान जो पुत्री है * तो कामदेव सुन्दर नर है॥
दर्बार बीच विद्वान जो थे * विद्वान सबों की अनुमति से।
सम्मति स्वीकार करी नृप ने * ऐसा अविचल सुन्दर पति से॥
नृप ने बुलवाकर राज दूत * सन्देश रत्नपुर भेज दिया।

थी श्यामल सम अमल शशि सा ० वरदान दैन वीरमा सौं ॥
ना पुत्र पय म नय धार ० रण धीर वीर करने वाले।
नर पय गात पुरुष प्रनीत स ० अरि को वश करने वाले ॥

दोहा

शान्ति सुन्दर जनमी सुता ० वैगायन्ती मात ।
मन गुण स जा रागह ० घर घर में विख्यात ॥१०६॥

बहर खड़ी

वह परम दुलारी इकलौती ० सुकुमारी सती अजना थी।
थी कनक लता या बिज्जुलीक ० या मन मथ मान अञ्जना थी॥
निष्कपट भाव म आलापन ० नैसर्गिक सत्य स्वभावी थी।
थी मात पिता की चक्षु अञ्जन ० रञ्जन मन करन सुलाभी थी॥
लख रूप रति मन लाज थी ० गुण में सरस्वती समान थी वह
भव शोभा सदन मधुर भाषित ० माधुरी महा सन्मान थी वह॥
शशि कला समान बढ़ी निशदिन ० सागर सम रूप कला बढ़ती।
चातुरता चपलता चतनता लावण्यता सुन्दरता चढ़ती॥

दोहा

बल बुद्धि विद्या रूप शान्ति गुण गौरव सुख सार।
उत्तयश उत्तम कुखा ~ दक्षो वर अनुसार ॥१०७॥

बरह खड़ी

आज्ञा ली शीश चढ़ा नृप की ० वर ढूंढन जिम्मेदार चले।
व्यवहार कुशल विद्या विशाल ० घट घट के नर हुशियार चले॥
सब देख दिशा विदिशाओं को ० कह दिया हाल नृप से साथ।
जितन थ गये सबों ने आ ० बैयान किया न्यारा-न्यारा॥
कोई मेघनाद विद्युत्प्रभ कुमार ० कन्या के योग बताते थे।
कोई और नाम नृप पुत्रों के ० गुण को शुभ यश को गाते थे॥

ज्योतिष विद्या के चतुर मनुष ❁ यों बात काट कर कहन लगे।
जिस तरह सतो गुण के समुद्र ❁ मर्याद त्याग कर बहन लगे॥

दोहा

सुन चरचा दरबार में ❁ बोले चतुर सुजान।
जिसकी तुम कीरत करो ❁ उसका सुनो बयान॥१०८॥

बहरतबील

जो मेघनाद सुन्दर स्वरूप ❁ सब गुण सम्पन्न बताते हो।
सर्वोत्तम पुनः यशशाली ❁ कन्या के योग सुनाते हो॥
यह बरस अठारह का होकर ❁ दीक्षा धारण कर आयेगा।
इस अल्प उम्र में योग साध ❁ तप कर के पुण्य कमायेगा॥
छब्बीस बरस में ही समूल ❁ कर्मों के दल को तोड़ेगा।
संसार से नाता दूर हटा ❁ मुक्ति से नाता जोड़ेगा॥
ज्योतिष से भविष्य सुना दीना ❁ विद्या में जो यही आता है।
मेरी नज़रों में राजकुँवर यह ❁ आयु अल्प दिखाता है॥

दोहा

एसे राज कुमार से ❁ कैसे होय सम्बन्ध।
रतनपुरी के नृपति का ❁ सुन्दर है फरजन्द॥१०६॥

बहरतबील

राजा हैं विद्याधारों के यह ❁ उनका है सुघर कुँवर प्यारा।
है नाम पवनंजय विद्यमान ❁ पहलाद की आंखों का तारा॥
विख्यात शुभ गुणों में यह है ❁ अतिशय अनुकूल योग वर है।
रति के समान जो पुत्री है ❁ तो कामदेव सुन्दर नर है॥
दर्बार बीच विद्वान जो थे ❁ विद्वान सबों की अनुमति से।
सम्मति स्वीकार करी नृप ने ❁ देखा अविचल सुन्दर पति से॥
नृप ने बुलवाकर राज दूत ❁ सन्देश रतनपुर भेज दिया।

थी श्यामल कमल असम शशि सी ० वरदान देन वीरमा सी ॥
सी पुत्र एक म एक धरि ० रण धीर वीर दल्ने वाले ।
हर एक नीति पूरण प्रबीन से ० अरि को वश करने वाले ॥

दोहा

शचि सुन्दर जनमी सुता ० वेगावन्ती मात ।
मन गुण स आ हागइ ० घर घर में विख्यात ॥१०६॥

यहर खड़ी

उर परम दुलारी इकलानी ० सुकुमारी सखी अंजना थी ।
थी कनक लता या विज्जूलीक ० या मन मथ मान भंजना थी ॥
निष्कपट भाव में आलापन ० नैसर्गिक सत्य स्वभावी थी ।
थी मात पिता की चक्षु अंजन ० रंजन मन करन सुलाभी थी ॥
लख रूप रति मन लाजे थी ० गुण में सरस्वती समान थी वह
शुभ शोभा सदन मधुर भाषित ० माधुरी सुधा सन्मान थी वह ॥
शशि कला समान बढ़ी निशदिन ० सागर सम रूप कला बढ़ती ।
चातुरता चपलता चतनता ० लावण्यता सुन्दरता चढ़ती ॥

दोहा

बल बुद्धि विद्या रूप शुचि गुण गौरव सुख सार ।
उभयश उत्तम फली ० बढ़ो वर अनुसार ॥१०७॥

बरह खड़ी

माता सी शोश चढ़ा नृप की ० वर ढूँढन जिम्मेवार चले ।
व्यवहार कुशल विद्या विशाल ० पढ़ पढ़ के नर हुशियार चले ॥
सब देख विद्या विदिशाओं को ० कह दिया हाल नृप से सारा ।
जितने थे गये सभी ने आ ० बैयान किया न्यारा-न्यारा ॥
कोई मेघनाद विद्युति कुमार ० कन्या के योग्य बताते थे ।
कोई और नाम नृप पुत्रों के ० गुण को शुभ यश को गाते थे ॥

अति शीरायान शशि के समान * नृप के घर का उजियाला है ॥

दोहा

सुन कर उत्सुकता बढ़ी * हुआ प्रेम सचार।
घड़ी दिवस दिन मास सम * जाने राज कुमार ॥११२॥

बहर खड़ी

अपने प्रेमी से मिलन हेत * आतुरता का आवेश हुआ।
उस परम सुन्दरी प्रेमणी का * नश-नश में प्रेम प्रवेश हुआ॥
मंत्री से परामर्श करके * चलने के निमित्त हुशियार हुये।
सुन्दर विमान मगधा सवार * मन्त्री अरु राजकुमार हुये॥
अति शीघ्र गमन कर गगन पथ * महेन्द्र नगर प्रस्थान किया।
उत्साह हृदय मन भामिन का * मिलने का मन में ध्यान किया॥
जाते पवनजय गगनपथ * दिनकर ने इधर पयान किया।
मलिनी खिलगई शशिको विलोक*निशिनाथ का गुन गान किया॥

दोहा

ललित लालमा लखर दो * निशि का हुआ प्रकाश।
धेनु विपिन को तज चली * वत्स मिलन की आश ॥११३॥

बहर खड़ी

पक्षी तरुओं के पत्तों में * छुप-छुप कर बसेरा करन लगे।
अपने कलरव से कानन की * सुन सान सन्नाटा हरन लगे॥
पाकर के परम प्रसग पात * मारुत से पुन लहलहाने लगे।
अतिथों को मनो इशारों से * मिलने के हेत बुलाने लगे॥
अब निशानाथ उज्जल प्रकाश * इस वसुन्धरा पे करते हैं।
तम का हुलास सब दिया मेट * अब ब्योग दुखों को हरते हैं॥
प्रिय प्रम-पाश में फँसे हुए * जाते हैं पवनञ्जय हर्षाते।
भूमण्डल पर जो दृष्टि पड़ी * देखा शशि अमृत बर्षाते॥

आज्ञा की शीश चढ़ा अपने ० अति शीघ्र गमन दूर्तोंने किया॥

दोहा

दूतों ने दरबार में ० दीना शुभ सन्देश।
व्यय महेन्द्र नृपाल का ० सुन प्रह्लाद नरेश ॥११०॥

बहर खड़ी

सहर्ष प्रार्थना को सुन कर ० अपना स्वीकृति प्रदान करी।
सम्मान किया उन दूतों का ० नृप की नृपेन्द्र ने ध्यान करी॥
दूना का हर्ष विदा किया ० मन में अहलाद समाया है।
थ कस चतुर सुगर नर यह ० खुश हो प्रह्लाद सुनाया है॥
निज पर विद्या के जानकार शारीरिक संपत्ति बलशाली।
थ नीति निपुण स्वारथ त्यागी पुन स्वामी भक्ति उत्तर हाला॥
स्वहित चिंतवन निरंतर हो ० हो समय देख चलनेवाला।
कर्मण्यर प्रज्ञावान भी हो ० निज धर्म से न टलने वाला॥

दोहा

पुत्र पवनंजय ने सुनी ० भूपति की स्वीकृत।
मात् थका मन में अधिक ० अहलादित भये चित्त ॥१११॥

बहर खड़ी

अति मगन प्रेम उन्मादित हैं ० सुन रूप अनुपम बाला का।
रति रंभा शचि रति सुन्दर ० सुन्दरी शुभ रूप विशाला का॥
मन्त्री को पास बुला कर के उर-भाव सभी समझाये हैं।
कसी यह शील रूप गुण हैं ० कुछ तुमने भी सुन पाये हैं॥
मन्त्री मन कर विचार बोले ० गुण सुमे अद्वितीय स्वामी में।
जिस तरह आँख के अनुभव को ० दे सुना शक्ति कहा वाणी में॥
यह एक अद्वितीय रूपवान ० गुणवान भूप की बाला है।

थाति शीरायान शशि के समान * नृप के घर का उजियाला है ॥

दोहा

सुन कर उत्सुकता बढ़ी * हुआ प्रेम सचार।
घड़ी दिवस दिन मास सम * जाने राज कुमार ॥११२॥

बहर खड़ी

अपने प्रेमी से मिलन हेत * आतुरता का आवेश हुआ।
उस परम सुन्दरी प्रेममयी का * नश-नश में प्रेम प्रवेश हुआ ॥
मन्त्री से परामर्श करके * चलने के निमित्त हुशियार हुये।
सुन्दर विमान मगवा सवार * मन्त्री अरु राजकुमार हुये ॥
अति शीघ्र गमन कर गगन पथ * महेन्द्र नगर प्रस्थान किया।
उत्साह हृदय मन भामिन का * मिलने का मन में ध्यान किया॥
जाते पवनजय गगनपथ * दिनकर ने इधर पयान किया।
नलिनी खिलगई शशिको विलोक*निपिनाथ का गुन गान किया ॥

दोहा

लखित लालमा लखर थी * निशि का हुआ प्रकाश।
धेनु विपिन को तज चली * वत्स मिलन की आश ॥११३॥

बहर खड़ी

पक्षी तरुओं के पत्तों में * छुप-छुप कर बसेरा करन लगे।
अपने कलरव से कानन की * सुन सान सन्नाटा हरन लगे ॥
पाकर के परम प्रसग पात * मारुत से पुन लहलहाने लगे।
अतिथियों को मनो इशारों से * मिलने के हेत बुलाने लगे ॥
अब निशानाथ उज्ज्वल प्रकाश * इस वसुन्धरा पे करते हैं।
तम का हुलास सब दिया मेट * अब व्योग दुखों को हरते हैं ॥
प्रिय प्रम-पाश में फँसे हुए * आते हैं पवनजय दर्पाते।
भूमण्डल पर जो दृष्टि पड़ी * देखा शशि अमृत बर्पाते ॥

अञ्जना को साथ चढ़ा अपने अति शीघ्र गमन द्रुतिय किया॥

दोहा

दूतों ने दरबार में दीना शुभ सन्देश।
ध्यय महेन्द्र नृपाल का मन प्रहलाद नरेश॥११०॥

बहर खड़ी

सहर्ष प्रार्थना को सुन कर अपना स्वीकृति प्रदान करी।
सम्मान किया उन दूतों का नृप श्री नृपेन्द्र ने ध्यान करी॥
दूना जो हर्ष पिता किया मन में अहलाद समाया है।
र वस चतुर सगर नर यह खुश हो प्रहलाद सुनाया है॥
निज पर विद्या के जानकार शारीरिक संपत्ति बलशाली।
र नीति निपुण स्वारथ त्यागी पन स्वामी भक्ति उधर ढाला॥
स्थापित चितवन निरन्तर हो हा समय दक्ष चलनेवाला।
समरवर प्रभावान भी हो निज धर्म से न टलने वाला॥

दोहा

पुत्र पवनञ्जय ने सुनी भूपति की स्वीकृत।
मात पिता मन में अधिक अहलादित भये चित्त॥१११॥

बहर खड़ी

अति मगन प्रेम उत्साहित हैं * सुन रूप अनुपम बाला का।
रति रम्भा शचि रति सुन्दर * सुन्दरी शुभ रूप विशाला का॥
मन्त्री को पास बुला कर के उर-भाव सभी समझाये हैं।
वर्णी यह शील रूप गुण हैं * कुछ तुमने भी सुन पाये हैं॥
मन्त्री मन कर विचार बोले * गुण सुने अद्वितीय रानी में।
इस तरह आत्म अनुभव को * है सुना शक्ति कहाँ वाणी में॥
यह पवन अद्वितीय रूपवान * गुणवान भूप की बाला है।

अति शीरावान शशि के समान * नृप के घर का उजियाला है॥

दोहा

सुन कर उत्सुकता बढ़ी * हुआ प्रेम सचार।
घड़ी दिवस दिन मास सम * जाने राज कुमार ॥११२॥

बहर खड़ी

अपने प्रेमी से मिलन हेत * आतुरता का आवेश हुआ।
उस परम सुन्दरी प्रेमणी का * नश-नश में प्रेम प्रवेश हुआ॥
मन्त्री से परामर्श करके * चलने के निमित्त हुशियार हुये।
सुन्दर विमान मगवा मयार * मन्त्री अरु राजकुमार हुये॥
अति शीघ्र गमन कर गगन पथ * महेन्द्र नगर प्रस्थान किया।
उत्साह हृदय मन मामिन का * मिलने का मन में ध्यान किया॥
आते पवनजय गगनपथ * दिनकर ने इधर पयान किया।
नलिनी खिलगई शशिको विलोक*निशिनाथ का गुन गान किया॥

दोहा

लक्षित लालमा लखर वो * निशि का हुआ प्रकाश।
धेनु विपिन को तज चली * वत्स मिलन की आश॥११३॥

बहर खड़ी

पक्षी तरुओं के पत्तों में * छुप-छुप कर बसेरा करन लगे।
अपने कलरव से कानन की * सुन सान सन्नाटा हरन लगे॥
पाकर के पवन प्रसग पात * मारुत से पुन लहलहाने लगे।
अतिथियों को मनो इशारों से * मिलने के हेत बुलाने लगे॥
अब निशानाथ उज्जल प्रकाश * इस वसुन्धरा पे करते हैं।
तम का हुलास सब दिया मेट * भय व्योग दुखों को हरते हैं॥
प्रिय प्रम-पाश में फँसे हुए * आते हैं पवनजय हर्षाते।
भूमण्डल पर जो दृष्टि पड़ी * देखा शशि अमृत वर्षाते॥

आज्ञा को शीश नवा अपने ॥ अति शीघ्र गमन दूतों ने किया॥

दोहा

दूतों ने दरबार में ॥ दीना शुभ सन्देश।
ध्यय महेन्द्र नृपाल का ॥ सुन प्रह्लाद नरेश ॥११०॥

बहर खड़ी

सहृदय प्रार्थना को सुन कर ॥ अपनी स्वीकृति प्रदान करी।
सम्मान किया उन दूतों का ॥ नृप की नृपेन्द्र ने आन करी॥
सुना का ध्यान विदा किया ॥ मन में प्रह्लाद समाया है।
धनुर्धर चतुर सुगर नर यह ॥ खुश हो प्रह्लाद सुनाया है॥
निज पर विद्या के जानकार ॥ शारीरिक संपत्ति बलशाली।
अर्थ नीति निपुण स्वारथ त्यागी ॥ पुन स्वामी भक्ति उत्तर वाला॥
स्वादिन चिन्तवन निरंतर हो ॥ हो समय देख चलनेवाला।
कर्मशूर प्रज्ञावान भी हो ॥ निज धर्म से न टलने वाला॥

दोहा

पुत्र पवनञ्जय ने सुनी ॥ भूपति की स्वीकृत।
मात पिता मन में अधिक ॥ प्रह्लादिक भये सिक्त ॥१११॥

बहर खड़ी

अति मगन प्रेम उत्साहित हैं ॥ सुन रूप अनुपम बाला का।
रति रंभा शचि रति सुन्दर ॥ सुन्दरी शुभ रूप विशाला का॥
मंत्री को पास बुला कर के ॥ सब-भाव सभी समझाये हैं।
वसी यह शील रूप गुण हैं ॥ कुछ तुमने भी सुन पाये हैं॥
मंत्री मन कर विचार बोले ॥ गुण सुने अद्वितीय रानी में।
जिस तरह आँख के अनुभव को ॥ वे सुना शक्ति कहाँ वाणी में॥
यह एक अद्वितीय रूपवान ॥ गुणवान भूप की बाला है।

बहर खड़ी

प्यारी हो भूर भाग बली जो ❁ अनुपम वर तुमने पाया।
है पूर्व जन्म का तप भारी ❁ तप धारी पति जो मन भाया॥
सुन तुरत मिश्रका बोल उठी ❁ यह कारन कौन हुआ प्यारी॥
विद्युतिकुमार को सुना मैंने ❁ अति रूपवान विद्या धारा॥
था राज कुमारी के समान ❁ गुणवान रूप वय वाला था।
विद्युतिकुमार था बल शाली ❁ निजकुल में चन्द्र उजाला था॥
फिर कहो पवनजय किस कारन ❁ आली के लिये चुने गये।
गुणियों की गणना में सब से ❁ क्या उत्तम वही गुने गये॥

दोहा

सुगर सहेली के वचन ❁ सुन कर उत्तर दीन।
वसन्ततिलका विनय से ❁ बोली अस प्रवीन॥ ११६॥

बहर खड़ी

बोली वसन्ततिलका सुन कर ❁ प्रथम तो यही कहानी थी।
विद्युति कुमार अल्पायु में ❁ लें योग सुनी यह बानी थी॥
विद्वान ज्योतिषियों ने उन के ❁ जब गोचर ग्रह निहारे थे।
उस समय प्रजनाजी सु योग ❁ नहीं मेघनाद उच्चारे थे।
विद्युति कुमार दीक्षा लेकर ❁ आतम का कारज सारेंगे॥
इस कर्म-भूमि को त्याग सखी ❁ पंचम गति में पग धारेंगे॥
इस कारण वीर पवनजय ही ❁ सोंपे हैं राज कुमारी को।
बल रूप कला में हैं प्रवीन ❁ जो मोहें सखी हमारी को॥

दोहा

सुन उत्तर देन लगी ❁ रोकी नहीं जुबान।
कुछ विचार मन में करो ❁ सुनो लगा कर कान॥११७॥

बहरखड़ी

चन्दन नहिं वन वन पैदा हो ❁ मणि शैल शैल नहिं पाते हैं।

दोहा

श्याम स्वर्गी न धर्गी ✿ उज्ज्वल सेज बिछाय।
शशि मिन अम्बर श्यन पर ✿ मना विराजे आय ॥११४॥

बहर खड़ी

या स्वयं प्रकृति देवी ने ✿ स्वागत हित रचना कीनी है।
या पवनकुमार का अतिथि जान ✿ हर्षाय बधाई दीनी है॥
यह रीति पन्थ का तय करके ✿ आगया महेन्द्रपुर प्यारा।
महलों की चहल-पहल देखी ✿ अपसरा समान लखी दारा॥
सत खण्ड पर सखियों के सहित ✿ अंजना सुन्दरी हर्षाती थी।
मन सखियां में बहलाती थी या पंकज मुख पर्याती थी॥
था अमल चान्दनी निशाकर की ✿ या मुक्ता पीस बखेर दिये।
उसमें निर्मल अंजना रूप ✿ जिस चन्द्रानन भी फेर दिये॥

गायन

(तर्ज—चार मास जाय बड़ो)

खण्डन हो जिस्म का ✿ रचना कालकी अखण्ड। टेक।
सज्जों का अपमान सदा ✿ झूठे करते पाखण्ड।
भाग्यों का सम्मान घटाये ✿ होकर बुरे प्रचण्ड ॥रचना०॥
धर्मी होय अधर्मी के वश ✿ पाते दुख अखण्ड।
साधों को दिन रात सताते ✿ टेढ़ होय उद्दण्ड ॥ रचना० ॥
कामी कायर क्रूर कुतर्की ✿ फिरें बाँधकर दण्ड।
दण्डी घोर घमण्डी करते ✿ यशपाति आय घमण्ड ॥ रचना०

दोहा

वायुयान से देखते ✿ राज कुँवर धर ध्यान।
चर्चा सखियों की सुरत ✿ आन पड़ी कुछ कान ॥११५॥

बहर खड़ी

प्यारी हो भूर भाग वली। जो ❀ अनुपम घर तुमने पाया।
है पूर्व जन्म का तप भारी ❀ तप धारी पति जो मन भाया॥
सुन तुरत मिश्रका बोल उठी ❀ यह कारन कौन हुआ प्यारी॥
विद्युतकुमार को सुना मैंने ❀ अति रूपवान विद्या धारी॥
था राज कुमारी के समान ❀ गुणवान रूप वय वाला था।
विद्युतकुमार था बल शाली ❀ निजकुल में चन्द्र उजाला था॥
फिर कहो पवनजय किस कारन❀ आली के लिये चुने गये।
गुणियों की गणना में सब से ❀ क्या उत्तम वही गुने गये॥

दोहा

सुगर सहेली के वचन ❀ सुन कर उत्तर दीन।
वसन्ततिलका विनय से ❀ बोली अस प्रवीन॥ ११६॥

बहर खड़ी

बोली वसंततिलका सुन कर ❀ प्रथम तो यही कहानी थी।
विद्युत कुमार अल्पायु में ❀ ले योग सुनी यह बानी थी॥
विद्वान ज्योतिषियों ने उन के ❀ अय गोचर ग्रह निहारे थे।
उस समय अंजनाजी सु योग ❀ नहीं मेघनाद उच्चारे थे।
विद्युत कुमार दीक्षा लेकर ❀ आतम का कारज सारेंगे॥
इस कर्म भूमि को त्याग सखी ❀ पचम गति में पग धारेंग॥
इस कारण वीर पवनजय ही ❀ सोचे हैं राज कुमारी को।
बल रूप कला में हैं प्रवीन ❀ जो मोहे सखी हमारी को॥

दोहा

सुन उत्तर देन लगी ❀ रोकी नहीं जुबान।
कुछ विचार मन में करो ❀ सुनो लगा कर कान॥११७॥

बहरखड़ी

चन्दन नहिं बन बन पैदा हो ❀ मणि शैल शैल नहिं पाते हैं।

दोहा

ध्वज मरगर्ग न धर्म ॥ उज्ज्वल सज बिछय।
शाश ।मत शम्भर ध्वज पर ॥ मना विराजे श्राय ॥११४॥

बहर खड़ी

या स्यय प्रग्नति उद्यी म ॥ स्यागत हित रचना कीनी है।
या पवनकुमार का अतिथ आन ॥ हर्षाय बधाई दीनी है ॥
यह रीति पथ का तय करके ॥ आगया महेन्द्रपुर प्यारा।
महला की चहल-पहल बड़ी ॥ अपसरा समान लखी दारा ॥
सत खड पर सखियों के सहित ॥ अञ्जना सुन्दरी हर्षाती थी।
मन सखियां में बहलाती थी या पकज मुख बर्षाती थी ॥
था अमल चान्दनी निशाकर की ॥ या मुक्ता पति बखेर दिये।
उसमें निर्मल अञ्जना रूप ॥ जिस चन्द्रानन भी फेर दिये ॥

गायन

(तर्ज—भर मम मान आय बखो)

खडन हो जिस का ॥ रचना कालकी अखण्ड।टेक।
सच्चा का अपमान सदा ॥ झूठे करते बखण्ड ।
अच्छा का सन्मान घटाये ॥ होकर बुरे प्रचण्ड ॥रचना०॥
धर्मी होय अधर्मी के वश ॥ पाते दुख अखण्ड ।
साधो को दिन रात सताते ॥ टेढ़े होय उदण्ड ॥ रचना० ॥
कामी कायर क्रूर कुतर्की ॥ फिरें बाँधकर दण्ड ।
दण्डी घोर घमण्डी करते ॥ यशपति आय घमण्ड ॥ रचना०

दोहा

वायुयान से देखते ॥ राज कुँवर धर ध्यान।
चर्चा सखियों की तुरत ॥ आन पड़ी कुछ कान ॥११५॥

या घने भ्रम के उपवन में * उपजा है ज्ञान बम्बूल सुनो।
छाया के हित से बोया था * निकले हैं जिसमें शूल सुनो॥
कर खड्ग पवनजय उठा लिया * अरु चले मारने तीनों को।
उस तीव्र खड्ग की धारा से * भव पार उतारन तीनों को॥
मन्त्री ने झपट बीच ही में * भूपत के कर को पकड़ लिया।
जिस तरह किसी ने धोखे से * आकर पीछे से जकड़ लिया॥

दोहा

अवध्य है कुँवरो सुनो * नहीं है वधने योग।
निर अपराधी को कभी * हन नहीं सत लोग॥१२०॥

बहर खड़ी

बालक को गौ को दुखिया को * अबला का निर अपराधी को।
शरणागति आये हुए को * अरु बन्दीखाने के बन्दी को॥
इतनों पे शस्त्र नहीं छोड़ें * जो जग में वीर कहाते हैं।
यह राजनीति की आज्ञा है * जो आपको हम समझाते हैं।
दीनों पर दया सदा करना * दुष्टों का दण्डित करना है।
धर्मी के चोर जुआरी के * हर समय दम को भरना है॥
क्षत्री का परम धर्म है यही * रणभू में मारामार करे।
शत्रु के सम्मुख डटा रहे * अरु बेधड़क होय कर वार करे

दोहा

क्षत्राणी पैदा करें * असल वीर बलवान।
वीर पुत्र जानो वही * राखे कुल का मान॥१२१॥

बहरखड़ी

अन्याय निवारक हो क्षत्री * और न्याय धर्म का पालक हो।
प्रजा को पुत्र समान गिने * दुष्टों के कुल का घालक हो॥
सत्य की रक्षा के लिये सदा * कर में कृपान उठाता हो।

था घने अम्बर के उपवन में * उपजा है मान यम्बूल सुनो।
छाया के हित से योया था * निकले हैं जिसमें शूल सुनो॥
कर खड्ग पवनजय उठा लिया * अरु चले मारने तीनों को।
उस तीव्र खड्ग की धारा से * अब पार उतारन तीनों को॥
मन्त्री ने झपट बीच ही में * भूपत के कर को पकड़ लिया।
जिस तरह किसी ने धोखे से * आकर पीछे से जकड़ लिया॥

दोहा

अवध्य है कुँवरो सुनो * नहीं है वधने योग।
निर अपराधी को कभी * हम नहीं सत लोग॥१२०॥

बहर खड़ी

बालक को गौ को दुखिया को * अबला का निर अपराधी को।
शरणागति आये हुए को * अरु बन्दीखाने के बन्दी को॥
इतनों पै शस्त्र नहीं छोड़ें * जो जग में वीर कहाते हैं।
यह राजनीति की आज्ञा है * जो आपको हम समझाते हैं।
दीनों पर दया सदा करना * दुष्टों का दण्डित करना है।
प्रभी के चोर जुहारी के * हर समय दम को दूरना है॥
क्षत्री का परम धर्म है यही * रणभू में मारामार करे।
शत्रु के सन्मुख डटा रहे * अरु बेधड़क होय कर वार करे

दोहा

क्षत्राणी पैदा करें * असल वीर बलवान।
वीर पुत्र जानो यही * राखें कुल का मान॥१२१॥

बहरखड़ी

अन्याय निवारक हो क्षत्री * और न्याय धर्म का पालक हो।
प्रजा को पुत्र समान गिने * दुष्टों के कुल का घालक हो॥
सत्त की रक्षा के लिये सदा * कर में कृपान उठाता हो।

दुर्जन के दुष्ट शत्रुओं के गढ़ के गुमान को ढाता हो॥
रहता हो आप स्वतन्त्र सदा ० अरु राग स्वतन्त्रित गाता हो।
परधन अरु परवनिता के ० मारग में भी नहिं जाता हो॥
यह नीति धर्म जिन नारियों की ० नस-नस में नहीं समाया है।
उनकी जननी ने वृथा ० पैदा कर के कष्ट उठाया है॥

दोहा

सुन कर मंत्री के वचन ० बोले राज कुमार।
धन्य धन्य हैं आपको ० खूब किया उपकार॥१२२॥

बहर खड़ी

धन्य हो सु मंत्री नृपों को ० पथ नीति दिखलाने वाले हैं।
अन्याय की सरिता से हर दम भूपों को बचाने वाले हैं॥
उपयुक्त शब्द सब श्रवण किये शिक्षा मंत्री की मानी है।
प्रतिष्ठा का कर के ख्याल अपने हित की पहिचानी है॥
मैं लग्न न इसके संग करूँ मन में विचार यह आता है।
सुन-सुन कर ऐसी बातों को मन में अति क्रोध समाता है॥
जो मानी अपना ही पाना रखता मैं हो सामर्थ नहीं।
रक्षण याभ का क्या पाना ऐसे कुछ इसका अर्थ नहीं॥

दोहा

बोले के मंत्री चतुर मन में बात बनाय।
अपने कुल के योग ही कीजे सभी उपाय॥१२३॥

बहर खड़ी

जो इकरार वचन करते हैं ० दुनिया उनको धिक्कारती है।
जग में नहिं शान्त उन्हों की कुछ ० भूठा लंपट पुकारती है॥
कुल की मर्याद रखन में ० तन मन जो अर्पण करते हैं।

यह कीर्ति पताका ऊँची कर ❁ संसार बीच यश भरते हैं ॥
जिस कुंवरी का वर चुना तुम्हें ❁ क्या उसे छोड़ना नीका है ।
जो माँग त्याग देते अपनी ❁ उनका यश जग में फीका है ॥
सागर में घोर हलाहल जब ❁ निकला शंकर की नज़र किया ।
मर्याद की रक्षा करने को ❁ विष अमी मान कर पान किया ॥

दोहा

छोटों को अपनाय कर ❁ गले लगावें जोय ।
बड़े वही नर बाजते ❁ सुयश उन्हीं का होय ॥१२४॥

बहर खड़ी

सुन करके वीर पवनंजय ने ❁ मंत्री के शब्द प्रमाण किये ।
एक एक सु अक्षर शुभ समझे ❁ उनके ऊपर शुभ ध्यान दिये ॥
पुन सोच लिया अपने मन में ❁ मैं जी की सभी निकालूँगा ।
कर पाणिग्रहण इसके संग में ❁ फिर अपने प्रण को पालूँगा ॥
इक महल निराला बनवा कर ❁ जा उसके बीच उतारूँगा ।
कृत कर्मों के भोगे फल को ❁ यह ठंडा दण्ड समारूँगा ॥
यह सोच समझकर गमन किया ❁ आकाश में वायुयान चला ।
अति शीघ्र पवन उनमान चला ❁ कर गगन गती प्रधान चला ॥

दोहा

समय निकट विवाह का ❁ होय सुमंगल गान ।
शुभ महूरत देख कर ❁ करी बरात पयान ॥१२५॥

बहर खड़ी

माता ने बलैयाँ ले-ले कर ❁ नंदन को आशिर्वाद दिये ।
हुआ सार्थिक पुत्र बती होना ❁ ऐसा कहती हो मुदित हिये ॥
पैदल गज बाज सु लाखों की ❁ संख्या में आगे जाते हैं ।
आनंद पथ में होते हैं ❁ गान्धर्व सु गान सुनाते हैं ॥

यह कीर्ति पताका ऊँची कर ❁ संसार बीच यश भरते हैं ॥
जिस सुघरी का घर चुना तुम्हें ❁ क्या उसे छोड़ना नीका है।
जो माँग त्याग देते अपनी ❁ उनका यश जग में फीका है ॥
सागर में घोर हलाहल जब ❁ निकला शंकर की नज़र किया।
मर्याद की रक्षा करने को ❁ विष अमी मान कर पान किया॥

दोहा

छोटों को अपनाय कर ❁ गले लगायें जोय ।
यह यही नर चाहते ❁ सुयश उन्हीं का होय ॥१२४॥

बहर खड़ी

खुश करके वीर पवनंजय ने ❁ मन्त्री के शब्द प्रमान किये।
एक-एक सु अक्षर शुभ समझे ❁ उनके ऊपर शुभ ध्यान दिये ॥
पुन सोच लिया अपने मन में ❁ मैं जी की सभी निकालूँगा।
कर पाणिग्रहण इसके संग में ❁ फिर अपने प्रण को पालूँगा ॥
इक महल निराला बनवा कर ❁ जा उसके बीच उतारूँगा ।
कृत कर्मों के भोगे फल को ❁ यह ठंडा वक्ष समारूँगा ॥
यह सोच समझ कर गमन किया ❁ आकाश में वायुयान चला ।
अति शीघ्र पवन उनमान चला ❁ कर गगन गती प्रमान चला ॥

दोहा

समय निकट विवाह का ❁ होय सुमंगल गान ।
शुभ महूरत देख कर ❁ करी बरात पयान ॥१२५॥

बहर खड़ी

माता ने बलैयाँ ले-ले कर ❁ नंदन को आशिर्वाद दिये।
हुआ सार्थिक पुत्र वती होना ❁ ऐसा कहती हो मुदित हिये ॥
पैदल गज बाज सु लाखों की ❁ संख्या में आगे जाते हैं।
आनंद पंथ में होते हैं ❁ गान्धर्व सु गान सुनाते हैं ॥

रद्दि भ्यास येमनस्यता मन में * कर कोमल अग्नि सुमास किया।
अञना की प्रेम भरी दृष्टि * प्यारे प्रीतम पर जाती थी।
प्रतिबिम्ब नेत्र द्वारा पति का * नैनों के बीच बिठाती थी॥

दोहा

दिये दान सुमोद से * दासी दास अनेक।
वसन्ततिलका आदि ले * चतुर एक से एक ॥१२८॥

बहर खड़ी

कंचन मणि माणिक बहुत दिये * रतनों के भूषण आदि भले।
दिये हैं दासी दास पंच सत * जो रहते थे प्रासाद भले॥
अञना सुन्दरी मात पितु से * मिल करके आशिर्वाद लिये॥
चढ़ गया विमान अगाड़ी को * पुनः रतन पुरी के पथ लिये।
पहुँचे हैं रतनपुरी जिस दम * घर घर उत्साह हुआ भारी।
राजा प्रजा सब मुदित हुये * करते लाने की तैयारी॥
सादर प्रणाम पवनजय ने * किया है पिता को हर्षा के॥
प्रसन्न भूप हो गये कंठ से * लगा लिया सुत का आके॥

दोहा

पुत्र-वधू को हर्ष कर * दिये पांच सौ ग्राम।
रत्न जटित दिये आभरण * सुन्दर सुखद ललाम ॥१२९॥

बहर खड़ी

जब तक जल गंगा यमुना में * तब तक सुहाग अटल बेटी।
आनन्द रहो करती निश दिन * हो प्रीति सुरीति अटल बेटी॥
पश्चात् पवनजय ने अपने * पहिले विचार को याद किया।
इक पृथक् महल दासियों सहित * अञना को आ उतार दिया॥
बीता जब दिवस निशा आई * मन मथ को अति आनन्द हुआ।
अञना मोद से फूल गई * मुख खिल करके मकरन्द हुआ॥

इस तरह गमन करता बरात * पहुंची महेन्द्रपुर के तट है।
नगर [illegible] गमन [illegible] सुन्दर * निर्मल सरिता के निकट घट है।
शुभ [illegible] ग्राम [illegible] * शुद्ध सुधाकर शांति यथार्थ।
माता [illegible] रह [illegible] में * लख-लख कर बराती हर्षाते॥

दोहा

सुन कर भूप महेन्द्र ने लिये हितू बुलाय।
आगत का स्वागत करो सब को कहा सुनाय॥१२६॥

बहर खड़ी

निज राज का अगवानी के हित * पुर बाहर भेजा प्रेम पगा।
आगत का स्वागत करना ही * उत्तम और कुशलो क्षेम पगा॥
सादर बरात को नगर बीच * कोलाहल घोर रमाया है।
अति उत्तम शुभ स्थान देख * जनवासा उन्हें बताया है॥
नव नार सुधार श्रृंगार नवल * भूपति प्रसाद में आन लगीं।
हँस हँस कर सुघर सुमंगल * आनंद बधाई गान लगीं॥
धाये हैं पुर के पुरुष सभी * वर के शुभ दर्शन पाने को।
सुन्दरता चातुरता को लख कर * मन में आनंद मनाने को॥

दोहा

समाचार होने लगे * वर को लिया बुलाय।
मण्डप नीचे लाय के दिये युगल बैठाय॥१२७॥

बहर खड़ी

उत्तम यह समय निरख कर के * नर नारी हर्ष मनाते थे।
दर्शन करने उत्तम वर के * कई आते थे कई जाते थे॥
रत्नों से जटित सुघर पट्टा * वर कन्या जहां आसीन हुए।
जिस प्रकार प्रभा शांति मिल के * भानु के बस आधीन हुए॥
[illegible] हुआ मुदित मन से * जिस तरह हाथ में हाथ दिया।

रहि म्यास वैमनस्यता मन में * कर कोमल अग्नि सुभास किया।
अंजना की प्रेम भरी दृष्टि * प्यारे प्रीतम पर जाती थी।
प्रतिबिम्ब नेत्र द्वारा पति का * नैनों के बीच बिठाती थी॥

दोहा

दिये दान सुग्रीव से * दासी खास अनेक।
वसन्ततिलका आदि से * चतुर एक से एक ॥१२८॥

बहर खड़ी

कंचन मणि माणिक बहुत दिये * रतनों के भूषण आदि भले।
दिये हैं दासी खास पच सत * जो रहते थे प्रासाद भले॥
अंजना सुन्दरी मात पितु से * मिल करके आशिर्वाद लिये॥
बढ़ गया विमान अगाड़ी को * पुनःरतन पुरी के पंथ लिये।
पहुँचे हैं रतनपुरी जिस दम * घर घर उत्साह हुआ भारी।
राजा प्रजा सब मुदित हुये * करते लाने की तैयारी॥
सादर प्रणाम पवनजय ने * किया है पिता को हर्ष के॥
प्रसन्न भूप हो गये कंठ स * लगा लिया सुत को आके॥

दोहा

पुत्र-वधू को हर्ष कर * दिये पांच सौ ग्राम।
रत्न जटित दिये आभरण * सुन्दर सुखद ललाम ॥१२९॥

बहर खड़ी

जब तक जल गंगा यमुना में * तब तक सुहाग अटल बेटी।
आनंद रहो करती निश दिन * हो प्रीति सु रीति अटल बेटी॥
पश्चात् पवनजय ने अपने * पहिले विचार को याद किया।
इक पृथक् महल दासियों सहित * अंजना को जा उतार दिया॥
बीता जब दिवस निशा आई * मन मथ को अति आनंद हुआ।
अंजना मोद से फूल गई * मुख खिल करके मकरन्द हुआ॥

मैं हूँ चकोरी यह चन्द्र अमल ॥ यह पुण्यवान मैं पातिर्फा हूँ ॥

दोहा

दिन-दिन यही विचार में ॥ मेह दूवरी होय ।
विरहा नल मज्वलित हुवा ॥ रहा धीर को खोय ॥ १२२॥

बहर खड़ी

ऐसा है बाज सवार पति ॥ जाते हैं वायु सेवन को ।
अञ्जना झरोखों से झाँक ॥ देखे प्रेमी पति देखन को ॥
पड़ गई पवनञ्जय की दृष्टि ॥ मन में अति क्रोध समाया है।
आली व झरोखे बंद करो ॥ यह मुख से वचन सुनाया है॥
आज्ञा पाते ही महलों के ॥ आली व झरोखे बन्द किये।
बाहर नहिं दृष्टि डाल सके ॥ ऐसे-ऐसे प्रबन्ध किये ॥
ऐसा व्योहार पति का यह ॥ बिन अग्नि सुवपु को दहन लगी
लख बसततिलका अजनि को ॥ पुन हाथ जोड़ कर कहन लगी॥

दोहा

प्यारी मेटो वदना ॥ सुख से काटो रैन ।
जाम अकेली आपको ॥ देता सकट मैन ॥ १२३ ॥

बहर खड़ी

जिस तरह चन्द्र बिन निशा आदि ॥ मणि के बिन हो मणिधारी है।
गज काका दस्त बिना जैसे ॥ पति बिन फीकी अस नारी है॥
पति-पद कमल की भ्रमरी बन ॥ उन्हीं से चित्त लगाती थी।
सत शास्त्र विलोकन करती थी ॥ जिन देव कीतन गाती थी॥
शशपज से काया रूप भई ॥ पर सत का रूप चमक आया॥
पतिव्रत धर्म पतिव्रता के ॥ आनन सौ गुना चमक छाया॥
कर्मों की गति अति बाँकी है ॥ जिसका कुछ पता नहिं पाया।
प्यारी सखियों चुप हो जाओ ॥ जो किया पूर्व यह मन भाया ॥

दोहा

पति परमेश्वर तुल्य है ० गुणाधीश विद्वान ।
मुझ में दाग अनक हैं ० सुना लगाकर कान ॥१३४॥

बहर खड़ी

सब दोष मेरे कर्मों का है ० पति देव का किंचित् दोष नहीं।
जो किया उन्हों ने न्याय किया * उन पर करना कुछ रोष नहीं॥
मैं उन चरणों की दासी हूँ ० यह देव मेरे अति दयालु हैं।
समदृष्टि हैं समभाव सदा ० दासों पर अति कृपालु हैं॥
है पतिनाथ सदा स्त्रियों के ० सर्वस्व पति ही माने हैं।
पति के दुख में दुख सुख में सुख ० जो सती होय यह जाने हैं॥
चाहे चोर ज्वारी लम्पट हो * नट खट हो खटपट करता हो।
चाहे कोढ़ी अरु कलकी हो * चाहे व्यभिचार चित धरता हो॥

दोहा

इस पर भी है नारि का ० पति सर्वस्व महान ।
नारि का पति चरण से * होता है कल्यान ॥१३५॥

बहर खड़ी

कर-कर सताप महल में ही * सखियों से मन बहलाती है।
रखती है ध्यान सदा पति का * जिन देव के गुण को गाती है॥
तप व्रत नियम में मगन सदा * सामायिक संवर करती है ।
निश दिवस सुगुण शुभ रीति से* आन्तरीक वेदना हरती है ॥
करते यह रीति अजना के दिन * इधर और ही रचना है ।
रावण को नहिं माने है वरुण ० संग्राम परस्पर मचना है॥
दशकट का भेजा दूत तुरत ० प्रहलाद भूप पर आया है।
अति मग्न भाव से छत्रपति का ० सब सन्देश सुनाया है ॥

दोहा

हुक्म पड़ा लंकेश का # रण को हुए तैयार ।
सैना चतुरंगी सजी # बांध-बांध हथियार ॥१२६॥

बहर खड़ी

सज गये वीर उत्साह भरे # कर में निज शस्त्र सम्भारे हैं।
भाले बल्लम कृपाण किसी ने # धनुष बाण कर धारे हैं ॥
हाथी सज गये हज़ारों ही # जो जाकर रण जय पाते हैं ।
बजते बाजे जुझाऊ सुन # करिवर चिंघार मचाते हैं ॥
आगये पवनंजय उसी समय # भर मोद प्रार्थना करते हैं ।
तुम पूज्य पिताजी यहाँ रहो # ऐसा कह मन को हरते हैं ॥
मेरे होते चढ़ आयें आप # प्रजा जो यह सुन पायेगी ।
तो कायर कर कुपूत कलंकी # मुझको पिता बतलायेगी ॥

दोहा

मेरे बैठे आप जा # रण पर आवें तात ।
मुझे जग डरपोक कहे # बड़ी शर्म की बात ॥१२७॥

बहर खड़ी

रण स्थल में जाने की आज्ञा # कृपा कर मुझे प्रदान करो ।
स्वीकृत इस मेरी विनती को # हर्षा करके धीमान् करो ॥
सुत की सुन-सुन कर यह बातें # राजा का हिया उमड़ आया ।
अगज को कंठ लगा लीना # छाती से सुत को लिपटाया ॥
आज्ञा दे दीनी हर्षा के # रण-भू में जाओ सुत प्यारे ।
मारो वह मार शत्रु दल में # खलबली मचे हा हा कारे ॥
ऐसा कह सिर पर हाथ धरा # कर विजय पुत्र जल्दी आना ।
बरसाना बाण समर भू में # निज कर कौशल को दिखलाना

दोहा

पति परम वर तुल्य ह गुणार्थीश विद्वान ।
मुझ में दोष अनेक हैं सुना लगाकर कान ॥१३४॥

बहर खड़ी

सब दोष मेरे कर्मों का है ~ पति देव का किंचित् दोष नहीं।
जो किया उन्होंने न्याय किया x उन पर करना कुछ रोष नहीं॥
मैं उन चरणों की दासी हूँ ~ यह देव मेरे अति दयालु हैं।
समदृष्टि हैं समभाव सदा * दासों पर अति कृपालु हैं॥
है पतिनाथ सभा स्त्रियों के ~ सर्वस्व पति ही माने हैं।
पति के दुख में दुख सुख में सुख * जो सती होय यह जाने हैं॥
चाहे चोर ज्वारी लम्पट हो * नट खट हो खटपट करता हो।
चाहे कोढ़ी अरु कलकी हो खह व्यभिचार चित धरता हो॥

दोहा

इस पर भी है नारि का पति सर्वस्व महान ।
नारि का पति चरण से * होता है कल्यान ॥१३५॥

बहर खड़ी

कर-कर आराम महल में ही * सखियों से मन बहलाती है।
रहती है ध्यान सदा पति का * जिन वृष के गुण को गाती है॥
तप व्रत नियम में मगन सदा * सामायिक सवर करती है ।
निश दिवस सुगुण शुभ रीति सभ * आस्तरीक वेदना हरती है॥
करता यह रीति अजना के दिन * इधर और ही रचना है ।
रावण का नाहि मान है वरुण * संग्राम परस्पर मचाना है॥
रावण का भेजा दूत तुरत * प्रहलाद भूप पर आया है।
आ नम्र भाव से नृपति को * सब सन्देश सुनाया है॥

दोहा

गमन किया रण क्षेत्र को ☆ सब को कर प्रणाम ।
गजारूढ़ हो चल दिये ☆ ले जिनेन्द्र का नाम ॥१४०॥

बहर खड़ी

पढ़ लिया मंत्र वह मंगलीक ☆ रण भू में मंगल के कारण ।
आशिर्वाद सब से पाये ☆ संकट को निवारन उद्धारन ॥
दृष्टि आ पड़ी अंजना पे ☆ एस कर मंत्री से कहन लगे ।
जिस तरह प्रेम निध हृदय से ☆ मर्याद त्याग कर बहन लगे ॥
किस चतुर चितेरे ने चित से ☆ चित्रकारी दिखलाई है ।
या देवलोक से कोई देवी यह ☆ उतर मही पर आई है ॥
मंत्री ने कहा सुनो स्वामी ☆ स्वामिनी अंजना महा सती ।
आई है पति दर्शन के हित ☆ दर्शन से बढ़ता पुण्य रती ॥

दोहा

वाणी वाणों से अधिक ☆ लगी श्रवण में आन ।
आंखें रतनारी हुई ☆ भृकुटी लीनी तान ॥१४१॥

बहर खड़ी

यह अधम इस समय क्यों आई ☆ शुभ पल में विघन डालने को ।
अशकुन यह मेरा करने को ☆ या सुन्दर घड़ी टालने को ॥
कर क्रोध चन्द्र मुख फेर लिया ☆ गज की ठोकर से ठुकरा कर ।
गज बढ़ा ले चले आगे को ☆मारग अति सफा स्वच्छन्द पाकर
पति का व्यवहार धृष्टता का ☆ लख अपना मन धिक्कारती है ।
पति से अनादर पाकर के ☆ पापाण से सिरको मारती है ॥
दासी ने देखा दृश्य विकट ☆ इक बार रोम सब खड़े हुए ।
घट गये भाव मन के सारे ☆ जो सुखद मनोरथ बड़े हुए ॥

दोहा

देवीजी सुन लीजिए ☆ विनय मेरी चित्त लाय ।

दोहा

गमन किया रण क्षेत्र को ❁ सब को कर प्रणाम ।
गजारूढ़ हो चल दिये ❁ ले जिनेन्द्र का नाम ॥१४०॥

बहर खड़ी

पढ़ लिया मन्त्र यह मंगलीक ❁ रण भू में मंगल के कारण ।
आशिर्वाद सब से पाये ❁ संकट को निवारन उच्चारन ॥
दृष्टि आ पड़ी अंजना पे ❁ लख कर मन्त्री से कहन लगे ।
किस तरह प्रेम निधि हृदय से ❁ मर्याद त्याग कर बहन लगे ॥
किस चतुर चितेरे ने चित से ❁ चित्रकारी चित्रलाई है ।
या देवलोक से कोई देवी यह ❁ उतर मही पर आई है ॥
मंत्री ने कहा सुनो स्वामी ❁ स्वामिनी अंजना महा सती ।
आई है पति दर्शन के हित ❁ दर्शन से बढ़ती पुण्य रती ॥

दोहा

वाणी बाणों से अधिक ❁ लगी श्रवण में आन ।
आंखें रतनारी हुई ❁ भृकुटी लीनी तान ॥१४१॥

बहर खड़ी

यह अधम इस समय क्यों आई ❁ शुभ छत में विघन डालने को ।
अशकुन यह मेरा करने को ❁ या सुन्दर घड़ी टालने को ॥
कर क्रोध चन्द्र मुख फेर लिया ❁ गज की ठोकर से ठुकरा कर ।
गज बढ़ा ले चले आगे को ❁ मारग अति सफा स्वच्छन्द पाकर
पति का व्यवहार धृष्टता का ❁ लख अपना मन धिक्कारती है ।
पति से अनादर पाकर के ❁ पाषाण से सिर को मारती है ॥
दासी ने देखा दृश्य विकट ❁ इक बार रोम सब खड़े हुए ।
घट गये भाव मन के सारे ❁ जो सुदृढ़ मनोरथ बढ़े हुए ॥

दोहा

देवीजी तुम लीजिए ❁ विनय मेरी चित लाय ।

मृग पनि पाल पड़ * उनमें क्या यस पाय ॥१४२॥

बहर खड़ी

यह शब्द कटुक मर सनमुख * पति देव के हित उचार नहीं।
एस वचनों क कहन का * तुझ को कोई अधिकार नहीं ॥
यह तो मेरे ही पापों का * फल मुझे भुगतना पड़ता है।
उनका इस में कुछ दोष नहीं * जो समझे तो यह अड़ता है ॥
दोन ह धरी मात तात * बान्धव सुहृदय फिर जाते हैं।
सुर तरु बबूल हो जाते हैं * सारे ग्रह घिर आते हैं ॥
यह उतन अनर्थ करे कोई * सत पुरुषों की परपाटी है।
इस पूर्व कर्म के ही फल से होता सुमेरु भी माटी है ॥

दोहा

इन करमों का ही सभी * सारा है यह दोष।
कहत-कहत यों वचन * होन लगी बे होश ॥१४३॥

बहर खड़ी

होकर बे होश गिरी धरती * माता वियोग पर लूट पड़ी।
जिस तरह दामिनी अवर से * होकर के पृथक टूट पड़ी ॥
स्वामिनी के गिरने की अवाज़ * दासियों ने जब सुन पाई है।
दौड़ी आई इकवार सभी * आकर के तुरत उठाई है ॥
उपचार लगी करने मिलकर * कुछ-कुछ बेहोशी दूर भई।
लोचन खोले धीरे-धीरे * मन की दुविधा हो अलग गई ॥
कर-कर विलाप लगी रोने * जो रहे मनोरथ खो डाले।
जिस तरह मास में झड़ झड़कर * सुन्दर पंकज सब धो डाले ॥

दोहा

रुदन सहित करके गमन * जाते राज कुमार।

कुछ दूरी पर जाय कर ॥ करने लगे विचार ॥ १४४ ॥

बहर खड़ी

सेना को रोक पड़ाव करो ॥ पश्चिम में भान सिधारते हैं।
यह अधिक सघन वन है मन्त्री ॥ इस में पक्षी गुजारते हैं॥
सरिता का सुन्दर अमल नीर ॥ पीने से पीर हरे श्रम की।
मारग की थकावट दूर करें ॥ अरु हर लेता दुविधा भ्रम की॥
चें-चें करते थे चक्रवाक ॥ अरु विरह अलापें भरते थे।
निश के वियोग के हित वियोगी॥ सिन्धु के बीच यह तरते थे॥
चकवा-चकवी का विरहनाद ॥ युवराज के श्रवण में आया।
सुनते-सुनते मति पलट गई ॥ करुणा का वेग उमड़ छाया॥

दोहा

बोले हैं मन्त्री सुनो ॥ इधर लगाओ कान।
पति-पत्नि का वियोग भा ॥ होता दुख की खान ॥१४५॥

बहर खड़ी

यह चक्रवाक नहीं सह सकते ॥ निश के वियोग दुख दाह को।
फिरते पुकारते इधर-उधर ॥ देते हर निमित्त दुहाइ को॥
फिर इस हिसाब से मैंने तो ॥ अन्याय सती के साथ किया।
हो गये बरस बारह मुझ को ॥ नहिं मन्दिर तक में चरण दिया
उस समर कूँच के समय आन ॥ शुभ शकुन मेरे हित किया था।
जिसका बदला तिरस्कार रूपमें॥ मैंने उसका दिया था॥
है धन्य अञ्जना सती तुम्हें ॥ तू वसुधा का ज्योति है।
शुभ लाज सरोवर की प्यारी ॥ अनमोल अद्वितीय मोती है॥

दोहा

सुन्दर सुघर सुशीलता ॥ सुन्दर गुण की खान।

त्याग कटक को चल दिया ❋ आया प्रिय के पास ॥१४८॥

बहर खड़ी

स्वामी स्वामिनी हमारी तो ❋ इस समय सामायिक करती हैं।
नित नैमेत्तिक व्रत में सुलीन ❋ जिन ध्यान हृदय में धरती हैं॥
कुछ समय आप विश्राम करो ❋ उठने का समय सु आने दो।
कुछ रहा समय किंचित् बाकी ❋ उसको पूरा हो जाने दो ॥
मन्दिर के अन्दर उसी समय ❋ हर्षा कर तुरत पधारे हैं ।
जहाँ विदुष सती बाट हेरे ❋ वह प्यार चरण निहारे हैं ॥
पूछे हैं क्षेम कुशल प्रिय की ❋ अपनी उनको बतलाते हैं।
कहते हैं भूल भई भारी ❋ निज करमा पर पछताते हैं॥

दोहा

चाह हुए सन्मुख चक्षु ❋ बढ़ा प्रेम परवाह ।
चित्र लिखित से रह गये ❋ कहीं न मुख से आह ॥१४६॥

बहर खड़ी

बोले हैं पवनजय मधुर वचन ❋ हृदय युग कज सरसने लगे।
जिस तरह शुष्क कृषि में आ ❋ अमृत जल बिन्दु बरसने लगे॥
नैनों से नीर बरसता था ❋ वह के चलते थे परनाले ।
कच श्याम गगन सुन्दरता के ❋ घुँघराले थे काले काले ॥
अंजना चातकी इक टक हो ❋ आशा की डाल दरकती थी ।
सीपी समान पीना चाहे ❋ पति स्वाँति बूँद बरषती थी॥
घन पवन जहाँ पर डटे हुये ❋ दामिनि अंजना चमकती थी।
उस समय संयोगिन के मन में ❋ पावस की रात दमकती थी ॥

दोहा

सविनय परसे पद कमल ❋ सती अंजना आय ।

उस प्यारी स मिलन का ३ तरस रहे हैं प्रान ॥ १४६ ॥

महर खड़ी

ऐसा कह मित्र उपाय करो ~ जा मिलूँ शीघ्रता से जा के।
मन का संताप मेरा होगा ~ प्यारी का शुभ दर्शन पा के॥
मन्त्री ने वचन सुन नृप के कुँवर से हँस करके बोला।
इस समय मुर्गा ने दिन रवि के किस रीति से आनन खोला॥
सेना नायक को सेना का देकर के भार सिधार चले।
संग मन्त्री को अपने लीना ~ हो वायुयान सवार चले॥
महलों के ऊपर द्वार का संकेत किया खुलवाने का।
पतिव्रता के चन्द्रानन से शुभ शब्द कोई सुनवाने का॥

दोहा

दासी ने दाकर कुपित ~ बोले कड़ुये बैन।
कौन पुरुष आये यहाँ ~ देख वियोगिन रैन॥१४०॥

महर खड़ी

आ तुम यहां से जाओ चले ~ अब फेर यहाँ जो आओगे।
फल इसका बुरा उठाओगे ~ नाहक में प्राण गमाओगे॥
मन्त्री ने उत्तर दिया तुरत ~ तुम सोच समझ मुख से बोलो
किस से अपमानित शब्द कहे ~ बाहर जाओ आँखें खोलो॥
यहां स्वयं पवनजय स्थित हैं ~ परिचय तुम इसका कर लीजे।
विद्याधर यशायशश यहाँ ~ द्वारे को तुरत खोल दीजे॥
चातुर दासी ने चिन्ह लिया आकर के ड्योढ़ी खोली है।
किस कारण शुभागमन हुआ ~ नृप सुत से देख बोली है॥

दोहा

प्राण प्रिय से मिलन का ~ मन में बढ़ा हुलास।

त्याग रूठक को चल दिया ❁ आया प्रिय के पास॥१४८॥

बहर खड़ी

स्वामी स्वामिनी हमारी तो ❁ इस समय सामायिक करती हैं।
नित नैमेत्तिक व्रत में सुलीन ❁ जिन ध्यान हृदय में धरती हैं॥
कुछ समय आप विश्राम करो ❁ उठने का समय सु आने दो।
कुछ रहा समय किंचित बाकी ❁ उसको पूरा हो जाने दो॥
मन्दिर के अन्दर उसी समय ❁ हर्षा कर तुरत पधारे हैं।
जहाँ विदुष सती बाट हेरे ❁ वह प्यार चरण निहारे हैं॥
पूछे हैं क्षेम कुशल प्रिय की ❁ अपनी उनको बतलाते हैं।
कहते हैं भूल भई भारी ❁ निज करनी पर पछताते हैं॥

दोहा

चार हुए सन्मुख चक्षु ❁ बढ़ा प्रेम परवाह।
चित्र लिखित से रह गये ❁ कढ़ी न मुख से आह॥१४६॥

बहर खड़ी

बोले हैं पवनञ्जय मधुर वचन ❁ हृदय युग कञ्ज सरसने लगे।
जिस तरह शुष्क कृषि में था ❁ अमृत जल विन्दु बरसने लगे॥
नैनों से नार बरसता था ❁ वह के चलते थे परनाले।
कच श्याम गगन सुन्दरता के ❁ घुंघराले थे काले काले॥
अञ्जना चातकी इक टक हो ❁ आशा की डाल दरवती थी।
सीपी समान पीना चाहे ❁ पति स्वाँति बूँद बरपती थी॥
घन पवन जहाँ पर डटे हुये ❁ दामिन अञ्जना चमकती थी।
उस समय संयोगिन के मन में ❁ पावस की रात दमकती थी॥

दोहा

सविनय परसे पद कमल ❁ सती अञ्जना आय।

गम स्थिती के कहीं * दीखन लगे निशान ॥१५२॥

बहर खड़ी

जो होय बात ऐसी स्वामी * तो कैसे धीर धरूँगी मैं।
हो असहाय अबला नारी * कैसे यह सिंध तरूँगी मैं॥
सब में प्रसिद्ध बात है यह * महाराज नहिं यहाँ आते हैं।
आने की बात विशेष हुइ * मुख से भी नहीं बतराते हैं॥
निन्दित हो जाऊंगी जग में * नहिं मुँह दिखलाने योग रहे।
हो घोर कष्ट इस दासी को * जब तक स्वामी का वियोग रहे
इस हाल का सुनकर मातु जब * आप की यहाँ पधारेंगी।
दखेंगा गर्भाधान मेरे * यह व्यंग शब्द उच्चारेंगी॥

दोहा

किस रीति से मैं उन्हें * दूँ विश्वास दिलाय।
कहा न माने सत्त यह * लाख बार समझाय ॥१५३॥

बहर खड़ी

यह समय सामने जब आये * तो आपत्ति बहु भारी होगी।
ऊचेंगे नर नारी सारे * ससार में अति ख्वारी होगी॥
इस हेत कृपा करके स्वामी * माताजी को बुलवा लीजे।
अति नम्र भाव मीठे वचनों से * तुम उनको समझा दीजे॥
यह सुनकर उत्तर देन लगे * लज्जा की प्यारी बात है यह।
मैं कटक से आया हूँ फिर कर * मत्री भी देख साथ है यह॥
देखेगी मुझ को माताजी * क्या मुख से शब्द सुनायेगी।
घृणित यह कार्य समझ करके * कायर यह मुझे बतायेगी॥

दोहा

दुर्जन जन निन्दा करे * स्वामी करो विचार।

ननन नाग पग्यारना ~ हृय में दिये समाय ॥१४०॥

बहर खड़ी

मग ना नाथ पत्रास्युज म मन भ्रमरी यमा भ्रमरता था।
फन्द्र पुण्यादय म खिला कमल प्रथम आशा स्तु समरता था॥
र अन्य आपका शुभागमन आँगन प यन आकर कीना।
वत्कल थी चसरा दर्शन का ~ शम चन्द्र आन दर्शन दीना॥
यह शब्द सती क मधुर मधुर ~ हीरा हृदय पिघलाते थे।
जिस तरह तज दा ताप भान हिम का कर नीर बहाते थे॥
कछु नहीं कर सक रुका दठ ~ उमड़ा है प्रेम सिन्ध आके।
कामल कर कठ वाच डाला पिया प्रम प्याल को धा के॥

दोहा

यीत वासर नान नह रहते इस प्रकार।
आनन्द म जिनका पता लगा नहा जिन हार॥१४१॥

बहर खड़ी

जाता हूँ समर करने का म तुम वियोग के सकट मत सहना
प्राणाधिक निज रहा सुख में यह मानो प्रिय मेरा कहना॥
सुयश आप हा स्वय धीर रणधीर विजय कर्ता हो तुम।
बलवान हा विद्वान हो तुम ~ सज्जन सकट हर्ता हो तुम॥
हा काय आप का सिद्ध सभी ~ हर समय सिद्धि सम्मुख रहती
शुभ विजय लक्ष्मी गुण हाकर मर नाथ तुम्हारा कर गहती॥
जा जावन प्यारा मुझ का ना शीघ्र सुदर्शन दिखलाना।
पावन चरणा की शरणा की विनती स्वामी मन में लाना॥

दोहा

पुण्योदय से शुभ समय ० प्रगटे शायद आन।

गम स्थिती के फहीं * दीखन लगे निशान ॥१५२॥

बहर खड़ी

जो होय बात ऐसी स्वामी * तो कैसे धीर धरूँगी मैं।
हो असहाय अबला नारी * कैसे यह सिंध तरूँगी मैं॥
सब में प्रसिद्ध बात है यह * महाराज नहिं यहाँ आते हैं।
आने की बात विशेष हुए * मुख से भी नहीं बतराते हैं॥
निन्दित हो जाऊँगी जग में * नहिं मुँह दिखलाने योग रहे।
हो घोर कष्ट इस दासी को * अब तक स्वामी का वियोग रहे
इस हाल का सुनकर मातु अब * आप की यहां पधारेंगी।
कहेंगी गर्भाधान मेरे * यह व्यंग शब्द उचारेंगी॥

दोहा

किस रीति से मैं उन्हें * दूँ विश्वास दिलाय।
कहा न माने सत्य यह * लाख बार समझाय ॥१५३॥

बहर खड़ी

यह समय सामने अब आये * तो आपत्ति बहु भारी होगी।
ऊकेंगे नर नारी सारे * संसार में अति ख्वारी होगी॥
इस हेत कृपा करके स्वामी * माताजी को बुलवा लीजे।
अति नम्र भाव मीठे वचनों से * तुम उनको समझा दीजे॥
यह सुनकर उत्तर देन लगे * लज्जा की प्यारी बात है यह।
मैं कटक से आया हूँ फिर कर * मन्त्री भी देख साथ है यह॥
देखेगी मुझ को माताजी * क्या मुख से शब्द सुनायेगी।
घृणित यह कार्य समझ करके * कायर वह मुझे बतायेगी॥

दोहा

दुर्जन जन निन्दा करें * स्वामी करो विचार।

कहना था सो यह पूर्ण ❁ अब तुमको अख्त्यार ॥१५४॥

बहर खड़ी

सकट से पांच हाथ बचकर ❁ दस हाथ बाज से सदा रहे।
गज से रह हाथ हज़ार प्रथक् ❁ दुजन से भाग अवश्य गहे॥
दुजन से फणपति है अच्छा ❁ जो समय पाय कर डसता है।
दुजन दुख देता समय-समय ❁ मुख खोटा वचन निकसता है।
यह सुन कर नामाङ्कत मुदरी ❁ निज हाथ पवनजय लीनी है।
निज कोष की कुँजी भी इया ❁ प्यारी के कर में दीनी है॥
दोनों चीजें यह द कर के ❁ हर रीति सें पुनः सुझा दीना।
फिर रामा वसन्ततिलका को ❁ कुँवर ने पास बुला लीना॥

दोहा

बाले है परसन्न हो ❁ अति मन में हर्षाय।
तुम अपनी स्वामिनी का ❁ रखना मन बहलाय ॥१५५॥

बहर खड़ी

पूरण रक्षा करना इन की यह चिन्तामणि सम प्यारी है।
नहिं कष्ट उपस्थित हो कोई इस में तेरी हुशियारी है॥
समझाई बार-बार दासी फिर पुरस्कार कुछ दीना है।
सन्तुष्ट कर लिया दासी को युवराज गमन फिर कीना है॥
पति से पतिव्रता कहन लगी ❁ स्वामी मन विनय हृदय धरना।
जाकर रण भू में शत्रु से ❁ अति युद्ध समर करके करना॥
बस इसी दिवस से हंत सुनो ❁ राज्ञाणी पुत्र प्रसव करती।
लालन पालन करके सुत का ❁ इपाण दुधारी कर धरती॥

दोहा

प्राणों की बाजी लगा ❁ खेले सच्ची पूत।
रण भूमि में जाय कर ❁ करते समर अपूत॥१५६॥

बहर खड़ी

वह समर मही से पग पीछे * अपना नहिं कभी उठाते हैं।
शत्रु के सन्मुख डटे रहे * मारें चाहे मर जाते हैं॥
करते हैं मौत से आलिंगन * कर में हथियार उठाते हैं।
शत्रु को विजय हय करते * नहिं कायर पन दिखलाते हैं॥
है कीर्तध्वजा दोनों कर में * जो असल वीर कहलाते हैं।
क्षत्राणी का पय पीकर के * कुछ करनी कर के जाते हैं॥
जो विजय पाय कर आते हैं * तो विश्व में यश फैलाते हैं।
जो रण में मारे जाते हैं * यश ध्वजा गगन फहराते हैं॥

दोहा

इसको रखकर हृदय में * करो पियू परयान।
विजय पाय दर्शन प्रभु * शीघ्र दिखाना आन॥१५७॥

बहर खड़ी

ऐसा कह कर विरागम ने * पतिदेव विदा किये हरषा।
पर समय छोम का देख नैन * जल धार लगे करने वर्षा॥
अब चले पवनजय शीघ्र गति * लंका के धुरे पुयाये हैं।
रावण को सूचना है दीनी * प्रहलाद पुत्र यहाँ आये हैं॥
अंजना सती पति को पहुँचा * अपने महलों में आई है।
पति को करती है याद सदा * हृदय रही हुए मनाई है॥
दुखिया अरु दीन गरीबों की * हर्षा सहायता करती है।
देती है दान सुपात्र साधु * सतियों की सेव सु धरती है॥

दोहा

हुये मास व्यतीत कुछ * इस रीति दो चार।
सूरत शुभ पति देव की * हृदय बीच निहार॥१५८॥

नहर खड़ी

यह समर मही से पग पीछे * अपना नहिं कभी उठाते हैं।
शत्रु के सन्मुख डटे रहे * मारें चाहे मर जाते हैं॥
करते हैं मौत से आलिंगन * कर में हथियार उठाते हैं।
शत्रु को विजय इप करले * नहिं कायर पन दिखलाते हैं॥
है कीर्तध्वजा दोनों कर में * जो असल वीर कहलाते हैं।
क्षत्राणी का पय पीकर के * कुछ करमी कर के जाते हैं॥
जो विजय पाय कर आते हैं * तो विश्व में यश फैलाते हैं।
जो रण में मारे जाते हैं * यश ध्वजा गगन फहराते हैं॥

दोहा

इसको रखकर हृदय में * करो पियू परयान।
विजय पाय दर्शन प्रभु * शीघ्र दिखाना आन ॥१५७॥

बहर खड़ी

ऐसा कह कर विरांगन ने * पतिदेव विदा किये हरषा।
पर समय छोम का देख नैन * जल धार लगे करने वर्षा॥
अब चले पवनजय शीघ्र गति * लंका के धुरे दबाये हैं।
रावण को सूचना है दीनी * प्रहलाद पुत्र यहाँ आये हैं॥
अंजना सती पति को पहुँचा * अपने महलों में आई है।
पति को करती है याद सदा * हृदय रही हए मनाई है॥
दुखिया अरु दीन गरीबों की * हर्षा सहायता करती है।
देती है दान सुपात्र साधु * सतियों की सेव सु भरती है॥

दोहा

हुये मास व्यतीत कुछ * इस रीति दो चार।
सूरत शुभ पति देव की * हृदय बीच निहार ॥१५८॥

बहर खड़ी

यह सती प्रमणी प्रेमी का ❀ हर समय ध्यान मन धरती है।
मेरे स्वामी की होय विजय ❀ यह आश रात दिन करती है॥
इक दिवस पवनजय की माता ❀ अञ्जना के महलों आई है।
आते सासू को देख सती ❀ अंग फूली नहीं समाई है॥
कंचन चौकी दीनी बिछाय ❀ चरनों में शीश नवाया है।
सासू के चरण कमल छू कर ❀ पुन चौकी पर बैठाया है॥
किया है भक्ति भाव हर्षा ❀ अरु हाथ जोड़ कर खड़ी हुई।
मन हय विनय करती है सती ❀ अपने है सत पर अड़ी हुई॥

दोहा

बोली सासू सती से ❀ मन में कुछ झुँझलाय।
गर्भ चिन्ह कुछ देख कर ❀ क्रोधानल बहराय॥१५४॥

बहर खड़ी

जो थे गुलाब रंग के कपाल ❀ वह हो गये पांडु रंग वाले।
लोचन उज्ज्वल हो गये विशाल ❀ कुच अग्र भाग काले-काले॥
गति मन्द हो गई पहिले से ❀ कुछ उदर ऊँचाई पर आया।
यह हाल देख कर सासू के ❀ अति मन में क्रोध उमड़ छाया॥
अञ्जना सती से यों बोली ❀ तू उत्तम कुल में आई है।
है धन्य भाग्य तेरा जो तू ❀ शुभ वीर-वधू कहलाई है॥
उत्तम चारित्र तेरे ही से ❀ युग कुल की लाज रह सकती है
जो सुन सुयश गावे तेरा ❀ कोई अपयश नहीं कह सकती है

दोहा

उदर तेरे की आकृति ❀ गई बदल क्यों बोल।
क्या आई तुझ को रोग है ❀ अपना मुख का खोल॥१६०॥

बहर खड़ी

या पाप मूल अमि सन्धि का * आधार यहां से दीखे है ।
पापिनी कलंकी तू कुल की * सर सार यहां सा दीखे है ॥
इन शब्दों को सुन कर के सती * अपने मन में घबराने लगी ।
गये फूल हाथ अरु पग उसके * अपने मन को समझाने लगी ॥
पति से समोद जो वस्तु मिली * वह लाई हाथ उठा कर के ।
मुद्रिका आभरण अरु कुँजी * सासू को रही दिखा करके ॥
फिर नम्र भाव से मन विचार * सासू के सन्मुख कहन लगी ।
जिस तरह शांति रसकी सरिता * मर्याद त्याग कर बहन लगी ॥

दोहा

आय लौट कर कटक से * मेरे जीवन धार ।
तीन दिवस महलों रहे * मन में सोच विचार ॥१६१॥

बहर खड़ी

जिस समय पतिने गमन किया * उस समय बात यह चीनी थी
कुछ सोच निशानी के स्वरूप * पति देव वस्तु यह दीनी थी ॥
सुन कर के क्रोध और भवका * गुस्से की सीमा नहीं रही ।
कर-कर लाल लोचन विशाल * कँप रहा गात यह बात कही ॥
दुष्टा है कुल कलंकिनी सू * जो मिथ्या बात उचारती है ।
दिया त्याग एक युग से सुत ने * उसके सिर तोहमत धरती है॥
संग्राम में जाते समय सलक * अपमानित मुझको कीना था ।
उस वीर पुत्र ने आकर के * पग तेरे महल कब दीना था ॥

दोहा

कपट साधना से तू ने * भूषण लियो मँगवाय ।
सच दिखाने के लिए * मुझको रही दिखाय ॥१६२॥

बहर खड़ी

काँजी के पड़ने से पय की * क्या दशा समझ हो जाती है।

बहर खड़ी

यह सती प्रमणी प्रेमी का * हर समय ध्यान मन धरती है।
मेरे स्वामी की होय विजय * यह आश रात दिन करती है॥
इक दिवस पवनजय की माता * अञ्जना के महलों आई है।
आते सासू को देख सती * अंग फूली नहीं समाई है॥
कंचन चौकी दीनी बिछाय * चरणों में शीश नवाया है।
सासू के चरण कमल छू कर * पुनः चौकी पर बैठाया है॥
किया है भक्ति भाव हर्षा * अरु हाथ जोड़ कर खड़ी हुई।
मन हर्ष विनय करती है सती * अपने है सत पर अड़ी हुई॥

दोहा

बोली सासू सती से * मन में कुछ झुँझलाय।
गर्भ चिन्ह कुछ देख कर * क्रोधानल बहराय ॥१५६॥

बहर खड़ी

जो थे गुलाब रंग के कपोल * यह हो गये पांडु रंग वाले।
लोचन उज्ज्वल होगये विशाल * कुच अग्र भाग काले-काले॥
गति मन्द हो गई पहिले से * कुछ उदर ऊँचाई पर आया।
यह हाल देख कर सासू के * अति मन में क्रोध उमड़ छाया॥
अञ्जना सती से यों बोली * तू उत्तम कुल में आई है।
है धन्य भाग्य मेरा जो तू * शुभ बीर-बधू कहलाई है॥
उत्तम चारित्र नर हीं से * युग कुल की लाज रह सकती है
जो सुन सुयश गाय तेरा * कोई अपयश नहीं कह सकती है

दोहा

उत्तर नर का भारति * गई वदेस क्यों बोरा।
क्या कहूं मुझ को रोग है * अपन गुल की गोल॥१६०॥

बहर खड़ी

या पाप मूल अमि सन्धि का * आधार यहां से दीखे है ।
पापिनी कलकी तू कुल की * सर सार यहां सा दीखे है ॥
इन शब्दों को सुन कर के सती * अपने मन में घबराने लगी।
गये फूल हाथ अरु पग उसके * अपने मन का समझाने लगी॥
पति से समोद जो वस्तु मिली * वह लाई हाथ उठा कर के ।
मुद्रिका आभरण अरु कुंजी * सासू को रही दिखा कर के॥
फिर नम्र भाव से मन विचार * सासू के सन्मुख कहन लगी।
जिस तरह शांति रसकी सरिता * मर्याद त्याग कर बहन लगी॥

दोहा

आय लौट कर कटक से * मेरे जीवन धार ।
तीन दिवस महलों रहे * मन में सोच विचार॥१६१॥

बहर खड़ी

जिस समय पतिने गमन किया * उस समय बात यह चीनी थी
कुछ सोच निशानी के स्वरूप * पति देय वस्तु यह दीनी थी॥
सुन कर के क्रोध और भयका * गुस्से की सीमा नहीं रही।
कर-कर लाल लोचन विशाल * कंप रहा गात यह बात कही॥
दुष्टा है कुल कलंकिनी तू * जो मिथ्या बात उचारती है।
दिया त्याग एक युग से सुत ने * उसके सिर तोहमत धरती है॥
संग्राम में आते समय तलक * अपमानित तुझ को कीना था।
उस धीर पुत्र ने आकर के * पग तेरे महल कब दीना था॥

दोहा

कपट साधना से तू ने * भूषण लियो मँगवाय ।
सत्त दिखाने के लिए * मुझ को रही दिखाय॥१६२॥

बहर खड़ी

कॉजी के पड़ने से पय की * क्या दशा समझ हो जाती है।

अब यही दशा होजाने की ❋ तेरी भी बारी आती है ॥
है इसी में अब तुझ को अच्छा ❋ एक पल भी तू यहाँ ठहर मती।
मुख दिखाकर मत हृदय फूँक ❋ नाहक में बढ़ाय बैर मती ॥
अपने पीहर का पथ पकड़ ❋ बस भला इसी में तेरा है।
बातों को बनाना पृथक् कर ❋ बस हुक्म मान ले मेरा है॥
स्वच्छन्द चारिणी मैं तुझको ❋ इक घड़ी न अब रहने दूँगी।
चाहे लख विनय मेरी करियो ❋ नहीं पल्ला तक गहने दूँगी॥

दोहा

सती अञ्जना ने सुने ❋ सासू के यह बैन।
वज्रपात हृदय हुआ ❋ जल भर आया नैन॥१६३॥

तरह खड़ी

ऐसे ही कठिन कठोर वचन ❋ बिन शस्त्र घाव करते हृदय।
मानी नहीं मान त्यागते हैं ❋ जो स्व अभिमान भरते हृदय॥
होगये कठ गती से प्राण ❋ आकर चक्कर गिर पड़ी धरन।
जब होश हुआ आँखें खोली ❋ सासूजी के गह लिये चरन॥
सासू हो मात धरम की तुम ❋ करुणा मेरे ऊपर कीजै।
मुझको पवित्र और सती जान ❋ पति आने तक रहने दीजै॥
मैं आपके कहन पर कुलटा ❋ अरु कुलोंगार ही बनती हूँ।
प्रार्थना मेरी स्वीकार करो ❋ जो और कहो सब सुनती हूँ॥

दोहा

सिन्दुर मेरे सुहाग के ❋ आजीवन आधार।
कुल में तिलक समान यह ❋ तव सुत राजकुमार॥१६४॥

बहर खड़ी

तारे यह आप की आँखों के ❋ रखवारे इस जीवन भर के।
पयपार अनुचरी की गया ❋ स्थम्भ यही भूपति घर के॥

यह समर भूमि से आजायें * उनसे भी निश्चय कर लीजे।
जो मिथ्या भाषण हो मेरा * स्वानों के सम्मुख धर दीजे॥
जब तक मैं ढूँढन खाकर के * यह दिन अपने बहलाऊँगी।
लेकर कलक टीका सासू * पीहर को कैसे आऊँगी॥
उस सती के कोमल वचनों को * सुन कर भी दया नहीं आई।
पिघला यह पत्थर हृदय नहीं * आखों में हया नहीं आई॥

दोहा

बोली है कुँमलाय के * किंकर लिये बुलाय।
काला रथ लीना मँगा * दी उस में बैठाय॥१६५॥

बहर खड़ी

काले कपड़े पहना करके * अजना यान में बैठाई।
की बसन्ततिलका को सग में * अरु महेन्द्र पुर को बिजवाई॥
मार्ग के सकट सहती है * रोती विलाप करती जाती।
बिना किये का पातिक लगा * हृदय आरत भरती जाती॥
जब महेन्द्र पुर के तट पहुँची * सारथी प्रार्थना करता है।
दोनी उतार रथ के नीचे * अरु शीश चरण में धरता है॥
स्वामिनी मेरा अपराध क्षमा * करना मैं आज्ञा कारी हूँ।
तुम सती शिरोमणि हो माता * मैं आप का एक भिखारी हूँ।

दोहा

ऐसी बातें सारथी * करता दी उतार।
तरुवर तर दोनोंन ने * बीती रात गुज़ार॥ १६६॥

बहर खड़ी

होते ही भोर पयाम किया * महलों के निकट पधारी हैं।
पहुँची है ड्योढ़ी के ऊपर * जहाँ टहल रहे रखवारी हैं॥
लख करके सवा अजना को * महलों में जवान प्रवेश किया।

अब नहीं दशा हाजान की * तेरी भी बारी आती है ॥
है क्षमा में अब तुझ का अच्छा * एक पल भी तू यहाँ ठहर मती।
मुख दिखाकर मत हृदय फूँक * नाहक में बढ़ाय बैर मती ॥
अपने पीहर का पथ पकड़ * बस भला इसी में तेरा है।
बालों का बनाना पृथक कर * बस हुक्म मान ले मेरा है ॥
स्वच्छन्द चारिणी मैं तुझको * इक घड़ी न अब रहने दूँगी।
चाहे लाख विनय भी करियो * नहीं पल्ला तक गहने दूँगी ॥

दोहा

सती अंजना ने सुने * सासू के यह बैन।
वज्रपात हृदय हुआ * जल भर आया नैन ॥१६३॥

बहर खड़ी

बस ही कठिन कठोर वचन * बिन शस्त्र घाव करते हृदय।
माना नहीं मान त्यागते हैं * जो स्व अभिमान भरते हृदय ॥
होगये कंठ गती से प्राण * खाकर चक्कर गिर पड़ी धरन।
जब होश हुआ आँखें खोली * सासूजी के गह लिये चरन ॥
सासू हो मात धर्म की तुम * करुणा मेरे ऊपर कीजे।
मुझ को पवित्र और सती जान * पति आन तक रहने दीजे ॥
मैं आपके वदन पर कुलटा * अरु कुलांगार ही बनती हूँ।
प्रार्थना मेरी स्वीकार करो * जो और कहो सब सुनती हूँ ॥

दोहा

सिन्दुर मेरे सुहाग के * आजीवन आधार।
कुल में तिलक समान यह * सब सुख राजकुमार ॥१६४॥

बहर खड़ी

तार यह आप की आँखों के * रखवारे हम जीवन भर के।
पथपार अनुचरी की नैया * स्वयंम पदी भूपति पर के ॥

इसलिये न जब तक निश्चय हो ✿ कुछ गुप्त सहाय मिल जाये।
प्रसादिक से रक्षा इनकी ✿ हो जाय मान मस्त खिल जाये॥
कहता है नीति धर्म ऐसा ✿ प्रथम अपराध समझ लीजे।
जैसा अपराधी दृष्टि पड़े ✿ वैसा उसको दण्डित कीजे॥

दोहा

कहने मन्त्री से लगे ✿ मन में धीरज धार।
सासू सभी स्थान पे ✿ क्या हो एक ही सार॥१६६॥

बहर खड़ी

मिल चुकी सूचना पहले ही ✿ नहीं प्रेम पवनजय करते हैं।
उनको है स्नेह नहीं किंचित् ✿ मन द्वेष भाव भी धरते हैं॥
फिर गर्भ पवनजय का कैसे ✿ क्योंकर विश्वास कहो आवे।
नहिं मुझे भरोसा कुछ इस का ✿ मन देख-देख कर घबरावे॥
यह सुन कर पहरेदारों ने ✿ धक्के दे कर दीना बाहर।
झूठा अपराध सती का था ✿ यह हुआ सत्त का ही आदर॥
मन सोच समझ माताजी के ✿ महलों का ही मार्ग लिया।
रोती जाता बेकल होती ✿ माँ की ड्योढ़ी पर चरन दिया॥

दोहा

कनक गुही डोरी सुघर ✿ मणि गण जड़े विचित्र।
पावन परम हिंडोलना ✿ पूरण प्रिय पवित्र॥१७०॥

बहर खड़ी

बैठी थी प्रेम प्रमोद भरी ✿ सुन्दर अनुचरी झुलाती थी
मन मोद सुदायक प्रेम भरे ✿ मीठे स्वर गायन गाती थी॥
पड़ गई अंजना पर दृष्टि ✿ तन दीन मलिन मुखा आई।
काले लिबास में आकर के ✿ सूरत कलंकिनी दिखलाई॥
ऐसा कह कर गिर पड़ी धरन ✿ युग करन शीश पर दे मारे।

इसलिये न जब तक निश्चय हो ॥ कुछ गुप्त सहारा मिल जाये।
अन्नादिक से रक्षा इनकी ॥ हो आय यान सब खिल जाये॥
कहता है नीति धर्म ऐसा ॥ प्रथम अपराध समझ लीजे।
जैसा अपराधी दृष्टि पड़े ॥ वैसा उसको दण्डित कीजे॥

दोहा

कहमे मन्त्री से लगे ॥ मन में धीरज धार।
सासू सभी स्थान पे ॥ कृपा हो एक ही सार॥१६६॥

बहर खड़ी

मिल चुकी सूचना पहले ही ॥ नहीं प्रेम पवनजय करते हैं।
उनको है स्नेह नहीं किंचित् ॥ मन द्वेष भाव भी धरते हैं॥
फिर गर्भ पवनजय का कैसे ॥ क्योंकर विश्वास कहो आवे।
नहिं मुझ भरोसा कुछ इस का ॥ मन देख-देख कर घबरावे॥
यह सुन कर पहरेदारों ने ॥ धक्के दे कर दीना बाहर।
झूठा अपराध सती का था ॥ यह हुआ सब का ही आदर॥
मन सोच समझ माताजी के ॥ महलों का ही मार्ग लिया।
रोती आती बेकल होती ॥ माँ की ड्योढ़ी पर चरन दिया॥

दोहा

कनक गुही डोरी सुघर ॥ माणि गण जड़े विचित्र।
पावन परम हिंडोलना ॥ पूरण प्रिय पवित्र॥१७०॥

बहर खड़ी

बैठी थी प्रेम प्रमोद भरी ॥ सुन्दर अनुचरी झुलाती थी
मन मोद सुदायक प्रेम भरे ॥ मीठे स्वर गायन गाती थी॥
पड़ गई अंजना पर दृष्टि ॥ तन क्षीन मलिन दशा आई।
काले लिबास में आकर के ॥ सूरत कलंकिनी दिखलाई॥
ऐसा कह कर गिर पड़ी धरन ॥ युग करन शीश पर दे मारे।

साला है याज लया फो झट ॥ अय लया याज फो साता है।
राजों को कारागार होय ॥ चोरों का राज कहाता है॥

दोहा

धन पति हुए सियार अय ॥ सियार हुए यनराय।
नकुल मारता व्याल को ॥ व्याल नकुल को खाय॥१७३॥

बहर खड़ी

जय समय पलटता है आकर ॥ उससे संसार पलट जाता।
कर्मों की गति अति बाँकी है ॥ नहिं कोई सहायक बन आता
यह सर्व गति कर्मों की है ॥ धक्के दासों से दिलवाये।
पीती थी गंगाजल अब सा ॥ आसू नैनों के पिलवाये॥
प्यासी पानी से तड़फ रही ॥ पर नीर न कोई पिलाता है।
बिन नीर होट हो गये शुष्क ॥ जी घबरा कंठ घिर आता है॥
यह दशा देख कर इक बुढ़ के ॥ हृदय में तनिक दया आई।
बोला तुम यहीं बैठ जाओ ॥ पानी पीकर जाना बाई॥

दोहा

माई आज्ञा पिता की ॥ तोडूँ नहिं जिन हार।
तीय मनाई नीर को ॥ पिऊँ न जल की धार॥१७४॥

गायन

(तर्ज—एक तीर फैंकता जा)

जिनवर जिनेश जिनपति ॥ पत मेरी बचा लेना।
अपने चरण में स्वामी ॥ मन मेरा रचा लेना॥
बिन पति पतित कहाई ॥ पातिक हरन निहारो।
पावन परम प्रभू मन ॥ सत पथ में खिंचा लेना॥
मोटा महान् मैं ने ॥ अघ पूर्व मैं कमाया।
इन कर्म के कटक को ॥ करुणा से कचा लेना॥

नस-नस में प्रेम स्वामी * नव नाम का प्रगट हो।
लाकर दया दयानिधि * रिपु मेरे लखा लेना॥
लग जाय मन चरन में * पावन पतित तुम्हारे।
जिनराज जय की जग में * अब धूम मचा लेना॥

दोहा

दुखित हृदय जाती सती * आरत यत अपार।
ग्राम ग्राम में घूमती * पहुँची विपन मुझार॥१७५॥

बहर खड़ी

पर्वत की चोटी पर पहुँचा ठुकराती ठोकर खाती है।
कहिं थक थक कर उठ-उठ कर * एक वृक्ष के नीचे आती है।
करती है विलाप सिलापर रोती और पछताती है।
अपने ही पूर्व कुकर्मों पर कर मलती अश्रु बहाती है॥
मैं कैसी मंद भागिनी हूँ * क्या हाय कर्म ऐसा कीना।
गुरु जनों ने भी बिन जाँच किये दुःकर के देश निकाल दीना॥
दुर्दिन की सताई अपमानित होकर निर्वासित करी गई।
दिन साथ समझ ही आशा * वन में जान की दई गई॥

दोहा

प्राणाधार बिना रहे * प्राण देह में हाय।
उसका ही फल भोगना * तुम्हें पड़ा है आय॥१७६॥

बहर खड़ी

पति बिन पत्नी का जगत बीच * पति का रखवैया कौन कहो।
पति पास नहीं जिस पत्नी के * फिर पार करैया कौन कहो॥
जब नाथ नहीं प्राणों का है * तो प्राण रखवाला कौन कहो।
हृदय मन्दिर बिन प्रियतम के * मन का उजियारा कौन कहो॥

कुछ दोष किसी का नहीं सखी # जो किया वही फल पाया है।
जैसा दुख औरों को दीना # वैसा दुख आगे आया है॥
बिन पति के पतित होय जग में # बिन पति पातिक लग जाता है।
बिन पति के न्याय किसी की है # पति बिन दुख ऊपर आता है॥

दोहा

किया होगा पूर्व में # मिथ्या भाषण आदि ।
इस भव में यदि आन कर # मिली मुझे प्रसादि ॥१७७॥

बहर खड़ी

दोषारोपण किया' मैंने # या अवश्य कलंकित कीना है॥
या बिन छाना पानी पीना # पर निंदा में चित्त दीना है॥
या व्रत किये खण्डन मैं ने # या किसी को अवश्य सताया है।
या जलाशय की पालों को # हँस-हँस मैंने तुड़वाया है॥
या पाप अठारह का मैंने # खुल्लम-खुल्ला व्यवहार किया।
या अधम पथ में खुश होकर # सब से आगे चरण दिया॥
या साधु श्रावक के व्रतों को # लेकर के मैंने तोड़ा है।
या आग्नि लगाई वनों बीच # या मस्त्र किसी का फोड़ा है॥

दोहा

ईंटें चूने आदि का # किया पूर्व में काम।
कर-कर के अपकार बहु # बान्धे खोटी दाम ॥१७८॥

बहर खड़ी

या बैंगुन आदि फलों को ले # भरता कर उन को खाया है।
या माधू आम मसाला भर # उनका अचार रखवाया है॥
या बिन कारण तरु की शाखों # को तोड़-तोड़ कर डाली है।
या नव विकसित कलियों को # कर अपने से तोड़ निकाली है॥
या घुना अनाज पिसाया है # या दीपक खुला जलाया है।

नस-नस में प्रभु स्वामी * तव नाम का प्रगट हो।
लाकर दया दयानिधि * रिपु मेरे लखा लेना॥
लग जाय मन चरन में * पावन पतित तुम्हारे।
जिनराज जय की जग में * जय धूम मचा लेना॥

दोहा

दुखित हृदय जाती सती * धारत धत अपार।
ग्राम ग्राम में घूमती * पहुँची विपिन मुझार॥१७५॥

बहर खड़ी

पर्वत की चोटी पर पहुँचो * ठुकराती ठोकर खाती है।
कहिं बैठ-बैठ कर उठ उठ कर * एक वृक्ष के नीचे आती है।
करती है विलाप विलापकर * रोती और पछताती है।
अपने ही पूर्व कर्तव्यों पर * कर मलती अश्रु बहाती है॥
मैं कैसी मन्द भागिनी हूँ * क्या हाय कर्म ऐसा कीना।
गुरु जनों ने भी बिन आँच किये * मुकर के देश निकाल दीना॥
दुर्दिन की सताई अपमानित * होकर निर्वासित करी गई।
बिन सोचे समझे ही आज्ञा * वन में जाने की दई गई॥

दोहा

प्राणाधार बिना रहे प्राण देह में हाय।
उसका ही फल भोगना मुझ पड़ा है आय॥१७६॥

बहर खड़ी

पति बिन पत्नी का जगत बीच * पति का रखवैया कौन कहो।
पति पास नहीं जिस पत्नी के * फिर पार करैया कौन कहो॥
नर नारी के प्राणों का हि * ना मग रखवाला कौन कहो।
बिन स्वामी के बिन प्रियतम के * मन का प्रतिपाला कौन कहो॥

दोहा

पैदा हुए जाय कर ☆ छूठे स्वग मझदार।
तेरी कोख से होयगा ☆ वही राज कुमार ॥१८५॥

बहर खड़ी

उत्तम अमूल्य हो रत्न पुत्र ☆ हो चरम शरीरी गुणवाला।
अति पुण्यवान् सुन्दर महान ☆ हो भाग्यवान जग उजियाला॥
रिपु वृन्द मान का सहारक ☆ सज्जन का सदा सहायक हो।
मित्रों का अति मन भायक हो ☆ पुनः राजनीति में नायक हो॥
यह वसततिलका सखि तेरी ☆ जो हुई पड़ौसिन आकर के।
बिन भोगे कर्मन छुटकारा ☆ दीना सब हाल सुना कर के॥
अब कुछ दिन और धीर बाँधो ☆ पूर्व का फल टल जायेगा॥
जो समय तीव्र होकर आया ☆ जल सा बहाव ढल जायगा।

दोहा

अस कह कर मुनि ने किया ☆ बन से तुरत पयान।
राज कुमारी अञ्जना ☆ देखे कर के ध्यान ॥१८६॥

बहर खड़ी

चौतर्फ देखती फिरती हैं ☆ पर मुनि का पता नहा पाया।
थक कर गई बैठ वृक्ष नीचे ☆ अरु अपने मन का समझाया॥
मुनिवरकी भविष्यवाणी सुनकर ☆ आशा के हिंडोले झूलती थी।
आनन्द मनाती थी कुछ-कुछ ☆ अपने हृदय में फूलती थी॥
कानों में सिंह दहाड़ पड़ी ☆ देखा है नज़र उठा कर के।
गर्जना सुनी कम्प गया बदन ☆ दासी बोली घबरा कर के॥
बन में आधार उन्हीं का है ☆ वे ही सब दुख को टालेंगे।
इतने दिन टाल दिये जिसने ☆ वह यह भी समय निकालेंगे॥

दोहा

ललित लालमा लोप सी ☆ होन लगी तहि वार।

दोहा

पैदा हुए आय कर * छूटे स्वग मझधार।
तेरी कोख से होयगा * यही राज कुमार ॥१८५॥

बहर खड़ी

उत्तम अमूल्य हो रत्न पुत्र * हो चरम शरीरी गुणवाला।
अति पुण्यवान् सुन्दर महान * हो भाग्यवान जग उजियाला॥
रिपु वृन्द मान का सहारक * सज्जन का सदा सहायक हो।
मित्रों का अति मन भायक हो * पुनः राजनीति में नायक हो॥
यह वसततिलका सखि तेरी * जो हुई पड़ोसिन आकर के।
बिन भोगे कर्मन छुटकारा * दीना सब हाल सुना कर के॥
अब कुछ दिन और धार धीरो * पूर्व का फल टल जायेगा॥
जो समय तीव्र होकर आया * जल सा बहाव ढल जायगा।

दोहा

अस कह कर मुनि ने किया * वन से तुरत पयान।
राज कुमारी अजना * ऐसे कर के ध्यान ॥१८६॥

बहर खड़ी

चौतफ देखती फिरती है * पर मुनि का पता नहा पाया।
थक कर गई बैठ वृक्ष नीचे * अरु अपने मन का समझाया॥
मुनिवरकी भविष्यवाणी सुनकर * आशा के हिंडोले झूलती थी।
आनद मनाती थी कुछ-कुछ * अपने हृदय में फूलती थी॥
कानों में सिंह दहाड़ पड़ी * देखा है नजर उठा कर के।
गर्जना सुनी कम्प गया बदन * दासी बोली घबरा कर के॥
वन में आधार उन्हीं का है * वे ही सब दुख को टालेंगे।
इतने दिन टाल दिये जिसने * वह यह भी समय निकालेंगे॥

दोहा

ललित लालमा लोप सी * होन लगी तहि वार।

निर्ग्रंथों के शुभ दर्शन से ✿ हृदय में अति अनुराग ही था॥

दोहा

धारी जो महाव्रत के ✿ षट् काया रक्ष पाल।
रजोहरण रखते सदा ✿ सब पर रहें दयाल ॥१८३॥

बहर खड़ी

बाँधे हैं मुखवस्त्रिका सुखकर ✿ शुद्ध काष्ट पात्र रखते कर में।
होते हैं त्यागमूर्ति यह ✿ अद्भुत अपूर्व दुनिया भर में॥
जिसके आचार विचार शुद्ध ✿ उन मुनियों को गुरु मानती थी
इन ही मुनियों के चरणों से ✿ भव सिन्धु से तरना जानती थी
बिन दर्श किये मुनिराजों के ✿ भोजन स्वीकार न करती थी।
हृदय में दया धर्म अपने ✿ गुरुओं की शिक्षा धरती थी।
कनकोदरी ने उसके सुत को ✿ लेकर पड़ोस में छुपा दिया।
सुत को नहीं लखा लक्ष्मी ने ✿ तब की विलाप अति ही किया॥

दोहा

देखा रोता सौत को ✿ माना मन आनन्द।
दुख लक्ष्मी को हुआ ✿ सुन प्यारे मकरन्द ॥१८४॥

बहर खड़ी

यों तेरह घड़ी छुपा रक्खा ✿ ऐसा षड्यन्त्र रचाया था।
रोती विलाप करती थी सती ✿ हृदय में बहु दुख पाया था॥
यह बँधा निकाचित कर्म आन ✿ सो बिन भुगते नहिं जायेगा।
यही तू कनकोदरी मर ✿ उस फल को यहाँ चुकायेगा॥
लक्ष्मीवती का जीव यहाँ पर ✿ हुआ है पवनजय आकर के।
वह बदला यहाँ हुआ पूरा ✿ सुत रक्खा दूर छुपा करके॥
सिंहरथ कुमार श्री मयम से ✿ पालन कर काटन गणम्या थी।
नियमानुसार कर के पालन ✿ सुर पुर की ऋद्धि गमम्या थी॥

दोहा

पैदा हुए आय कर ॥ छठे स्वर्ग मझदार ।
तेरी कोंख से होयगा ॥ यही राज कुमार ॥१८५॥

बहर खड़ी

उत्तम अमूल्य हो रत्न पुत्र ॥ हो चरम शरीरी गुणवाला ।
अति पुण्यवान् सुन्दर महान ॥ हो भाग्यवान जग उजियाला ॥
रिपु वृन्द मान का संहारक ॥ सज्जन का सदा सहायक हो ।
मित्रों का अति मन भायक हो ॥ पुनः राजनीति में नायक हो ॥
यह वसततिलका सखि तेरी ॥ जो हुई पड़ोसिन आकर के ।
बिन भोगे कर्मन छुटकारा ॥ दीना सब हाल सुना कर के ॥
अब कुछ दिन और धीर बाँधो ॥ पूर्व का फल टल जायेगा ॥
जो समय सीघ्र होकर आया ॥ जल सा बहाव ढल जायगा ।

दोहा

अस कह कर मुनि ने किया ॥ बन से तुरत पयान ।
राज कुमारी अंजना ॥ देखे कर के ध्यान ॥१८६॥

बहर खड़ी

चौतर्फ देखती फिरती है ॥ पर मुनि का पता नहा पाया ।
थक कर गई बैठ वृक्ष नीचे ॥ अरु अपने मन का समझाया॥
मुनिवरकी भविष्यवाणी सुनकर ॥ आशा के हिंडोले झूलती थी ।
आनंद मनाती थी कुछ-कुछ ॥ अपने हृदय में फूलती थी ॥
कानों में सिंह दहाड़ पड़ी ॥ देखा है नज़र उठा कर के ।
गर्जना सुनी कम्प गया बदन ॥ दासी बोली घबरा कर के ॥
बन में आधार उन्हीं का है ॥ वे ही सब दुख को टालेंगे ।
इतने दिन टाल दिये जिसने ॥ वह यह भी समय निकालेंगे ॥

दोहा

ललित लालमा लोप सी ॥ होन लगी तहि बार ।

निर्ग्रन्थों के शुभ दर्शन में ० हृदय में अति अनुराग ही थे॥

दोहा

त्यागी जो महापुरुष के ० पद काया रज पाल ।
रजोहरण रखते सदा ० सब पर रहें दयाल ॥१८३॥

बहर खड़ी

बाँधे हैं मुखवस्त्रिका सुन्दर ० कुछ काष्ठ पात्र रखते कर में।
हाल है त्यागमूर्ति यह अद्वित अपूर्व दुनिया भर में॥
जिनके आचार विचार शुद्ध ० उन मुनियों को गुरु मानती थी
इन ही मुनियों के चरणों से ० जग सिन्धु से तरना जानती थी
बिन देश किये मुनिराजों के ० भोजन स्वीकार न करती थी।
हृदय में दया धर्म अपने ० गुरुओं की शिक्षा धरती थी।
धनकादरी ने उसके सुत को ० लेकर पड़ोस में छुपा दिया।
सुत का नहीं लखा लक्ष्मी ने ० तड़फी विलाप अति ही किया॥

दोहा

देखा रोता मात को ० माना मन आनन्द।
पुत्र लक्ष्मी का हुआ ० सुम प्यारे मकरन्द॥१८४॥

बहर खड़ी

यों तेरह घड़ी छुपा राखा ० ऐसा षड़यन्त्र रचाया था।
रोती विलाप करती थी सती ० हृदय में बहु दुख पाया था॥
यह बँधा निकाचित कर्म आन ० सो बिन भुगते नहिं जायेगा।
यही तू धनकोदरी भई ० उस फल को यहाँ चुकायेगा॥
लक्ष्मीवती का जीव यहाँ से ० हुआ है पद्मजय आकर के।
यह बदला यहाँ हुआ पूरा ० सुत रक्खा पूर्व छुपा करके॥
सिद्धरथ कुमार भी संयम ले ० पालन कर कठिन तपस्या को।
नियमानुसार कर के पालन ० सुरपुर की कठिन समस्या को॥

बहर खड़ी

आराधा देव और गुरु को * हृदय जिन धर्म जमाया है।
तीनों तत्वों के गुण स्मरण कर * मन में प्रेम बढ़ाया है॥
पुन परम पञ्च परमेष्ठी का * अपने हृदय में जाप किया।
उस महामन्त्र का स्मरण कर * तन मन का पृथक् ताप किया॥
जो क्षेत्र पालक था बन रक्षक * केसरी का रूप बनाया है।
रख पूँछ गुच्छ करता दहाड़ * उस सिंह के सन्मुख धाया है॥
दिया निकाल उस बन से बाहर * फिर स्वय रूप रख कर आया।
आकर रक्षा में खड़ा हुआ * हर तरह सती को समझाया।

दोहा

अब मन में चिन्ता मती * करो सती लो मान।
शीघ्र तुम्हारा दुख अब * दूर करें भगवान ॥१६०॥

बहर खड़ी

सुन्दर फल फूल तोड़ कर के * ला सती के आगे आन धरे।
हर तरह सहायक हुआ आन * अजना के सकट दूर हरे॥
अब गर्भ स्थिति हुई पूर्ण * शुभ दिन नक्षत्र शुभ आया है।
नौ महीने सात रात बीते * अजनी ने शुभ सुत आया है॥
थी चैत्र मास और कृष्ण पक्ष * अष्टमी वार शशि था प्यारा।
नक्षत्र पुष्य शुभ योग महा * रजनी पिछली हुआ सुत सारा॥
लख कर सुपुत्र का अग अग * छाई उमङ्ग उर माता के।
था मन में भास हुआ उसका * नाश अब है प्रकाश सुख साता के

दोहा

देखा माता ने कुँवर * मन में किया विचार।
नगर पति के जन्मता * होते जैसे कार ॥ १६१ ॥

बहर खड़ी

ऐसा कारण मन में विचार * हृदय का वेग उमड़ आया।

चतुर दशा आइ मना भासित सुपट तन धारा॥१८७॥

बहर खड़ी

सन सन चलती शीतल समीर सा धीर सती को देती है।
कहता है दुःखित अवस्था में तू साथ कौन के गहती है॥
ला नज़र उठा देखा हमको हम कौन कहाँ की वासिन हैं।
सम्राट शक्तिशाली दिनमणि की प्राण प्रिय प्रकाशिन हैं॥
उनके नहिं ज्ञान के कारण हर सिम्त आपदा छाई है।
निशि में पहुंची है यहीं जहाँ देती कालिमा दिखाई है॥
करत झिल्ली झनकार कहीं खद्योत कभी धोखा देते।
घूँ घूँ कटि वाक्य उचरत है कहिं अम्युक आ खींचे लेते॥

दोहा

चर्मों की चिक्कार से दहलाता है मन।
काल कुटिलता से सुना रहा कँपा है तन॥१८८॥

बहर खड़ी

पति परम नाथ का मारग यह नीला आकाश शिरोमणि है।
[illegible] गमन सुगम पथ पर उनका जो कि दिनकर मणि है॥
[illegible] मारग में [illegible] उडुगण गाड़ फैलाये हैं।
प्रात [illegible] यह तूफान मचाये हैं॥
[illegible] दुःनाम अपनी दुष्टता दिखाता है।
[illegible] पथ में बाधा फैलाता है॥
[illegible] तुम [illegible] इस समय सती जो बन रही हो
[illegible] आ इस विपता में सन रही हो॥

दोहा

अजना सती ने विस्मित हो ❀ देखा विमान नीचे आते ।
अपने मामा अरु मामी को ❀ बैठे विमान में उतराते ॥
जय सुरसेन अजना सती को ❀ अपनी भानजी जान गये ।
हर एक तर्क से अपने ❀ हृदय में उसे पहिचान गये ॥
आनदोत्सुकता से आकर ❀ मामा ने कंठ लगा लीना ॥
गद्-गद् हृदय हो गये युगल ❀ सब हाल तुरत समझा दीना ॥

दोहा

सुन कर शब्द अजना के ❀ बार-बार बलिहार ।
मन प्रसन्नता धार के ❀ ली विमान बैठार ॥१६३॥

बहर खड़ी

बैठी है बीच विमान हर्ष ❀ अति तीव्र गति से जाता है ।
शशि की सुन्दरता का प्रभाव ❀ मुक्ता गुच्छे पर आता है ॥
उस भूमर को अविलोक वीर ❀ हनुमान फुलाँघ भरी मारी ।
आगे विमान बढ़ गया ❀ गिरे भू वायुयान से अवतारी ॥
सुत को गिरि पर गिरते देखा ❀ माता को मूर्च्छा आई है ।
यह हाल देख कर भूपति की ❀ अति ही तबियत घबराई है ॥
लाय विमान को झट उतार ❀ देखा बालक को खेल रहा ।
हो गया शिला का चूर-चूर ❀ अगुष्ट सु मुख में मेल रहा ॥

दोहा

गोदी में लीना उठा ❀ उछल पड़े इक साथ ।
अति हर्षा कर के तुरत ❀ दिया मात के हाथ ॥१६४॥

बहर खड़ी

माता अरु पितु के धीरज को ❀ हरबार प्रसंशा करते हैं ।
वज्जर शरीर अनुभव कर के ❀ वजरंगी नाम सु धरते हैं ॥
आनन्द मनाते मारग में ❀ हनुपाटन पहुँच विमान गया ।

रुक सका नहीं जब मन समुद्र * नैनों में आ कर जल छाया ॥
पर पूर्व कृत कर्मों का फल * मन समझ सती संतोष किया।
सख वसततिलका न आकर * चिर सगनों को अति तोष दिया
लालन पालन में बाइस दिन * अब बात गये हैं जंगल में।
सुत को विलोक कर दोनों ही * रहती आनन्द सु मंगल में ॥
शशि का पूर्ण प्रकाश हुआ * अब पूर्णिमा का दिन आया।
खिल रही जुन्हैया विमल-विमल * परम प्रकाश थल पर छाया ॥

दोहा

मोदित माँ की गोद में * खेल रहे हनुमान ।
हाथ चलावें कर कमल * सुन्दरता के खान ॥१६२॥

बहर खड़ी

नव विमल स्थली शुभ भूमि * जो शिला स्वच्छ पर्यंक वहाँ।
लावण्य खान अम्बर वितान * तन रहा जहाँ पर शक नहीं ॥
लग रहा चन्द्र शुभ फूल जैसे * खिल रहा प्रकाशित जगल है।
कर रही फिटिक मणि के समान * खिल मना रही अति मंगल है ॥
विमलाम्बरी में चरण कमल * चन्द्रमा को देख उछाल रहे।
लोटन कपोत की तरह लोट * कर अपना हृदय बहाल रहे ॥
हाथों-पावों को देख-देख * माताजी मन हर्षाती हैं ।
मन में पति की कर याद कभी * नैनों से अश्रु बहाती हैं ॥

दोहा

उस रजनी में ही यहाँ * आया एक विमान ।
चलते-चलते रुक गया * भ्रम यह नहीं याम ॥१६३॥

बहर खड़ी

देखा है दूर सैंग मौंधे * अबला सा बैठी नजर पड़ी।
लाये उतार धरा वायुयान * अब हनुमान स नजर सड़ी ॥

अंजना सती ने विस्मित हो * देखा विमान नीचे आते ।
अपने मामा अरु मामी को * बैठे विमान में उतराते ॥
जब सुरसेन अंजना सती को * अपनी भांनजी जान गये ।
हर एक तर्क से अपने * हृदय में उसे पहिचान गये ॥
आनन्दोत्सुकता से आकर * मामा ने कंठ लगा लीना ॥
गद्-गद् हृदय हो गये युगल * सब हाल तुरत समझा दीना ॥

दोहा

सुन कर शब्द अंजना के * बार-बार बलिहार ।
मन प्रसन्नता धार के * ली विमान बैठार ॥११४॥

बहर खड़ी

बैठी है वीच विमान हर्ष * अति तीव्र गति से जाता है ।
शशि की सुन्दरता का प्रभाव * मुन्ना शुच्छे पर आता है ॥
उस झूमर को अविलोक वीर * हनुमान कुलाँच भरी मारी ।
आगे विमान बढ़ गया * गिरे भू वायुयान से अवतारी ॥
सुत को गिरि पर गिरते देखा * माता को मूर्च्छा आई है ।
यह हाल देख कर भूपति की * अति ही तबियत घबराई है ॥
लाय विमान को झट उतार * देखा बालक को खेल रहा ।
हो गया शिला का चूर-चूर * अगुष्ट सु मुख में मेल रहा ॥

दोहा

गोदी में लीना उठा * उछल पड़े इक साथ ।
अति हर्षा कर के तुरत * दिया मात के हाथ ॥११५॥

बहर खड़ी

माता अरु पितु के वीरज की * हरबार प्रशंसा करते हैं ।
वज्जर शरीर अनुभव कर के * वजरंगी नाम सु धरते हैं ॥
आनन्द मनाते मारग में * हनुपाटन पहुँच विमान गया ।

रुक सका नहीं जब मन समुद्र ✿ नैनों में आ कर जल छाया ॥
पर पूर्व कृत कर्मा का फल ✿ मन समझ सती संतोष किया।
लख वसन्ततिलका न आकर ✿ चिर सगनी को अति सोप दिया
लालन पालन में यों इस दिन ✿ जब बीत गये हैं जंगल में।
सुत को बिलोक कर दोनों ही ✿ रहती आनन्द सु मंगल में ॥
शशि का पूर्ण प्रकाश हुआ ✿ जब पूर्णिमा का दिन आया।
खिल रही जुन्हैया विमल-विमल ✿ पूरण प्रकाश थल पर छाया ॥

दोहा

मोदित माँ की गोद में ✿ खेल रहे हनुमान ।
रूप विलास कर कमल ✿ सुन्दरता के खान ॥१६२॥

बहर खड़ी

मध्य विमल स्थली शुभ भूमि ✿ जो शिला स्वच्छ पर्यंक यहीं।
लावण्य खान सुन्दर दिवान ✿ तन रहा जहाँ पर शक नहीं ॥
लग रहा चन्द्र शुभ फूल जैसे ✿ खिल रहा प्रकाशित जंगल है।
धर धरी स्फटिक मणि के समान ✿ खिल मना रहा अति मंगल है ॥
विमलाम्बरी में चरण कमल ✿ चन्द्रमा को देख उछाल रहे।
लोटन कपोत की तरह लोट ✿ कर अपना हृदय बहाल रहे ॥
हाथा-पाया को देख-देख ✿ माताजी मन हर्षाती हैं ।
मन में पति की कर याद कभी ✿ नैनों से अश्रु बहाती हैं ॥

दोहा

उस रजनी में ही वहाँ ✿ आया एक विमान ।
चलते-चलते रुक गया ✿ आगे बढ़े नहीं यान ॥१६३॥

बहर खड़ी

देखा है शूर सैन माथे ✿ अपना को बैठी नजर पड़ी।
लाय उतार धरा वायुयान ✿ जब हनुमान रहे नजर खड़ी ॥

निज कटक संग में ले अपने * पुर को पयान किया हर्षा।
मारग सब करके आ पहुँचा * हृदय अति आनंद रंग घर्षा॥
किया प्रणाम पिता को आ * रण का सब हाल सुनाया है।
माता के पुन दर्शन पाकर * अपने महलों में आया है॥

दोहा

सूने देखे महल जब * मन में किया विचार।
दास दासिया से सुना * सारा हाल कुमार॥१६८॥

बहर खड़ी

सुन कर यह हाल अंजना का * कल पड़ती नहीं पवनंजय को
केवल अलाप विलाप करें * मन सोचे विजय पराजय को॥
सभी बोले बेकलता तज * प्यारे पुरुषार्थ हाथ धरो।
बेकलता से क्या होता है? * अब खोजने को प्रस्थान करो॥
सुनते ही पवनंजय चल दाने * उठ घर से चरन बढ़ाते हैं।
माता ने मारग घेर लिया पुन * बाँह छुड़ा कर जाते हैं॥
बनी में वृक्षों में झाड़ों में * देखे हैं गुफा पहाड़ों में।
नहिं नज़र पड़ी अंजना सती * देखा बन खंड उजाड़ों में॥

दोहा

आया पास महेन्द्रपुर * करते कुँवर विचार।
किस अरियां से भय कहो * जाऊ मैं सुसरार॥१६९॥

बहर खड़ी

भेजा था दूत पवनंजय ने * जाकर सब हाल सुनाया है।
महेन्द्र भूपत तैयारी से * पुर बाहर लेने आया है॥
भेंटे हैं कुशल पूर्वक युग * पूछा प्रसन्न हो हाल सभी।
कह दिया पवनंजय ने सारा * खुश होकर के अहवाल सभी
मज्जन कर भजन कर पाये * चन्दन आदिक पुन चर्चाया।

उस ही रजनी में सूरसन का * आमोरसव पर ध्यान गया ॥
सजवाया शहर चतुरता से * दुखिया दीनों को दान दिया ।
आये जो मित्र हितु सारे * सब को नृप ने सन्मान दिया ॥
उस ही निश में बुलवा लीना पूरे पण्डित विद्वानों को ।
महलों में नाम संस्करण * करने को कहा सुजानों को ॥

दोहा

आये जो विद्वान थे * करने लगे विचार ।
बड़ा भाग्यशाली बली * विद्या बुध गुण सार ॥१६६॥

बहर खड़ी

दिनकर अति उत्तम उच्च का है * जो मेष राशि पर आया है ।
चन्द्रमा मकर का शुभ लायक * जो चौथ भवन में छाया है ॥
मङ्गल मध्यम हो कर आया * जो वृष राशि पर ठहरा है ।
और बुध वीच मीन राशि गुरु उच्च कर्क का गहरा है ॥
शनि मीन राशि में स्थित है * और उदय मीन राशि का है ।
ह ब्रह्म योग यही अति उत्तम सब बुद्धि यह प्रकाश का है ॥
हनुमान नाम रक्खा हर्षा सब के मन हर्ष समाया है ।
आनंद खुशी का है यह दिन । सब को आनंद समाया है ॥

दोहा

इधर पवनजय ने विजय किया वरुण को जाय ।
खर दूषण दानान का * लिया तुरत छुड़ाय ॥१६७॥

बहर खड़ी

पहुंचे लङ्का में आ कर * रावण प्रसन्न हुए भारी ।
अति विजय लाभ करके आये * बहुत है वीर पुरुष भारी ॥
प्रत्यक्ष वीर की प्रतिष्ठा * सादर दशकण्ठ कराई है ।
सत्कार समाधित उनका कर * दीनी सादर विदाई है ॥

निज कटक संग में ले अपने * पुर को पयान किया हर्षा।
मारग तय करके आ पहुँचे * हृदय अति आनद रंग वर्षा॥
किया प्रणाम पिता को जा * रण का सब हाल सुनाया है।
माता के पुनः दर्शन पाकर * अपने महलों में आया है॥

दोहा

सूने देखे महल जब * मन में किया विचार।
दास दासिया से सुना * सारा हाल कुमार॥१६८॥

बहर खड़ी

सुन कर यह हाल अजना का * कल पड़ती नहीं पवनजय को
केवल अलाप विलाप करें * मन सोचे विजय पराजय का॥
मन्त्री बोले बेकलता तज * प्यारे पुरुषार्थ हाथ धरो।
बेकलता से क्या होता है? * अब खोजने को प्रस्थान करो॥
सुनते ही पवनंजय चल खाने * उठ घर से चरन बढ़ाते हैं।
माता ने मारग घेर लिया पुन * बाँह छुड़ा कर जाते हैं॥
बनी में वृक्षों में झाड़ों में * देखे हैं गुहा पहाड़ों में।
नहि नज़र पड़ा अजना सती * देखा बन खड उजाड़ों में॥

दोहा

आया पास महेन्द्रपुर * करते कुँवर विचार।
किस ज़रिये से अब कहो * जाऊ मैं सुसरार॥१६६॥

बहर खड़ी

भेजा था दूत पवनंजय ने * जाकर सब हाल सुनाया है।
महेन्द्र भूपत तैयारी से * पुर बाहर लेने आया है॥
भेंटे हैं कुशल पूर्वक युग * पूछा प्रसन्न हो हाल सभी।
कह दिया पवनंजय ने सारा * खुश होकर के अहवाल सभी
मदन कर मजन कर खाये * चन्दन आदिक पुन चर्चाया।

पाने ही सूचना चल दीने * सारे दल को पीछे छोड़ा।
पहुँचे हैं हनुमान पाटन * मार्ग से नहिं मुख को मोड़ा॥

दोहा

माता देखा पति को * छाया प्रेम अपार ।
पति की गोदी में दिये * हनुमत राजकुँवार ॥२०२॥

बहर खड़ी

पति को पर्श सती हर्षा * अपना घन भाग समझती है।
जिस तरह साप में आकर के * मोती की बूँद बरसती है॥
पूछा पुनः हाल विपिन का सब * भर गया हृदय करुणा रस में।
प्रिय का करुणा का वेग सभी * आकर के समाया नस-नस में॥
संक्षेप रूप में हाल सभी * जो कुछ बीता समझा दीना।
फिर मुनि के वृत्तान्त का सारा * कह के अहवाल सुना दीना॥
आ गये पिता माता भी सब * अरु सासू सुसर सभी आये।
सादर सब से अंजना मिला * सब लोग देख कर शरमाये॥

दोहा

कुछ दिन रह नानिहार में * आये निज-निज ठाम ।
राज्ज पवनजय को दिया * मोदित हुये तमाम ॥२०३॥

बहर खड़ी

सुख सुन्दर नगर समाय रहा * सरसाय रहा पुर सुर पुर सा।
आनन्द मनाये नर नारी * जै-जै कारी कर मन हुर सा॥
सीमा नहीं रही खुशी की नृप * आनद हुलास मनाते हैं।
चाहते हैं अटल सुखों को अब * अनित भाव मन लाते हैं॥
प्रिय जिनक सुख सब योग हुए * उनको निज कार्य समारना है।
संसार के सुख अब तक भोगे * अब दीक्षा हम को धारना है॥
सुकृत छत्री नर है वो ही * जो चौथे पन को साधता है।

तज कर के माया मोह सभी * सिद्धों को चित्त आराधता है॥

दोहा

अब इच्छा पूरी हुई * और न कुछ दरकार।
यह इच्छा बाकी रही * लूं अब संयम भार ॥२०४॥

बहर खड़ी

अब पुत्र बधु सुत के सुत का * आनन्द देख हर्षाना तुम।
हो विनयवान् मदन तेरा * जिनराज के गुण को गाना तुम
मैं साधन करूं आतम कारज * मेरे मन यही समाया है।
सब देख लिये जग के धन्धे * अब मन संयम को चाया है॥
सुन करके पति के सुघर वचन * हर्षा करके रानी बोली।
मम नाथ भाव अति उत्तम है * नहिं हो विलम्ब कहि मन खोली
हृदेश यही इच्छा मैं मन * मान मोद आज्ञा दीजे।
मम कारज सिद्ध होय स्वामी * अति प्रेम सहित दीक्षा लीजे॥

दोहा

दम्पति दीक्षा धार के * कीना निज कल्याण।
दिन दिन बढ़न लगे * इधर वीर हनुमान ॥२०५॥

बहर खड़ी

जिन दिन नगर में उपरोक्त * बढ़ता है मान कला जैसे।
बल पराक्रम वपु बुद्धि वृद्धि * करती है चन्द्रकला जैसे॥
इसी ही प्रकार जैसे विद्या * अध्ययन कर भरपूर हुए।
लघु आयु में ही सब * विद्या अपना कर शूर हुए॥
नाना प्रकार विद्याओं के * भूषण हुए गुणवान हुए।
बहत्तर कलाओं के ज्ञाता * विद्याधर श्री हनुमान हुए॥
सामुद्रिक विद्या में प्रवीण अपूर्व * कौशल दाँगिरा कर लीनी थी।
सम्पूर्ण शास्त्रों के निधान * संगीत कला चित दीनी थी॥

दोहा

वरुण भूप कर के मता * जथा आपना जान ।
रावण पै पुनः चढ़ गया * समय बड़ा बलवान॥२०६॥

बहर खड़ी

कोई भी किसी की धन धरती * बलात्कार ले लेता है।
बस उस के खटक जाय मन से * तन से यह विपता सहता है॥
जिस तरह रुई के पहलों में * धरनी को कोई छुपाता है।
दब नहा सकती है अग्नि कभी * यह न्याय नज़र में आता है॥
इस ही प्रकार यह वरुण भूप * बदला देने को चढ़ धाया।
उसने तो समय शुभ समझा * और विजय लक्ष्मी को चाया॥
दशकंठ ने जब ऐसा जाना * तो चतुर दूत बुलवाया है।
समझा कर कहा पवनजय पे * जाओ यह हुक्म सुनाया है॥

दोहा

सुन कर वचन सु दूत के * मन में किया विचार ।
युद्ध निमंत्रण पाय कर * सैन करी तैयार ॥२०७॥

बहर खड़ी

जिस समय पवनजय ने अपना * रण का शृंगार बनाया है।
उस समय देख रस वीर आन * सारी सैन पर छाया है॥
उत्साहित हुए वीर सारे * रण का शृंगार सजाते हैं।
जिस तरह वीर रस के समुद्र में * तीव्र उछाले आते हैं॥
यह देख केशरी कुँवर वीर * हनुमान पिता के पग परसे।
अति विनय सहित कर चित्त प्रसन्न*प्रार्थना के हित हृदय सरसे॥
इक अर्ज़ करो स्वीकार मेरी * मन में विश्वास तुम्हारा है।
इस युद्ध क्षेत्र में जाने को * तत्पर यह दास तुम्हारा है॥

दोहा

वचन श्रवण कर पुत्र के मन में बढ़ा हुलास ।
मुदित पवनजय हो गये बैठाया निज पास ॥२०८॥

बहर खड़ी

फेरा है शीश हाथ सुत के और बोले भूपत हर्ष कर ।
तुम बढ़ो मम्र आनन्द करो मैं करूँ विजय उसको जाकर ॥
हनुमान विनय के वचनों में इस तरह पिता से कहन लगे ।
लहर तरंग जिम जय समुद्र मर्याद त्याग कर बहन लगे ॥
इस युद्ध में जाने की मुझ को अभी तात आज्ञा दे दीजे ।
हृदय समुद्र रस वीर भरा उमगा यह विनय मान लीजे ॥
रण भूमि में जाकर रिपु को कर-कौशल पिता दिखाऊँगा ।
विद्या को ग्रहण परिश्रम से रण में जाकर अज़माऊँगा ॥

दोहा

अनुभव [illegible] को जो मुझ को हो जाय ।
रण स्थल में जाय कर इस का लूँ अज़माय ॥२०९॥

बहर खड़ी

दे [illegible] आज्ञा आप मुझ यदि रणस्थल में जाने की ।
[illegible] सन्मुख जा कर के विद्या अपनी अज़मान की ॥
[illegible] अनुशासन आ [illegible] पाऊँगा ।
[illegible] यह जाऊँगा रिपु दल को मार भगाऊँगा ॥
[illegible] आज्ञा दी पवनजय ने ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

कुछ ही दिवस में लक्ष के # लीने धुरे बनाय ॥२१०॥

बहर खड़ी

दशकंठ सुना हनुमत आये # सादर कीनी अगवानी है।
सत्कार सहित सग में लाये # प्रमुदित करते महमानी है॥
मिल भेंट प्रसन्नता प्रगट करी # पुन उचित समय जब आया है।
सेना नायक हनुमन्त किये # अहित प्रभुत्व जमाया है॥
शत्रु के जब सम्मुख पहुँचे # दल को दशकंठ सिहारा है।
आज्ञा पाते ही राजों ने # पौरुष दिखलाया भारा है॥
सौ पुत्र वरुण के सगा में # अति वीरोत्साह दिखाते हैं।
प्राणों को हथेली पर रख के # रण भू में धूम मचाते हैं॥

दोहा

लखि प्रचण्ड प्रकोप को # भूप गये घबराय ।
हलचल रण में मच गई # धीर धरी नहीं जाय ॥२११॥

बहर खड़ी

लख समर भूमि का हाल वीर # बलिशाली नजर उठाते हैं।
प्रचण्ड क्रोध कर पवन कुँवर # रण स्थल में झट आते हैं॥
कर घोर गर्जना केहरि सम # केशरी कुँवर, ललकारे हैं।
सगर सगम में वीरोचित # कृत करन हेत पग धारे हैं॥
वानरी सुविद्या स कपीश # अति कीश बनाये भारे हैं।
तरु तोड़-तोड़ कर शत्रु की # सेना के ऊपर डारे हैं॥
लख कर रण-कौशल वरुण भूप # की सेना का चक चूर हुआ।
जिस अभिमान से आय थे # अभिमान वह सारा धूल हुआ॥

दोहा

वरुण नृपत के सुत सकल # हनुमत बाँधे आय ।
पुन भारी किलकार कर # मन में खुशी समाय ॥२१२॥

दोहा

वचन श्रवण कर पुत्र के ॥ मन में बढ़ा हुलास ।
मुदित पवनजय हो गये ॥ बैठाया निज पास ॥२०८॥

बहर खड़ी

फिर ॥ शीश हाथ सुत के ॥ अरु बोले भूपत हर्षा कर ।
तुम बढ़ मान्द्र आनन्द करो ॥ मैं करूँ विजय उसको जाकर ॥
हनुमान विनय के वचनों में ॥ इस तरह पिता से कहने लगे ।
लन्ते तरंग जिम जय समुद्र ॥ मर्याद त्याग कर बहने लगे ॥
इस युद्ध में आन की मुझ को अभी तात आज्ञा दे दीजे ।
हृदय समुद्र रस वीर भरा उमगा यह विनय मान लीजे ॥
रण भूमि में जाकर रिपु को कर-कौशल पिता दिखाऊँगा ।
विद्या की महत्व परिश्रम से रण में जाकर अजमाऊँगा ॥

दोहा

अनुभव मेरे इल्म का जो मुझ को हो जाय ।
रण स्थल में जाय कर ॥ इस का लूँ अजमाय ॥२०६॥

बहर खड़ी

द ॥ अब आज्ञा आप मुझे यदि रणस्थल में जाने की ।
शत्रु ॥ सन्मुख आ कर के विद्या अपनी अजमाने की ॥
मुझ को दर्शन ॥ विद्या का ॥ अनुशासन जो गर पाऊँगा ।
ना खुशा-खुशी चढ़ जाऊंगा ॥ रिपु दल को मार भगाऊँगा ॥
[illegible] हनुमान का जब ॥ आज्ञा दे दी पवनजय ने ।
आज्ञा पा हृदय कमल खिला ॥ उत्साह किया जय नय पय में ॥
गमन न पूज्य किया पुर से ॥ रण बाजे बजाते जाते हैं ।
मधुवय में सदम मण्डित हैं ॥ शस्त्र चमकाते आते हैं ॥

दोहा

गमन शीघ्रता से किया ॥ चल राम ढिग जाय ।

घहर खड़ी

जो छाई है निद्रा तुम को * इस राज समुद्र को से जागो ।
गर भला चाहते जो अपना * सो रावण के चरणों लागो ॥
लेकर सब कर्मचारियों को * दरबार चलो लंकापति के ।
अपराध क्षमा करवा कर के * पुन भाग से लागो सत के ॥
यह सुन कर वरुण भूप बोले * तुमरी आज्ञा स्वीकार करी ।
पर विनय मेरी भी सुन लीजे * मैंने जो अपने हृदय धरी ।
जा कर यहाँ राजधानी में * सब राज काज सुत को दूँगा ॥
संसार का करके परित्याग * दीक्षा वन में जाकर लूँगा ॥

दोहा

त्यागूँगा संसार को * वीतराग से नेह ।
श्री जिन की कर वासना * छोड़ूँगा निज गेह ॥ २१५ ॥

घहर खड़ी

श्री जिन भगवान् की भक्ति में * अर्पण मैं तन मन कर दूँगा ।
जिस तरह हो सकेगा मुझ से * चरणों में शिर को धर दूँगा ॥
मम पुत्रों ने भूपों सम्मुख * अपराध क्षमा करवाया है ।
है पुनः कौनसी आवश्यकता * मन में विचार जो आया है ॥
हनुमान वीर मन में विचार * सब शब्द वरुण के माने हैं ।
तारीफ उच्च भावों की करी * मन के विचार पहिचाने हैं ॥
संग्राम वरुण ने किया रोक * पलटाया विजय नकारा है ।
सुन कर दश कंठ प्रसन्न हुये * आनन्दित घट में भारा है ॥

दोहा

विजय लक्ष्मी ग्रहण करी * गये नगर लंकेश ।
हनुमत को आदर सहित * लिया गये निज देश ॥२१६॥

घहर खड़ी

दीना है सब से उच्चासन * सिंहासन निकट बिठाया है ।

बहर खड़ी

पुन वरुण नृप अभिमान सहित * आकर रण भूमि दहाड़ा है।
कर लाल-लाल लोचन विशाल * हनुमत के सम्मुख ठाड़ा है॥
कछु बल पौरुष भुज बल का भी * रण स्थल में दिखलाते हो।
या विद्याबल के ऊपर ही * वीरों में वीर कहाते हो॥
विद्या के बन्धन से मेरे * शत ही पुत्रों को मुक्त करो।
फिर भुजबल दिखला कर अपना * सगर सागर को पार करो।
सुन कर के वचन वरुण नृप के * दिये छोड़ पुत्र उनके सारे।
कर दिया कटक सब अगल बिकट * निर्भय नाहर सम ललकारे॥

दोहा

जैसे भूखा केहरि * मृगन झुंड निहार।
टूट उन पर धाय के * करे किलोल अपार॥२१३॥

बहर खड़ी

उस अजय वीर ने जाकर के * विक्रम बल ऐसा दिखलाया।
गये थरथराय सैनिक सारे * ललकार मार कर जब धाया॥
शत ही के सम्मुख डटे जाय * भयभीत हुआ रिपु दल सारा।
आन ही परण के सौ सुत को * अति जोर शोर से दे मारा॥
हो गये वीर कायर शम ही * मन क्षमा चाहते हनुमत से।
हम शरण आपके चरणों के * ऐसा उचारते हनुमत से॥
मंजूर प्रार्थना कर हनुमत * रिपु के पुत्रों को छोड़ दिया।
दे अभयदान उन सब ही को * रिपुओं ने मन को मोड़ लिया॥

दोहा

अब कर्यों का आपने * विक्रम लिया निहार।
अब भी क्या तुम चाहते * भगो बढ़े संगार॥२१४॥

श्री राम जन्म

छन्द

मुनि सेवित स्वामी कृपा करिये * हरिये सब पीर मेरे तन की ।
मम संकट नाश करो प्रभु जी * विनता सुनिये अपने जन की ॥
जग जाल कराल बयाल समान * महान् सु बूँटी है नाम तेरो ।
अब ता कर पार आधार तुम्हा * जग से तन पोत उधार मेरो ॥
मुझ पे नहिं वार रिपु के चलें * न हले मन नेम मिं नेक प्रभू ।
इतनी अब आप दया करिये * राखिये अब मेरी सु टेक प्रभू ॥
निज दास निहार विकार हनो * तुम ही अवलम्ब हो एक प्रभू ।
भय अंस बमें मम तारिये जू * करके प्रदान विवेक प्रभू ॥

दोहा

आओ माई भगवता * दाज बुध बल ज्ञान ।
भानु वंश कुल मणि तिलक * का कुछ करूं बयान ॥२१८॥

बहर खड़ी

अब करिये मात दया इतना * स्थान कंठ मेरे कीजे ।
हृदय प्रसन्न हो कर विराजो * वरदान विजय का दे दीजे ॥
मा कृपा मम मुख को अब किंचित * अवलंब आपका जन को है ।
हरिये आलस्य अल्प मन न * यह प्रण पूरण कर जन को है ॥
नगरी मिथिला अति वर्णनीय * हरिवंश के भूप पति जिसके ।
साजे लख ललित-ललित ताको * वसु केतु भूप शुच सुत जिसके ॥
लख लाजवती विपुला को * लाज का मान खड कुछ होता था ।
करते थे न्याय नीति सम नृप * यह नेम अनित को खोता था ॥

अति ही कृतज्ञता प्रगट करी * गुण गौरव अधिक सराया है॥
दस गुण विद्या बलशाली * हनुमत अद्वितीय बल वका है।
रण कुशल कुशल है हर फन में * या कुरा वीर बलवका है॥
ऐसा विचार कर लंकपति * स्नेह हृदय में भरन लगे।
अनुकूलता का कर पाणिग्रहण * यह ख्याल जिगर में करन लगे॥
थी सूपनखा का यह कन्या * मानजी भूप दशकंधर की।
मत साहस अधुन उत्साह दस * उपमा दी पुरुष पुरन्दर की॥
कर पाणि ग्रहण उस कन्या से * मन में उत्साह किया भारी।
बल वका से हित जोड़ लिया * कर दिया काम नृप अधिकारी॥
हनुमत के संग वरुण ने भी पुन सत्यवती को परनाया।
सुग्रीव राय नल अपनी अपनी कन्या दी हर्ष सुमन छाया॥
एक हजार कन्या राजा ने हनुमत के आकर नजर करी।
इस तरह पाय उन सम्पत्ति का चलन की लख मन हर्ष धरी॥

दोहा

अति अटूट धन संग ले कीना धीर पयान।
[illegible] पहुँचे थी हनुमान ॥२१७॥

बहर खड़ी

[illegible] दूत पधारे [illegible] हनुमान विजय कर आते हैं।
[illegible] सब के मन आनन्द पाते हैं॥
[illegible] कर सिंहासन कुल को बैठारा।
[illegible] पुर सारा हित से श्रृंगारा॥
[illegible] माल [illegible] शुभ के दिन सुघर मगाल हैं।
[illegible] गर्मा-गर्मी * गुण-धीर कुँवर के गान हैं॥
[illegible] कामना दूर पुरी * हनुमत मन में हर्षित हैं।
[illegible] ध्यान मगन * सब राम चरण शिर नाम हैं॥

हनुमान जन्म समाप्तम *

दोहा

मुनि सोमदत के समय तक # हुये भूप अनेक।
सूर्य यश विख्यात में # राखी अपनी टेक ॥ २२१ ॥

चौपाई

विजय राय हुआ बलधाना # हिम चूला तसु नाम सुजाना।
सुत युग भये सुगर बलवाना # वज्र बाहु पुर इन्द्र जाना ॥
नगर अहिपुर× अति शुभ धामा # हिम वाहन तहि नृप को नामा
नीति युक्त अति ही बलकारी # चूड़ामणि तासु प्रिय प्यारी ॥
सुन्दर सुता तास नृप केरी # मनोरमा सुन्दरी घनेरी ।
वज्र बाहु को दी परनाई # वर कन्या मोदित गृह आई ॥
सुन्दर संग गमन जब कीना # प्रेम सहित पुर मारग लीना।
उदय सुगर भूपत का साला # प्रेम विवश पुनः संग में चाला

दोहा

पथ चलते मुनिराज पे # पड़ी दृष्टि जो आय।
वज्र बाहु नृप भाव से # चरणों लागे जाय ॥२२२॥

चौपाई

पाये धार प्रशंसा कीनी # धर्म दृष्टि मुनिवर ने दीनी।
दर्शन मुनिवर के पय पाये # धन्य धन्य अहो भाग्य सराये॥
कर हाँसी साला यों बोला # क्या प्रशंसा का मुख खोला।
मैं समझ लियो संयम भारा # कुँवर कहे मन यही विचारा ॥
साले कहे विलम्ब क्या करना # किस कारण अ लस्यमन धरना
जो करले सो होगा साथा # गया समय नहीं आवे हाथा ॥
मेरे मन भी यही समाई # करले जो नर वह कुशलाई ।

× नागपुर

दोहा

मुनि सोमप्रभ के समय तक # हुये भूप अनेक।
सूर्य यश विख्यात में # राखी अपनी टेक ॥ २२१ ॥

चौपाई

विजय राय हुआ बलवाना # हिम चूला तसु नाम सुजाना।
सुत युग भये सुगर बलवाना # वज्र बाहु पुर इन्द्र आना ॥
नगर ब्रह्मिपुर× अति शुभ धामा # हिम वाहन तहि नृप को नामा
नीति युक्त अति ही बलकारी # चूड़ामणि तासु प्रिय प्यारी ॥
सुन्दर सुता तास नृप केरी # मनोरमा सुन्दरी घनेरी।
वज्र बाहु को दी परनाई # घर कन्या मोदित गृह आई ॥
सुन्दर संग गमन जब कीना # प्रेम सहित पुर मारग लीना।
उदय सुगर भूपत का साला # प्रेम विवश पुनः संग में चाला

दोहा

पथ चलते मुनिराज पे # पड़ी दृष्टि जो आय।
वज्र बाहु नृप भाव से # चरणों लागे जाय ॥२२२॥

चौपाई

बारे बार प्रशंसा कीनी # धर्म दृष्टि मुनिवर ने दीनी।
दर्शन मुनिवर के पथ पाये # धन्य-धन्य अहो भाग्य सराये॥
कर हाँसी साला यों बोला # क्या प्रशंसा का मुख खोला।
मैं समझ लियो संयम भारा # कुँवर कहे मम यही विचारा ॥
साला कहे विलम्ब क्या करना # किस कारण अ लस्यमन धरना
जो करले सो होगा साथा # गया समय नहीं आवे हाथा ॥
मेरे मन भी यही समाई # करले जो नर वह कुशलाई।

× नागपुर

दोहा

मुनि सोमत के समय तक * हुये भूप अनेक।
सूर्य यश विख्यात में * राखी अपनी टेक ॥ २२१ ॥

चौपाई

विजय राय हुआ बलवाना * हिम चूला तसु नाम सुजाना।
सुत युग भये सुगर बलवाना * वज्र बाहु पुर इन्द्र आना ॥
नगर अहिपुर× अति शुभ धामा * हिम वाहन तहि नृप को नामा
नीति युक्त अति ही बलकारी * चूड़ामणि तासु प्रिय प्यारी ॥
सुन्दर सुता तास नृप केरी * मनोरमा सुन्दरी घनेरी।
वज्र बाहु को दी परनाई * वर कन्या मोदित गृह आई ॥
सुन्दर संग गमन जब कीना * प्रेम सहित पुर मारग लीना।
उदय सुगर भूपत का साला * प्रेम विवश पुनः संग में चाला

दोहा

पथ चलते मुनिराज पे * पड़ी दृष्टि जो आय।
वज्र बाहु नृप भाव से * चरणों लागे जाय ॥२२२॥

चौपाई

वारो बार प्रशंसा कीनी * धर्म दृष्टि मुनिवर ने दीनी।
दरशन मुनिवर के पथ पाये * धन्य धन्य अहो भाग्य सराये॥
कर हाँसी साला यों बोला * क्या प्रशंसा का मुख खोला।
मैं समझ लियो संयम भारा * कुँवर कहे मन यही विचारा ॥
साले कहे विलम्ब क्या करना * किस कारण आलस्यमन धरना
जो करले सो होगा साथा * गया समय नहीं आवे हाथा ॥
मेरे मन भी यही समाई * करले जो मन चह कुशलाई।

× नागपुर

दोहा

जब तक गार्दी धर न हो * तब तक योग अयोग।
भूप सोच मन रह गये * मुदित नगर के लोग ॥२२५॥

चौपाई

जहि ग्रह में नहिं हो सन्ताना * सो ग्रह है जैसे शमसाना।
किस पर सौंपोगे पुर राजा * पीछे कौन समाले काजा ॥
यह सुन भूपत हृदय विचारी * लगे करन सब क्रत ससारी।
सहदेवी नामे प्रिय प्यारी * भाग्यवता अति सुन्दर नारी ॥
पुत्र सुकौशल सुन्दर जायो * गुप्त रखो नहिं भेद बतायो।
सुचित भये नृपत तहि घारी * आनो छल कीनो यह नारी ॥
मन विचार नृप सयम लीना * राज काज निज सुत को दीना।
समता रस में आतम लागी * कीर्त धज नृप भये वैरागी ॥

दोहा

अधिक दिवस गये बीत कर * करते मुनि विहार।
अवध पुरी की ओर को * आ निकले अनगार ॥२२६॥

चौपाई

भीतर पुर के मुनि पधारे * लेन अहार तुरत पग धारे।
रानी देख कुपित भई भारी * सैनिक लिये बुला उस बारी ॥
सोचे कटुक कु लक्षण कामा * यह बैरी किम आयो धामा।
मुसपत्ती कर पात्र जो धारे * ओघा काँख बीच हर बारे ॥
एसे साधु जो नग्न समालो * सो पुर बाहर तुरत निकालो।
सुन आज्ञा हलकारे धाये * गली-गली डोले भेराये ॥
कीरत धज स्वामी मुनिराया * हलकारों की नजरों आया।
दिया नग्र से बहार निकारी * धक्के दिये मार और भारी ॥

दोहा

भाई दासी देवती * कीने वदन मलीन।

चौपाई

[त]प उपवास करें अति भारी * ज्ञान ध्यान मन करे विहारी ।
[क]ार्तिक पूरण मासी आइ * नगर ओर विचरें मुनि राई ॥
[स]हदेवी देख मुनिन पै धाई * मुनि पर तुरत दृष्टि पड़ जाई ।
[त]ात कहे सुत उपद्रव आया * निश्चय दृढ़ मन रख दृढ़ाया ॥
[ह]ृदय मेरे वचन जमाओ * मैं आगे तुम पीछे जाओ ।
[म]ैं बालक क्षत्री तप धारी * तात चरन नहिं धरे पिछारी ॥
ममता त्याग देह की दीनी * हृदय शांति क्षमा भर लीनी ।
कीनो मुनि मन आतम ध्याना * अपना चाया करन कल्याना ॥

दोहा

तड़ित तजना कर गिरी * बाघणी हो विकराल ।
मद्दि पटक दिया भूमी को * किया बाल बेहाल ॥२३०॥

चौपाई

तन विदार खंडन कर डागे * खंड-खंड से खंड विदागे ।
मास खाय मुनि को बध कीना * नार ममान रुधिर को पाना ॥
चढ़ते रहे भाव मुनिराया * केवल निर्मल ज्ञान उपाया ।
गये सुकौशल परम स्थाना * साध्यो पद सुन्दर निर्वाना ॥
कीरत धर करनी शुभ कीनी * शिव नगरी जा कर घर लीनो
विप्र सुमाला सुगर विशाला * हिरण गर्भ सुत जायो आला ॥
हिरण गर्भ भये यती अपारी * मृगावती तासु प्रिय प्यारी ।
मधुक नाम सुत जिसका प्यारा * मात तात का मन उजियारा ॥

दोहा

देखा भूप नघूक ने * शीश श्वेत एक बाल ।
बुरा समझ मन में चतुर * सोचे मन तत्काल ॥२३१॥

चौपाई

कीना वीर पुत्र को राजा * आप समारा आतम काजा ।

रहा मन उत्सव सु अठाई * जिनवर गुण गावे हर्षाई।
आभा सुन्दर भूप निकारी * जीव दया कीनी नृप आरी॥
मन्त्री कहे नाथ सुन लीजे * एक विनय मेरी चित्त धीजे।
तस पूर्वज नहिं माँस अहारी * हुये आप ही भूप शिकारी॥
त्यागें तुरत माँस का खाना * निज कुल का नृप धर्म निभाना
बात तुरत मंत्री की मानी * पर मन में यह नहीं सुहानी॥

दोहा

व्यसन माँस का पड़ गया * भूपति के मन माँहि।
कहा बुलाकर विप्र से * सुनिये कान लगाहिं॥२३४॥

चौपाई

भोजन रोज करो तैयारी * माँस छुपाय लाओ नित लारी।
ढूँढ़े मिले नहीं कहिं माँसा * ठगढी द्विज भर रहा उसाँसा॥
बालक मरा उठा कर लाया * तिसका भोजन खाय बनाया।
भूपत के भोजन में आया * भूपत ने स्वादिष्ट बताया॥
मास कौन जीवों का लाया * अति स्वादिष्ट नाम बताया।
हाथ जोड़ कर कह द्विज राया * था नर मास सुनो मन लाया॥
बोले खुश होकर भूपाला * प्रति दिन यही माँस ला वाला।
मेरे मन में यों ही भाई * सुन्दर आज रसोई बनाई॥

दोहा

प्रति दिन बालक मार कर * लावे नृप के हेत।
घबराई प्रजा अधिक * पहुँची भूप निकेत॥२३५॥

चौपाई

करें पुकार सुने नहिं राया * क्रोध उमड़ प्रजा उर आया।
मन्त्री कहे सुनो भूपाला * दीजे त्याग यह पाप कराला॥
भूपत माने बात न एका * चले चाल अपनी ही टेका।

वीर सेन मति मन्यू आनो * पवा वधु रवि मन्यू बखानो।
वसततिलक कुवेर सुदत्ता * कुथु सरम द्विरद मन मत्था ॥
सिंह वखान हिरण्य कशिपु नीका*पुआस्थल का कुस्थल ठीका।
रघु आदि हुए भूप घनेरे * शुभ्र कम किये सुर पुर डेरे ॥

दोहा

ककुत्स्थ भूपति भये * बड़े वीर बलवान ।
नृप दलीप उपनाम से * जाने जिन्हें जहान ॥२३८॥

बहर खड़ी

यह नृपत वीर वर ऐसा था * जिसका प्रताप भूमण्डल में।
फैला मानिंद दिवाकर के * इस भूमि चक्र अखण्डल में ॥
था धर्म वीर यह दानवीर * अरु दयावीर भी आला था।
शिव क्षमावीर सत वीर धीर * अरु शूर वीर भूपाला था ॥
प्रजा सब पुत्र समान भूप से * सादर प्रेम सु करती थी।
चिरजीवी होय भक्त वत्सल * ऐसा मुख सदा उचरती थी॥
पर पुत्र न था कोई नृप के * हृदय में यही खटकता था।
पुन कभी कभी नृपत मन में * हर ओरि जाय भटकता था ॥

दोहा

समय पाय दरबार में * बड़े-बड़े विद्वान ।
आय उपस्थित हो गये * देखा धर कर ध्यान ॥२३९॥

बहर खड़ी

कर मथन जतन कर के देखा * विद्वानों ने उचारा है।
ज्योतिष में देख-देख सब ने * ऐसे मुख वचन उच्चारा है॥
सुरभी की सेवा करने से * होगी सन्तान अवश्य राजा।
ज्योतिष ग्रन्थ जो लिखते हैं * उस से हम विवश हुये राजा॥
हो धर्म वीर अरु गुणग्राही * यह कहा हमारा मानो तुम।

तब मिल कर मन किया विचारा । भूपन किया राज से न्यारा ॥
सिंहरथ स्थिर कर सुखकारा । सब मिल कर दियो भूप बनाई ।
बन में भ्रमन फिर मासा मासा । आया दक्षिण दिशा के पासा ॥
तहाँ मुनीश्वर लखा तपधारी । हाथ जोड़ कर गिरा उचारी ।
नाथ कौन कारण दुख भारा । राज छूटा किस रीति हमारा ॥

दोहा

जो त्यागे मधु माँस को । सो सुख होय अपार ।
बिन त्यागे इस वस्तु के । होय न बेड़ा पार ॥२३६॥

चौपाई

त्यागा मदिरा माँस कराला । श्रावक धर्म लिया भूपाला ।
वहाँ से चल महापुर आया । शुभ कर्मों का उदय सुहाया ॥
भूप तहाँ का बिन सन्ताना । समय पाय हुआ अन्तर ध्यानो
मिलकर मन्त्रीगन मता उपाया । सौदासा को भूप बनाया ॥
सुन नृपत मन ऐसा आया । पुरी अयोध्या दूत पठाया ॥
सेवा नहिं सुत ने स्वीकारी । दूत लौट कर आया पिछारी ॥
करा चढ़ाई सुत पर जाई । पुत्र पिता में भई लड़ाई ।
नाना भाँति चले हथियारा । बहुत लड़ा परमक्षम हारा ॥

दोहा

धीर सेन मति मन्यू आनो * पद्म यधु रवि मन्यू यखानो।
यसवतिलक कुवेर सुदत्ता * कुश सरम हिरद मन मत्था ॥
सिंह दसान हिरण्य कशिपु नीका*पुजास्थल का कुस्थल ठीका।
रघु आदि हुए भूप घनेरे * शुभ्र कर्म किये सुर पुर डेरे ॥

दोहा

ककुत्स्थ भूपति भये * बड़े धीर बलवान ।
नृप दलीप उपनाम से * आगे जिन्हें अहान ॥२३८॥

बहर खड़ी

वह नृपत धीर वर ऐसा था * जिसका प्रताप भूमण्डल में।
फैला मानिंद दिवाकर के * इस भूमि चक्र अखण्डल में ॥
था धर्म धीर वह दानवीर * अरु दयाधीर भी आला था।
चित क्षमाधीर सत धीर धीर * अरु शूर वीर भूपाला था ॥
प्रजा सब पुत्र समान भूप से * सादर प्रेम सु करती थी।
चिरजीवी होय प्रजा वत्सल * ऐसा मुख सदा उचरती थी॥
पर पुत्र न था कोई नृप के * हृदय में यही खटकता था।
पुत्र कमी कमी नृपत मन में * हर ओरि जाय भटकता था॥

दोहा

समय पाय दरबार में * बड़े-बड़े विद्वान ।
आय उपस्थित हो गये * देखा धर कर ध्यान ॥२३६॥

बहर खड़ी

कर मथन जतन कर के देखा * विद्वानों ने उचारा है।
ज्योतिष में देख-देख सब ने * ऐसे मुख वचन उच्चारा है ॥
सुरभी की सेवा करने से * होगी सन्तान अवश्य राजा।
ज्योतिष ग्रन्थ जो लिखते हैं * उस से हम विदित हुये राजा ॥
हो धर्म धीर अरु गुणग्राही * यह कहा हमारा मानो तुम।

सब मिल के मन किया विचारा * भूपत किया राज से न्यारा ॥
सिंहरथ स्थिर कर सुखदाई * सब मिल कर दियो भूप बनाई।
बन में भ्रमत फिर सोदासा * आयो दक्षिण विप्र के पासा ॥
तहां मुनिश्वर लख तपधारी * हाथ जोड़ कर गिरा उचारी।
नाथ कौन कारण दुख भारा * राज छूटा किस रीति हमारा ॥

दोहा

जो त्यागे मधु माँस का * तो सुख होय अपार ।
बिन त्यागे इस वस्तु के * होय न बेड़ा पार ॥२२६॥

चौपाई

त्यागा मदिरा माँस कराला * श्रावक धर्म लिया भूपाला ।
वहाँ से चल महापुर आया * शुभ कर्मों का उदय सुहाया ॥
भूप तहाँ का बिन सन्ताना * समय पाय हुआ अन्तर ध्यानी
मिलकर मंत्रीन ने मता उपाया * सोदासा को भूप बनाया ॥
बन नृपत मन ऐसा छाया * पुरी अयोध्या दूत पठाया ॥
सेवा नहिं सुत ने स्वीकारी * दूत लौट कर आयो फिकारी॥
करी चढ़ाई सुत पर जाई * पुत्र पिता में भई लड़ाई ।
नाना भांत चले हथियारा * बहुत लड़ा परमदम हारा ॥

दोहा

[illegible] मनिक करी नहिं वार ।
[illegible] नाना सब अधिकार ॥२२७॥

चौपाई

[illegible] आप सु संयम मार समाया ।
[illegible] सुन्दर सुघर चतुर पटरानी ॥
[illegible] हिमरथ सतरथ उदय पृथु भारी
[illegible] आदित्यरथ मान धाता धारी॥

नागर पञ्चष इत्यादि प्रथम * लाकर के मान पढ़ाया है ॥
पण्डित गण मिल कर देख रहे * हैं लग्न कौनसा पाते हैं ।
शुभ ग्रह नक्षत्र सोच कर के * सुत का रघु नाम बताते हैं ॥

दोहा

दिन-दिन सुत बढ़ने लगे * घटन लगे सन्ताप ।
रघु ने राज अनरण्य को * दिया साधु भये आप ॥२४२॥

चौपाई

अनरण्य भूपति अति न्याई * राज काज से सुमन लगाई ।
पृथ्वी देवी है अति प्यारी * भूपत की अर्द्धांगी नारी ॥
पुत्र हुए दो अति बल वाना * अनन्त रथ दशरथ गुणवाना।
अनरण्य सहस्र किरण युगप्रेमी * मन प्रसन्न अति कुशलो क्षेमी॥
युद्ध किया रावण से जाकर * रण वैराग प्रगट हुआ आकर।
दोनों मित्र सु दीक्षा लीनी * अति उत्तम करणी युग कीनी॥
अनन्तरथ लिया संयम भारा * जग समुद्र से किया किनारा।
किया निरन्तर तप अति भारा * कर-कर करणी मुक्ति पधारा॥

दोहा

अवध पुरी के राज का * दशरथ को अधिकार ।
दिया भूप ने हर्ष युत * किया प्रसन्न हो कार ॥२४३॥

चौपाई

एक मास के दशरथ राया * करके तिलक नृप वन सिधाया।
चन्द्र समान बढ़े नृप ओई * दिन-दिन उन्नति वपु में होई ॥
पाँच वर्ष के हुए भूआला * शक्ति भक्ति का हुआ उजाला।
शस्त्र शास्त्र अति हित कर थीने * बड़े छत कर में कर लीने ॥
विनय विवेक ज्ञान अति पाया * भूपत देख बहुत हुलसाया ।
यौवन वय में चरन बढ़ाया * देख वाण मन अधिक लजाया॥

यह फारज शुभ स्वीकार करो ✲ हृदय में इसको जानो तुम ॥
ऐसा कह द्विज ता चल गये ✲ मन्त्री ने नृप से अर्ज करी।
अपनी कुछ हानि नहीं भूपति ✲ इसको अब लीजै श्रवण धरी॥

दोहा

कर विचार नृप ने तुरत ~ अति मन हर्ष बढ़ाय।
दान किया सब को शुरू ~ देना मन जो चाय ॥ २४० ॥

बहर खड़ी

गाओ को भूप मगन मन हो हर रीति सुख पहुँचाने लगे।
चारा दाना अन्नादि सबप्रकार उन्हें खलवाने लगे ॥
जो आता था भूखा निर्धन ~ भोजन वह इच्छित पाता था।
जिसको इच्छा हो वस्तु की ~ वह भी नहीं फिरकर जाता था॥
नहिं दान से नृप सुख को फेरा ऐसा दानी नृपाल हुआ।
कीर्ति छाई नभ मंडल में ~ यह दानवीर भूपाल हुआ॥
आया शुभ समय आनंद घड़ी राजा की पूरण आश हुई।
सुत प्रगट हुआ अति तेजधाम बलवान सर्व प्रकार हुए ॥

दोहा

दिये दान हय नृपत बाँटा द्रव्य अपार।
छाके वन्दीजन बहुत ✲ होते मंगलचार ॥ २४१ ॥

बहर खड़ी

कर दिये अयाचक सब याचक ✲ याचना की न दरकार रही।
मंगता नजर न कोई पड़े ✲ बधाया घर घर द्वार छई ॥
नर नारी मुदित होय मन में ✲ फूले नहीं अंग समाते हैं।
आनंद छा रहा नगर बीच ✲ सब ही मन में हर्षाते हैं ॥
गुरुवाय पंडितों को लीना ✲ सादर उनको बैठाया है।

ज्योतिष ग्रन्थ यही उच्चारे ❀ अवध पुरी पति को सुत मारे।

दोहा

वचन सुनत गणितज्ञ के ❀ सब के मन इक बार।
सन्नाटा सा छा गया ❀ तुरत बीच दरबार ॥३८६॥

चौपाई

वचन विभीषण ऐसे बोला ❀ सुन गर्जन सब का मन डोला।
वचन न इनका वृथा होई ❀ पर अबके दूँगा मैं खोइ ॥
दशरथ जनक युगल नृप मारूँ ❀ दोनों के सिर जाय उतारूँ।
मैंने मन में यह ही ठाना ❀ जिस से हो नृप का कल्याना॥
बिना मूल के फूल न आवे ❀ फूल बिना फल कैसे आवे।
वचन विभीषण इष सुनावे ❀ सब के मन ढाढस बँधवाये ॥
बोले दशकन्धर सुन बैना ❀ हुए नृप के ऊँचे नैना।
नृप दरबार विसर्जन कीना ❀ महलों लंकापति पग दीना ॥

दोहा

सुन निमित्तिये के वचन ❀ नारद चतुर महान्।
दशरथ के दरबार में ❀ दखा धर कर ध्यान ॥२४७॥

चौपाई

दशरथ नृप तुरत उठ धाया ❀ नारद ऋषि के सन्मुख आया।
पूजा कर गुरु सम सममाना ❀ हाथ जोड़ कर कहा सुजाना ॥
कहाँ से कर भ्रमण तुम आये ❀ कौन-कौन से दृश्य लख आये।
दशकन्धर दरबार सुजाना ❀ निमित्तिया ने निमित्त बखाना॥
जनक भूप की कन्या हेतु ❀ दशरथ नृप के सुत खल से तु
युग के निमित्त मरे लंकेशा ❀ यह सुन कर भये सर्व दुखेशा॥
दशरथ जनक को जाय सहारूँ ❀ कहा विभिषण आकर मारूँ।
आय जनक को यही सुनाया ❀ नारद खुश हो तुरत सिधाया।

चारु वृन्द में कारन पाई ॐ तारों में पड़े चन्द्र दिखाई।
दानवीर अति हुए भुवाला ॐ गुण ग्राहक याचक दिगपाला॥

दोहा

पाया है जग अधिक यश ॐ बढ़ा तेज प्रताप।
बड़-बड़ गाया सुयन ॐ करें सुमन प्रलाप॥२४४॥

चौपाई

कुशस्थल पुर है शुभ ग्रामा ॐ तहँ का भूप सुकोशल नामा।
अमृत प्रभा तासु प्रिय रानी ॐ सुन्दर रूप सु कोकिल बानी॥
सुन्दर सुगर सु कन्या ताके ॐ मजुलता में रतिय हरा के।
अपराजिता नाम तिस पाया ॐ इन्द्राणी का मान घटाया॥
सो दशरथ नृप का परनाई ॐ दान दहेज दिये हर्षाई।
मित्र सु भू भूपाल प्रवीना ॐ प्रिय सुशीला कुमुद कुलीना॥
पुत्री सुगर सुमित्रा प्यारी ॐ दशरथ नृप को दी उसवारी।
सु प्रभा तीजी नृप प्यारी ॐ रानी तीन परम सुकुमारी॥

दोहा

इस प्रकार आनन्द युत ॐ अयध पुरी भूपाल।
पन्धाश्रय सुख भोगत ॐ करें प्रजा प्रतिपाल॥२४५॥

चौपाई

एक दिवस दशरथ सुनामा ॐ बैठ परषदा में हृपाना।
तब नारद लग आगए उठाई ॐ सयल म कोई देय दिखाई॥
जिया निमित्त या पास बुला के ॐ प्रश्न किया निज कर दिखलाके।
किस विधि आपद पूरण होई ॐ स्वय मरूँ या मारे कोई॥
इन्द्रादिक सुरनर या व्याला ॐ नग खगेश या कोइ दिगपाला।
सुन कर प्रश्न पताई सभारा ॐ प्रद गोचर लग लघु निहारा॥
जनक राय की कन्या कारण ॐ दशरथ तनय आयेंगे मारन।

दोहा

कर वरमाला केकइ ☆ आई ले दरबार ।
प्रतिहारा के संग में ☆ देखे राज कुँवार ॥२५०॥

चौपाई

राजा सकल निहारे रानी ☆ भूप जहाँ बहु दानी मानी ।
दशरथ ओर केकइ चाली ☆ मन प्रसन्न वरमाला डाली ॥
देख हाल राजा झुंझलाये ☆ मिल जुल आपस में बतराये।
राजों को समझा अनुचाली ☆ रंक कंठ में माला डाली ॥
लेय छीन यह रत्न अमोला ☆ हरि वाहन रिपु करके बोला ॥
सेना चल कर के श्रृंगारो ☆ चारों ओर घेर कर मारो ॥
निज निज डेरे को चल दीने ☆ तुरत काज सगर के कीने ।
शुभ मति दशरथ के संग आये ☆ हर प्रकार मन धीरज लाये ॥

दोहा

सेना देखी भूप जब ☆ बोले ऐसे बैन ।
बने सारथी प्रिय तू ☆ तो जीतूँ तत्छेन ॥ २५१ ॥

चौपाई

केकई बनी सारथी आई ☆ दशरथ नृप ने करी चढ़ाई ।
शुभमति के संग सैना धाई ☆ मार-मार रिपुदल पै छाई ॥
मेघ धार सम बाण चलाये ☆ सेना में रथ सम न आये ।
दशरथ नृप रण में ललकारे ☆ रिपु दल पर तीखे सर डारें ॥
रिपुदल के दिल दहल समाया ☆ आगे पुन नहिं चरन बढ़ाया ।
दाबा रिपु दल नृप ने धाई ☆ मार देख सैना भर्राई ॥
भागा कटक डटे नहीं डाटे ☆ शूर वीर दाबी सब नाटे ।
विजय लक्ष्मी दशरथ पाई ☆ जै जै हुई चहुँ दिशी बधाई ॥

दोहा

जनक राय दशरथ युगल * चले राज को त्याग।
दाना की प्रतिबिम्ब को * दी गादी पर पाग ॥ २४८॥

चौपाई

कानन चले भूप युग संगा * देखे विपिन विशाल प्रसंगा।
असित निशा में चल विर्भापण * अवधपुरी आय सोचें मन ॥
मारा बाण भूप के नामा * सिर पर लागो नृप को माना।
हा-हा कार हुआ इकवारा * पकड़ो-पकड़ो गिरा उचारी ॥
राय गना दुःख सम भारी * त्राहि त्राहि मच गई इकवारी।
मृतकारज आकर के कीना नन विभीषण मे लख लीना ॥
मैंने मता सुफल मन जाना * सफल मनोरथ निज कर माना।
जनक अवस्था यहा पहिचाना आगे जो कुछ होय सु जानो ॥

दोहा

दोना के मन मिलना बड़ा प्रम अति गाढ़ ।
लगे विचरन विपिन में प्रम रहा मन बाढ़ ॥ २४९॥

चौपाई

उत्तर दिशा चले युग मित्रा * भ्रमण करें जहाँ आय इकत्रा।
कौतुक मंगल अरु जो सुना शुभ मति राज सुखद अविलेखा।
शुभ मति भूप राज अधिकारी * श्री पृथ्वी तस रानी प्यारी।
कन्या रूप अति गुणवन्ता * कमला सम सुन्दर सुरमती॥
ग्राम मत नृप का सत प्यारा * धीर पराक्रमी अति भारा।
रचना स्वयम्वर नृप पुत्री का * बदरा पदल हो रही सुर्भाका॥
दश- नप जिस में आय * दशरथ जनक सुनत युग धाया।
भूप मे युग भूप विराजें * कमल बीच ज्यों हंस सु साजें॥
रूप अनुपम दोनों राजा * सभा बीच जिम रवि शशि साजा

दोहा

लख लालमा शुभ सरवरी * अति ही मन हर्षाय।
कर प्रसन्न चित सेज पर * मुद मन लेटी आय ॥२५४॥

बहर खड़ी

बिफसित सित सेज चान्दनीसी * शुभ चारु चान्दनी बिछी हुई।
हैं बिस्तर बिमल-विमल पंकज * जिन पर सुगन्धता सिंची हुई॥
निद्रा ने आन दया लीना * शीतल समीर चलती सन-सन
थी आत्म रसिका देवी आ * पखी कर ले झलती सन-सन॥
आधी से ज्यादा रात गई * कुछ प्रात काल सा हो आया।
कुछ रहा अँधेरा सा बाकी * कुछ-कुछ उजियाला सा छाया॥
उस समय अनोपम स्वप्न चार * देखे सु कौशल्या रानी ने।
अति विमल अमल से शुचि * सुशोम मुदित प्रमोद महरानी ने

दोहा

स्वप्न शुभ समय पाय के * दीखे इक सम आन।
प्रथम गजेन्द्र मृगेन्द्र पुनः * रजनी पति अरु भान ॥२५५॥

बहर खड़ी

अति विमल सुगर चारों सुवस्तु * पिछले पहर में दर्श दिया।
करते किलोल चारो देखे * रानी के मुख प्रवेश किया॥
यह स्वप्न देख खुल गये नैन * रानी मन में हर्षाई है।
करके जिनेंद्र को याद सुमन * दशरथ नृप के तट आई है॥
अति विनय सहित राजाजी को * सुन्दर शुभ स्वप्न सुनाया है।
दशरथ भूपाल प्रसन्न हुए * मन मोद उमड़ कर आया है॥
जिस तरह चन्द्र को सिंधु * इक सग उमड़ कर आता है।
बस उसी तरह हृदय नृप का * अब फूला नहीं समाता है॥

दोहा

सुन कर नृप देने लगे * दोनों कर से दान।

दोहा

मैं तेरी इस कला से हूँ प्रसन्न अति प्रीय।
जो चाह सो माँग ले नहीं अदेय कुछ प्रिय ॥२४२॥

चौपाई

वाली चतुर कर्कई रानी कोकिल कंठ मधुर स्वर वानी।
स्वामी यह मेरा वरदान रखो हृदय का मोल खजाना ॥
लूँगी समय जान कर नाथा तब रखो इसको निज साथा।
राजग्रही नगरी नृप आये सैन बहुत अपने संग लाये ॥
मगध पति स भी जय पाई। राजग्रही गादी निज ठाई।
लंकापति का भय अति भारा इस कारण नहिं अवध पधारा
दशरथ नृप रनवास बुलाया राजग्रही मन में अति भाया।
सिंह जहाँ पर करे निवासा कहाँ सियार का उस वन वासा

दोहा

आत्मा माना प्रसन्न हो हृदय करो किलोल।
कंठ थाँच यासा करो बोल-बोल अनमोल ॥२४३॥

बहर खड़ी

आनन्द सहित दशरथ नरेन्द्र राजग्रही करते वास जहाँ।
यह सुगम भूमि रहि सबको घूम होता सब को हुलास जहाँ
यह मन्त्र महल थे पदमाय जहाँ कौशल्या महरानी थी।
था अपराजिता नाम दूजा तन पर सब मोद निशानी थी॥
मानस वसन्त ऋतु का सा था नहिं शीत और नहिं ताप यदा।
हर उमाह छाया घर घर और चिन्ह नहिं सन्ताप सदा॥
नभ शिर शृंगार सुगर पर के अति प्रेम मगन दिन बीत गया।
सामना मान की हुवा जाय अब शशि का आगमन हुवा॥

बहर खड़ी

मोदित हो रास रचाती हैं ॥ गाती हैं भर-भर तान सखी।
हर्षा कर नाच रहीं मिल जुल ॥ गा रहीं हैं मंगल गान सखी॥
नर-नारि अनंदित घर-घर पर ॥ तोरण को बांध सिहाते हैं।
लाते हैं मांगलिक वस्तु ॥ रचना विचित्र दिखलाते हैं॥
लख मंगल दिवस बने सुर तरु ॥ दशरथ नृप मन हुलसाते हैं।
करते हैं आशा पूर्ण सब की ॥ जो चाहते हैं सो पाते हैं॥
दिन याचक वृन्द सभी सारे ॥ कर दिये अयाचक भूपत ने।
दारिद्र्य दूर भये नगरी के ॥ खुश कीने शासक भूपत ने॥

दोहा

अन्य भूप कर भेंट ले ॥ आये नृप के द्वार।
दशरथ मन हर्षाय के ॥ करते हैं सत्कार ॥२५६॥

बहर खड़ी

उस पुत्र भाग्य से राजों के ॥ हृदय में प्रेम समाया है।
जिस तरह लार को चुम्बक संग ॥ निज ओर खींच कर लाया है॥
रक्खा है पद्म नाम सुत का ॥ पर राम नाम विख्यात हुआ।
दिन-दिन तप तेज उन्नति पर ॥ होता है शुभ नर गात हुआ॥
शुभ दन्त सुपंक्ति कुन्दकली ॥ अरु अधर अरुण शुभ लाल के हैं
चपला चमके घन में जैसे ॥ चमकारे मुक्ता माल के हैं॥
घुँघराली लटकें लट मुख पर ॥ कानों में कुण्डल डोलन की।
छवि छुपी छुपा की लख कर ॥ आनंद भई शुभ बोलन की॥

दोहा

सुगर सुमित्रा ने लखे ॥ सुपने उत्तम सात।
वासुदेव के चिन्ह हैं ॥ जो जग में विख्यात ॥२६०॥

रत्न जवाहिर आदि बहु * मुक्ता करें प्रदान ।२४६॥

वहर खड़ी

हुआ है ज्ञान जिस घड़ी शुरू * सब के कानों में भनक पड़ी।
जनता उस समय उत्साह भरे * सब के मन में अति खुशी बढ़ी॥
जब शुभ समय शुभ दिन आया * कौशल्या ने सुत जाया है ।
गर्भ में हुए जकार महा * शुभ गान सुरों ने गाया है ॥
हर्षोत बधाये होन लगे * मङ्गलमय छत हुए जारी ।
मिल कर के नम्र जनता सारी * दरबार की करती तैयारी ॥
फाड़ दूब पुष्प कर में लेकर दशरथ के सम्मुख आते हैं ॥
कोई मंगल मय वस्तु कर में नृप को शुभ शब्द सुनाते हैं ॥

दोहा

नगर स्त्रियां छिड़काय कर पुष्प दिये बरसाय ।
शुभ सुगन्ध से पथ सब * हुआ सुगंधित आय ॥२४७॥

बहर खड़ी

मुतान स त्याक पुरा कर के चावल चावल उरसाये हैं ।
क ञ्चन क कलश किये अर्चन द्वार नृप के धरवाये हैं ॥
वन्दन वार द द्वार-द्वार माङ्गलिक वस्तु चमकार करें।
उडत निशान आकाश सुगर विश्वास भूप के मोद भरे ॥
बज रहे ढोल मृदङ्ग चङ्ग * दिल क्या कहिं एक तारा है॥
कहिं बीन सितार तमूरा है सारङ्गी कहिं मन धारा है ॥
कहिं झाँझ शङ्ख करताल बजें। कहिं बजे पखावज प्यारी है।
कहिं नाना भांत बजें बाजे। आनंद मन रहा भारी है॥

दोहा

रमण रहा रमणी जहाँ * गावें भर भर राग ।
[illegible] हाथ उधारती * कर रहि हरि गुण गाग॥२४८॥

कर-कर के बाल विनोद युगल * पितु माता के मन को भरते ॥
कभी शशि देख मचल जाते * कभी प्रति बिम्ब देख डरपते हैं
कभी करताल बजाते हैं * कभी हौआ सुनकर कँपते हैं ॥
कभी ठुमक ठुमक पग धर अंगना * मात की गोदी आते हैं।
कभी हट करत हैं हर्षा कर * कभी गोद मचल युग जाते हैं॥
यह रीति बढ़ाते प्रीति हर्ष * माताऐं बलि-बलि जाती हैं।
चुटकी को बजा सिखाती हैं * मन देख-देख हर्षाती हैं ॥

दोहा

दोनों भ्राता प्रेम युत * नील पीत पट धार।
चलें जमा कर अब चरन * धरन कँपे उस बार ॥२६३॥

बहर खड़ी

थोड़े ही अर्से में दोनों * सारी विद्या सम्पन्न भये।
बलवान हुये बह अद्वितीय * और कर कौशल प्रतिसन्न भये
मुष्टक प्रहार कर गिरिधर का * हर्षा के चूरा करते थे।
जिसमें डाले थे हाथ तुरत * उस काम को पूरा करते थे ॥
अब व्यायाम करने के हेत * शाला में प्रमुदित जाते थे।
तो बड़े मल्लों को यह * सहजे नीचा दिखलाते थे ॥
अब धनुष बाण को चिल्ले पर * मिल कर युग भ्रात चढ़ाते थे।
उस समय अशंका से इक दम * सूरज मन में कँप जाते थे ॥

दोहा

भुज बल अपने से सदा * रिपु को तृन सम जान।
धनु विद्या में अद्वितीय * पूरण चतुर सुजान ॥२६४॥

बहर खड़ी

पुन पुरी अयोध्या में नृप ने * आकर अधिकार जमाया है।
दोनों सुत अपनी बाहु समझ * दशरथ बल अतुल दिखाया है

बहर खड़ी

दिनकर गजन्द्र व हरि शुभ शशि ० अगनी अल कमल महारानी
सागर देखा सातयाँ स्वप्न ० यह चिन्ह निरख मन खुश रानी
यह स्वप्न देख कर रानी ने ० दशरथ तट चरण बढ़ाये हैं।
अति विनय सहित कर जोड़ प्रिय० सुपने यथार्थ समझाये हैं॥
सुरलोक से चवके आ जीव ० रानी के गर्भ में आया है।
ह पुण्यवान बलवान महा ० सुख हर प्रकार दिखाया है॥
सुनकर के स्वप्न प्रसन्न हुए ० दशरथ हृदय हुलसाये हैं।
नाहं रही मोद की कुछ सीमा ० आनंद अभ्र घन छाये हैं॥

दोहा

लक्ष्मण शुभ शुभ दिवस में ० शुभ समय धर ध्यान।
जाया सुत सुमित्रा निकट ० केहरि सिंह निदान॥२६१॥

बहर खड़ी

सुन्दर सुश्याम अभिराम वरण घन नील जिस सरह प्यारा है।
जल जात सुगर जग जल पर देता शोभा अति भारा है॥
महलों में आनन्द छाया भारी नर नारी मंगल गाते हैं।
नहीं फूले अंग समाते हैं इक आते हैं इक जाते हैं॥
दस दिवस महोत्सव मना रहा यन्दी यह तर मुक्त किये।
याचक कर दिये अयाचक सब पस भूपति ने दान दिये॥
नारायण नाम करण पाया लक्ष्मण भर मोद पुकारा है।
प्रसन्न मात पित रहते शुभ गौर श्याम अति प्यारा है॥

दोहा

फर-फर के बाल विनोद युगल * पितु माता के मन को भरते॥
कभी शशि देख मचल जाते * कभी प्रति बिम्ब देख डरपत हैं
कभी करताल बजाते हैं * कभी हौआ सुनकर कँपते हैं॥
कभी ठुमक ठुमक पग धर अंगना* मात की गोदी आते हैं।
कभी हट करत हैं हर्षा कर * कभी गोद मचल युग जाते हैं॥
यह रीति बढ़ाते प्रीति हर्ष * मातायें बलि-बलि जाती हैं।
घुटनी को बजा खिलाती हैं * मन देख-देख हर्षाती हैं॥

दोहा

दोनों भ्राता प्रेम युत * नील पीत पट धार।
चलें जमा कर अब चरन * धरन कँपे उस बार॥२६३॥

बहर खड़ी

थोड़े ही अर्से में दोनों * सारा विद्या सम्पन्न भये।
बलवान हुये वह अद्वितीय * और कर कौशल प्रतिसन्न भये
मुष्टक प्रहार कर गिरिवर का * हर्षा के चूरा करते थे।
जिसमें डाले थे हाथ तुरत * उस काम को पूरा करते थे॥
जब व्यायाम करने के हेत * शाला में प्रमुदित जाते थे।
तो बड़े मल्लों को वह * सहजे नीचा दिखलाते थे॥
जब धनुष बाण को चिल्ले पर * मिल कर युग भ्रात चढ़ाते थे।
उस समय आशंका से इक दम * सूरज मन में कँप जाते थे॥

दोहा

भुज बल अपने से सदा * रिपु को तृन सम जान।
धनु विद्या में अद्वितीय * पूरण चतुर सुजान॥२६४॥

बहर खड़ी

पुन पुरी अयोध्या में नृप ने * आकर अधिकार जमाया है।
दोनों सुत अपनी बाहु समझ * दशरथ बल अतुल दिखाया है

बहर खड़ी

दिनकर गज प्र य हरि शुभ शशि ॥ भगनी जल कमल महारानी
सागर देखा सातवाँ स्वप्न ॥ यह चिन्ह निरख मन खुश रानी
यह स्वप्न देख कर रानी ने ॥ दशरथ तट चरण बढ़ाये हैं।
अति विनय सहित कर जोड़ प्रिय ॥ सुपने यथार्थ समझाये हैं॥
सुरलोक से चयके आ जाय ॥ रानी के गर्भ में आया है।
है पुण्यवान बलवान महा ॥ सुख हर प्रकार दिखाया है॥
सुनकर के स्वप्न प्रसन्न हुए ॥ दशरथ हृदय हुलसाये हैं।
नहिं रही मोद की कुछ सीमा ॥ आनन्द अम्बु चखु छाये हैं॥

दोहा

लक्षण शुभ शुभ दिवस में शुभ समय धर ध्यान।
जाया सुत उर्मिला निकट ॥ केहरि सिंह निदान ॥२६१॥

बहर खड़ी

सुन्दर सुश्याम अभिराम वरण ॥ घन नील जिस तरह प्यारा है।
जल जात सुगर जैसे जल पर ॥ देता शोभा अति भारा है॥
महलों में आनन्द छया भारी ॥ नर नारी मंगल गाते हैं।
नहीं फूले अंग समाते हैं ॥ इक आते हैं इक जाते हैं॥
दस दिवस महोत्सव मचा रहा ॥ बन्दी बहु तेरे मुक्त किये।
याचक कर दिये अयाचक सब ॥ ऐसे भूपति ने दान दिये॥
नारायण नाम करण पाया ॥ लक्ष्मण भर मोद पुकारा है।
प्रसन्न मात पितृ देख देख ॥ शुभ गौर श्याम अति प्यारा है॥

दोहा

दिन दिन बढ़त युग सुत ॥ रूप राशि गुण खान।
बल प्रताप चौगुन बढ़े ॥ दोनों धर कर ध्यान ॥२६२॥

बहर खड़ी

पृथ्वि तल पर फैल रही प्यारी ॥ जहाँ श्याम गौर की छवि फरव।

उसको पा समय तुरत झपटा * एक बाज ने पकड़ा है धाक ॥
पंजों से गिरा छूट कर के * मुनि की शरणागति आया है।
मुनिवर ने दया हृदय धारी * उसको नवकार सुनाया है ॥
नवकार मंत्र के कारण से वह * हुआ देवता आकर के।
किन्नर की जाति में प्रगट हुआ * दस सहस्र सु आयुष पा करके॥

दोहा

विदग्ध नगर के नृपत के * हुआ पुत्र ललाम।
सुन्दर तेज प्रताप अति * कुंडल मंडित नाम ॥२६७॥

बहर खड़ी

भव भव भ्रमता-भ्रमता पयानकर* चक्र पुरी में आया है।
चक्रध्वज भूपत का प्रोहित * द्विज धूमसेन कहलाया है ॥
उसका सुत पिंगल हुआ आन * मन में स्वमान को धरता था।
भूपत की पुत्री सुन्दरी के संग * विद्या को निश दिन पढ़ता था
पिंगल द्विज पुत्र समय पाकर * नृप की कन्या का हरण किया
आकर विदग्ध पुर में ठहरा * अब आजीविका में चित्त दिया॥
कुंडल मंडित ने देख उसे * परस्पर प्रेम दर्शाया है।
उसको हर लेगया पिता डरसे* दुर्गम प्रदेश बसाया है ॥

दोहा

नारी के लख वियोग को * लीना संयम मार।
मोह न छूटा नारि का * मन में नहीं करार ॥२६८॥

बहर खड़ी

कुण्डल मण्डित पामर हो कर * दशरथ का देश नशाता है।
छल से जनता को ठगता है * पुनः लूटख मार मचाता है ॥
नृप की आज्ञा से बालचन्द्र * सामन्त सैन ले चढ़ आया।
कुण्डल मण्डित को पकड़ लिया * दशरथ के सन्मुख ले आया ॥

कैकई ने जाया भरत पुत्र * शत्रुघन सु प्रभाव जाया।
अति भई खुशी अयोध्या में * दशरथ मन में अति हर्षाया॥
जिस तरह मेरु के दिग्गज हैं * बस इसी तरह चारों भाई।
दशरथ सुमेरु सम दीखे हैं * शोभा मुख नाहि बरनी जाई॥
मिल जुल कर अवध की कुंजों में * जब आते थे भाई चारों।
दर्शन के हित नरनार सभी * रहते थे खड़े द्वार चारों॥

दोहा

भरत क्षेत्र में शालपुर * था इक छोटा ग्राम।
जहाँ बसे एक ब्राह्मण * वसुभूति है नाम ॥२६५॥

बहर खड़ी

उस द्विज का सुत अनुभूति था * सरसा थी उसकी प्राण प्रिया।
कमला एक विप्र हुआ मात्रिक * उसने जा उसको हरण किया।
अनुभूति विरह वेदना में फंस * उसे ढूंढता फिरता था।
उसके मां बाप मोह वश हो * हर ओर विचरता फिरता था।
पथ में मिल गये अनगार एक * उसको उपदेश सुनाया है।
सन्मुख के अमरत वाणी का * वैराग्य चित्त में छाया है॥
लेकर के संयम और युगल * अति हंसी खुशी युत साधु भये।
कर के आयु अपनी पूरी * सुधर्म सुर पुर में प्रगट भये॥

दोहा

स्वर्ग पुर से उतर कर * घना गिरि वैताढ सजान।
रथनूपुर का अधिपति * चन्द्र गति बलवान ॥२६६॥

बहर खड़ी

अनुभूति का पुष्पवती हुआ * नृप की अर्धांगनी आकर के।
ईशान स्वर्ग से आ कर के * सरस सुरूप हुआ था कर के॥
अनुभूति विप्र भ्रमता भ्रमता * इक ईर्गति के प्रगटा आके।

बालक के पैदा होने का ❀ अति ही आनद मनाया है॥
दरबार में आके भूपति ने ❀ आज्ञा ऐसी करवाई है।
होती हैं ठाम–ठाम खुशियाँ ❀ सब के मन खुशी समाई है॥

दोहा

चन्द्रगति पुष्पावती ❀ हरष सुमन अपार।
देह–नेह वपु पुत्र की ❀ करते जै जै कार॥२७१॥

बहर खड़ी

राजा रानी सुत को विलोक ❀ आनद अतीव मानते हैं।
महलों में मंगल आदि होंय ❀ इक आते हैं इक जाते हैं॥
क्या अटल काल की लीला है ❀ कहीं शोक हर्ष है कहीं कहीं।
कोई किसी के लिये रोता है ❀ होता उत्कर्ष है कहीं कहीं॥
जब जनक पुत्र का हरण सुना ❀ एक समय शोक हृदय छाया।
पुन सोच काल की वक्र गति ❀ कुछ ध्यान न फिर यद्यपि आया
दौड़ाये जवान चौ तरफ को ❀ गिरी गुहा लखे नदी नाले।
जब पता कहीं पे नहीं लागा ❀ लौटी आगये ढूंढन वाले॥

दोहा

कर सन्तोष विदेह मन ❀ समझाई निज बाम।
पुत्री को अविलाक के ❀ सीता राखा नाम॥२७२॥

बहर खड़ी

होती थी शीतलता प्रगट ❀ उस शांति मूर्ति निहारे से।
शान्तिता समा जाती हृदय ❀ ले करके गोदी पुचकारे से॥
बढ़ती है चन्द्र कला जैसे ❀ बढ़ती बुद्धि विवेक भई।
करती है लीला नव प्रगट ❀ माता के सन्मुख टेक मई॥
जब यौवन वय में धरा चरन ❀ उस समय प्रण ऐसा किया।
बैठाय समीप कुमारिन को ❀ पतिव्रत धर्म उपदेश दिया॥

कीना है याद जनक नृप ने * यों ब्योरेवार सुना देना ॥

दोहा

दशरथ के दरबार में * पहुँचा दूत सुजान ।
पत्र हाथ में दे दीना * सुना दिया सब ध्यान ॥२७५॥

बहर खड़ी

निज मित्र का सकट सुन कर के * दशरथ का हृदय उबल आया ।
सेना को आज्ञा दे दीनी * फौरन ललाट पर बल आया ॥
लोचन मसाल के सम हुए * भृकुटी तन गई कमाने सी ।
भुजदंड फड़कने लगे सुरस * रिपु की मई भय में आने सी ॥
रण बाज अवध में लगे बजन * सज गये शूर सामन्त सभी ।
सेना चतुरंगी हुई तैयार * माने हैं प्रजा भ्रान्त सभी ॥
कोई कहे कहाँ को सजे भूप * सेना कैसे तैयार हुई ।
रणभेरी बजती है पुर में * सब के उमंग सरसार हुई ॥

दोहा

बोले राम सुजान यों * सुनो पिता धर ध्यान ।
रण में जायें आप तो * हम को छोड़ मकान ॥२७६॥

बहर खड़ी

जाते हो आप युद्ध करने * हमको क्या काम बताया है ।
मैं और अनुज मेरा दोनों * किस हेत यहाँ छिटकाया है ॥
अब आप अवध का राज करो * रण की आज्ञा हम को दीजे ।
मैं करूँ निपात म्लेच्छों का * अपने श्रवण से सुन लीजे ॥
इतना कह आज्ञा प्राप्त करी * संग लिया लक्ष्मण भाई है ।
पुनः कूँच का डंका बजवाया * आज्ञा मुख हर्ष सुनाई है ॥
पहुँचे हैं मिथिला नगरी में * राजा को सूचना पहुँचाई ।
सुन जनक राय प्रसन्न हुए * अब सुना कुमुद नृप की आई ॥

लक्ष्मण के वीणा हाथ कभी ॥ जब मोद मुदित हो गाती थी।
सुर मधुर मधुर की सुन तानें ॥ वायु भी कुछ रुक जाती थी ॥

दोहा

क्रमश चढ़ कमलाक्षी ॥ रूपकला प्रवीन ।
यावन वय का प्राप्त कर ॥ कन्ती छवि को छीन॥२७३॥

बहर खड़ी

उत्तम लावण्य सुसागर की लहरों में अब लहरान लगीं।
शुभ सुन्दरता से रती शची रमा को भी शरमान लगीं ॥
यह रूप अतिशय का विलोक मन जनक राय यूँ धारते थे।
सम रूप बुद्धि गुण बल वाला कोइ नृप कुँवर निहारते थे ॥
मन्त्रियों से करते परामर्श चौतरफ दृष्टि डाले राजा ।
जिस भूप कुँवर या अभिलाषी निज प्रण कैसे पाले राजा ॥
सब समय करा लेता कर्तव्य बस यही वानिक बनता है।
जिस तरह भवितव्य है जिसका बस उसी तरह से ठनता है॥

दोहा

[illegible] जाति का राय ।
जनक राय के नाम से [illegible] राज लगाय दाव ॥ २७४ ॥

बहर खड़ी

[illegible] का निर्भय चढ़ कर आता है।
[illegible] जनता का नृप सताता है ॥
[illegible] समान नहि पग धरने पाता है ।
[illegible] सम्मुख नहि आना चाहते है॥
[illegible] निज मिथ मान को गाढ़ा ।
[illegible] हृदय प्रबल का रंग गाढ़ा ॥
[illegible] यह पत्र शीघ्र पहुँचा देगा ।

कीना है याद जनक नृप ने * यों व्योरेवार सुना देना ॥

दोहा

दशरथ के दरबार में * पहुँचा दूत सुजान।
पत्र हाथ में दे दीना * सुना दिया सब ब्यान॥२७५॥

बहर खड़ी

निज मित्र का सकट सुन कर के * दशरथ का हृदय उबल आया।
सेना को आज्ञा दे दीनी * फौरन ललाट पर बल आया॥
लोचन मसाल के सम हुए * भृकुटी तन गई कमाने सी।
भुजदंड फड़कने लगे तुरत * रिपु की भई भय में जाने सी॥
रण बाज अवध में लगे बजन * सज गये शूर सामन्त सभी।
सेना चतुरंगी हुई तैयार * माने हैं प्रजा आन्द सभी॥
कोई कहे कहाँ को सजे भूप * सैना कैसे तैयार हुई।
रणभेरी बजती है पुर में * सब के उमग सर सार हुई॥

दोहा

बोले राम सुजान यों * सुनो पिता धर ध्यान।
रण में जायें आप तो * हम को छोड़ मकान॥२७६॥

बहर खड़ी

जाते हो आप युद्ध करने * हमको क्या काम बताया है।
मैं और अनुज मेरा दोनों * किस हेत यहाँ छिटकाया है॥
अब आप अवध का राज करो * रण की आज्ञा हम को दीजे।
मैं करूँ निपात म्लेच्छों का * अपने श्रवण से सुन लीजे॥
इतना कह आज्ञा प्राप्त करी * सग लिया लक्ष्मण भाई है।
पुनः कूँच का डंका बजवाया * आज्ञा मुख हर्ष सुनाई है॥
पहुँचे हैं मिथिला नगरी में * राजा को सूचना पहुँचाई।
सुन जनक राय प्रसन्न हुए * जय सुना कुमुद नृप की भाई॥

दोहा

देखा है श्रीराम ने, जनकपुरी सुरस्थान।
म्लेच्छ उपद्रव कर रहे, लेकर हाथ कृपान ॥ २७७ ॥

बहर खड़ी

अब लगा राम की सेना पर हल्ला म्लेच्छ कर दीना है।
करते हैं मार मार मिलकर ऐसा ही उपद्रव कीना है॥
लाचार सेना में होने लगी देखा है राम ध्यान कर के।
प्रत्यंचा पर लिया बाण चढ़ा खेंचा है वीर मान कर के॥
टंकार करा जब रण भू में सुनकर रिपु वृन्द गिरे बैरा।
स ग्रिन भेस हुआ प्रभु दा जय बाण पड़ा हरि का गैरा॥
उनने है बाण हजारों का लाखों को रण से भगा दिया।
विपक्ष में है हा हाकार मचा श्रीराम ने ऐसा कृत्य किया॥

दोहा

भगाये म्लेच्छ नृप मन में करें विचार।
राम बाल से कान + ज्ञात है सरदार ॥ २७८ ॥

बहर खड़ी

सीता हित निश्चय किया * मन में खूब विचार ॥ २७६ ॥

बहर खड़ी

लोगों के मुख से नारद ने * जानकी की आतारफ सुनी।
तो जनक सुता के देखन की * अभिलाषा मन में करी गुना ॥
आये हैं मिथिला नगरी में * कन्याग्रह में प्रवेश किया।
नहिं इधर उधर देखा मुनि ने * महलों में जाना रोप किया ॥
थे पीत नैन अरु पीत केश * लम्बोदर बेड हाथ में था।
कोपीन लगी कर बीन लिये * पुन छात्रिक मण्डल साथ में था
यह भेष देख सिय भय मानी * माता के निकट सिधारा है।
दखो यह कौन मनुष जिसके * उड़ शिखा शीश राहि भारी है

दोहा

सीता की आवाज सुन * दौड़े पहरेदार।
महलों में आये तुरत * बाँध बाँध हथियार ॥२८०॥

बहर खड़ी

देखा है देव ऋषि को जब * तो लौटे पहरे दार तुरत।
सीताजी को समझा दीना * दाना है कर हुशियार तुरत ॥
नारद ने तुरत पयान किया * वैताड़ गिरि पर आया है।
अपमान किया सिय ने मेरा * ऐसा विचार मन लाया है ॥
मन में विचार कर प्रतिबिम्ब * निज कर से बनाया सीता का
आकर भामण्डल के कर में * प्रतिबिम्ब गहाया सीता का ॥
देखा भा मण्डल ने जिस दम * हो मन विषम नृप नाथ हुआ।
सब खान पान वह भूल गया * दुक काम ही उसके साथ हुआ॥

दोहा

चन्द्र गती ने पुत्र का * जब देखा यह हाल।
लगा पूछने पुत्र से * मन का सब अहवाल ।२८१॥

दोहा

देखा है श्रीराम ने ❁ जनकपुरी दरम्यान।
म्लेच्छ उपद्रव कर रहे ❁ लेकर हाथ कृपान ॥ २७७ ॥

बहर खड़ी

अब लखा राम की सेना को ❁ हल्ला म्लेच्छ कर दीना है।
करते हैं मार मार मिलकर ❁ ऐसा ही उपद्रव कीना है॥
हलचल सेना में होन लगी ❁ ऐसा है राम ध्यान कर के।
प्रत्यंचा पर लिया बाण चढ़ा ❁ खैंचा है धीर मान कर के॥
टङ्कार करी जब रण भू में ❁ सुनकर रिपु वृन्द गिरे भैरा।
सब छिन्न भिन्न हुआ शत्रु दल ❁ जब बाण चढ़ा हरि का गैरा॥
रुले हैं बींध हजारों को ❁ लाखों को रण से भगा दिया।
रिपुदल में हा-हा कार मचा ❁ श्रीराम ने ऐसा कृत्य किया॥

दोहा

अगाद म्लेच्छ नृप ❁ मन में करें विचार।
बाण ध्याल से कौन के ❁ आते हैं सरसार ॥ २७८ ॥

बहर खड़ी

जिस समय राम पर नज़र पड़ी ❁ टूटे हथियार उठा कर में।
भागे हैं इधर उधर भय से ❁ हो छिन्न-भिन्न गये पल भर में॥
जैसे अष्टापद सिंहों को ❁ वन में से तुरत भगाता है।
बस राम के सन्मुख इसी तरह ❁ नहिं रण भू में कोइ आता है॥
रण कौशल राम का लख जनक ❁ मन में प्रसन्न हुए भारी।
सब सराहते रघुवर को धन धन ❁ कहते सब ही नर नारी॥
पुरवासी हर्ष रहे मन में ❁ कहते हैं धन धन राम तुम्हें।
दीना मिटा दुख जनता का ❁ आशियाद सुख धाम तुम्हें॥

दोहा

जनक राय आनन्द लखा ❁ रघुवर का जिस बार।

सीता हित निश्चय किया ॥ मन में दृढ़ विचार ॥ २७६ ॥

बहर खड़ी

लोगों के मुख से नारद ने ॥ जानकी की जातारफ सुनी।
तो जनक सुता के देखन की ॥ अभिलाषा मन में करी गुना ॥
आये हैं मिथिला नगरी में ॥ कन्यागृह में प्रवेश किया।
नहिं इधर उधर देखा मुनि ने ॥ महलों में जाना रोप किया ॥
थे पीत नैन अरु पीत केश ॥ लम्बोदर दंड हाथ में था।
कोपीन लगी कर बीन लिये ॥ पुन तान्त्रिक मंडल साथ में था
यह भेष देख सिय भय मानी ॥ माता के निकट सिधारी है।
बुझो यह कौन मनुष जिसके ॥ उङ शिखा शीश राखि भारी है

दोहा

सीता की आवाज सुन ॥ दौड़े पहरेदार।
महलों में आये तुरत ॥ बाँध बाँध हथियार ॥२८०॥

बहर खड़ी

देखा है वेष ऋषि को जब ॥ तो लौटे पहरे दार तुरत।
सीताजी को समझा दीना ॥ दाना है कर मुशियार तुरत ॥
नारद ने तुरत पयान किया ॥ कैलाश गिरि पर आया है।
अपमान किया सिय ने मेरा ॥ ऐसा विचार मन लाया है ॥
मन में विचार कर प्रतिबिम्ब ॥ निज कर से बनाया सीता का
आकर भामंडल के कर में ॥ प्रतिबिम्ब गहाया सीता का ॥
देखा भा मण्डल ने जिस दम ॥ हो प्रेम विवश नृप नाथ हुआ।
सब खान पान वह भूल गया ॥ इक प्रेम ही उसके साथ हुआ॥

दोहा

चन्द्र गती ने पुत्र का ॥ जब देखा यह हाल।
लगा पूछने पुत्र से ॥ मन का सब अहवाल ॥ २८१॥

बहर खड़ी

है धनुष वज्रावर्त एक ॐ अर्णावत दूजा यान सुनो।
एक हजार सुर सेवक हैं ॐ उन दोनों के घर ध्यान सुनो॥
उन दोनों की पूजा कर ॐ होती आई घरयाने में।
नहिं चढ़े किसी से यह अब तक ॐ नहिं आये कमी चढ़ाने में॥
माधी बलदेव वासुदेवा ॐ दोनों को दोनों तानेंगे।
नहिं और किसी से उठ सकते ॐ इस कारण को मन मानेंगे॥
चालाक वचन लेकर नृप को ॐ मिथिला पुर जाय उतार दिया।
धर दिये धनुष दोनों आकर ॐ निज नृप ने डेरा डाल दिया॥

दो०।

जनक राय ने कह दिया ॐ रानी से सब ध्यान।
अबरन सीता माँग था ॐ धनुष धरे हैं आन॥२८४॥

बहर खड़ी

पर फिकर नहीं इस बात की है ॐ यह राम धनुष को तानेगा।
है असल केशरी दशरथ का ॐ बिन ताने कभी ना मानेगा॥
हे देवी! तुम कुछ भय न करो ॐ इच्छा सारी पूरी होगी।
यह धनुष उन्हें हैं तृण समान ॐ आशा तुमरी पूरी होगी॥
मैंने मलेछ रण में उनका ॐ बल पौरुष सभी निहारा है।
बलवान महा दशरथ सुत हैं ॐ कौशल्या नैन का तारा है॥
यह दैत्यारि रिपु गजन है ॐ भजन शत्रु का मान महा।
हैं बल अतुल भुज दंडों में ॐ रण का रखते अरमान महा॥

दोहा

भूमि शोध समार कर ॐ मंच की रचना कीन।
मंडप मंडित कर तुरत ॐ भूपत आज्ञा दीन॥२८५॥

बहर खड़ी

अचन करता के धनुषों का ॐ लाकर के मंडप बीच धरे।

हों हितु हमारे राजा के जो # दर्शन पुनः मिले इन के।
उठ जाय धनुष हर का होकर # जो हृदय कमल खिले इनके॥
है गौर श्याम अद्वित जोड़ी # सुन्दर स्वरूप बलवान हैं यह।
भुज बल अतुल मज़बूत देह # सुन्दरता की तो खान हैं यह॥
सम्राद् भूप दशरथ के सुत # प्रजा के शुभ रखवारे हैं।
निज मात नैन के तारे हैं # मन्दिर के अमल उजारे हैं॥

दोहा

लक्षमण को दिखला रहे # रघुवर हाट बज़ार।
बाग सुगर दृष्टि पड़ा # रक्खे चरन अगार॥२८८॥

बहर खड़ी

देखे हैं बाग भ्रात दोनों # मन में खुश बख्ती छाई है।
शीतल समीर सन–सन चलती # उत्तमता रही दिखाई है॥
तख़ते तख़ते में फूल खिले # भौंरें करते गुंजार महा।
छवि चित पर छाय रही सुन्दर # होता आनंद बहार महा॥
बहती है नहर वाटिका में # शीतल शुचि ललित सुहाता है
सुन्दर सुघाट संगमरमर के # जिन पर कटाव अति भाता है॥
तट पर बहु हंस किलोल करें # झिल्ली झनकार पुकार रहे।
दादुर धवकार करें तट पर # सुन्दरता युगल निहार रहे॥

दोहा

अलिन सहित थी जानकी # गई बाग मझ धार।
सैर करें मन मोद हो # नित प्रति के अनुसार॥२८६॥

बहर खड़ी

एक चपल सखी सीताजी की # हँस हँस कर बात बनाती है।
रखती है जोष प्रसन्न सदा # हँसती है आप हँसाती है॥
तख़्ते तख़्ते में घूम रही # महि चूम चरन रही सीता के।

यह सुन कर राम दृष्टि डारी * सीता की ओर निहारे हैं।
हो गये प्रेम मग्न रघुवर * जब मुख से वचन उचारे हैं॥
भाई इसका कारण क्या है ? * जो मेरा हृदय खिंचा जाता।
इस शुद्ध ललित प्रेमाजल से * हृदय का बाग सिंचा जाता॥

दोहा

ऐसे हुए न अब तलक * मेरे हृदये भाव।
जैसा आज प्रगट हुआ * मन में यह अनुराग ॥२६२॥

बहर खड़ी

यह हुई किस तरह बात प्रगट * जो प्रेम प्रगट होता मन में।
अब तलक सुना नहिं देखा है * जो भाव यवहलता क्षण क्षण में
जब तक सत्य प्रेम न हो तिय का * तब तक हृदय में प्रेम नहीं।
जो न्याय नीति से अपनी हो * उसके समान है क्षेम नहीं॥
यह सुन कर लक्ष्मन लगे कहने * अब समय स्वयंवर आता है।
जल्दी पधारिये डेरे पर * ऐसा मन मेरे भाता है॥
यह सुन कर गमन किया रघुवर * डेरे पर दोनों आये हैं।
मज्जन स्नान किये हर्षा * वस्तर तन कवच सजाये हैं॥

दोहा

जनक सुता गई पहुँच के * महलों के वरस्थान।
निर्मल गंगा नीर से * करवाये हैं स्नान ॥२६३॥

बहर खड़ी

मिल कर के सुघर सहेली सब * सिय का शृंगार बनाती हैं।
कर-कर शृंगार सवार सार * हृदय में खुशी मनाती हैं॥
शुभ अमिट आभरण सीता के * तन पर अति सुभग सुहाते हैं।
शृँगार करा कर मात पिता * अपने मन में हुलसाते हैं॥
करके शृँगार सखी सारी * हँसती है और हँसाती है।

धारह आभरण बनाय मुदित * हुया कर सखियों के सग में।
फरती रगरेली अलबेली * प्यारी प्रियतम के शुभ रग में॥

दोहा

दिव्य आभूषण धार के * कर सोलह शृंगार।
सखियों के सग आनको * आई है दरबार॥ २६६॥

बहर खड़ी

जब सिया स्वयवर में आई * राजों की उस पर नज़र पड़ी।
असे इन्द्राणी आकर के * सहर्ष सभा में आन खड़ी॥
अचन कर के श्री जनक सुता * हृदय में राम मनाया है।
मन सा वाचा और कर्मणा से * चित्त चरणों बीच लगाया है॥
फिर आय जनक के सेवक ने * नृप का कहा वचन उचारा है।
जो धनुष तान देगा आकर * वह होगा हितु हमारा है।
जेते राजे खेचर भूचर * सब एक यहाँ पर आये हैं।
अपना-अपना पौरुष दिखलाकर * मन में सब हुलसाये हैं॥

दोहा

सुन कर नृपत के वचन * भूपत मन हर्षाय।
एक-एक करके चले * रहे पिनाक उठाय॥२६७॥

बहर खड़ी

जो आता पास धनुष के है * वह अपनी आब गँवाता है॥
जो धनु से हाथ लगाता है * तो धरनी पर गिर जाता है॥
मानी जो मूँछ वढ़ाते थे * बल पौरुष सब अज़माते थे।
वह तेज धनुष का देख-देख * अपने दिल में घबराते थे॥
बहुतेरे राजा सोच रहे * क्यों नाहक मान घटायें हम।
यह धनुष नहीं उठ सकता है * किस लिए पास भी जायें हम॥
ऐसा विचार कर बैठ रहे * नहिं आगे चरण बढ़ाया है।

दोहा

लखन सुभट रहो शान्ती * क्रोध करो मत भ्रात।
चाप सनेगा वीर यह * सुनो हमारे हात ॥ ३०० ॥

बहर खड़ी

त्यागा है मच राम जिस दम * सदरे राजों की नजर पड़ी।
उपहास सहित लखें चन्द्रगती * प्रजा देखें हैं खड़ी-खड़ी ॥
कर गमन चले गज के समान * मन मुदित धनुष के तट आये।
गज कमलनाल जैसे तोड़े * इस रीति धनुष पर कर लाये॥
जिसतरह व्यालको पकड़ गरुड़ * छोड़े पकड़े हैं बार-बार।
रघुवर यों खेल विलास हैं * कर वज्रावर्त को बार बार ॥
जिस तरह इन्द्र अपने कर में * खुश होकर वज्र उठाता है।
होकर निशङ्क दशरथ नन्दन * ऐसे ही धनुष कर लाता है।

दोहा

धनुष धारियों में परम * उत्तम राम सुजान।
धनुष उठा कर हाथ में * लीना उसको तान ॥ ३०१ ॥

बहर खड़ी

लोहे की पिण्का ऊपर कर * रघुवर ने तुरत झुका लीना।
चिल्ला को अपने हाथों से * रघुवर ने तुरत चढ़ा दीना ॥
फिर कान तलक खींचा उसको * अरु बार-बार अजमाया है।
ताली दीना है छोड़ तुरत * घनघोर शब्द सुन पाया है॥
इस घोर शब्द के होने से * आकाश में बहु गुंजार हुई।
भय समा बीच रह गये मौन * ऐसी आवाज सर सार हुई॥
हो गये मुदित लख जनक नृपत * मन छाई अति खुश हाली है।
सीता ने राम की गर्दन में * हर्षा वर माला डाली है ॥

जनक राय से क्रोध कर * कहन लगे यों ध्यान ॥३०४॥

बहर खड़ी

जो चाहते शांति बनी यहाँ रहे * तो इक काम यह कर दीजे।
नरेन्द्र सभा से दोनों को * पृथक् कर मन को भर दीजे॥
जो यहाँ रहेंगे यह दोनों * तो डट कर हो संग्राम महा।
मणथल का रण बस हो जाये * कैसे रहेगा सुख धाम यहाँ॥
मैं चूर करूँ इन दोनों को * बल इनका सभी झाड़ दूँगा।
जिस तरह धनुष को ताना है * वह नूर सभी बिगाड़ दूंगा॥
इक धनुष उठा कर के इनको * इतना भारी मगरूर हुआ।
सब को यह तुच्छ समझते हैं * दिल में गुमान भरपूर हुआ॥

दोहा

चमक दिखाकर खड्ग की * किस को रहे डराय।
किस कारण को समझ कर * ऐसे रहे झुँझलाय ॥ ३०५ ॥

बहर खड़ी

हम भी क्षत्री के बालक हैं * इस क्रोध से नहिं डर जायेंगे।
गीदड़ भबकी दिखलात हो * इससे कुछ नहिं घबरायेंगे॥
जो हमें हटाना चाहते हो * तो मन्त्रे बन्द अपने कर लो।
जो होय हुमहुमी लड़ने की * कर में हथियार तुरत धर लो॥
हम रघुवंशी हैं सुनो भूप * लड़ने से नहिं घबराते हैं।
आकर ललकारे जो हम को * उससे लड़ने को आते हैं॥
रण में संग्राम करें डटकर * पीछे नहिं चरन हटाते हैं।
अभिमानी का कर मान चूर * उसको यम लोक पठाते हैं॥

दोहा

विस्मित से सब देखते * जितने यहाँ नरेन्द्र।
लखन गरजते सभा में * जैसे विपिन मृगेन्द्र ॥३०६॥

बहर खड़ी

सब सुन के वचन वधिर से हो ❁ बठे मचों पर देख रहे।
चित्रस्थ से होकर बैठ रहे ❁ मन ही मन में कर लेख रहे॥
विद्याधर राजों ने देखा ❁ लक्ष्मण को शेर समान समझ।
जितने राजा यहँ आये थे ❁ उन राजों में बलवान समझ।
लक्ष्मणजी को अठारह कन्या ❁ खेचर भूपों ने दीनी है॥
नर शारदूल मामा मन में ❁ हितताई उससे कीनी है॥
यह देख हाल भामण्डल के ❁ हृदय में रोष बढ़न लागा।
नहिं सहन हो सका अब उसको❁ नैनों बाहर काढ़न लागा॥

दोहा

चन्द्र गती नृप ले गये ❁ भामडल को सग।
हार जीत थी धनुष पर ❁ करो मती रग भंग ॥२०७॥

बरह खड़ी

धीना है समझा भामडल ❁ ले सग तुरत परयान किया।
मिथिलापुर से अब मोह हटा ❁ रथनुपुर का मन ध्यान किया॥
मार्ग में सत्यमूर्ति मुनिवर ❁ बैठे देखे स्थान भला।
भामडल की पड़ गई दृष्टि ❁ मुनि पै कीना है ध्यान भला॥
अति विनय सहित वन्दन करके ❁ भामण्डल प्रश्न किया जारी।
कैसे मेरा अपमान हुआ ❁ इसका कारण क्या है भारी॥
मुनिराज पूर्व भव का वर्णन ❁ भामण्डल को समझा दीना॥
इस भव की बात कही सारी ❁ भूपत का हिया भर दीना॥

दोहा

भामण्डल को हो गया ❁ जाति स्मरण ज्ञान।
देखा ज्ञानी प्रयोग से ❁ मुनि जो किया बयान ॥२०८॥

बहर खड़ी

जागा है प्रेम हृदय में आ * सीता को भगनी माना है ।
बुलवाया बाग धीच सब को * निज मात पिता जब जाना है ॥
छूये हैं चरन जनक नृप के * सीता को तुरत खमाया है ।
अपराध राम से क्षमा करा * अपना निज हितु बनाया है ॥
फिर जनक राय ने दशरथ को * सारा सन्देश पहुँचाया है ।
दशरथ नृप ने पाकर सन्देश * मन में आनंद समाया है ॥
सब साज बाज तैय्यार हुए * गज रथ पैदल सजवाये हैं ।
अति धूम धाम से ले बरात * दशरथ मिथिलापुर आये हैं ॥

दोहा

जनक राय ने जब सुनी * आई हुई बरात ।
आगत का स्वागत किया * मन में अति हर्षात ॥२०६॥

चौपाई

कीने नेग टहल जारी * उत्सव हुआ विवाह का भारी।
समारोह कर विवाह रचाया * पाणिग्रहण का समय जो आया
मण्डप तले वधू वर आये * सब हृदय अति आनंद छाये।
पाणिग्रहण कर खुशी सु कीनी * भद्रा सुता भरत को दीनी ॥
पुनः दशरथ निज सुतन समेता * उत्सव रहा आनंद दिन केता।
दान दहेज जनक बहु दीने * दशरथ नृप हर्षा कर लीने ॥
गज रथ अश्व दास औरदासी * दीने बहुत अधिक सुख राशी।
विदा बरात हुई हर्षाई * जनक भूप सीता समझाई ॥

दोहा

उत्तर सासू श्वसुर को * दीजो सुता न भूल ।
विनयवान को विनय का * सुना दिया यह मूल ॥२१०॥

चौपाई

गुरु जन की आज्ञा में चालो * उनके वचन कभी नहीं टालो।

बहर खड़ी

जागा है प्रेम हृदय में आ * सीता को भगनी माना है ।
बुलवाया बाग खींच सब को * निज मात पिता अब जाना है ॥
छूये हैं चरन जनक नृप के * सीता को तुरत छमाया है ।
अपराध राम ने क्षमा करा * अपना निज हितु बनाया है ॥
फिर जनक राय ने दशरथ को * सारा सन्देश पहुँचाया है ।
दशरथ नृप ने पाकर सन्देश * मन में आनन्द मनाया है ॥
सब साज बाज तैय्यार हुए * गज रथ पैदल सजवाये हैं ।
अति धूम धाम से ले बरात * दशरथ मिथिलापुर आये हैं ॥

दोहा

जनक राय ने जब सुनी * आई हुई बरात ।
आगत का स्वागत किया * मन में अति हर्षात ॥२०६॥

चौपाई

कीने नेग टहल जारी * उत्सव हुआ विवाह का भारी ।
समारोह कर विवाह रचाया * पाणिग्रहण का समय जो आया
मण्डप तले वधू वर आये * सब हृदय अति आनन्द छाये ।
पाणिग्रहण कर खुशी सु कीनी * भद्रा सुता भरत को दीनी ॥
पुनः दशरथ निज सुतन समेता * उत्सव रहा आनन्द दिन केता ।
दान दहेज जनक बहु दीने * दशरथ नृप हर्षा कर लीने ॥
गज रथ अश्व दास और दासी * दीने बहुत अधिक सुख राशी ।
विदा बरात हुई हर्षाई * जनक भूप सीता समझाई ॥

दोहा

उत्तर सासू श्वसुर को * दीजो सुना न भूल ।
विनयवान को विनय का * सुना दिया यह मूल ॥२१०॥

चौपाई

गुरु जन की आज्ञा में चालो * उनके वचन कभी नहीं टालो ।

पूछा जोजा से नृप राया * पता कहाँ विलम्ब लगाया।
वृद्ध अवस्था के वश स्वामी * शीघ्र न आ सका हित कामी॥
वसुधा पाँव शीघ्र नहिं पड़ता * सर्व शरीर हुवो है जड़ता।
स्वाँस स्वाँस अति दुख दीना * जरा आय जर-जर वपु कीना॥
दाँत बिना सब फीके स्वादा * परम चले नहिं होय दिपादा।
जार घट निवलाई आवे * कर कंपे अति जी घबरावे॥

दोहा

दशा है वृद्धा समय * आया मन वैराग।
हटा सुमन सब काम से * लगा जोग से लाग॥२१३॥

चौपाई

सत्यमूर्ति मुनिवर के पासा * जनक राय करके विश्वासा।
पूछे पूर्व भवान्तर वासा * सुख दुख का कब हाल विधाता
मादन शाहा सुगर शुभ हस्ति * पत्नी दीपका सुता उपस्ति।
साधु की निंदा कर भारी * भव-भव में भ्रम आ अनारी॥
वहाँ से चम्पपुरी के राजा * भये किया सब उत्तम काजा।
वन गिरि सुन्दर नार सुहाई * यदवा पुत्र सुन्दर वपु पाई॥
साधु सेव कर भय दयालु * श्रद्धालु सब पर कृपालु।
वहाँ से धामी सरल सुभागा * उत्तर कुरुवर क्षेत्र अपारा॥

दोहा

युगलपने हुये प्रगट * शुभ कर्म फल जान।
तीन पल्योपम आयुपा * भोगे सुख निदान॥२१४॥

चौपाई

वहाँ से सुर पुर को तुम धाये * सुख भोग के पुन भू आये।
नदी घोष वहाँ भूपाला * जिस का जग छाया उजियाला
पृथ्वी रानी अति सुखमारा * तिस के पुत्र हुआ तू प्यारा।

अपन न नय। यान न त्यागा । साधु क नित करने लागो ॥
पान मरा मे मन न चुगना । आशा समय समय चित्त लान।
लाग नृप समभा कर गया आग चरन धरात बढ़ाया ॥
पहुँच ग्राम अयाया जाई लखत मोद प्रजा मन लाई।
उत्सव दशरथ नृप रचाया मांगलिक शुभ काम कराया ॥
नार मुगा ष कलश भराया राजा क कर से भिजवाया।
रानी नार उठा कर धाई निज रामा के तट जब आई ॥

दोहा

वृद्ध अवस्था स नहा शीघ्र आ सका तीर।
और और रानी निकट आया सुन्दर नीर ॥२११॥

चौपाई

पटरानी क तट नहीं आया कौशल्या मन क्रोध समाया।
म हूँ बड़ी सबा स रानी मर हत न भेजा पानी ॥
यह अपमान सहा नहीं जाय मान बिना क्या मुख दिखलाये
मरना भला सु इस जीने स ग्लानी प्रगट होय सीने से ॥
यह विचार गल फन्दा डाला मरन का यह ढग निकाला।
दशरथ तुरन महल म आये देख हाल अति मन घबराये ॥
हाथ पकड़ रानी समझाई ऊँच नीच बातें बतलाई।
यह क्या हत मन माँहि धारा किससे हुआ अपमान तुम्हारा॥

दोहा

तब वह कामनी कहे बाँध मन धीर।
मर हित भेजा नहीं कहि कारण से नीर ॥२१२॥

चौपाई

राजा नीर लिय चल आया । सम्मुख रानी के धर लाया।
रानी क मस्तक जल डारा । सुन माता मन मोद अपारा

पूछा ओजा से नृप गया * एता कहाँ विलम्ब लगाया।
वृद्ध अवस्था के वश स्वामी * शीघ्र न आ सका हित कामी॥
वसुधा पाँव शीघ्र नहिं पड़ता * सर्व शरीर हुयो है जड़ता।
स्वाँस खाँस अति दुख दीना * जरा आय जर जर वपु कीना॥
दाँत बिना सब फीके स्वादा * चरन चले नहिं हाय दिवादा।
आर घट निवलाई आवे * कर कंपे अति जी घबरावे॥

दोहा

सुखा है वृद्धा समय * आया मन वैराग।
हटा सुमन सब काम से * लगी जोग से लाग॥२१३॥

चौपाई

सत्यमूर्ति मुनिवर के पासा * जनक राय करके विश्वासा।
पूछ पूर्व भवान्तर बाता * सुख दुख का कब हाल विधाता
भावन शाहा सुगर शुभ हस्ति * पत्नी दीपका सुता उपस्ति।
साधु की निंदा कर भारी * भव भव में भ्रम आ अनारी॥
वहाँ से चन्द्रपुरी के राजा * भये किया सब उत्तम काजा।
धन गिरि सुन्दर नार सुहाई * वरुण पुत्र सुन्दर वपु पाई॥
साधु सेव कर भय दयालु * श्रद्धालु सब पर कृपालु।
वहाँ से धात्री खंड मुझारा * उत्तर कुरुवर क्षेत्र अपारा॥

दोहा

युगलपने हुये प्रगट * शुभ कर्म फल जान।
तीन पल्योपम आयुषा * भोग सुख निदान॥२१४॥

चौपाई

वहाँ से सुर पुर को तुम धाये * सुख भोग के पुनः भू आये।
नंदी घोष बड़ा भूपाला * जिस का जग छाया उजियाला
पृथ्वी रानी अति सुखमारा * तिस के पुत्र हुआ तू प्यारा।

नन्दा चन्द्र नाम सुपाया ० सुख भोगे मन योग समाया ॥
यशाधर आय अणगारा ० श्रावक मत किया अंगीकारा ।
पंचम स्वर्लोक पग धारा ० हुआ वहाँ यह जैन जय कारा ॥
पश्चिम विदेह वताढ्य सुदेशा उत्तर श्रेणी शीशपुर देशा ।
रत्नमाल विद्याधर भारी ० विद्युल्लता ताहि की शुभ नारी ॥

दोहा

प्रगट हुए उसके तनय सूर्य विजयता नाम ।
महा प्राक्रमी हुआ ० देखा शुभ सुख ठाम ॥२१५॥

चौपाई

रत्नमाली ने करी चढ़ाई वज्र नयन को जीता आई ।
सिंहपुरी को वाग्न लागा वृद्ध बाल पशु कोई न त्यागा ॥
देने लगा नगर में ज्वाला ऐसा कर्म किया विकराला ।
उपमन्यु नामा द्विज एका पूर्व भव का मोहित देखा ॥
देवलोक में पैदा हुआ ० आकर तुरत सहाई हुआ ।
इस पाप मत कर तू राजा साचा तेरा कौन अकाजा ॥
पूर्व भव में तू भूपाला ० भूरी नन्दन था नृपाला ।
मन तेरे आये शुभ भागा मांस का भोजन देने त्यागा ॥

दोहा

फिर मन पुरोहित की ० दीना तोड़ी त्याग ।
उसकी प्रतिज्ञा थी अपना किया अभाग ॥२१६॥

चौपाई

उपमन्यु दीना सहारा ० समय पाय फर उसको मारा ।
हाथी हुआ विपिन में जाके ० भूरिनन्द ने लिया मँगा के ॥
युद्ध बीच हाथी गया मारा ० गन्धारी का सुत हुआ प्यारा ।
ज्ञान स्मरण हुआ ध्याना ० दीक्षा ले भये साधु महाना ॥

सुर पुर में सुर हुआ जाके * तुम को अब समझाया आके।
भूरिमन्द अजगर हुआ मर के * मरा यहाँ अग्नि में जर के ॥
नर्क गया अति ही दुख पाया * मैंने वहाँ आकर समझाया ॥
वहा से निकल हुये मतिमाली * अब भी शिक्षा मान भुवाली ॥

दोहा

इस प्रकार सुन पूर्व भव * रण से मुख को मोड़।
सूर्य विजय के पुत्र पे * दिया राज सब छोड़ ॥ २१७॥

चौपाई

पुत्र पिता युग दीक्षा लीनी * तप संयम शुभ करणी कीनी।
महाशुक्र सुर लोक मुझारा * जाकर लिया देव अवतारा ॥
वहाँ से चय कर के तू आया * दशरथ नृप यों हुवा सुहाया ॥
रत्नमाली जनक हुआ आ के * उपमन्यु हुवा कनक सुधा के ॥
नन्दीघोष सु चव कर आया * सत्यमूर्ति मैं मुनि मन भाया।
सुनकर भूप विचारा मन में * पुलकावलि छाई अति तन में ॥
पूर्व कथा सुनकर मन माँही * गया समो वैराग्य समाई।
मुनि को कर वन्दन उठ धाये * दशरथ नृपत महल में आये ॥

दोहा

दशरथ नृप आ महल में * रानी सभी बुलवाय।
दीक्षा लेने का सकल * हाल सुनाया आय ॥ २१८॥

चौपाई

मन्त्री पुत्र निकट बुलवाये * मिष्ट शब्द शुभ वचन सुनाये।
दया कर अब दीजे आज्ञा * पूरी करूँ जाय प्रतिज्ञा ॥
बोले भरत मधुर अस वानी * मेरे मन भी दीक्षा आनी।
संग आपके लूँ वैरागा * करूँ सकल भोगों का त्यागा ॥

जग में प्रबल दुख दो भारे * तात विरह अरु आप पधारे।
मुझ से यह दुख सहा न जाई * यह संकट है अति दुखदाई।
सुन कर वचन कैकई माता * क्या दीनी यह बुद्धि विधाता।
पुत्र पतो दोनों बन जाय * किस विध घर में होय निभाय॥

दोहा

समय पाय के मथरा कैकई ओर निहार।
पास जाइ कहन लगी * सुन मेरी सरकार ॥२१६॥

चौपाई

नृप कर प्रेम तुम्हें अस जाना * नारि रीती सब बिसरा दीनी।
तुम फूली नृप प्रेम अपारा * भूपति ने मन और विचारा॥
कौशल्या से नृप ने समाजा * होंगे राम अवध के राजा।
राज मात कौशल्या होई * मान करे उनका सब कोई॥
भरत आय भूपत के संगा * कौशल्या मन भरे उमंगा।
संकट होय तुम्हें अति भारा * बन में जाय मैंने का का तारा॥
तब भूपति के प्रेम दिवानी * साचा समझा मन में ठानी।
राम अवध के होंगे राजा * कौशल्या के हों मन काजा॥

दोहा

आयार क्रोध कैकई को * भृकुटी भई कराल।
पकड़ मथरा को कही * आँखें करके लाल ॥२२०॥

चौपाई

जो मुख से यह वचन उचारा * सो सिर धड़ से होय नियारा।
राम भरत मेरे दो भैया * उनके हेत कहे अस भैया॥
राम राज हम को भावता * राम मेरी भक्ति का पन्था।
तेरे मन यह कैसे आई * जो तू ने यह बात सुनाई॥
महाराजा से कहूँ जता के * जिम्हा हूँ तेरी कढ़वा के।

हाथ जोड़ कर बोली दासी * वचन सुमत मन छाई उदासी ॥
हित की बात कही मैं रानी * हित अनहित तुमनहीं पहिचानी
कोई होय अवध का राजा * इससे नहिं हमको कुछ काजा ॥

दोहा

मन विचार कुछ कैकई * बोली मीठे बैन ।
शुभ चिन्तक दासी मेरी * क्यों भरलाई नैन ॥३२१॥

चौपाई

हँस कर कहे मैंने यह बैना * तू क्यों भर लाई युग नैना ।
मेरे हित की बात सुनाओ * भूल सभी मेरी समझाओ ॥
ऐसा कार विचारो स्वामी * पूरण आशा होय हमारी ।
पुत्र पति का दुःख नहीं व्यापे * राज भरत को भूपत थापे ॥
सुन मथरा कहे अस बानी * मेरे मन यह बात समानी ।
अपना वर भूपत से चाहो * अपने पूरण प्रण निभाहो ॥
पति जायें ना पुत्र सिधारें * तब आशा हो जगत मझारे ।
इससे नहीं काम कोई नीका * होय भरत सिर राज का टीका॥

दोहा

बोली रानी कैकई * दशरथ को कर सैन ।
वर मेरा अब दीजिये * ऐसे बोली बैन ॥३२२॥

चौपाई

पालो आप वचन भूपाला * वर मेरा दीजे तत्काला ।
सत पुरुषों का है यह लेखा * वचन होय पत्थर की रेखा ॥
जो सज्जन नर वचन उचारें * उस को पूरा अवश्य विचारें ।
बोले नृप दशरथ सुन बैना * मैं ने वचन कहा था ऐना ॥
माँगो जो चाहो मन मानी * मेरी नहीं मनाइ रानी ।
दीक्षा में मत रोक लगाना * और चाहे जो माँग सुजाना ॥

ना प्र ृ मर आधाना * मांगा तुम इपाय प्रवीना।
न म ना प्र इन्सान * पूरण मानो घचन हमारा॥

दोहा

रा ा ल ा मीता यह मन किया विचार।
रा भरत का दात्य अव मरं भरतार॥ ३२३॥

चौपाई

नि * रा नृप यानी * राज भरत का है सब रानी।
रा पाट स मुभ न कामा * भरत इत है सब ही धामा॥
रा रायन का लिया बुलाई भूपत रहे उन्हें समझाई।
वचन मर ककई का दाना पूरण प्रण इस समय कीना॥
परामश सुन मुझ का दीजे आज्ञा मेरी पालन कीजै।
या हँस कर राम सुजाना जा घर माता क मन माना॥
श्रेष्ट यान जननी न कीना भ्रात भरत हित राज को लीना।
इसम श्रेष्ठ श्रार नहि कामा वीर भरत के कर हो धामा॥

दोहा

भरत भ्रात हो अवध क भूप इप की बात।
राज सिंहासन दीजिये * हो जग में विख्यात॥ ३२४॥

चौपाई

सुन कर राम वचन भूपाला विस्मय मन प्रगटा तत्काला।
प्रीति जि प भरत की जानी हो प्रसन्न बोले नृप बानी॥
मत्री लिय पास बलधा क तदनुसार दिया हुक्म सुना के
सुन कर भरत यह कर जारी * विनय एक सुनिय पित मोरी॥
नाथ आपक संयम लूँगा * राज अवध का नहीं करूँगा।
रर्गी प्राथना प्रथम म न * अब कुछ शब्द और नहीं कहने
र ह धन्य रा ना मे यना * सब के सममुख नीचे नैना।

योग नहीं मेरे यह ताता * राज पाट नहिं चाहिये वावा ॥

दोहा

दशरथ पुन कहने लगे * सुनो वत्स धर ध्यान ।
आज्ञा मत टालो मेरी * कहन हमारी मान ॥३२५॥

चौपाई

मात तुम्हारी को धरदाना * एक दिवस किया मदाना ।
वह चिरकाल रहा मम पासा * आज लिया वह कर विश्वासा ॥
उस वर ने तुमको किया राजा * सारी अवध पुरी का काजा ।
मात-पिता का कहन न टारो * राज अवध का पुत्र सम्हारो ॥
राम रहे समझा मृदु वानी * भ्रात भरत तुम हो अति ज्ञानी ।
तुम मन राज कांक्षा माहीं * फिर भी कुछ सोचो मन मांहीं॥
पितु आज्ञा को धरिये शीशा * लीजे राज बनो अवधीशा ।
कीजे सत्य पिता के वैना * मेरा यह मानो अब कहेना ॥

दोहा

सुनकर शब्द सु राम के * जल भर आया नैन ।
हाथ जोड़ कर के विनय * बोले ऐसे वैन ॥ ३२६ ॥

चौपाई

गद् गद् स्वर जल पूरित नैना * चरन पकड़ बोले अस वैना ।
आप सरीखे भ्रात हमारे * त्यागी उच्चातम है भारे ॥
करना योग आप को राजा * यह है आप को उत्तम काजा ।
योग नहीं पर मुझ को छैमा * शेष नहिं कुछ तुम से कहना ॥
अरु चाहे सो कीजे काजा * पर मैं नहिं लूँगा यह राजा ।
लेश राज की इच्छा नाहीं * देख भ्रात मेरे मन मांही ॥
तुम होवे मैं राजा चाहूँ * आप सामने साज सु साजूँ ।
तुम सन्मुख नहीं राज हमारा * मैं सेवक रहूँ नाथ तुम्हारा ॥

दोहा

यह वन पर कह रामजी * सुनिया पितु मम बात ।
मैं रहत भरत जी * राज लें नहीं तात ॥३२७॥

चौपाई

भरत राज नहि कर स्वीकारा * विनयवान अति भ्रात हमारा ।
इस कारण मैं वन को जाऊँ * वचन पिता का हर्ष निभाऊँ ॥
आज्ञा राम पिता से मांगी * हृदय भावना वन की जागी ।
तात चरण गहि के अस बोले * आनन अमल राम ने खोले ॥
कुछ दिन जाय रहूँ वन मांही * भरत भ्रात की करूँ मन चाही।
इतना कह पितु आज्ञा पाये तुरत राम ने चरण बढ़ाये ॥
नमस्कार कर के भक्ति से विनय करी दिन विधि शक्ति से
कर में धनुष राम सँभाला तरकस उठा गले में डाला ॥

दोहा

गमन किया पितु पास से * पहुँचे महल मुझार ।
कौशल्या के सामने * खड़े हुये उस बार ॥३२८॥

चौपाई

भरत रुदन करत अति भारी * व्याकुलता मन में हुई जारी ॥
प्रेम विवश मुख वचन न आये * बार-बार देखे रह जाये ॥
पहुँचे राम मात के तीरा * बोले जाकर वचन गंभीरा
कौशल्या रघुवर की हरी बोले राम विनय सुन मेरी ॥
मैं अरु भरत युगल इक सारा * दोनों एक सम हैं तुम्हें प्यारा
पिता प्रतिज्ञा पालन हेता * राज भरत को दिया सचेता ॥
राज भरत नाहिं ले मइतारी * मम सन्मुख नहीं हो अधिकारी
इस कारण मैं वन को जाऊँ * चरण आपके शीश नमाऊँ ॥

दोहा

अनुपस्थिति में मेरे * भरत पुत्र निज जान।
करना प्रेम सु सम से * राम दूसरा मान ॥३२६॥

चौपाई

मेरा वियोग वियोग मत मानो * अपना पुत्र भरत को जानो।
कातर होना आप न माता * भरत तुम्हारे तट मम भ्राता॥
सुनी बात जब कोशिल रानी * नैनों से सूखा चपु पानी।
मूर्छित हो गिर गई धरन में * राम तुरत ली साध करन में॥
चन्दन आदिक जल छिड़काया * कुछ-कुछ होश मात को आया।
कौन होश में मुझ को लाया * किसने आन चेत करवाया॥
चेत अवस्था से अति नीकी * मूर्छा सुगर चेतना फीकी।
राम विरह किस रीत निहारूँ * कैसे धीर हृदय में धारूँ॥

दोहा

दीक्षा धारण पति करे * पुत्र करें वनवास।
कौशल्या जी कर करे * फेर कौन की आस ॥३३०॥

चौपाई

राम मात से कहें कर जोरी * कोमल हृदय मात अति मोरी।
वीर केशरी की तुम नारी * वीर पुत्र की हो महतारी॥
कैसे कायरी मन पे लाई * सुन कर गमन मात घबराई।
सिंहनी माँ का सुत अलवेला * वन में घूमें सदा अकेला॥
सिंहनी मन में नहीं घबरावे * स्वस्थ्य रहे आनद समावे।
पिता का शीश पर ऋण है भारा * वह सुत क्या जिन नहीं उतारा॥
ऋण से उऋण तात को करके * वन आऊँ हृदय मुद भर के।
राम तुरत माता समझाई * निज जननी से आज्ञा पाई॥

दोहा

माता का समझाय के, चले राम तत्काल।
श्र य माता तट आय के, चरन गहे खुश हाल॥२२१॥

चोपाई

माताओं का शीश झुका के, राम चले हैं चरण बढ़ा के।
बाहर मन्दिर से हट आये, आगे पुनः चरन बढ़ाये॥
जनक सुता दशरथ तट जा के, दूर हि से निज शीश झुका के।
कौशल्या के मन्दिर आई, आय सासुजी के पग लाई॥
गोदी में सीता बैठाली, हाथ फेर करके पुचकारी।

गायन

[तर्ज़- चैन। रघुनाथ को देखे]

सिया को रामजी लाकर, बिठाई गोदी के अन्दर।
कठिन वनवास का रस्ता, कहां जाती बधु सुन्दर॥टेर॥
पुरुष का धर्म बचन हो, जो परवश संग नारी।
सासु श्वसुर की कर खिदमत, पति सेवा से यह बहतर॥१॥
रतन नाजुक है तन, बैठ पालस में फिरती है।
जंगल पत्थर का चलना है, शूल का फर है सतर॥२॥
कानन सहना क्षुधा तृषा, रहना फिर वृक्ष की छाया।
... गरमी का, मानस दहन रह आ घर॥३॥
वन गज ... न रहूंगी, रहूँ जहाँ नाथ थो रहवे।
पतिव्रत धर्म यही सह, दुख सुख संग में रह कर॥४॥
चारमल कर सच्ची नारी, पतिव्रता पिय प्यारी।
हय शोभा जहां अन्दर, पति सेवा में पूं रह कर॥५॥

चौपाई

तन ... बस बोली, बेटी तू अति ही है भोली॥

राम पिता की आज्ञा पाके * वन को बाहर गये सु धाके ।
कठिन नहिं यह नर के काजे * उनके मन रस वीर विराजे ॥

दोहा

पर तुम कैसे सहोगी * कोमल तुमरा गात ।
लालन पालन हुआ है * तुमरा हाथों हाथ ॥ ३२२ ॥

चौपाई

पद नहिं चली कभी सुकमारी * कैसे वन में जाओ प्यारी ।
वन की भूमि कठिन हो भारी * कंटक लगें रुधिर हो जारी ॥
चलत-चलत पग में हो छाले * फिर किस विध मन रहे खुशाले
वन में सिंह स्यार अरु भालू * जो होते हैं सदा अदयालू ॥
वन में होय क्लेश अति भारी * वन जाओ न जनक दुलारी ।
चली वाहनों पर तुम बाला * कभी भूमि पर चरन न डाला ॥
सकट विकट बहुत हों मन में * छिन-छिन दुख व्यापेगा तन में ।
इससे कहन मानले प्यारी * वन जाओ मत तुम सुख भारी ॥ ॥

दोहा

बोली सीता सुन्दरी * सुनो वचन मम मात ।
वन में दुख किंचित नहीं * कहूँ जोड़ कर हात ॥ ३२३ ॥

चौपाई

यह सुन कर बोली अस सीता * सासु सामने होय अभीता ।
विकसत कमल भान लख जैसे * प्रफुल्लित कमलानन तैसे ॥
घन के संग रहे जिम दामिन * स्वामी संग रहे जिम कामिन ।
संग पति के मैं वन जाऊँ * दर्शन कर नित प्रति सुख पाऊँ ॥
तुमरी भक्ति विपत को टारे * आशा सकल सफल सिधारे ।
अस कह सासू को शीश नवाया * घर के बाहर चरन बढ़ाया ॥
राम ध्यान हृदय में करके * घर बाहर पग धरा निकर के ।

दृश्य हृदय सब मन अकुलाये * दासी दास नैन भर लाये ॥

दोहा

सीताजी का गमन लख * घबराये नरनार ।
पड़ा सुरक्षित महल में * होता हा हा कार ॥३३४॥

चौपाई

शुक सारिका विकल अति होती * बन्द पींजरे में पक्षी रोती ।
सुरभी रहा महा दुख पाके * तड़फ-तड़फ रह जाय रमाके ॥
दृश्य दुष्ट प्रियों के आया * देख-देख हृदय भर आया ।
नीर लगा नैनों से बहने * गद्-गद् कंठ लगी सब कहने ॥
पति भक्ति पक्षी नहीं पाई * जो सीता के हृदय समाई ।
देव तुल्य पति को सिय माना * संग विपन में जाना ठाना ॥
प्रिय जाति का उच्च उठाया * हो आदर्श यह पाठ पढ़ाया ।
भय नहीं हृदय कष्ट का कीना * पति के संग चरन वन दीना ॥

दोहा

उत्तम शील स्वभाव से * युग कुल उत्तम कीन ।
उत्तमता के एक की * आज हद कर दीन ॥३३५॥

चौपाई

राम गमन सुन लक्ष्मण धाये * शीघ्र गमन कर महलों आये ।
भभक उठा क्रोधानल मन में * रोष नहीं रुकता नैनन में ॥
राज भरत से मैं ले लूंगा * गादी राम भ्रात को दूंगा ।
राम नाता के हैं अति आगर * नीतिवान पुरुषों में सागर ॥
भरत भ्रात समझा कर मन मारा * करें न राम राज स्वीकारा ।
[illegible] मान * पिता वचन अति मन में राम ॥
[illegible] पिता का * त्याग [illegible] प्रभुता का ।

संग भ्रात के मैं बन जाऊँ * कानन आश्री नेम निभाऊँ ॥

दोहा

ऐसा सोच विचार के * लक्ष्मण चरन धवाय ।
माता के महलों गये * बोले सुत मन लाय ॥३२६॥

चौपाई

माता निकट लक्ष्मण जब आये * हाथ जोड़ तब वचन सुनाये।
माता राम विपिन को जाते * पितु अनुशासन हर्ष निभाते॥
मैं भी संग भ्रात के जाऊँ * सेवा से नहिं वदन छिपाऊँ।
सागर बिन मर्यादा जैसे * राम बिना लक्ष्मण है तैसे ॥
राम बिना लक्ष्मण नहीं जीवे * भोजन करे न पानी पीवे ।
बोली मात सुमित्रा रानी * अति प्रसन्न चित्त मीठी बानी॥
धन्य धन्य सुत भाव तुम्हारा * जो बन जाना चित्त विचारा।
दीर्घ भ्रात है पिता समाना * भावज को निज माता जाना॥

दोहा

जो आज्ञा हो भ्रात की * उसको रखना शीश ।
जाओ संग तू भ्रात के * बन को विन्ध्याधीश ॥३२७॥

चौपाई

ज्येष्ठ भ्रात की सेवा करना * भ्राता आज्ञा सिर पर धरना।
बन को गमन राम ने कीना * मारग से निज मन को दीना॥
संग भ्रात के पुत्र सिधारो * वार हुई जल्दी पग धारो।
सुत प्रणाम माता को कीना * धन्य धन्य जननी तू यश लीना॥
पहुँचे माता कौशल्या तीरा * लक्ष्मण सुभट निकट रणधीरा।
कर प्रणाम चरणों सिर दीना * बोले वचन सजल परवीना॥
माता भ्रात गमन बन कीना * कानन चरन अकेले दीना।

म भी संग जाऊं सुन लीजे * वन जाने की आज्ञा दीजे ॥

दोहा

बोली माता कौशल्या * नैनों भर के नीर ।
लाल जाय तू भी चला * कौन बन्धावे धीर ॥३२८॥

चौपाई

लक्ष्मण माना वचन हमारा * तुम मुझ से मत करो किनारा ।
पीड़ित हृदय सात्वना पाये * देख तुम्हें सुख मन सुख चावे ॥
जननी आप राम की माता * उत्तम बड़भागी विख्याता ।
धीरज धरो मात मन मांही * बन्धु संगे लक्ष्मण जाही ॥
आज्ञा मात हृप कर दीजे * करुणा जननी सुत पर कीजे ।
मुझ न रोक माता प्रवीना * लक्ष्मण राम के हैं आधीना ॥
कर प्रणाम धनुष कर धारा * तरकस तुरत गले में डारा ।
शीघ्र चाल से चरन बढ़ा के * राम निकट पहुँचे हैं जाके ॥

दोहा

नगर नारी नर देख कर * मन में अधिक उदास ।
राम लखन जाते लखे * लेते ठंडी स्वाँस ॥३२६॥

चौपाई

व्याकुल पुर के नर अरु नारी * उठ धाये संग बिना विचारी ।
कैकइ की सब करें बुराई * जनता संग राम के धाई ॥
दशरथ नृप परिवार समेता * चल धाये तज दिया निकेता ।
रानी चली राम के पीछे * प्रेम स्नेह सबों को खींचे ॥
राजा प्रजा बाहर आई * शून्य अयोध्या पड़े दिखाई ।
माता पिता को राम निहारा * लौटाना मन माँहि विचारा ॥
विनय सहित नृपको समझाया * सबको पुन पीछे लौटाया ।
नम सहित पुर के नर नारी * समझा कर लौटाये पियारी ॥

दोहा

राम लखन सीता सहित * चले अगाडी धाय ।
शीघ्र गमन करके चले * मारग खिन्न भुलाय ॥२४०॥

चौपाई

ग्राम निवासी आगे आवें * राम लखन को चहे ठहरावें ।
अस्वीकार ठहरना कीना * आगे चरन राम न दीना ॥
करे न भरत राज स्वकारा * कैकयी पे क्रोधित अति भारा ।
माथी प्रेम यदा मन आ के * राज दिया ठुकरा कुँमला के ॥
दशरथ नृप समान्त बुलाये * पास बिठा कर के समझाये ।
राम लखन को सादर लाओ * ऊँच नीच सब ही समझाओ ॥
धाये मन्त्री सग सामन्ता * राम प्रेम में मन हुलसन्ता ।
शाघ्र चाल से सनमुख आये * सविनय सादर वचन सुनाये ॥

दोहा

अचल मतिश्री राम ने * एक न माना कहन ।
मन्त्री और सामन्त को * उत्तर लागे देन ॥ २४१ ॥

चौपाई

राम वचन नहिं मन में धारें * संग चले शुद्ध शब्द उचारें ।
पहुँचे विकट विपिन में जाई * पुन आज्ञा राम ने सुनाई ॥
आगे मारग विकट महा है * आओ लौट यह वचन कहा है॥
कहना कुशल क्षेम सब आके * देना पितु को अति समझा के॥
मिल कर सेव भरत की करना * आज्ञा शीश हर्ष के धरना ।
सुनत वचन मन्त्री दुख पाया * चरन पकड़ के वचन सुनाया॥
हैं धिक्कार हमें सी धारा * जो सेवा स करें किनारा ।
योग न हम से थाके चीने * चरन कमल से पृथक् कीने ॥

दोहा

आती है प्रवाह से * सरिता गहन गंभीर ।

म भी संग जाऊं सुन लीजे ॥ बन जाने की आज्ञा दीजे ॥

दोहा

बोली माता कौशल्या ॥ नैनों भर के नीर ।
लाल जाय तू भी चला ॥ कौन बन्धाये धीर ॥२३८॥

चौपाई

लक्ष्मण मानो बचन हमारा ॥ तुम मुझ से मत करो किनारा।
पीड़ित हृदय सान्त्वना पावे ॥ देख तुम्हें सुत मन सुख पावे॥
जननी आप राम की माता ॥ उत्तम सम्राणी विख्याता।
धीरज धरो मात मन माँही ॥ बन्धु संगे लक्ष्मण जाही॥
आज्ञा मात हर्ष कर दीजै ॥ करुणा जननी सुत पर कीजै।
मुझे न रोक माता प्रवीना ॥ लक्ष्मण राम के हैं आधीना॥
कर प्रणाम धनुष कर धारा ॥ तरकस तुरत गले में डारा।
शीघ्र चाल से चरन बढ़ा के ॥ राम निकट पहुँचे हैं जाके॥

दोहा

नगर नारी नर देख कर ॥ मन में अधिक उदास।
राम लखन जाते लखे ॥ लेते ठण्डी स्वाँस ॥२३९॥

चौपाई

व्याकुल पुर के नर अरु नारी ॥ उठ धाये संग बिना विचारी।
कैकई की सब करें बुराई ॥ जनता संग राम के धाई॥
दशरथ नृप परिवार समेता ॥ चल धाये तज दिया निकेता।
रानी चली राम के पीछे ॥ प्रेम स्नेह सबों को खींचे॥
राजा प्रजा बाहर आई ॥ शून्य अयोध्या पड़े दिखाई।
माता पिता को राम निहारा ॥ लौटाना मन माँहि विचारा॥
विनय सहित नृपको समझाया ॥ सबको पुन पीछे लौटाया।
प्रेम सहित पुर के नर नारी ॥ समझा कर लौटाये विचारी॥

विस्मय हुवा है सुन कर * फतव्य आपके हर ।
'मुनि चौथमल' कहे यों * जिनपद को नित मैं ध्याऊँ ॥

दोहा

चरण धोये पधघार ने * माना मन आनन्द ।
नैया में लीने चढ़ा * राम लखन सुखकंद ॥३४४॥

चौपाई

केवट नैया पार लगाई * सरिता पार हुये रघुराई ।
राम कहे सिय को समझाई * चूड़ामणि दीजे उतराई ॥
केवट कहे राम से वैना * प्रेम विवश भर आये नैना ।
मेरो आपको धर्म है न्यारो * कर्म दोउन को एक विचारो ॥
सरिता पार करें स्वारथ से * आप उतारें परमारथ से ।
नाथ कर्म से मोय न टारो * भवसागर से मोय उतारो ॥
सुन कर राम बहुत हर्षाये * लक्ष्मण को अस वचन सुनाये
अहा केवट की लख भाई * कैसी अविचल प्रीति दिखाई ॥

दोहा

नैया में से उतर कर * चले सिंह युग वीर ।
सती शिरोमणि साथ में * जाय विपिन धर धीर ॥३४५॥

चौपाई

नदी तीर सामन्त विचारें * राम लखन को खड़े निहारें ।
मैन लोप हुये तीनों मार्गी * गद्-गद् स्वर भयी कहे वानी ॥
नैनन से बहे जल की धारा * चला नहीं कोई उपचारा ।
होकर दुखी अवधपुर आये * समाचार सब आन सुनाये ॥
सुन उदास हुये नृपाला * कौन रीति कहो फल धमाला ।
राम लखन नहिं उलटे आये * उनने मेरे वचन निभाये ॥
राज महल अब सुत तुम कीजे * दीक्षा में बाधा मत दीजे ।

शाम सुन्दर स्वच्छ अति * यहता देखा नीर ॥२४८॥

चौपाई

रघुराइया का तुरत पुकारा * सुन कर केवट आन मझारा।
हाथ जोड़ कर गिरा उचारी * आज्ञा दो जन को सुख कारी।
राम कहा नैया तट लाओ * यहाँ से हम को पार लगाओ।
हो प्रसन्न केवट उठ धाया * नैया तुरत तीर पर लाया॥
हाथ जोड़ चरणों शिर ना के * कह केवट अस वचन सुना के।
कैसे नैया में बैठ लूँ * किस मुख से अस वचन निकालूँ
चरन पखार बिन मैं स्वामी * नैया पास न लाऊँ हित गामी।
पहिले चरन पखारन दीजे * पीछे नाथ काम निज लीजे॥

दोहा

प्रथम चरन पखार लूँ * जब बैठाऊँ नाथ।
करो क्षमा अपराध को * चरन नमाऊँ माथ॥२४९॥

गायन

[तर्ज–करना जो चाहे कर ले]

कैसे मैं नाथ तुम को * नैया में अब बिठाऊँ।
मौका न शुभ स्वामी तुम बार-बार पाऊँ॥
बिन पग पखार स्वामी * कैसे मैं हर्ष पाऊँ।
होगा पवित्र पावन * पग मैं पखार पाऊँ॥
पावन चरन तुम्हारे * नैया में जब पड़ेंगे।
नर तन सफल यह होगा * पद युग पखारने से॥
फिर नाथ नाविका को * किस रीति से बचाऊँ।
सादर सभक्ति मन में * निज शक्ति आजमाऊँ॥
लग जाय वासिनी मन * पावन चरन कमल से।
करिये दया दयानिधि * यस प्रेम दान पाऊँ॥

दोहा

भरत राम के चरन गिर * करी दुखे ये दोरा।
शीतल वायु से हुआ * आकर कुछ-कुछ होश॥२४८॥

चौपाई

भ्रात त्याग मुझ को वन धाये * सेवक को नहिं सग लगाये।
मुझे अभक्ति आन तुम त्यागा * दोष मात के कृत से लागा॥
लोभी मुझे प्रजा ने आना * राज्य लोभ सब जग ने माना।
मुझ को वन में लकर जाये * मेरे सिर से दाप हटाये॥
या चल अवध राज तुम कीजै * सेवा में सेवक को लीजे।
आप अवध का राज सभारो * मन्त्री पद लक्ष्मण सिर धारो॥
प्रतिहारी मैं नाथ बनूँगा * छत्र हाथ रिपु घन के दूँगा।
आप अवध में पग अब धारो * विनय दास की आप विचारो॥

दोहा

बोली रानी कैकई * सुनिये राम सुजान।
भरत भ्रात की विनय प * दीजै किंचित ध्यान॥२४६॥

चौपाई

बोल भरत की मानो याता * भ्रात वत्सल हो तुम भ्राता।
तात भ्रात का नहिं कुछ दोषा * इस कृत से हैं सब निर्दोषा॥
यह सब कृत मेरा सुत जानो * प्रिय स्वभाव कटुक पहिचानो।
कुटिल आदि प्रिय दोष बखानो * सो सब मेरे में सुत जानो॥
पुत्र पति ने जो दुख पाया * माताओं ने कष्ट उठाया।
यही अपराध क्षमा तुम कीजे * हर्षित मन कर उत्तर दीजे॥
बोले राम सु मीठी बानी * मात विनय सुनियो हित सानी।
कैसे मैं प्रतिज्ञा छोड़ूँ * निज प्रण से कैसे मुख मोड़ूँ॥

दोहा

दोनों की आयुष भरत * टालो नहीं सुजान।

आयुष मानो पुत्र हमारा * इस में यश जग होय तुमारा॥

दोहा

उत्तर दीना भूप को * करके भरत विचार ।
मैं लाऊं लोटाय के * प्रेम हृदय में धार ॥२४६॥

चौपाई

कर प्रसन्न लौटा के लाऊँ * जो पितु की मैं आज्ञा पाऊँ।
आकर कहै कैकई रानी * बोली पति से ऐसे बानी॥
जो स्वामी की आज्ञा पाऊँ * संग भरत के मैं भी जाऊँ।
राम लखन को लौटा लाऊँ * अपना मर्म सभी समझाऊँ॥
निज करनी के फल को पाया * बिन सोचे कृत आगे आया।
निज कर्तव्य पर अति पछताई * बुद्धि बिसारी अकल गँवाई॥
मैं अपराध क्षमा करवा के * राम लखन लाऊँ लौटा के।
आज्ञा भूपत दो हर्षा के * भरत संग मैं जाऊँ धा के॥

दोहा

आज्ञा दीनी राम ने * देखा धर कर ध्यान ।
कटक मंत्री सहित सब * कीना तुरत पयान ॥२४७॥

चौपाई

शीघ्र गमन कर भरत सिधाये * छट दिवस राम तट आये।
राम लखन तत्पर सर पाये * आय भरत ने शीश झुकाये॥
सास चरण करी कैकई मागी * आकर राम हृदय से लागी।
मस्तक चूम कहीं बस यामी * सुनो राम सुत तुम हो प्रार्मी॥
राम दरश माता को धाये * आकर चरणों शीश झुकाये।
सीता चरण पड़ी रानी के * पाँव लगी शुभ सुख सानी के॥
राम लगी राम के आगे * हृदय से धीरज सब भागे।
पर भरत के जल की धारा * नैन नीर से चरन पखारा॥

दोहा

भरत राम के वचन गिर * करी हुये थे होश।
शीतल वायु से हुआ * आकर कुछ कुछ होश॥२४८॥

चौपाई

भ्रात त्याग मुझ को कस धाये * सेवक को नहिं संग लगाये।
मुझे अभक्ति जान तुम त्यागा * दोष मात के कृत से लागा॥
लोभी मुझे प्रजा ने जाना * राज लोभ सब जग ने माना।
मुझ को वन में लेकर आइये * मेरे सिर से दोष हटाइये॥
या चल अवध राज तुम कीजे * सेवा में सेवक को लीजे।
आप अवध का राज सभारो * मन्त्री पद लछमण सिर धारो॥
प्रतिहारी मैं आप बनूँगा * पत्र हाथ रिपु घन के दूँगा।
आप अवध में पग अब धारो * विनय दास की आप विचारो।

दोहा

बोली रानी कैकई * सुनिये राम सुजान।
भरत भ्रात की विनय प * दीजे किंचित ध्यान॥२४९॥

चौपाई

बोल भरत की मानो बाता * भ्रात वत्सल हो तुम भ्राता।
तात भ्रात का नहिं कुछ दोषा * इन कृत से हैं सब निर्दोषा॥
यह सब कृत मेरा सुत जानो * त्रिय स्वभाव कटुक पहिचानो।
कुटिल आदि त्रिय दोष बखानो * सो सब मेरे में सुत जानो॥
तुम पति ने सो दुख पाया * माताओं ने कष्ट उठाया।
यही अपराध क्षमा तुम कीजे * हर्षित मन कर उत्तर दीजे॥
बोले राम सु मीठी बानी * मात विनय सुनियो हित सानी।
कैसे मैं प्रतिज्ञा छोड़ूँ * निज प्रण से कैसे मुख मोड़ूँ।

दोहा

दोनों की आयुष भरत * टालो नहीं सुजान।

आशा मेरा आप को है सहयोग प्रमान ॥ २५० ॥

गायन

[तर्ज—रघुनाथ के ऐसे नहीं दिल को करार है]

यह था राम भरत ताँई भया बात सुन लीजे ।
येन के अवध का गादी अदल इन्साफ ही कीजे ॥ टे० ॥
परस्पर मात सम जानी कभी मदोम्मत में मत फँसना ।
लोभ का त्याग कर धन में भंग मर्याद ना कीजे ॥ १ ॥
नीच इन्सान का संगत कभी मत भूल के करना ।
वृद्ध के सामने मैया सदा ही शरमा रखजे ॥ २ ॥
विपत और सम्पदा दोनों शुभाशुभ कर्म के फल हैं ।
जगत धार जननी का सदा विश्वास तू दीजे ॥ ३ ॥
नसीहत दे यन अन्दर चले सियाराम व लक्ष्मण ।
नाथमल कहे आज यूँ प्रजा की पालना कीजे ॥ ४ ॥

चौपाई

सीता ने लाके जल दीना * राज तिलक भरत का कीना ।
खड़ाऊं को करके प्रणामा * रखा शीश पर कर शुभ कामा ॥
फिर वा अवध को तुरत रवाना * दक्षिण को हरि किया पयाना ।
भरत अयोध्या में जब आये * ज्येष्ठ भ्रात की आज्ञा लाये ॥
राम आज्ञा पर चित्त धारा * राज अवध का कर स्वीकारा ।
दशरथ नृप ने संयम धारा * पुरजन का बहुसंग परिवारा ॥
सत्यभूति मुनि मट दीक्षा लीनी * करनी मनमानी नृप कीनी ।
राज भरत करत दिन राता * मन में याद रहे हर भ्राता ॥

दोहा

परम प्रिय निज भ्रात के * प्रेम प्रास मझदार ।
बन्धु राज रखा करे * जैसे चौकीदार ॥ २५१ ॥

चौपाई

लक्ष्मण राम अगाड़ी धाये ॥ चित्रकूट देखा हर्षाये ।
कुछ दिन वास गंग तट कीना ॥ फिर आगे चलना मन दीना॥
अवयती नगरी तट आये ॥ वट तरु आ विश्राम लगाये।
बोले लक्ष्मण सुनिये भ्राता ॥ यह उपवन कस सूखा जाता ॥
ऊजड़ हुआ हाल यह देशा ॥ देख इसे हो मन में क्लेशा ।
कीसी सम्य से भेद निकालो ॥ जो यहाँ होय विपत सो टालो॥
एक पथिक आता नज़र आया ॥ रघुवर अपने पास बुलाया ।
सादर हाल पूछते सारा ॥ प्रेम सहित निज तट बैठारा ॥

दोहा

कैसे उजड़ यह हुआ ॥ इसका कह सब हाल ।
सत्य सत्य बतलाय दो ॥ भेद भाव तत्काल ॥३४२॥

चौपाई

उत्तर दिया सुनो महाराजा ॥ सिंहोदर है यहाँ का राजा ।
दशांगपुर एक देश प्रवीना ॥ सिंहोदर के वह आधीना ॥
अधिपति वज्र करण तस नामा ॥ करे देश में उत्तम कामा ।
सिंहोदर का वह सामन्ता ॥ तेज प्रतापी बहु गुणवन्ता ॥
गया शिकार खेलने वन में ॥ ध्यानारूढ़ अनगार विपन में।
पुच्छा करी मुनि से जाके ॥ दीजे मुझ को भेद बता के ॥
वन में क्या करते हो स्वामी ॥ हाल कहो मुझ से हित गामी।
ध्यान समाप्त किया मुनिराया ॥ स मुख खड़ा वीर एक पाया ॥

दोहा

उत्तर मुनि देने लगे ॥ सुनो भूप धर ध्यान ।
आतम हित के कारने ॥ रहते वन दरम्यान ॥३४३॥

चौपाई

तप संयम यन में आराधे ☆ इकले रहें मुक्त पद साधे ।
धम धरम का दूर हटावे ☆ केवल सिद्धों के गुण गावें ॥
हिंसा म अति दाप भुयाला ☆ कर्म नशे में अग मतवाला ।
सुन कर मन आया विश्वासा ☆ दर्शन पा पूरण भई आशा ॥
श्रावक धर्म क्रिया स्वीकारा सग-सग ऐसा व्रत धारा ।
देव गुरू का ही सिर नाऊँ ☆ औरों को नहिं शीश झुकाऊँ ॥
लेकर व्रत नृप घर आये ☆ हृदय में यह ख्याल समाये ।
सिंहोदर से कस घश पावे ☆ यह अवश्य मम सिर झुकवावे ॥

दोहा

मणि मुद्रिका बनाय के ☆ अंकित अरिहन्त नाम ।
करवाया हुपाय मन ☆ यह समझो शुभ काम ॥२४४॥

चौपाई

प्रभु स्मरण करके सिर नावे यही रीति नृप काज चलावे ।
चुगल जाय नृप स भड़काला सुना दिया आके तत्काला ॥
सुन के सिंहोदर झुँझलाया मन में कुपित हुये अति राया ।
आया काई पुरुष उपकारी आकर बात सुनाई सारी ॥
बाल वज्र करण उस बारा भूप कुपित किस रीति हमारा ।
कुन्दन पुर एक नग्र ललामा श्रावक सगम रहे उस ग्रामा ॥
उसका पुत्र मुझ नृप जानो ☆ बातें सत्य सब मेरी मानो ।
लेकर माल उज्जैनी आया कामलता का देख सुभाया ॥

दोहा

नगर नार वो द्रव्य सब दीना आ उस बार ।
पुन वेश्या कहन लगी कुण्डल लाओ उतार ॥२४५॥

चौपाई

सिंहोदर के महलों जाकर * देखे कुण्डल निधा उठा कर।
थी घरा बोली अस बानी * जो भूपत की थी पटरानी ॥
मानिन क्यों निद्रा नैनों में * रूथापन बीछे दिनों में।
सिंहोदर ने उत्तर दीना * वज्रकरण ने क्रोधित कीना ॥
उसका शीश जो न झुकवाऊँ * तो आके यह शीश उड़ाऊँ।
सुन यह वचन तुरत मैं धाया * हाल सुनाने को मैं आया ॥
यह सुन नृप ने सब कुछ कीना * अन्न तृण से मर के घर दीना।
फाटक बन्द नगर के कीने * बन्दोबस्त यह नृप मन दीने ॥

दोहा

घेरा आकर नगर को * सिंहोदर भूपाल।
वज्र करण को दूत से * पत्र लिखा तत्काल ॥ २५६ ॥

चौपाई

कपट बहुत मेरे सग कीना * अब तक मुझको धोखा दीना।
मुद्री रख आकर प्रणामा * जो चाहे रक्षित निज ग्रामा ॥
जो न दूत के सग पग धारा * प्रथक होय धड़ शीश तुम्हारा।
वज्र करण ने उत्तर दीना * मैंने मान वस कुछ नहीं कीना।
देव गुरु को शीश झुकाऊँ * अन्य पुरुष को नहिं सिर नाऊँ।
वसुधा चाहे सकल तुम लीजे * विचलित नहीं धर्म से कीजे ॥
मैं धुर तमन को तैयारा * नियम विरुद्ध करूँ नहिं कारा।
वज्रकरण ऐसा कहलाया * सिंहोदर कुछ ध्यान न लाया ॥

दोहा

घेरा है गढ़ आन कर * सिंहोदर भूपाल।
उजड़ गया वन अभी से * कहा सत्य सब हाल ॥ २५७ ॥

चौपाई

सुन रघुवर दशांगपुर धाये * निकट बाग में आसन लाये।

लक्ष्मण राम की आज्ञा पाई * यज्ञ कर्ण पर गये हैं धाई ॥
यज्ञ करण न लखन निहारे * वाले धन धन पग श्रम धारे ।
भोजन कर अतिथि स्वीकारा * प्रेम सहित मन में कुछ धारो ॥
उत्तर दिय लखन हर्षा के * भ्रात रहे मुझ उपवन आके ।
यज्ञ करण सुन कर तत्काला * सुवर्ण थाल भोजनों वीला ॥
भोजन तुरत मनुष्यों द्वारा * लखन संग भेजा उस वारा ।
राम निकट रामानुज आये * हाल सभी आकर समझाये ॥

दोहा

पाकर भोजन राम ने * लखन बुलाये तीर ।
समझा कर बोले वचन * बहुत गहन गम्भीर ॥२५८॥

चौपाई

पहुँच लखन सिंहोदर पासा * मधुर वचन कहे कर विश्वासा ।
भरत भूप की आज्ञा मानो * यज्ञ करण से रण मत ठानो ॥
सुन कर सिंहोदर अस बोला * भेद सकल निज मन का खोला ।
मेरा यज्ञ करण सामन्ता * झुके नहीं मुझ को अभिमन्ता ॥
यज्ञ करण अविनयी मत जानो * धर्म परायण उसको मानो ।
इस कारण प्रणाम नहिं करता * धर्म नीति निज मन में धरता ॥
भूप भरत की आज्ञा मानो * उन को निज भूपति पहिचानो ।
सागरान्त तक उसका राजा * करै तेज तप से बहु काजा ॥

दोहा

लक्ष्मण के सुन कर वचन * सिंहोदर झुँझलाय ।
कौन भरत कैसा नृपत * रहा रोष दिखलाय ॥२५९॥

चौपाई

यज्ञ करण का पक्ष संभाला * कौन भरत कहाँ का भूपाला ।
मुझको यह भ्रमा कहला कर * युद्ध सके क्यों न यहाँ आकर ॥

सुन कर क्रोध लखन मन छाया * रामानुज मन में घबराया।
भरत भूपति तू नहीं जाने * क्या तू उन को नहिं पहिचाने॥
तुझे कराता हूँ पहिचाना * समर युद्ध को उठा छुपाना।
जाने नहीं भुजा बल मेरा * मान चूर कर दूँ मैं तेरा॥
सुनकर वचन सैन हुंकारी * टूटे सुभट शस्त्र कर धारी।
लक्ष्मण देख क्रोध कर गाढ़ा * गज का स्थम्भ तुरत उखाड़ा॥

दोहा

गज स्तम्भ उखाड़ के * दल पर टूटा जाय।
सिंह स्यार पर जिस तरह * लखन पड़ा भराय॥ २६०॥

चौपाई

दल पर मारा मार मचाई * देख भर सेना घबराई।
उछल तुरत गज ऊपर ठाढ़ा * आन्र सिंह समान दहाड़ा॥
सिंहोदर का बस्त्र उतारा * भूमण्डल पर तुरत पछारा।
लिया बाँध नहीं करी अवारा * राम निकट ले तुरत सिधारा॥
दशांगपुर के नर अरु नारी * देख अचम्भित हुए भारी।
राम समीप लाय कर डारा * देख राम ने वचन उचारा॥
सिंहोदर करके आधीनी * स्तुती बहु राम की कीनी।
रघुकुल मणि कृपा अब कीजे * दण्ड मुझाय मेरे प्रभु दीजे॥

दोहा

मेरी है अनभिज्ञता * करी नहीं पहिचान।
रघुकुलमणि करके कृपा * दीजे मुक्ति दान॥२६१॥

चौपाई

यह अज्ञात दोष है मेरा * क्षमा करो जो होय निवेरा।
सेवक को सेवा बतलाओ * दास जान आज्ञा सु सुनाओ॥
स्वामी कोप आपका कैसे * गुरु का क्रोध शिष्य पै जैसे।

सुन कर दिया राम अनुशासन * मानों वचन किया प्रकाशन॥
वज्र करण से सन्धि करलो * वचन मेरे हृदय में धर लो।
विनय करी यक्षम उच्चारा * राम वचन सादर स्वीकारा॥
वज्र करण रघुवर तट आया * आय रामको शीश नमाया।
हाथ जोड़ कर वचन उचारा * मुझ पर किया अनुग्रह भारा॥

दोहा

ऋषभदेव भगवान के * हुये वंश में आप ।
वसुदेव बलदेव हो * मेटोगे सन्ताप ॥ ३६२ ॥

चौपाई

भाग्य विवश दर्शन हम पाये * धन्य भाग्य अपने कर माये।
बहुत दिवस पीछे पहिचाना * तीन खण्ड का नायक जाना॥
अर्ध भरत के नृपति सारे * सो सब किंकर नाथ तुम्हारे।
सिंहोदर को स्वामी छोड़ो * उनकी शठता से मुख मोड़ो॥
गुरु निर्ग्रंथ वेष अरिहन्ता * सिद्ध भये जेते भगवन्ता।
शीश उन्हीं के चरणों नाऊँ * अन्य को मस्तक नहीं नवाऊँ॥
मति वर्धन मुनि से व्रत लीना * यह व्रत में कृपा कर कीना।
सिंहोदर सुन कर स्वीकारा * वज्र करण जो वचन उचारा॥

दोहा

सिंहोदर हित से मिला * वज्र करण से धाय।
मिले सहोदर जिस तरह * अति प्रसन्न हो आय ॥३६३॥

चौपाई

वज्र करण से हित अति कीना * आधा राज प्रसन्न हो दीना।
वज्र करण ने मन हर्षाई * कन्या अपनी आठ बुलाई॥
कन्या त्रियशत सिंहोदर की * पाली पोषी सब सादर की।
लक्ष्मण निमित्त कहे वर आरी * राम सामने करे निहारी॥

उत्तर लखन भूप को दीना * नीति सरस कारज यह कीना।
वन से पुर में चरण धरूँगा * पाणि ग्रहण उस समय करूँगा॥
आज्ञा करा तुरत स्वीकारा * सिंहोदर निज नगर पधारा।
वज्र करण पुनः शीश नवाया * आये पाये नगरी धाया॥

दोहा

निश भर वन आराम कर * कीना भोर पयान।
पहुंचे निअल वन विषे * प्रेम धर के ध्यान ॥३६४॥

चौपाई

जल का दाखे नहीं ठिकाना * सीता का अति जी घबराना।
नाखे वृक्ष के बैठे जाई * शीतल वायु जब कुछ आई॥
लक्ष्मण जल लने को धाये * एक सरोवर के तट आये।
नृप कुबेर पुर का रखवाला * सरवर पर करे सैर रसाला॥
नाम कल्याण भूप सुख माला * अद्भुत रूप अनूप रसाला।
लक्ष्मण लख मन माँहि विचारी * यह तो दीखे है कोइ नारी॥
नमस्कार लक्ष्मण को कीना * प्रेम सहित मन नृप व दीना।
मम सत्कार करो स्वीकारा * बनो अतिथि मेरे इस वारा॥

दोहा

मेरे स्वामी सीय संग * बैठे विपिन मुझार।
उनके बिन नहीं कर सकूँ * महमानी स्वीकार ॥३६५॥

चौपाई

नृप ने मन्त्री को भिजवाया * राम सिया को नगर बुलाया।
सीता राम भग उठ धाये * वन को त्याग नगर में आये॥
मन्त्री आ प्रणाम किया है * आमन्त्रण हर्षाय दिया है।
कल्याण माल ने शीश नवाया * मुख से मीठा वचन सुनाया॥
अति उत्तम शुभ शिविर लगाया * हर्ष राम को वहाँ ठहराया।

ठहर शिविर में मुद मन कीना * स्नानाहार द्रुप युत कीना ॥
कल्याण माला सुमन विचारा * स्त्री रूप तुरत मन धारा ।
राम समीप मन्त्री संग आई * हाथ जोड़ कर विनय सुनाई ॥

दोहा

पूछा राम सुजान ने * उसका सब अहवाल ।
मुनि वेष किस हित किया * इसका कहिये हाल ॥ २६६ ॥

चौपाई

यह सुन तुरत कहा पुनरानी * बोली मिष्ट मधुर शुच वानी ।
बाल्य खिल्य यहां का नृपनाहा * पृथ्वी नाम प्रिय सुख माहा ॥
रानी गर्भवती मम माई * यवनों ने कर दीनी चढ़ाई ।
बाल्य खिल्य को बान्धा आ कर * ले गये अपने संग लगा के ॥
समय पाई पुत्री भई पैदा * सब नारिन को रखा अलहदा ।
मन्त्री ने घोषणा कराई * पुत्र जन्म की खुशी मनाई ॥
खबर सिंहोदर ने जब पाई * आज्ञा दूत हाथ भिजवाई ।
बालक ही को माना राजा * मन्त्री करे राज का काजा ॥

दोहा

पुत्र समान रही सदा * पाल-काल से नाथ ।
मन्त्री माता के सिवा * कोई न जाने बात ॥ २६७ ॥

चौपाई

बहुत द्रव्य यवनों को दीना * भूप न छोड़ा धन ले लीना ।
कृपा करी मम नाथ छुड़ाओ * ऐसा अनुग्रह मुझ पर लाओ ॥
राम तुरत आश्वासन दीना * भूप छुड़ाना निश्चय कीना ।
जब तक पिता न आवे सेवा * तब तक पुरुष वष ही देवा ॥
कर स्वीकार वेष नर धारा * राम अनुग्रह कीना भारा ।
मन्त्री विनय राम से करता * शीश राम के चरणों धरता ॥

कल्याण माला हित यतराऊँ * लक्ष्मण को कन्या परणाऊँ।
लौट अवध जब चरण धरेंगे * लक्ष्मण संग जब व्याह करेंगे॥

दोहा

चौथे रोज पयाम कर * सीता लक्ष्मण राम।
नदी नर्मदा के निकट * पहुँचे हैं सुख धाम ॥३६८॥

चौपाई

मंजन कर आगे पग दीना * पथ विचाअटवी का हर लीना।
मना बहुत रघुवर को कीना * पर उन आगे ही पग दीना॥
शिवल क तब बोला कागा * शकुन राम के मन महिं लागा।
आगे चल कर दल अति पाया * राम नजर में यह दल आया॥
यवनों की सभा अति भारी * सेना पति महा दुराचारी।
सीता को लख मन सुभिआया * तुरत सैन को हुकम सुनाया॥
इनको मार त्रिया ले आओ * यह आज्ञा अब तुरत उठाओ।
आज्ञा सुन कर योधा धाये * निकट राम लक्ष्मण के आये॥

दोहा

लक्ष्मण तब कहने लगे * सुनो नाथ धर ध्यान।
यवनों को संहार के * मारूँ अपु के मान ॥३६९॥

चौपाई

लक्ष्मण तुरत धनुष टंकारा * गिन गिन कर यवनों को मारा।
सिंहनाद से जैसे हाथी * भागन लगे यवन के साथी॥
म्लेच्छ भूप लक्ष्मण के तट आया * शस्त्र छोड़ कर शीश नवाया।
अपना हाल सकल समझाया * राम लखन के पग सिर नाया॥
मैं अब हूँ आधीन तुम्हारे * आप नाथ मुझ को निस्तारे।
आज्ञा अब किंकर को दीजे * सेवा कुछी दास से लीजे॥
अविनय क्षमा करो अब नाथा * जोड़ूँ हाथ नवाऊँ माथा।

उदर शिविर में मुद मन दीना * स्नानाहार हर्ष युत कीना।
कल्याण माला सुमन विचारा * स्त्री रूप तुरत मन धारा
राम समीप मन्त्री संग आई * हाथ जोड़ कर विनय सुनाई।

दोहा

पूछा राम सुजान ने * उसका सब अहवाल।
मुनि वेष किस हित किया * इसका कहिये हाल ॥ ३६६ ॥

चौपाई

यह सुन तुरत कहा पुनरानी * बोली मिष्ट मधुर शुभ वानी।
वाल्य खिल्य यहां का नृपनाहा * पृथ्वी नाम प्रिय सुख माहा ॥
रानी गर्भवती मम माई * यवनों ने कर दीनी चढ़ाई।
वाल्य खिल्य को बान्धा आ कर * ले गये अपने संग लगा कर ॥
समय पाई पुत्री भई पैदा * सब नारिन को रखा अलहदा।
मन्त्री ने घोषणा कराई * पुत्र जन्म की खुशी मनाई ॥
खबर सिंहोदर ने जब पाई * आज्ञा दूत हाथ भिजवाई।
बालक ही को माना राजा * मन्त्री करे राज का काजा ॥

दोहा

पत्र समान रही सदा * बाल-काल से मात।
मन्त्री माता के सिवा * कोई न आने पास ॥ ३६७ ॥

चौपाई

बहुत द्रव्य यवनों का दीना * भूप न छोड़ा धन ले लीना।
कृपा करी मम नाथ छुड़ाओ * ऐसा अनुग्रह मुझ पर लाओ॥
राम तरत आश्वासन दीना * भूप छुड़ाना निश्चय कीना।
जब तब पिता न आए तेरा * तब तब पुरुष वेष ही तेरा॥
कर स्वीकार भय नर धारा * राम अनुग्रह कीना भारा।
मन्त्री विनय राम से करता * रहिये राम के चरणों धरता ॥

कल्याण माला हित पतराऊँ ● लक्ष्मण यों मन्या परणाऊँ।
लौट अवध अब चरण धरेंगे ● लक्ष्मण मग अब ब्याह करेंगे॥

दोहा

चौथे रोज पयान कर ● सीता लक्ष्मण राम।
नदी नर्मदा के निकट ● पहुँचे हैं सुख धाम॥३६८॥

चौपाई

मज्जन कर आगे पग दीना ● पय विपायटी पा दर लीना।
मना बहुत रघुवर को कीना ● पर उन आगे ही पग दीना॥
विपिन के तरु बोला कागा ● शकुन राम के मन महिं लागा।
आगे चल कर दल अति पाया ● राम नजर में यह दल आया॥
यवनों की सेना अति भारी ● सेना पति महा दुराचारी।
सीता को लख मन ललचाया ● तुरत सैन को हुक्म सुनाया॥
इनको मार त्रिया ले आओ ● यह आज्ञा अब तुरत उगाओ।
आज्ञा सुन कर योधा धाये ● निकट राम लक्ष्मण के आये॥

दोहा

लक्ष्मण तब कहने लगे ● सुनो नाथ धर ध्यान।
यवनों को संहार के ● मारूँ प्रभु के मान॥३६९॥

चौपाई

लक्ष्मण तुरत धनुष टंकारा ● गिन गिन कर यवनों को मारा।
सिंहनाद से जैसे हाथी ● भागन लगे यवन के साथी॥
भेलर भूप लक्ष्मण के ढर आया ● शस्त्र छोड़ कर शीश नवाया।
अपना हाल सकल समझाया ● राम लखन के पग सिर नाया॥
मैं अब हूँ आधीन तुम्हारे ● आप नाथ मुझ को निस्तारे।
आज्ञा अब किंकर को दीजै ● सेवा कछु दास से लीजै॥
अविनय क्षमा करो अब नाथा ● जोड़ हाथ नमाऊँ माथा।

बोले राम सुनो मम बानी ॥ बाल खिल्य को छोड़ सुजानी ॥

दोहा

आज्ञा शीश चढ़ा तुरत ॥ बाल्य खिल्य दिया छोड़ ।
दुष्ट धरम से यवन ने ॥ लीना मुख को मोड़ ॥२७०॥

चौपाई

वचन राम का शीश चढ़ाया ॥ काक सुनत उठ कर के धाया ॥
पुयर नगर साच भिजवाया ॥ बाल्य खिल्य नृप को पहुँचाया ॥
काक आया पर्णी को धाया ॥ आगे राम ने चरन बढ़ाया ।
तापी सरिता क तट आये ॥ सीता राम युगल सुख पाये ॥
पहुँचे अरुणा नगर मर आइ ॥ देखा पुर को दृष्टि उठाई ।
तृषित भई सिया महारानी ॥ कहा पिलाओ थोड़ा पानी ॥
राम वचन सुन मन में लाये ॥ एक विप्र मंदिर में आये ।
कपिल विप्र की नारी सुशर्मा ॥ शुचिता से करे धर्मा कर्मा ॥

दोहा

राम लखन को देखकर ॥ सादर लिया बुलाय ।
पृथक-पृथक् आसनन पर ॥ दीन तुरत बैठाय ॥२७१॥

चौपाई

शीतल सलिल तुरत मगवाया ॥ सीता राम लखन को पाया ।
अति स्याधिष्ट नार मन भाया ॥ उसी समय द्विज घर में आया ॥
क्रोध किया नारी पे आके ॥ अग्निहोत्र किया अशुद्ध कराके ।
यह सुन क्रोध लखन को आया ॥ ऊँचा कर द्विज रूप घुमाया ॥
अधम विप्र पर क्रोध न करना ॥ धीरे से धरती पर धरना ।
राम वचन सुन लखन विचारा ॥ द्विज धीरे से धरन उतारा ॥
आगे चले भ्रात सुन सीता ॥ मन में अधिक बड़ी भय भीता ।
आगे के पथ में दूर धाय ॥ एक सघन वन में दूर आय ॥

दोहा

काजल सम घन हो गये * आया वर्षा काल।
समय आन रघुकुल तिलक * यास रहे हैं टाल ॥२७२॥

चौपाई

जलधर वरस रहे चहुँ ओरी * हो घनश्याम कहे घर जोरी।
आया घर घुमड़ चौमासा * राम विपिन में किया निवासा ॥
वट के नीचे आसन कीना * हो प्रसन्न मन वन में चीना।
वर्षा ऋतु यहाँ करे कयामा * साता कारी है यह धामा ॥
देव अधिष्ठाता उस वन का * छाया तुरत घोर जी घन का।
पहुँचा निज अधिकारी तीरा * बोला वचन जाय धर धीरा ॥
इम कर्ण के सुन कर वैना * भाया गौकर्ण उत्तर देना।
तुरत लगाया अवधि ज्ञाना * वन का भेद माय सब जाना ॥

दोहा

जो आये हैं पाहुने * वासुदेव बलदेव।
अष्टम यह प्रगट हुये * करो उन्हों की सेव ॥२७३॥

चौपाई

निश में गया गो कर्ण देवा * राम लक्षन की करने सेवा।
वन में नगरी जाय बसाई * नौ योजन जिसकी चौड़ाई ॥
बारह योजन की लम्बाई * वन में अद्भुत छवि सुहाई।
कोट कगूरे अति चमकारे * छवि को देख-देख मन हारे ॥
ऊँचे महल मनु अति नीके * सुखदायक जोये अति जी के।
किये हाट बजार उधारा * द्रव्य कोष में भरा अपारा ॥
बावी कूप तड़ाग बनाये * बाग बगीचे सुन्दर दिखाये।
अवधपुरी के सम सुख धामा * रामपुरी राखा उस नामा ॥

बोले राम सुनो मम बानी ० बाल खिल्य को छोड़ सुजानी।

दोहा

आज्ञा शीश चढ़ा तुरत ० बाल्य खिल्य दिया छोड़।
दुष्ट करम से यवन ने ० लीना मुख को मोड़ ॥३७०॥

चौपाई

वचन राम का शीश चढ़ाया ० काज सुमत उठ कर के धाया।
कुबर नगर साथ भिजवाया ० बाल्य खिल्य नृप को पहुँचाया।
काक आया पक्षी को धाया ० आगे राम ने चरन बढ़ाया।
तापी सरिता के तट आये ० सीता राम युगल सुख पाये॥
पहुँचे अरुण नगर हर जाई ० देखा पुर को दृष्टि उठाई।
तृषित भई सिया महारानी ० कहा पिलाओ थोड़ा पानी॥
राम वचन सुन मन में लाये ० एक विप्र मंदिर में आये।
कपिल विप्र की नारी सुशर्मा ० शुचिता से कर धर्मा कर्मा॥

दोहा

राम लखन को देखकर ० सादर लिया बुलाय।
पृथक-पृथक आसनन पर ० दीन तुरत बैठाय ॥३७१॥

चौपाई

शीतल सलिल तुरत मंगवाया ० सीता राम लखन को पाया।
अति स्वादिष्ट नार मन भाया ० उसी समय द्विज घर में आया॥
क्रोध किया नारी पे भारी ० अग्निहोत्र दिया भ्रष्ट कराई।
यह सुन क्रोध लखन को आया ० ऊँचा कर द्विज रूप घुमाया॥
अधम विप्र पर क्रोध न करना ० धीरे रहा धरती पर धरना।
राम वचन सुन लखन विचारा ० द्विज धीरे से धरन उतारा॥
आगे चल भ्रात युत सीता ० मन में चिन्ता नहीं मन प्रीता।
आगे के पथ को हट धाये ० एक सघन वन में हट आये॥

मुझ का कैसे मिलेंग * सुन्दर राम सजान ॥ ३७६ ॥

चौपाई

चार द्वार नगरी के मारा * चारों यक्ष जिनक अधिकारी।
इस नगरी के पूरब द्वारे * साधु एक तप करते भारे॥
मुख पत्रिका लगा आनन पे * डोरी चढ़ी सुगर कानन पे।
रजोहरण (ओघा) है कर में * करें यत्न पृथ्वी भर में॥
जो दर्शन उन के कर आये * तो नगरी में जाने पाये।
जिसको महामंत्र नवकारा * याद होय मुख करे प्रचारा॥
श्रावक धर्म नगरी में जाये * तो मन वांछित शुभ फल पाये।
श्रावक धर्म कर भीतर जाओ * तो रघुवर के दर्शन पाओ॥

दोहा

निकट साधु क आय के * करो वन्दना जाय ।
वानी सुन हर्षित हुआ * मन में भाव बढ़ाय ॥३७७॥

चौपाई

वाणी सुनी दश मुनि पाना * श्रावक धर्म हृदय के लीना।
निज त्रिया का धर्म सुनाया * तुरत नार के मन में भाया॥
निकट राम के दोनों आये * राम सिया के दर्शन पाये।
भय ब्रह्म के मन बीच समाया * राम निकट से भागन चाया॥
लक्ष्मण मधुर वचन अस भाषे * साथ कपिल के स्थिर कर राखे।
मांगो जो इच्छा मन माँही * होय राम के निकट न नाहीं॥
आशिर्वाद राम को दीना * सादर हरि ने बैठा लीना।
राम कहे तुम कहाँ से आये * मुख से मीठे वचन सुनाये॥

दोहा

अरुण ग्राम है वास मुझ * सुनिये दीन दयाल ।
ब्राह्मण हूँ मैं धर्म का * सत्य सु कहूँ सब हाल ॥३७८॥

दोहा

रात्रि के ही समय में ✿ बसा दिया सुख धाम।
अति विचित्रता से किया ✱ सुर ने पूरण काम ॥ ३७४ ॥

चौपाई

मङ्गल ध्वनि पक्षी ओ काना ✿ उठे तुरत तब राम सुजाना।
देख नगर को राम नरेशा ✿ मन मे मोद बढ़ाय विशेषा ॥
इस पर्वत के कर में वीना ✱ राम रूप उस पर चित्त दीना।
विस्मय नगर देख मन पाया ✱ किसने ऐसा नगर रचाया ॥
यक्ष आइ कर सम्मुख आया ✿ विनय सहित अस वचन सुनाया
जब तक आप निवास करेंगे ✿ वन में पावन चरन धरेंगे ॥
जब तक सेवा करूँ तुम्हारी ✱ भक्ति भाव निज मन में धारी।
आनंद आप करो जी मर के ✱ पावन करें भरण पग धरके ॥

दोहा

कपिल विप्र उस वन विषे ✱ आ निकला उस बार।
समिध लेन वन में गया ✱ हाथ कुल्हाड़ी धार ॥३७५॥

चौपाई

नगरी देख अचम्भा छाया ✿ आगे अपना चरन बढ़ाया।
माया है या इन्द्रजाला ✿ सोच-सोच मन करे ख्याला ॥
देखी खड़ी सुनर इक नारी ✿ पूछा करने की मन धारी।
नव नगरी किस भूप बसाई ✱ नाम ग्राम दीजै समझाई ॥
सुन नारी ने उत्तर दीना ✿ यह गोकर्ण यक्ष कृत कीना।
बस राम सीता सुखकारी ✿ रामपुरी यह नाम प्रचारी ॥
राम दया दीनों का दाता ✿ दुखी जनों को सुखी बनाता।
जो इस नगरी में आते हैं ✿ तो यह कृतार्थ हो जाते हैं ॥

दोहा

यह सुन कर वाला कपिल ✿ सुना लगाकर कान।

मुझ को कैसे मिलेंगे * सुन्दर राम सजान ॥ ३७६ ॥

चौपाई

चार द्वार नगरी के मारा * चारों यक्ष जिनके अधिकारी।
इस नगरी के पूरब द्वारे * साधु एक तप करते भारे॥
मुख वस्त्रिका लगा आनन पे * डोरी चढ़ी सुगर कानन पे।
रजोहरण (ओघा) है कर में * करें पयकम पृथ्वी भर में॥
जो दर्शन उन के कर आवे * तो नगरी में जाने पावे।
जिसको महामन्त्र नवकारा * याद होय मुख करे उचारा॥
श्रावक बन नगरी में जाये * तो मन वांछित शुभ फल पाये।
श्रावक बन कर भीतर आओ * तो रघुवर के दर्शन पाओ॥

दोहा

निकट साधु के आय के * करने वन्दना जाय।
वाणी सुन हर्षित हुआ * मन में मोद बढ़ाय ॥३७७॥

चौपाई

वाणी सुनी दश सुनि काना * श्रावक धर्म द्रुप के लीना।
निज त्रिया का धर्म सुनाया * तुरत नार के मन में भाया॥
निकट राम के दोनों आये * राम सिया के दर्शन पाये।
भय छद्म के मन बीच समाया * राम निकट से भागन धाया॥
लक्ष्मण मधुर वचन अस भाषे * भाव कपिल के स्थिर कर राखे।
मांगो जो इच्छा मन मांही * होय राम के निकट न नाहीं॥
आशिर्वाद राम को दीना * सादर हरि ने बैठा लीना।
राम कहे तुम कहाँ से आये * मुख से मीठे वचन सुनाये॥

दोहा

अरुण ग्राम है वास मुझ * सुनिये दीन दयाल।
ब्राह्मण हूँ मैं वर्ण का * सत्य सु कहूँ सब हाल ॥३७८॥

दोहा

रात्रि के ही समय में * बसा दिया सुख धाम।
अति विचित्रता से किया * सुर ने पूरण काम ॥ ३७४ ॥

चौपाई

मङ्गल ध्वनि पक्षी की काना * उठे तुरत तब राम सुजाना।
देख नगर को राम नरेशा * मन मे मोद बढ़ाय विशेषा ॥
इस वर्षी के कर मे बीना * राम हृष उस पर चित्त दीना।
विस्मय नगर देख मन पाया * किसने ऐसा नगर रचाया ॥
यह आकर कर सम्मुख आया * विनय सहित अस वचन सुनाया
जब तक आप निवास करेंगे * बन में पावन चरण धरेंगे ॥
जब तक सेवा करूँ तुम्हारी * भक्ति भाव निज मन में धारी।
आनन्द आप करो श्री भरत के * पावन करें शरण पग धरके ॥

दोहा

कपिल विप्र उस बन विषे * आ निकला उस बार।
समिध लेन बन में गया * हाथ कुल्हाड़ी धार ॥३७५॥

चौपाई

नगरी देख अचम्भा छाया * आगे अपना चरण बढ़ाया।
माया है या इन्द्रजाला * सोच-सोच मन करे ख्याला ॥
देखा वहाँ सुघर इक नारी * पूछा करने की मन धारी।
नव नगरी किस भूप बसाई * नाम ग्राम दीजी समझाई ॥
सुन नारी ने उत्तर दीना * यह गारुणी यक्षी कृत कीना।
बस राम सीता सुखकारी * रामपुरी यह नाम प्रचारी ॥
राम दया दीनों का दाता * दुखी जनों का दुःख मिटाता।
जा इस नगरी में ध्यान है * तो यह कलाप हो जान है ॥

दोहा

यह सुन कर बाला चरित्र * सुखो लगाकर काम।

मन्त्र समान वृक्ष की डाली ❀ कुसुं नदी पर अति शुभ धाली॥
वट नीचे विश्राम लगाया ❀ सुगर धाम सीता मन भाया।
विजय पुर का भूप महीधर ❀ इन्द्राणी रानी अति सुन्दर॥
अति सुन्दर तस सुता रसाला ❀ नाम सुगर शुभ था वन माला।
पढ़े लखन के गुण तस काना ❀ वरूँ लखन को प्रण अस ठाना॥
राम लखन का सुन वनवासा ❀ भूप महीधर भारत न्यासा।
लखन लौट कब वन स आवें ❀ जो पुत्री से ब्याह रचावें॥

दोहा

चन्द्र नगर नृप तनय से ❀ करना चहा सम्बन्ध।
वनमाला ने मरन का ❀ सुन के किया प्रबन्ध॥३८१॥

चौपाई

घर से तुरत निकल के धाई ❀ दैवयोग उस वन में आई।
यक्षालय में जा पग धारा ❀ हाथ जोड़ अस वचन उचारा॥
होय उपस्थित प्रण को पालो ❀ विपता सकल मेरी भय टालो।
मन्दिर से वह नीचे आई ❀ जिन भगवन् से डोर लगाई॥
इस भव में पति लखन न हुये ❀ मन के भाव मन ही में मूये।
सत भक्ति जो होय लखन में ❀ जो बाहर अन्दर वही मन में॥
यहाँ से मर कर जहाँ मैं जाऊँ ❀ वहाँ जाय लक्ष्मण वर पाऊँ।
बान्धा वस्त्र वृक्ष की डाली ❀ फूआ छोर उठा कर डाली॥

दोहा

डाली फाँस सु कंठ में ❀ करने आतम घात।
लक्ष्मण तुरत निहार के ❀ साधा हाथों हात॥३८२॥

चौपाई

लक्ष्मण झपट फाँस को खोला ❀ मधुर बैन पुनः मुख से बोला।
ऐसा करे किस लिये कामा ❀ मेरा ही है लक्ष्मण नामा॥

चौपाई

आप अतिथि भये मम घर माँही * आप कियो न आदर नाहीं।
बोले कटुक वचन मैं भारे * क्षमा करो अपराध हमारे॥
कही सुशर्मा ने अस बानी * सुन विनय सीता महारानी।
राम दयालु बहु धन दीना * कर के हय विदा पुन कीना॥
पहुँच अपने ग्राम मझारी * मन में भई खुशी अति भारी॥
नन्द्यावतश मुनि यहाँ आये * सुख पती सुख अधिक सुहाये॥
जीव रक्षा हित बोधा कर में * सुन उपदेश न भर जग भर में।
कपिल विप्र ने दीक्षा लीनी * करनी समता से अस कीनी॥

दोहा

पावस ऋतु गई बात कर * साचा राम सुजान।
लक्ष्मण से कहने लगे * कीजे अब पयान ॥२७९॥

चौपाई

बोला गौकर्ण कर जोरा * नाथ भई सेवा अति थोरी।
आप गमन करना मम धारा * खेद होय यह सुन कर भारा॥
करिये क्षमा भूल नर माथा * आऊँ हाथ नवाऊँ माथा।
स्वय प्रभा नाम सुन्दर हारा * यह राम को भेंटा डारा॥
कुंडल लक्ष्मण प्रिय लगन के * पूरण किये भाव निज मन के।
चूड़ामणि सिया को दीनी * सेवा घनी भाव दृढ़ कीनी॥
मन गमती शुभ वीण सुहाई * सो सीता को लाय गहाई।
राम चरण जब आगे दीना * यक्ष नगर को तस गया कीना॥

दोहा

निकट विजय पुर के हुये * राम उपस्थित आय।
बाहर पुर उद्यान के * डेरा दिया लगाय ॥२८०॥

चौपाई

राम विटप वट नीचे आय * छाया देख लगा शुभ नाथ।

रथ से उतर राम तट आया * राम चरण में शीश झुकाया।
लक्ष्मण से है प्रेम सुता का * स्वीकारो पति प्रेम सुता का॥
इस कारण मन यही विचारा * कन्या योग लखन घर धारा।
लक्ष्मण वीर से हुआ समागम * मन के दूर हुवे सारे भ्रम॥
लक्ष्मन समान मिला जामाता * राम सरीखे जिनके भ्राता।

दोहा

कर सन्मान गये लिया * महलों के मझधार।
स्वच्छ सु सुन्दर महल में * दीना उन्हें उतार॥३८५॥

चौपाई

बैठे महीधर के दर्बारा * दूत आय छत किया सुमारा।
अति वीर्य नृप ने बुलवाया * समाचार सब तुम्हें सुनाया॥
भरत भूप से हो संग्रामा * निज सहायता हित अभिरामा।
भरत संग बहुतेरे राजा * करे सुमन से उनका काजा॥
इस हित भूपत तुम्हें बुलाया * निज सहायता तुम से चाया।
लक्ष्मण कहे मुझे समझाओ * रण का सब कारण बतलाओ॥
अति वीर्य अनुशासन चहता * निज आज्ञा युत भरत चलाता
भरत करे इस से इन्कारा * रण छुड़ने का येही कारा॥

दोहा

बोले राम सुजान यों * भूप चढ़ कर जाओ।
सैन तुम्हारी के सहित * कारज करी आओ॥३८६॥

चौपाई

सैना के संग रघुकुल नायक * हाथ उठाया अपने सायक।
नद्यवर्त पधारे जाई * जाय विपिन में सैन टिकाई॥
वन रक्षक सुर वन में आया * आय राम को शीश नमाया।
जो इच्छा हो मुझे सुनाओ * सेवा सेवक से करवाओ॥

रथ से उतर राम तट आया * राम चरण में शीश झुकाया।
लक्ष्मण से है प्रेम सुता का * स्वीकारो पति प्रेम सुता का॥
इस कारण मन यही विचारा * कन्या योग लखन वर धारा।
लखन वीर से हुआ समागम * मन के दूर हुये सारे भ्रम॥
लखन समान मिला जामाता * राम सरीखे जिनके भ्राता।

दोहा

कर सम्मान गये लिया * महलों के मझधार।
स्वच्छ सु सुन्दर महल में * दीना उन्हें उतार॥३८५॥

चौपाई

बैठे महीधर के दर्बारा * दूत आय कृत किया जुहारा।
अति धीर्य नृप ने बुलवाया * समाचार सब तुम्हें सुनाया॥
भरत भूप से हो संग्रामा * निज सहायता हित अभिरामा।
भरत संग बहुतेरे राजा * करे सुमन से उनका काजा॥
इस हित भूपत तुम्हें बुलाया * निज सहायता तुम से चाया।
लक्ष्मण कहे मुझे समझाओ * रण का सब कारण बतलाओ॥
अति धीर्य अनुशासन चहता * निज आज्ञा युत भरत चलाता
भरत करे इस से इन्कारा * रण छुड़ने का येही कारा॥

दोहा

बोले राम सुजान यों * भूप चढ़ कर आओ।
सैन तुम्हारी के सहित * कारज करी आओ॥३८६॥

चौपाई

सैना के सग रघुकुल नायक * हाथ उठाया अपने सायक।
नंद्यवत पधारे जाई * आय विपिन में सैन टिकाई॥
वन रक्षक सुर वन में आया * आय राम को शीश नमाया।
जो इच्छा हो मुझे सुनाओ * सेवा सेवक से करवाओ॥

रथ से उतर राम तट आया * राम चरण में शीश झुकाया।
लक्ष्मण से है प्रेम सुता का * स्वीकारो पति प्रेम सुता का॥
इस कारण मन यही विचारा * कन्या योग लखन वर धारा।
लखन धीर से हुआ समागम * मन के दूर हुये सारे भ्रम॥
लखन समान मिला जामाता * राम सरीखे जिनके भ्राता।

दोहा

कर सन्मान गये लिया * महलों के मझधार।
स्वच्छ सु सुन्दर महल में * दीना उन्हें उतार॥३८५॥

चौपाई

बैठे महीधर के दर्बारा * दूत आय छत किया सुमारा।
अति धीर्य नृप न बुलवाया * समाचार सब तुम्हें सुनाया॥
भरत भूप से हो संग्रामा * निज सहायता हित अभिरामा।
भरत संग बहुतेरे राजा * करे सुमन से उनका काजा॥
इस हित भूपत तुम्हें बुलाया * निज सहायता तुम से चाया।
लक्ष्मण कहे मुझे समझाओ * रण का सब कारण बतलाओ॥
अति वीर्य अनुशाशन चहता * निज आज्ञा युत भरत चलाता
भरत करे इस से इन्कारा * रण शुरुने का येही कारा॥

दोहा

बोले राम सुजान यों * भूप चढ़ कर आओ।
सैन तुम्हारी के सहित * कारज करी आओ॥३८६॥

चौपाई

सैना के संग रघुकुल नायक * हाथ उठाया अपने सायक।
नद्यवर्त पधारे आई * जाय विपिन में सैन टिकाई॥
वन रक्षक सुर वन में आया * आय राम को शीश नमाया।
जो इच्छा हो मुझे सुनाओ * सेवा सेवक से करवाओ॥

तब कन्या से व्याह रचाऊँ * शक्ति तुम्हारी को अजमाऊँ॥

दोहा

पूछा भूप बढ़ाय मुद * सुनो लगा कर कान ।
जो प्रहार मेरा सहो * ऐसे हो बलवान ॥२६३॥

चौपाई

सहूँ पाँच तुम्हारे प्रहारा * पूर्ण शक्ति से कीजे वारा ।
पाँच वार नृप ने कस कीन्हे * लक्ष्मन प्रहार सहन कर लीन्हे॥
दो प्रहार हाथों पर लीने * दो युग बगलों में गह लीने ।
एक प्रहार दाँत से दाबा * जैसे गज गद्य को चाबा॥
जित पद्मा लक्ष्य हुई खुश हाला * लक्ष्मण के डाली वरमाला ।
शत्रु दमन यों कहे हर्षाई * कन्या करी समर्पण भाई॥
लक्ष्मण कहे सुनो यह बाता * विपिन विराजें हैं मम भ्राता ।
मैं उन्हीं का दास कहाऊ * बिन आज्ञा कोई कृत न ठाऊँ॥

दोहा

शत्रु दमन वन जाय के * देखे राम सुजान ।
कर प्रणाम आधीन हो * लाया निज मकान ॥२६४॥

चौपाई

करी राम की हित से पूजा * रघुवर को समझा नहिं दूजा॥
भोजन सरस सुरस से सेवा * अन्न आदि नाना विध मेवा॥
किया अति ही अतिथ सत्कारा * प्रेम परस्पर कर प्रस्तारा ।
कर सत्कार ग्रहण हरि चाले * आगे चरण धरे मनवाले॥
पहुँचे वंश शैल गिरि वा के * पास तलहटी में किया आके
वंश स्थलपुर में जब आये * राज प्रजा भयभीत दिखाये॥
जग भय के मरनाय निवारन * पूछे पुर भय का सब कारन ।
उस नर ने सब हाल सुनाया * सुन राम के मन अस चाया॥

दोहा

चाहे मारन पति को ॥ ऐसा किया विचार ।
भूपति आज्ञा स चली ॥ दूत कही एक बार ॥२६७॥

चौपाई

दूत संग वह विप्र सिधारा ॥ वन में जा अमृत स्वर मारा ।
उपभोगा को हाल सुनाया ॥ सुन कर मोद सु मन में पाया ॥
दोनों पुत्रों को अरु मारो ॥ इन्हें मार अपना भय हारो ।
सुन कर पुत्र भये खिसियाने ॥ पितु को रिपु विप्र को जाने ॥
समय पाय द्विज क्रिया सहारा ॥ मर कर वह म्लेच्छ हुया मारा ।
मत वर्द्धन मुनि यहाँ पधारे ॥ विजय भूप मन में मुद धारे ॥
धर्म सुना नृप दीक्षा लीनी ॥ सयम ले नृप करनी कीनी ।
उदित मुदित भुय अणगारा ॥ सयम ले निज कारज सारा ॥

दोहा

दीक्षा देखी मुनिन को ॥ म्लेच्छ मारने काज ।
म्लेच्छ पति ने रक्षा करी ॥ सारा यह शुभ काज ॥२६८॥

चौपाई

मुनियों ने सथारा कीना ॥ सुर पुर में जाके पग दीना ।
महा शुक्र हुए देव अपारा ॥ सुर पुर में हुया जै जै कारा ॥
वसुभूति भव भव भ्रमाया ॥ पुण्य बड़े मानुष तन पाया ।
तापस बना किया तप भारा ॥ धूमकेतु हुया देव अपारा ॥
उदित मुदित सुर पुर से आये ॥ रीष्टपुरी जन्म सु पाये ।
अनुधर नाम तीसरा भ्राता ॥ मन राखे क्रोध मद माता ॥
रत्न सुरथ राजा पद पाया ॥ दो सुत को युवराज बनाया ।
मिस्यदा नृप दीक्षा धारी ॥ देव हुये करनी कर भारी ॥

दोहा

चाहे मारन पति को * ऐसा किया विचार ।
भूपति आज्ञा से चली * दूत कही एक बार ॥२६७॥

चौपाई

दूत सग वह विप्र सिधारा * वन में जा अमृत स्वर मारा ।
उपभोगा को हाल सुनाया * सुन कर मोद सु मन में पाया ॥
दोनों पुत्रों को अरु मारो * इन्हें मार अपना भय टारो ।
सुन कर पुत्र भये खिसियाने * पितु को रिपु विप्र को जाने ॥
समय पाय द्विज दिया सहारा * मर कर वह म्लेच्छ हुआ मारा ।
मत वर्द्धन मुनि वहाँ पधारे * विजय भूप मन में सुख धारे ॥
धर्म सुना नृप दीक्षा लीनी * सयम ले नृप करनी कीनी ।
उदित मुदित हुय अणगारा * सयम ले निज कारज सारा ॥

दोहा

दीक्षा देखी मुनिन को * म्लेच्छ मारने काज ।
म्लेच्छ पति ने रक्षा करी * सारा यह शुभ काज ॥२६८॥

चौपाई

मुनियों ने सथारा कामा * सुर पुर में आके पग दीना ।
महा शुक्र हुए देव अपारा * सुर पुर में हुआ जै जै कारा ॥
वसुभूति भव भव भ्रमाया * पुण्य बढ़े मानुष तन पाया ।
तापस बना किया तप भारा * धूमकेतु हुआ देव अपारा ॥
उदित मुदित सुर पुर से आये * रीठापुरी जन्म सु पाये ।
अनुद्धर नाम तीसरा भ्राता * मन राखे क्रोध मद माता ॥
रत्न सुरथ राजा पद पाया * दो सुत को युवराज बनाया ।
प्रियव्रत नृप दीक्षा धारी * देव हुये करनी कर भारी ॥

दोहा

चाहे मारन पति को * ऐसा किया विचार ।
भूपति आज्ञा से चली * दूत कही एक वार ॥३६७॥

चौपाई

दूत संग वह विप्र सिधारा * वन में जा अमृत स्वर मारा ।
उपभोगा को हाल सुनाया * सुन कर मोह सु मम में पाया ॥
दोनों पुत्रों को अरु मारे * इन्हें मार अपना भय हारे ।
सुन कर पुत्र भये खिसियाने * पितु को रिपु विप्र को जाने ॥
समय पाय द्विज दिया सद्दारा * मर कर वह म्लेच्छ हुआ मारा ।
मत वर्द्धन मुनि यहाँ पधारे * विजय भूप मन में सुख धारे ॥
धर्म सुना नृप दीक्षा लीनी * सयम ले नृप करनी कीनी ।
उदित मुदित हुए अणगारा * सयम ले निज कारज सारा ॥

दोहा

दीक्षा देखी मुनिन को * म्लेच्छ मारने काज ।
म्लेच्छ पति ने रक्षा करी * सारा यह शुभ काज ॥३६८॥

चौपाई

मुनियों ने संथारा कीना * सुर पुर में जाके पग दीना ।
महा शुक्र हुए देव अपारा * सुर पुर में हुवा जै जै कारा ॥
वसुभूति भव भव भ्रमाया * पुण्य बढ़े मानुष तन पाया ।
तापस बना किया तप भारा * धूमकेतु हुवा देव अपारा ॥
उदित मुदित सुर पुर से आये * रीष्टपुरी जन्म सु पाये ।
अनुधर नाम तीसरा भ्राता * मन राखे क्रोध मद माता ॥
रत्न सुरथ राजा पद पाया * दो सुत को युवराज बनाया ।
विम्बद्दा भूप दीक्षा धारी * देव हुवे करनी कर भारी ॥

दोहा

लखन कहन सुन रामजी ॥ गिरि के ऊपर आय ।
देखा दृष्टि उठाय के ॥ मन में मोद बढ़ाय ॥३६५॥

चौपाई

साधु युगल दृष्टि में आया ॥ कायोत्सर्ग का ध्यान लगाया ।
राम लखन सीता खुश भारी ॥ कर वन्दना मुदित मन भारी ॥
राघव कर में राम उठाई ॥ मान मुदित मन खूब बजाई ।
राग सुमन अलाप धारें ॥ सीता लखन करे छत सारे ॥
निश जागरण राम ने कीना ॥ मोद सहित हित मन में दीना
अनल प्रभा आया वैताला ॥ मुनियों को दुख देय विशाला ॥
शस्त्र भयंकर मुख में काढ़ै । घोर नाद से जनु घन फाड़ै ।
मध्य मुनिन का कष्ट जो देता ॥ कर उपद्रव अपने हेता ॥

दोहा

साता तो मुनि के निकट ॥ दोनों है बैठाय ।
राम लखन वैताल पै ॥ चले एक संग धाय ॥३६६॥

चौपाई

देखा राम लखन को आते ॥ भागा सुर मन में भय पाते ।
मुनिन को हुआ केवल ज्ञाना ॥ आये सुरन महोत्सव रचाना ॥
बोले राम आइ युग चानन ॥ कहो उपद्रव का प्रभु कारण ।
कुल भूषण मुनि ऐसे बोले ॥ कमलानन मुनि अपने खोले ॥
नगरी एक पद्मनी साजे ॥ विजय पर्व जहाँ भूप विराजे ।
अमृत स्वर एक दूत अनूपा ॥ उपभोगा तस प्रिय शुभ रूपा ॥
उदित मुदित दो सुत थे प्यारे ॥ वसु भूति द्विज मित्र सुखारे ।
उपभोग संग द्विज आसक्त ॥ प्रेम विषय हुए तहं रक्ता ॥

दोहा

समय उस समय आन के * कहें गरुड़ पति बैन।
महा लोचन सुर प्रेम से * नीचे करके नैन ॥४०१॥

चौपाई

काम बहुत अच्छा शुभ कीना * गिरि पर आन दर्श शुभ दीना।
सेवा कुछ ही मुझे बताओ * आज्ञा कर कुछ कृत कराओ॥
सुन कर बोले राम सुजाना * काम नहीं कुछ मुझे महाना।
गरुड़पति महालोचन बोला * राम समिप सु आनन खोला॥
करूँ उपकार तुम्हारे संगा * हृदय मेरा लेय उछंगा॥
ऐसा कह महलोचन धाया * सुर पुर में आकर ठहराया॥
सुन कर वंशस्थल भूपाला * गिरि पर आ लख रूप रसाला।
राम दर्श कर कीना प्रणामा * पूछा ठाम धाम शुभ नामा॥

दोहा

सेवा पूजा राम की * नृप कीनी हर्षाय।
राम की आज्ञा पाय के * शोभित किये बनाय ॥४०२॥

चौपाई

आज्ञा से गिरि को समराया * राम गिरि तस नाम बताया।
आगे राम चरन जब धारे * मन में कुछ रहे मता उपारे॥
पहुँचे दण्डक बन में आई * देख चहुं लंग नजर उठाई।
ऊँच गिरी की गुफा निहारी * सुन्दर भूमि सु मन में धारी॥
उसी विपिन में ठहरे रामा * समझा यह अति सुन्दर धामा।
कीना वहीं निवास स्थाना * साता कारी यह बन जाना॥
इक दिन दो चारण मुनि आये * राम देख उनको हर्षाये।
श्रद्धा सहित वन्दना कीनी * साधु चरण में भक्ति दीनी॥

दोहा

रत्न रथ भूपाल का * था प्रभा शुभ नार ।
धनुरुद्ध ने आशक्त हो * कीना कुटिल विचार ॥३९९॥

चौपाई

त्याग सुपद मन में यह धारा * भूमि लूटना हृदय विचारा ।
रत्नरथ उस पर चढ़ धाया * कर परास्त उस को ले आया ॥
छोड़ दिया मन में हित आना * धनुरुद्ध तापस बना सुजाना ।
यह भव भ्रमण कर पुन आई * पैदा हुआ मनुष भव माई ॥
पुन तापस तप किया अजाना * हुआ देव ज्योतिषी आना ।
तन उपसर्ग हम को आया * देख तुम्हारा तप घबराया ॥
चित्र रथ रत्नरथ दीक्षा धारा * अच्युत कल्प हुये सुर भारी ।
यहां से चयि नर भव में आये * क्षेम करम नृप गृह में आये ॥

दोहा

था हां रानी आन हम * माता रानी धार ।
कुल भर दश भूषण युग * लीना कारज सार ॥४००॥

चौपाई

उपाध्याय घर धाय सुजाना * बारह वर्ष पढ़े शुभ ज्ञाना ।
सग गुरु के हम आये * मार्ग में नृप मंदिर पाये ॥
बैठा एक झरोखे नारी * देखत प्रेम हुआ अति भारी ।
राजा को जा सलाह दिखाई * देख भूप मन खुशी समाई ॥
सुन्दर पद्मी मन्दर फिर आई * माता से वदि कर चतुराई ।
माता ने सब हाल सुनाया * कनक प्रभा को बहन बताया ॥
यह सुन बहुत लाज मन आई * मन ही मन रहे युग पछताई ।
गुरु समीप जा दीक्षा धारी * गिरि पर आय ममन तप टारी ॥

दोहा

सुगुप्त मुनि बोले तुरत * सुनिये राम सुजान।
साधु सग सगम से हुआ * यह सब शुभ परिणाम ॥४०५॥

चौपाई

सागर भये भूप अति भारी * शान्ति मयी सत सगत धारी।
हरिश्चन्द्र भये सुगर नरेशा * सतवादी भये भूमि विशेषा ॥
साधु सग से जग सुख पावे * जो सत सगत को अपनावे।
वैसे साधु शरण हम पाई * रोग सोग सब गयो विलाई ॥
सती हाथ से नीर जो डाला * उस प्रभाव हुआ रूप निराला।
सत सगत जग में अति प्यारी * होय जहाँ में अति सुखकारी ॥
प्रथम यहाँ कुम्भ कारक नामा * नगर यहाँ बसता शुभ धामा।
उस की सारी कथा सुनाऊँ * पूर्व भव गिद्ध का बतलाऊँ ॥

दोहा

यही पती उस नगर का * था दण्डक भूपाल।
जित शत्रु राजा हुआ * सावत्थी नर पाल ॥४०६॥

चौपाई

जित शत्रु राजा शुचि ज्ञानी * जिनके सुगर धारनी रानी।
दो सन्तान पुत्र एक कन्या * अति सुकमाल रूप में धन्या ॥
पुरन्दरी यथा शुभ नामा * करे सदा आनंद का कामा।
कुम्भकार कह नृप को प्याई * रहे आनन्द मना सुखदाई ॥
एक बार दण्डक राजा ने * पालक भेजा निजका जाने।
विप्र दूत जित शत्रु तीरा * पहुँचा करी बात मन धीरा ॥
धर्म विरुद्ध उन वचन उचारा * करन लगा नृपित उस बारा।
स्कधक नृप सुत ने यहाँ आके * कायल कीना अधिक बना के ॥

दोहा

सीता ने अति प्रेम से * दीना मुनि को दान।
अर्घ नीर इत्यादि से * कीना है सम्मान ॥ ४०३ ॥

चौपाई

रत्न वृष्टि सु गिरि पर कीनी * वर्षा धारी धार शुभ दीनी।
रत्न जटित रथ सुर सग आया * आय राम को शीश नमाया ॥
अश्व सहित रथ हरि को दीना * होय प्रसन्न काम यह कीना।
रागा एक पक्षी वहाँ आया * चारण मुनि का दर्शन पाया ॥
मुनि चरणों को आ स्पर्शा * रोग रहित हुआ मन हर्षा।
हुआ जाति स्मरण ज्ञाना * जिससे मुर्छित हुआ निदाना ॥
पृथ्वी पर गिर हुआ बे होशा * सीता जल डाल किया होशा ॥
पक्षि निरोग हुआ उस बारी * स्वर्ण मयी वपु पक्षी धारी ॥

दोहा

स्वर्ण मयी पर हो गये * पद्म मणि से पाँव।
चंचु प्रवाल सम हुआ * आकर के उस ठाम ॥ ४०४ ॥

चौपाई

हुआ शरीर प्रभायुत सारा * शीश शिखा का सा आकारा।
रत्नाकर का श्रेणी समामा * जटा लगी दीपन विधि माना ॥
दिया जटायु उस का नामा * कीना बहुत सुगर शुभ कामा।
राम करी पृच्छा मुनि राया * कहि कारण ऐसा तन पाया ॥
पक्षी गिद्ध हो माँस अहारी * मोटी बुद्धि के अधिकारी।
पर यह गिद्ध निकट कस आया * आ शरणा मुनि पद का पाया ॥
हुआ शांति शरण पद पाके * हुआ निरोग किस विध यह आके
अति कुरूप था यह वपु वाला * क्षण भर में हुआ रूप रसाला ॥

दोहा

उपवन में शस्त्र दिये * पालक ने गड़वाय ।
समय देखता रहा पुनः * बार बार मन लाय ॥४०९॥

चौपाई

दण्डक चले संग परिवारा * करन वन्दना है तप धारा ।
देख साधु का शान्त सुभाया * सुनी देशना मन हर्षाया ॥
संघा कर महलों में आया * मन में अति आनंद मनाया ।
पालक ने अब समय निहारा * नृप को संग ले अलग सिधारा ॥
स्कंधक कपटी है अति भारा * शूरवार संग ले पग धारा ।
योद्धा सबर साधु बनाय * शस्त्र भूमि तल में गड़वाये ॥
तुम को मार छीन ले राजा * पर करेगा मन का काजा ।
आप स्वयं चल कर लें आँचा * नहिं साँच को किञ्चित आँचा।

दोहा

सुन कर पालक के वचन * राजा हुवे तैयार ।
मुनियों के स्थान में * गड़े पड़े हथियार ॥४१०॥

चौपाई

शस्त्र देख नृप मन भ्रम धारी * मंत्री को आज्ञा उस बारी ।
बिन सोचे भूपत उच्चारा * मन में हुआ दुख अपारा ॥
तुमने कपट भेद पहिचाना * मैंने तो सत साधु जाना ।
अब इस दुर्मत को जो चाओ * कर मेरे यह वचन निभाओ ॥
योग्य दण्ड तुम इस का दीजे * मेरे पास सबर नहिं कीजे ।
मैंने हुक्म दिया एक बारा * मत पूछना अब आन दुबारा ॥
इस प्रकार नृप आज्ञा पाई * मन में पालक बहु हर्षाई ।
यन्त्र पेलने का बनवाया * लेजा कर उद्यान रखाया ॥

दोहा

स्कंधक का सुत पा समय * चर्चा करा वमाय ।
पूर्व युक्तियों सहित सुन * किया निरुत्तर आय ॥४०७॥

चौपाई

सभ्य जनों न कर उपहासा * पालक लख अति हुया उदासा।
घटना लख तन क्रोध समाया * कुछ मुख से नहिं कहने पाया॥
जित शत्रु न कीना रवाना * भव समी हृदय का जाना ।
पहुँचा निज भूपत के पासा * कहा न कुछ मन रहे उदासा ॥
स्कंधक ने संयम पद धारा * संग पाँच सौ नृप सुत प्यारा।
मुनि सुव्रत स्वामी के तीरा * तप संयम करे योगिक वीरा ॥
कुंभकार तट जाना चाहा * मुनि सुव्रत से वचन सराहा।
प्रभु के निकट जा आज्ञा माँगी * उत्तर दिया जगत् के त्यागी ॥

दोहा

जान न होगा तुम्ह * मरणान्तिक क्लेश ।
और आप मन में चलो * जानो करे विशेष ॥४०८॥

चौपाई

स्कंधक मुनि पुन वचन उचारा * उत्तर एक और उस पारा ।
संकट में हम होय आराधक * या कोइ हो जाय विराधक ॥
उत्तर दिया सु अन्तरयामी * तुमरे सिवा सब हो अनुगामी।
स्कंधक मन में अति खुश हुआ * तो समझूं मरण पूरण हुआ ॥
आज्ञा पा मुनि किया विहारा * चले पाँच सौ मुनि परिवारा।
पहुँचे कुम्भकार पट पासा * जा उपवन में किया निवासा ॥
पालक देखि साधु पर आई * प्रथम वैर प्रगट हुआ आई।
इस कारण उसने तत्काला * सन्तों के पथ कण्टा डाला ॥

दोहा

नगर हुआ ऊजड़ सभी * जंगल हुवा महान।
दण्डकवन के नाम से * जाने सभी जहान ॥ ४१३ ॥

चौपाई

दण्डक नृपत जगत् भ्रमाया * पक्षी की योनी में आया।
गधनाम रोग हुवा भारी * कष्ट बहुत पाया इस धारी ॥
दर्शन आज हमारे पाये * जाति स्मरण ज्ञान उपाये।
पग परसत सब रोग नसाया * हुई स्वच्छ निरोगी काया ॥
पूर्व भव पक्षी सुन पाया * आनन्द मन में बहुत समाया।
पुन मुनि चरणों में सिर दीना * अणुव्रत श्रावक व्रत कीना ॥
मुनि ने मन इच्छा पहिचानी * त्याग रुचा मन में अस जानी।
जीवघात पुनः माँस अहारा * निश भोजन त्यागा इक धारा ॥

दोहा

दीना है आदेश पुन * पक्षी को समझाय।
राम लखन के पास तू * रहियो मोद बढ़ाय ॥ ४१४ ॥

चौपाई

बोले राम परम हुलसाई * यही पक्षि है मेरा भाई
करी वन्दना मुनि चरनों में * पुनः पुनः पग कंज करनों में।
मस्तक मुनि के चरनों नमाया * नर तन का शुभ लाभ उठाया
मुनि पथ पुनः आकाश सिधारे * राम कुटि के तट पग धारे।
दिव्य यान में हो असवारा * सैर करन रघुवर पग धारा
सीता लखन लिये हरि साथा * सग जटायु धार्मिक भ्राता।
अन्य अन्य कई स्थान निहारे * बड़े बड़े कानन पग धारे
कानन देख राम खुश भारे * आगे चले मुदित मन धारे

दोहा

श्री स्कधक आचार्य के * सन्मुख यह अन्धेर।
साधु लगा पिलवायने * तनिक करी नहीं देर ॥४११॥

चौपाई

एक-एक मुनि को यन्त्र में डाले * पैल-पैल पुनः छार निकाले।
पीलते समय स्कधक आचार्य * आराधना करी अनिवार्य ॥
सब पील चुका मुनि परिवारा * स्कधक ने यों वचन उचारा।
बालक मुनि को पीछे डालो * पहिले मेरा तेल निकालो ॥
इतना कहा मानिये पालक * सोच समझ सन्तों के घालक।
पालक ने यह उत्तर दीया * वही करूँ जो चाहे जीया ॥
पालक दुष्ट एक नहीं मानी * बालक मुनि को पटका घानी।
सारे मुनि पा केवल ज्ञाना * मुक्ति गये हुआ निर्वाना ॥

दोहा

जब स्कधक आचार्य ने * किया नियाणा जाय।
जो फल तपस्या का मिले * बदला लूं मैं आय ॥४१२॥

चौपाई

हुए देव जा अग्निकुमारा * लगा दाम मे अनल सारा।
रजोहरण रक्तमयी पाया * पञ्जों में पक्षिणी दबाया ॥
पटका महल भूप के आई * रानी ने आ लिया उठाई।
रजोहरण भ्रात का जाना * कपट सभी नृप का पहिचाना ॥
साथ पद्मन रानी को आया * कुल देवी ने तुरत उठाया।
मुनि सुव्रत के सम्मुख आई * दीक्षा ले ली मन हुलसाई ॥
अग्नि कुमार प्रकोपा भारा * दण्डक पालक सहित पजारा।
भस्म नगर कर दीना सारा * बचा नहीं कोई परिवारा ॥

दोहा

नगर हुआ ऊजड़ सभी * जंगल हुआ महान।
दण्डकवन के नाम से * जाने सभी जहान ॥ ४१३ ॥

चौपाई

दण्डक नृपत अगत् भ्रमाया * पक्षी की योनी में आया।
गंधमाम रोग हुवा भारी * कष्ट बहुत पाया इस वारी ॥
दर्शन आज हमारे पाये * जाति स्मरण ज्ञान उपाये।
पग परसत सब रोग नसाया * हुई स्वच्छ निरोगी काया ॥
पूर्व भव पक्षी सुन पाया * आनन्द मन में बहुत मनाया।
पुन मुनि चरणों में सिर दीना * अंगीकार श्रावक मत कीना ॥
मुनि ने मन इच्छा पहिचानी * त्याग रुचा मन में अस जानी।
जीवघात पुनः माँस अहारा * निश भोजन त्यागा इक वारा ॥

दोहा

दीना है आदेश पुनः * पक्षी को समझाय।
राम लखन के पास तू * रहियो मोद बढ़ाय ॥ ४१४ ॥

चौपाई

बोले राम परम हुलसाई * यही पक्षि है मम भाई।
करी वंदना मुनि चरणों में * पुनः पुनः पग कंज करनों में ॥
मस्तक मुनि के चरणों नमाया * नर तन का शुभ लाभ उठाया।
मुनि पथ पुनः आकाश सिधारे * राम कुटि के तट पग धारे ॥
दिव्य यान में हो असवारा * सिर करन रघुवर पग धारा।
सीता लखन लिये हरि साथा * संग जटायु धार्मिक भ्राता ॥
अन्य-अन्य कई स्थान निहारे * बड़े बड़े कानन पग धारे।
कानन देख राम खुश भारे * आगे चले मुदित मन धारे ॥

दोहा

लंक पयाला अधि पति * खर नामे भूपाल ।
स्वरूपनखा अर्द्धगनी * सुन्दर रूप रसाल ॥४१५॥

चौपाई

तिन का शम्बुक सुगर कुमारा * विद्या साधन को उस वारा ।
सूर्य हस खड्ग साधन को * विद्या मन में आराधन का ॥
दण्डकवन में शम्बुक आया * वृक्ष विपिन शुचि ध्यान लगाया॥
क्रौंच नदी के जाय किनारे * वंश बिटप के लिये सहारे ॥
भूमि शुद्ध देखी उस वारी * शुद्धात्मा अति ब्रह्मचारी ।
पग बाँध ह वंश की डाली * औंधा मुख कर लटका डाली॥
बारह बरस चार दिन बीते * तीन दिवस में हो मन चीते॥
समय सुविधा सिद्ध का आया * सूर्य हस खड्ग समझाया ॥

दोहा

लखन विपिन में घूमते * आ निकले उस ठाम ।
वंश बिट में हो रहा * सुंदर तेज ललाम ॥४१६॥

चौपाई

लखन तज [illegible] यह अगाड़ी * झाड़ी लिया उठाकर काड़ी ।
शस्त्र अपूर्व [illegible] दुलरायी * मन परीक्षा मन में आया ॥
वंश जाल पर [illegible] चलाई * रुण्ड धार दृष्टि में आई ।
आगे बढ़ कर तुरत निहारा * शीश धरन पड़नाया भारा ॥
[illegible] कारण [illegible] मारा * यह अनर्थ हुआ अति भारा ।
यह [illegible] शरीर निहारा * लक्ष्मण मन सुमन विचारा ॥
[illegible] * राम [illegible] सत्कारी ।
[illegible] * [illegible] समझाई ॥

[illegible]

[illegible]

साम्बे को आकर लिया * तुम ने हाथ बढ़ाय ॥४१७॥

चौपाई

स्वरूपनखा ने समय निहारा * विद्या सिद्धि सुमन विचारा ।
पूजा पानी अन्न अनूपा * लेकर चली विपिन शुभ रूपा ॥
शीश पड़ा भूमि पर पाया * देख शीश मन आरत छाया ।
किसने आकर यह छल कीना * सोच बहुत अपने मन दीना ॥
धस्स-सस्स कर रुदन मचाया * मन में अपने क्रोध बढ़ाया ।
भूमि पर पग चिन्ह निहारे * आई लखती चिन्ह सहारे ॥
आकर देखे सीता रामा * देख राम भई आतुर कामा ।
काम बाण हृदय में लागे * आरत सोच सुमन से भागे ॥

दोहा

देखा आकर राम को * तजा भेष विकराल ।
शोभायुत सुन्दर सुगर * धारा रूप रसाल ॥४१८॥

चौपाई

नाग कन्यका के अनुमाना * सुन्दर रूप स्वरूप सुहाना ।
स्वरूपनखा रघुवर तट आई * देख राम मूरत हुलसाई ॥
भद्रे सुनो लगाकर काना * कैसे हुआ इस वन में आना ।
दारुण दण्डक अरण्य निदाना * यम राजा के भद्र समाना ॥
सुन कर उत्तर देने लागी * बात बना मन कहने लागी ।
अवयन्ती नृप मेरा ताता * कहूँ आप सन्मुख सब बातां ॥
खेचर मुझ को हर कर लाया * दण्डक वन में लाय टिकाया ।
देख मुझे विद्याधर दूजा * पहिला विद्याधर लख धूजा ॥

दोहा

बोले ऐ रूपाम कर * सुन मूरख नादान ।
रसनहार जिम धीश से * लड़े तुरत असमान ॥४१९॥

चौपाई

ऐसे ही यह विप तू लाया * काल तेरा मैं बन कर आया ।
युद्ध हुआ दानों में भारा * शस्त्रों का होता झनकारा ॥
भिड़ मत्त गजराज समाना * दोनों लड़ वे दीमा प्राणा ।
तब से इधर उधर मैं डार्लू * मानुष नहीं परस किससे बोलूं ॥
मार्ग में मनमिश सुनाऊं * किससे कहूं कहां मैं जाऊं ।
आज आपके दर्शन पाये * हृदय में आनन्द मनाये ॥
करो कामना मेरी पूरी * जो मैं बनूं भाग्य की मूरी ।
मरे साथ विवाह तुम कीजे * विनय धार मेरी चित्त लीजै ॥

दोहा

महापुरुष के निकट जा * करे प्रार्थना कोय ।
उस याचक की याचना * कभी वृथा नहीं होय ॥४२०॥

चौपाई

सुन कर बात क्रिया विचारा * पुरुषियाम राम मन धारा ।
लक्ष्मण राम प्रम नयनन से * कहा परस्पर शुभ बैनन से ॥
माया की क्रिया यह कोई * या नाटकमी होई कोई ।
कूट कपट कर छलन आई * रिझा रही नाटक दिखलाई ॥
हास्य सहित रघुवर कहे बैना * सुन बाह क्रिया की हे मा ।
मैं हूँ क्रिया सहित सुजाना * स्त्री रहित लखन बलधामा ॥
निकट आप लक्ष्मण के जाओ * उनको मन का मता सुनाओ ।
बाला लक्ष्मण के तट जा के * रही अपनी सु विनय सुना के ॥

दोहा

उत्तर लक्ष्मण ने दिया * सुना लगा कर कान ।
मन में खूब विचार सा * लख-नाथ कहैं बयान ॥४२१॥

चौपाई

प्रथम पूज्य भ्राता पर धाई * उन पर नियत आय डिगाई।
मुझ को तुम हो पूज्य समाना * सुनो वचन अब धर के ध्याना॥
ऐसी बात न मुझे सुनाओ * आप राम भ्राता पर जाओ।
देख याचना खंडित भारी * अपमानित मन किया विचारी॥
रूप भयंकर कर के धाई * जनक सुता पर आ धुधियाई।
लक्ष्मण देख क्रोध अति धारा * खाँडा तुरत म्यान से काढ़ा॥
नाक विहीन करन मन धाया * राम तुरत लक्ष्मण समझाया।
त्रिया पर नहीं हाथ उठावें * जो सच्चे क्षत्री कहलावें॥

दोहा

कर निशान प्रथक करी * भ्राता आज्ञा मान ।
धक्के देकर विपिन से * दी निकाल रीस आन ॥४२२॥

चौपाई

चक पयाला तुरत सिधारी * खर के सम्मुख आय पुकारी।
शम्बुक का सिर खण्डित कीना * नाक निशान मेरा कर दीना।
सुन कर क्रोध किया अति भारी * सेना तुरत सजाई सारी।
खेचर संग में चौद हजारा * खर ले अपने संग सिधारा॥
दण्डक वन में घेरा आ के * मार-मार रहे वचन सुना के।
पर्वत पिण्डित के हित जैसे * खर आता चस चढ़ के ऐसे॥
लखा राम ने दल को आते * राम तुरत उठ धनुप उठाते।
देख लखन ने धनुप उठाया * अनुशासन भ्राता से पाया॥

दोहा

आज्ञा दीजे बन्धु अब * कीजे नहीं विचार ।
मैं निभर की सैन को * करूँ छिनक में छार ॥४२३॥

चौपाई

जीतो सेना रिपु की आके * वैरी को दो तुरत भगा के ।
अ सहायता अपनी आओ * सिंहनाद कर तुरत बुलाओ ॥
मैं हर समय तुम्हारे पासा * सुन कर शब्द राखो विश्वासा ।
लक्ष्मण धनुष उठा कर चाले * भू भूधर सब थर-थर हाले ॥
माघ सैन लख कर के आया * हाथ लक्ष्मण ने धनुष उठाया ।
की टंकार गगन थर्राया * खेचर दल में भय आ छाया ॥
जैसे गरुण व्याल को मारे * मार खेचरन भू पर डारे ।
दल मार खेचर घबराये * इत उत देख भागना चाये ॥

दोहा

भागी है रण से तुरत * गई लंक दरम्यान ।
रावण नृप से जाय के * किया हाल सब ब्यान ॥४२७॥

चौपाई

लखन राम दो पुरुष अजाने * दण्डक वन आये हैं स्याने ।
खर भानजा को उनने मारा * चिन्ह नाक मेरी पर डारा ॥
तब खरनाद चढ़ कर धाया * जाकर उनसे युद्ध मचाया ।
चौदह हजार खेचर अति बाँके * जा रण में अधिक लड़ाके ॥
उन सब कर लखन संग्रामा * अभी अकेला रण के धामा ।
चल कर आप उन्हें सर कीजे * रण भू में चल कर पग दीजे ॥
रावण कहे कौन यह बाता * दोनों सैन्य संग हो आता ।
दो मनुष्यों पर मैं क्या आऊँ * क्या बल पौरुष उन्हें दिखाऊँ ॥

दोहा

शूर्पणखा ने आय कर * चली दूसरी चाल ।
सीता की तारीफ से * कर दीना पामाल ॥४२८॥

चौपाई

राम सिया संग करे विलासा * लक्ष्मण का उसको विश्वासा।
सीता सुन्दर अधिक अनूपा * लावण्यता की सीम स्वरूपा॥
सुरी-नरी नहीं है कोई समाना * दूजी तिय पर रूप न आना।
असुरों की तिय दासी योगा * उसे लेन का कर उद्योगा॥
तीन लोक नहीं सुंदर ऐसी * अकथनीय यह सिय है जैसी।
वाणी वरन करें क्या उसका * रूप सिन्धु उमड़ा है उसका।
जितने रत्न आपके होता * स्त्री रत्न हो तेरे निकेता।
यदि उसे तू प्राप्त कर लावे * तो तू मन वाँछित फल पावे॥

दोहा

सुन कर यह सुन्दर वचन * रावण कर के ध्यान।
आकर तुरत सवार हो * बैठा पुष्पक यान॥४२६॥

चौपाई

दिया विमान उड़ा असमाना * चला तुरत वमी स्थान समाना
बैठे लखे राम को वन में * भय व्यापा रावण के मन में॥
रावण देख दूर हो जाता * अग्नि देखी जिम सिंह डराता।
चित्त में रावण रहा विचारी * कैसे हरूँ यह सुन्दर नारी॥
तेजवान नर इसके तीरा * सन्मुख इस के बन्धे न धीरा।
अवलोकन विद्या उर धारी * निज मन में दशकंठ निहारी॥
पूर्वार्द्ध रामायण यह सारी * 'चौथमल' कहे आनंद कारी।
अब उत्तरार्द्ध सुगर मम लाओ * शील सु महिमा हृदय जमाओ॥

* पूर्वार्द्ध रामायण समाप्तम् *

उत्तरार्द्ध

आदर्श रामायण

उत्तरार्द्ध

दोहा
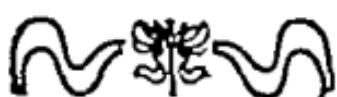
श्री वाणी भगवती को * बार बार सिर नाय ।
रामायण उत्तरार्द्ध में * कंठ विराजो आय ॥४२४॥

गायन

[तर्ज—हो वन्दन करे मात भारती]

प्रेम पय से पदाम्बुज पखारती * हो दया माता न रूप निहारती ॥
वीतराग वेमान प्यार मकरे * आगम जिन्हें है पुकारते ।
दान शील तप भावना * प्यारे जो पुप हृदय में धारते ॥
दान दया से हया से मया से * पूरण सु प्रेम प्रचारती ॥ हो० ॥
तप तो हो काया से भावना भावे * शास्त्र की महिमा बताओ ।
चञ्चलता चित को थिर कर दिखाओ * आँखें की धार चलाओ ॥
प्रीति व रीति से वालकी नीतिसे * 'चौथमल'उतारे है आरती हो०

दोहा

सहज अगम से निकलना * सागर करना पार ।
सर्प खिलाना सहज है * कठिन शील आचार ॥४२५॥

चौपाई

अविलोकम विद्या उर धारी * निज मन में दश कंठ समारी ।
हुई उपस्थित विद्या आ के * रावण के सम्मुख तब धा के ॥

रावण देख हर्ष अति पाया * विद्या को यह वचन सुनाया।
कारज आज सार तू मेरा * इस कारण किया स्मरण तेरा ॥
पूरा काज आज तू कर दे * आशा से मम गोदी भर दे।
तेरे सनमुख कुछ न काजा * तुझ से कहें लंकपति राजा ॥
इस कारण ही तुझ को साधा * बहुत परिश्रम से आराधा ।
कारज पूरण करो हमारा * तेरा ही अब यहाँ सहारा ॥

दोहा

साता के हर सैन में * कर सहायता आय ।
यह मैं तुझ से चाहता * बतला कोई उपाय ॥४२६॥

चौपाई

विद्या कहे सुनो दे काना * काज नहीं यह आप समाना।
शील रत्न को मत गँवाओ * गये रत्न को पुन नहीं पाओ ॥
होय शील स अमल सुमीरा * व्याल माल हो दैन सुधीरा।
बाघ शील स होय बिलाई * सकट सारे जायें पलाई ॥
उन्सय होय विप्र अम्याना * दुर्जन होय सज्जन समाना ।
[illegible] होय तालाय सुखारा * अटवी महल होय सुख सारा॥
निदक हो उपमा क लायक * शील से हो भूप हो निज पायक
शीलवान् क जे ज [illegible] कार * होय सदा आनंद सु मारे ॥

दोहा

धन चित्त पाये नहीं * क्षण क्षण छीजे देह ।
धन्य रहे मित यारयें * जिन पर तिय से नेह ॥४२७॥

चौपाई

ऐसा भूप मत अनुचित कामा * इससे होय जगत बदनामा ।
सतियों माहिं शिरोमणी सीता * शीलवती व्रतवती पुनीता ॥
चिन्ता मत हृदय महिं लावे * साता बिन नहिं मन सुख पावे

राम सामने सीता कैसे * आय सहि कोई कारण ऐसे ॥
सर्प मणी को सुर्लभ लेना * दुर्लभ राम निकट पग देना।
सुरपति भी नहिं सके उठाई * राम सामने सीता आई ॥
तुम को एक उपाय बताऊँ * लछमण का संकेत जताऊँ।
सिंहनाद का वचन सुनाया * सो रावण के मन में भाया॥

दोहा

दशकधर आज्ञा करी * सिंहनाद कर जाय ।
लछमण की आवाज हो * सुन ले श्रवण लगाय ॥४२८॥

चौपाई

कीना जाके विद्या माया * लछमण सदृश काज को साधा।
सुन आवाज चौंके रघुराई * लछमण को सके कौन हराई ॥
कौन मात ऐसा भट जाया * जिसने लछमण वीर हराया।
फूटे खर को खर की तिरिया * यह रघुनाथ कहैं हर विरियां॥
वार वार सुन कर आवाजा * सीता कहै सुनो रघुराजा।
लछमण पे संकट विस्तारे * वार वार यह तुम्हें पुकारे॥
राम कहे सीते समझाऊँ * तुम्हें त्याग मैं कैसे जाऊँ ।
यहाँ निशिचर हैं कपटाचारी * इनका नहिं विश्वास है प्यारी॥

रावण देख हर्ष अति पाया * विद्या को यह वचन सुनाया।
कारज आज सार तू मेरा * इस कारण किया स्मरण तेरा ॥
पूरा काज आज तू कर दे * आशा से मम गोदी भर दे।
तेरे सनमुख कुछ न काजा * तुझ से कहें लंकपति राजा ॥
इस कारण ही तुझ को साधा * बहुत परिश्रम से आराधा ।
कारज पूरण करो हमारा * तेरा ही अब यहाँ सहारा ॥

दोहा

साता के हर लैन में * कर सहायता आय ।
यह मैं तुझ से चाहता * बतला कोई उपाय ॥४२६॥

चौपाई

विद्या कहे सुना द काना * काज नहीं यह आप समाना।
शील रत्न का मती गँवाओ * गये रत्न को पुन नहीं पाओ ॥
होय शील से अनल सुनीरा * व्याल माल हो दैन सुधीरा।
घाव शील स होय विलाई * संकट सारे आयें पलाई ॥
उन्मत होय विप्र अस्थाना * दुर्जन होय सज्जन समाना ।
सिन्धु होय सालाय सुखारा * अटवी महल होय सुख सारा ॥
निदक हो उपमा क लायक * शील से हो भूप हो निज पायक
शीलवान् क जे जै कार * होय सदा आनन्द सु भारे ॥

दोहा

चैन चित्त पावे नहीं * क्षण क्षण छीजै देह ।
चन्द्र रहे नित बावरौं * जिम परतिय से नेह ॥४२७॥

चौपाई

कर भूप मन अनुचित कामा * इससे होय जगत बदनामा ।
मानवी नहि शिरामणी सीता * शीलवती सतवंती पुनीता ॥
गिरा मर हृदय नहि आप * सीता बिन नहि मन सुख पावे

अब तक नहिं कुछ भी बिगड़ा है * क्यों नाहक आय पछताता है।
ऐसा कह वीर जटायु ने * पजों से तुरत प्रहार किया।
दशकंठ भूप अभिमानी का * पल भर में मान उतार दिया॥

दोहा

नाखूनों की तीक्ष्णी * दिया जटायु मार।
उर स्थल दशकठ का * दीना तुरत विदार॥४३१॥

बहर खड़ी

जैसे भूमि कृषक हल से * कारन के हेत चीरता है।
यों पञ्जों से वीर जटायु * यह दिखलाता रहा वीरता है॥
रावण ने दारुण क्रोध किया * अरु खड्ग हाथ में लीना है।
होकर सकोप दशकधर भूप * पक्षी पर वार पुन कीना है॥
बचाय पक्षी ने वार दिया * फिर अपना वार चलाया है।
लीना उतार कर शीश मुकट * अरु भू पर तुरत गिराया है॥
मारा है चपेटा पुनः उड़ कर * मुख घायल तुरत बनाया है।
पीछे नहिं हटता है किंचित * रावण के सन्मुख धाया है॥

दोहा

खड्ग उठा दशकठ ने * कीना पख विहीन।
फड़ फड़ाय कर गिर पड़ा * होय जटायु दीन॥४३२॥

गायन

[तर्ज-कव्वाली]

तुरत रघुनाथजी आकर * बचा लोगे तो क्या होगा॥
निशाचर ने अही मुझ को * छुड़ा लोगे तो क्या होगा॥टेक॥
मुझे मालूम न थी इसकी कि * यह देश प्रपंची है॥
धोका देके ले जाता है * छुड़ा लोगे तो क्या होगा॥१॥

सीता-हरण

दोहा

सीता को तज चल दिये * रण में राम सुजान ।
धनुष बाण ले तुरत ही * पहुँचे रण दरम्यान ॥ ४२९ ॥

बहर खड़ी

दुष्ट समय शुभ समय नहीं देखा * दशग्रीव तुरत उठाया है ।
वनपति को तज छोड़ रघुवर संग्राम भूमि में आया है ॥
जो भविष्य होय वह होय अवश होनी ने रंग दिखाया है ।
देखा है अकेली सीता को दशकंठ सामने आया है ॥
बलात् उठाना चाहता है सीता की नजर घूम आई ।
कर करके राम राम सीता अति दीर्घ सुरों से चिल्लाई ॥
रोती चिल्लाती सीता को दशकंठ विमान बिठाया है ।
जैसे बटमार भागता हो पेसे ही लेकर धाया है ॥

दोहा

रत्न जटायु आ गया * करता हुआ पुकार ।
[illegible] * सीता को इस बार ॥ ४३० ॥

बहर खड़ी।

अब तक नहिं कुछ भी बिगड़ा है * क्यों नाहक आय पछाता है।
ऐसा कह बीर जटायु ने * पञ्जों से तुरत वार किया।
दशकंठ भूप अभिमानी का * पल भर में मान छार किया॥

दोहा

नाखूनों की ताड़णी * दिया जटायु मार ।
उर स्थल दशकंठ का * दीना तुरत विदार ॥४३१॥

बहर खड़ी

जैसे भूमि कृषक हल से * कारन के हेत चीरता है।
यों पञ्जों से बीर जटायु * यह दिखलाता रहा बीरता है॥
रावण ने दारुण क्रोध किया * अरु खड्ग हाथ में लीना है।
होकर सकोप दशकंधर नृप * पक्षी पर वार पुनः कीना है॥
बचाय पक्षी ने वार दिया * फिर अपना वार चलाया है।
लीना उतार कर शीश मुकट * अरु भू पर तुरत गिराया है॥
मारा है चपेटा पुनः उड़ कर * मुख घायल तुरत बनाया है।
पीछे नहिं हटता है किंचित * रावण के सन्मुख धाया है॥

दोहा

खड्ग उठा दशकंठ ने * कीना पक्ष विहीन ।
फड़ फड़ाय कर गिर पड़ा * होय जटायु दीन ॥४३२॥

गायन

[तर्ज-कव्वाली]

तुरत रघुनाथजी आकर * बचा लोगे तो क्या होगा॥
निशाचर ने पकड़ी मुझ को * छुड़ा लोगे तो क्या होगा॥टेक॥
मुझे मालूम न थी इसकी कि * यह वेश प्रपंची है॥
धोखा देके ले जाता है * छुड़ा लोगे तो क्या होगा॥१॥

सीता-हरण

—○:※:○—

दोहा

सीता का तज चल दिये * रण में राम सुजान ।
धनुष बाण ले तुरत ही * पहुँचे रण दरम्यान ॥ ४२१ ॥

बहर खड़ी

कुछ समय कुसमय नहीं देखा * दशाक्षत तुरत उठाया है ।
धनपति की तरह निडर रघुवर * संग्राम भूमि में आया है ॥
जो भविष्य होय वह होय अयश * दोनों ने रण दिखाया है ।
इसी है अकेली सीता को * दशकण्ठ सामने आया है ॥
बलात् उठाना चाहता है * सीता की नजर घूम आई ।
कह करके राम राम सीता * अति दीर्घ सुरों से चिल्लाई ॥
रोती चिल्लाती सीता को * दशकण्ठ विमान बिठाया है ।
जैसे बटमार भागता हो * ऐसे ही लेकर धाया है ॥

दोहा

तुरत जटायु आ गया * करता हुआ पुकार ।
यह जड़ पक्षी से चला * सीता को इस पार ॥ ४२० ॥

बहर खड़ी

जिसतरह भ्रमण पुष्पों की माल * फल समझ स्वान ले जाता है ।
इसी तरह विम राम के यहाँ * से सिय को हरना चाहता है ॥
रथ पास जटायु अब तक है * सीता को नहिं लेजा सकता ।
यह पाप घोर का है, इसको * नहिं स्वार कभी है जा सकता ॥
तू दे उतार सीता जी को * जो अपना भला चाहता है ।

आता है रुदन सिन्धु तट से * इस लिये आन यह पड़ता है।
धोखा दे राम सुलक्ष्मण को * सीता ले आगे बढ़ता है॥
दशकंठ हरण कर सीता को * बैठा विमान जाता दीखे॥
सीता करती जाती है रुदन * वह उसको धमकाता दीखे॥
इसलिये उचित है सीता को * आकर के छुड़वाना चहिये।
लेजाकर अपने संग तुरत * रथनुपुर पहुँचाना चहिये॥

दोहा

ऐसा सोच विकट सुभट * लीना खड्ग निकाल।
दाँत पीस दशकंठ पर * टूटा है तत्काल॥४३४॥

बहर खड़ी

तलवार खींच कर रत्नजटा * रावण के ऊपर टूटा है।
जिस तरह मृगेश गजेन्द्रों पर * दशकंठ का मन भय लूटा है॥
देखा है रत्नजटा आते हा * रावण मन में मुसकाया है।
विद्या बल से उसकी सारी * विद्या को छीन गिराया है॥
जैसे हो पक्षी पक्ष रहित * वही गति उस की कर डाली।
विद्या विहीन कर पटक दिया * अपने सिर से आफत टाली॥
कम्बू गिरि पर गिर गया तुरत * लाचार होय कर रहन लगा।
वह रत्नजटी भय से मन का * मारग छुप कर गहन लगा॥

दोहा

बैठा जाय विमान में * मारग ले आकाश।
पार समुद्र कर रहा * देखा कर के स्यास॥४३५॥

बहर खड़ी

उस समय सिया से कहन लगा * कामिन तू मान कहा मेरा।
खेचर भूधर का स्वामी है * यह दास बना चाहे तेरा॥

चिड़िया को पकड़ ले बाज * इस मानिंद करी उसने ।
अरे इस नीच पापी को * हटा दोगे तो क्या होगा ॥२॥
सुनो लक्ष्मण मेरे देवर * तुम्हारी भाभी पर आकर ।
पड़ी आफत बड़ी भारी * मिटा दोगे तो क्या होगा ॥३॥
दयालु कोई दया करके * मेरी तकलीफ की बातें ।
अभी आराम प आकर * सुना दोगे तो क्या होगा ॥४॥
तन से ज़ेवर गिराती हूँ * माना इस बोझ को पाकर ।
मुझे निराधार को आधार * बँधा दोगे तो क्या होगा ॥५॥
'चौथमल' कह सुनो सज्जन * सिया रो रो पुकारे है ।
कोई रघुनाथ से मुझ को * मिला दोगे तो क्या होगा ॥६॥

तरह खड़ी

पुष्पक विमान दशकधर ने * ऊँचा आस्मान उड़ाया है।
पूरण कर तुरत मनोरथ को * अति शीघ्र गमन कर धाया है॥
सीता पुकारती जाती है * रोती चिल्लाती जाती है ।
आकाश धरती को क्रन्दन से * तुरत रूलाती जाती है ॥
लक्ष्मण देवर सग्राम तजो * आकर के मुझे छुड़ाओ तुम ।
हे राम कहीं पर जो हो यदि * निशिचर से आन बचाओ तुम ॥
भामडल वीर कहाँ तुम हो * जाता है लिये यह सीता को ।
अरु पूज्य पिता जी बचाय * इस अपनी सुता सु सीता को॥

दोहा

मनक पड़ा है कान में * रत्नजटी के आय ।
खेचर मन सोचन लगा * निज मन में अकुलाय ॥४३३॥

पहर खड़ी

यह रुदन राम-पत्नी का है * ऐसा विचार मन में किया ।
यह शब्द किधर से आता है * इसके ऊपर फिर ध्यान दिया॥

आता है यवन सिन्ध तट से * इस लिये जान यह पड़ता है।
धोखा दे राम सुलक्ष्मण को * सीता ले आगे बढ़ता है ॥
दशकंठ हरण कर सीता का * बैठा विमान आता दीखे ॥
सीता करती जाती है रुदन * यह उसको धमकाता दीखे ॥
इसलिये उचित है सीता का * आकर के छुड़वाना चहिये।
लेआकर अपने संग तुरत * रथनुपुर पहुँचाना चहिये ॥

दोहा

ऐसा सोच विकट सुभट * लीना खड्ग निकाल।
दाँत पीस दशकंठ पर * टूटा है तत्काल ॥४३४॥

बहर खड़ी

तलवार खींच कर रत्नजटा * रावण के ऊपर टूटा है।
जिस तरह मृगेश गजेन्द्रों पर * दशकंठ का मन भय छूटा है ॥
देखा है रत्नजटा आता हो * रावण मन में मुसकाया है।
विद्या बल से उसकी सारा * विद्या को छीन गिराया है ॥
जैसे हो पक्षी पंख रहित * वही गति उस की कर डाली।
विद्या विहीन कर पटक दिया * अपने सिर से आफत टाली ॥
कम्बू गिरि पर गिर गया तुरत * लाचार होय कर रहने लगा।
यह रत्नजटी भय से बन का * मारग छुप कर गहन लगा ॥

दोहा

बैठा आय विमान में * मारग ले आकाश।
पार समुंदर कर रहा * देखा कर के ख्यास ॥४३५॥

बहर खड़ी

उस समय सिया से कहन लगा * कामिन तू मान कहा मेरा।
खेचर भूचर का स्वामी है * यह दास बना चाहे तेरा ॥

चिड़िया को पकड़ ले बाज * इस मानिंद पकड़ी उसने ।
अरे इस नीच पापी को * हटा दोगे तो क्या होगा ॥२॥
सुनो लक्ष्मण मेरे देवर * तुम्हारी भाभी पर आकर ।
पड़ी आफत बड़ी भारी * मिटा दोगे तो क्या होगा ॥३॥
दयालु कोई दया करके * मेरी तकलीफ की बातें ।
अभी आराम पे जाकर * सुना दोगे तो क्या होगा ॥४॥
तन से ज़ेवर गिराती हूँ * आना इस खोज को पाकर ।
मुझे निराधार को आधार * बँधा दोगे तो क्या होगा ॥५॥
चौथमल कह सुनो सज्जन * सिया रो रो पुकारे है ।
कोई रघुनाथ से मुझ को * मिला दोगे तो क्या होगा ॥६॥

बहर खड़ी

पुष्पक विमान दशकधर ने * ऊँचा असमान उड़ाया है।
पूरण कर सुरस मनोरथ को * अति शीघ्र गमन कर धाया है॥
सीता पुकारती जाती है * रोती चिल्लाती जाती है ।
आकाश धरती को क्रन्दन से * तुरत रुलाती जाती है ॥
लक्ष्मण देवर सग्राम तजो * आकर के मुझे छुड़ाओ तुम ।
हे राम कहीं पर जो हो यदि * निशिचर से प्रान बचाओ तुम ॥
भामण्डल वीर कहाँ तुम हो * आता है लिये यह सीता को ।
अरु पूज्य पिता सर्जि बचाय * इस अपनी सुता सु प्रीता को ॥

दोहा

मनक पड़ा है कान में * रत्नजटी के आय ।
खेचर मन सोचन लगा * निज मन में अकुलाय ॥४२२॥

बहर खड़ी

यह रुदन राम-पत्नी का है * ऐसा विचार मन में किया ।
यह शब्द किधर से आता है * इसके ऊपर फिर ध्यान दिया ॥

पति की तरियां से मान मुझे * मेरा कहना सरसार करो ॥
अब खास आपका सुन भामिन * वशकठ भूप हो आयेगा ।
सारे खेचर देवारियों पर * फिर तब शासन जम आयेगा ॥
यह शब्द सुनाये रावण ने * निज शीश चरण में रख दीना ।
हर तरह रहा परचा उनको * हृदय में भाव यही कीना ॥
सीता ने अन्य पुरुष लख कर * अपने युग पैर हटा लीने ।
मुख पर कर क्रोध दिया उत्तर * सम्बोधन शब्द कटुक कीने ॥

गायन

[तर्ज—न इधर के रहे न उधर के रहे]

अरे जुल्मी क्यों जुल्म पे वान्धे कमर ।
सतियों का सताना अच्छा नहीं ॥

जरा मन में सोच क्या इसमें मजा ।
दिल किस का जलाना अच्छा नहीं ॥ टेक ॥

मेरे रुप को देख आशिक हुआ ।
आकबत का जरा भी न ख्याल किया ॥

तेरे हाथों से मुँह को क्यों तू काला करे ।
यह पाप विसाना अच्छा नहीं ॥ १ ॥

न भला हुआ न होगा कभी ।
परनारी पे तूने जो ध्यान दिया ॥

रहे दूर न हाथ इधर को तू ला ।
धर्म किसी का घटाना अच्छा नहीं ॥ २ ॥

पूर्व पाप किया जिस से छूटे पिया ।
उस गम से भी शाद न हुआ जीया ॥

कर जोड़ी कहूँ प्रभु ऐसा समय ।
दुश्मन के भी सर आना अच्छा नहीं ॥ ३ ॥

तू पटरानी पद को पाकर अब * सब पर हुक्म चलावेगी।
कर कर के रुदन वृथा अपने * मन को विह्वल कर डालेगी॥
तज शोक हरष कर बात करो * इस से ही सुख तुम को होगा।
मैं विनय कर रहा हूँ तेरी * कुछ इस पर असर जरा होगा॥
वह मन्द भाग्य वाला रघुवर * जिस से तेरा विधि संग किया।
अनुचित यह जान मैंने भामिन * सबंध तुम्हारा तोड़ दिया॥

दोहा

उचित कृत मैंने किया * दिल में करो विचार।
करो प्रेम मुझ से प्रिया * अपने मन हित धार॥४३९॥

गायन

[तर्ज–बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है]

प्रिया मानो तेरे बोले * नहीं दिल को करारी है।
कहे रावण जरा तो देख * क्या मरजी तुम्हारी है॥टेर॥
अठारह सहस्र मम रानी * करूँगा सब में पटरानी।
मान ले बात सुखदानी * तेरी ही इतजारी है॥१॥
देखो लंका की अब बहार * पहिनो मणि मोतियों का हार।
सजो दिल चाहे सो सिंगार * सब हाजिर तैयारी है॥२॥
फसी आ मेरे कब्जे में * कहीं अब जा नहीं सकती।
मर मिजाज के आगे * क्या ताकत तुम्हारी है॥३॥
राम लक्ष्मण तो वनवासी * नहीं संग फौज जिनके है।
देख ले राजमहल मेरा * खड़ी कैसी सवारी है॥४॥
कहे यों चौथमल स्वामी * तजो व्यभिचार की बातें।
मगर जो थी सती सच्ची * तो रह गई बात सारी है॥५॥

महर सती

या रावण ! दान को सेवा में * अब तो अपनी स्वीकार करो।

मन्त्री सारण आदि बहु * आ पहुँचे बलवान ॥४३८॥

बहर खड़ी

देखा है सग सिया को जब * सामत किया उत्सव भारी।
उत्साही साहसी बल धारी * प्रियवच अधिपती सुखकारी॥
नन्दनवन के अनुमान विपिन * लंका में पूरव दिश प्यारा।
सुर क्रीड़ा स्थल के से समान * सीता को जाकर, बैठारा॥
खेचरों का रमणी जहाँ रमण * कर रमण रात दिन करती थीं।
नाना प्रकार के सुख भोगें * सुखमय आयुप मम धरती थीं॥
उस देव रमण उपवन में आ * सीताजी को ठहराया है।
इक अरुण अशोक विटप नीचे * बैठा कर मन हुलसाया है॥

दोहा

बैठी हैं सीता सती * तल अशोक के आन।
शोक सहित श्री जानकी * मस्तक धर के पान॥४३६॥

बहर खड़ी

उस समय सिया ने नियम किया * सूचना न जब तक पाऊँगी।
श्री राम लखन की क्षेम कुशल * मिल जाय तो भोजन खाऊँगी॥
जब तक नहिं समाचार मुझको * श्री राम लखन का मिले कहीं।
तब तक नहिं भोजन पान करूँ * जब तक हृदय नहिं खिले कहीं॥
भेज दिनी रावण ने रक्षिका * त्रिजटा आदि सुखमारी सी।
निश दिवस पास रहने वाली * बहु पहर रखें रखवारी सी॥
यह बन्दोबस्त कर दशकधर * अपने महलों को धाया है।
मन्दोदरी आदि सुन्दरी जहाँ * उस ही मदिर में आया है॥

दोहा

लक्ष्मण के तट रामजी * करके शीघ्र पयान।
आये देखा भ्रात को * करता युद्ध महान॥४४०॥

चाहे चाँद हो गर्म या शीत रवि।
समुद्र मर्याद भी भङ्ग करे॥
तो भी मन तो गिरियस् सुलता नहीं।
नाहक दिल ललचाना अच्छा नहीं॥ ४॥

क्या मजाल जो कोई मेरा शील हने।
मुझे मरन का खौफ ज़रा भी नहीं॥
मैं तो अच्छे के लिये जिताती तुझे।
दाग कुल के लगाना अच्छा नहीं॥ ५॥

यह काम हराम बदनाम करे।
अर मान कहा अरे मान कहा॥
कहे चौथमल समझाय सिया।
नहीं ध्यान में लाना अच्छा नहीं॥ ६॥

दोहा

याली है सीता सुगर, कर के क्रोध महान्।
लपट पन का अब तुझे जल्दी होगा भान॥४३७॥

बहर खड़ी

लम्पट तुल कपट तेरा अब ~ सब आगे तेरे आ जायेगा।
निठुर्या निलज्ज निर्दया तू ~ फल इसका जल्दी पा जायेगा॥
पतिव्रता कामना का तुझ को ~ फल मृत्यु हो कर मिल जाये।
यह कभी नहीं हो सकता है ~ बिन भान के पङ्कज खिल जाये॥
यह सुन कर रावण कहन लगा ~ मेरा रूप तेज निहार ज़रा।
मैं भान मे ज्यादा तेजवन्त ~ ले देख तु मन में धार ज़रा॥
क्या मान मतवारी हुई तेरी ~ सुगनू मे पुष्प खिलाता है।
कामान्ध मूर्ख मति हीन साथ ~ पाताल से भाग मिलाता है॥

दोहा

आखर ठहरा लङ्क में ~ पुण्य पापुयान।

मत्री सारण आदि यहु * आ पहुँचे यलवान ॥४३८॥

बहर खड़ी

देखा है संग सिया को जय * सामत किया उत्सव भारी।
उत्साही साहसी यल धारी * वियग्रह अधिपती सुखकारी॥
नन्दनवन के अनुमान विपिन * लंका में पूरब दिश प्यारा।
सुर क्रीड़ा स्थल के से समान * सीता को जाकर बैठारा॥
खेचरों की रमणी जहाँ रमण * कर रमण रात दिन करती थीं।
नाना प्रकार के सुख भोगें * सुख मय आयुष सम धरती थीं॥
उस देव रमण उपवन में जा * सीताजी को ठहराया है।
इक अरुण अशोक विटप नीचे * बैठा कर मन हुलसाया है॥

दोहा

बैठी हैं सीता सती * तल अशोक के आन।
शोक सहित श्री जानकी * मस्तक धर के पान ॥४३६॥

बहर खड़ी

उस समय सिया ने नियम किया * सूचना न जय तक पाऊँगी।
श्री राम लखन की क्षेम कुशल * मिल जाय तो भोजन खाऊँगी॥
जब तक नहिं समाचार मुझको * श्री राम लखन का मिले कहीं।
तब तक नहिं भोजन पान करूँ * जब तक हृदय नहिं खिले कहीं॥
भेज दिनी रावण ने रक्षिका * त्रिजटा आदि सुखमारी सी।
निश दिवस पास रहने वाली * बहु पहर रखे रखवारी सी॥
यह बन्दोबस्त कर दशकधर * अपने महलों को धाया है।
मन्दोदरी आदि सुन्दरी जहाँ * उस ही मंदिर में आया है॥

दोहा

लक्ष्मण के तट रामजी * करके शीघ्र पयान।
आये देखा भ्रात को * करता युद्ध महान ॥४४०॥

बहर खड़ी

लक्ष्मण लखा निकट राम ✱ अपने मुख से शुभ शब्द उचारा है
हे भ्रात वधु ! तुम क्यों आये ✱ यह क्या चित बीच विचारा है ॥
इस निर्जन वन में सीता को ✱ किस तरह अकेली तज आये।
क्या कारण ऐसा था भ्राता ✱ जो पास दास के भज आये ॥
सुन सिंहनाद तेरा लक्ष्मण ✱ आया सहायता करने को ।
हर तरह सहायक हूँ तेरा ✱ संकट तुम पर से हरने को ॥
नहीं सिंहनाद मैंने कीना ✱ प्रपंच किसी ने धारा है ।
पाछे जाओ अति शीघ्र आप ✱ धोखा इस में अति भारा है ॥

दोहा

हत यश कर सदार मैं ✱ आता हूँ तत्काल ।
आप पधारो शीघ्र अति ✱ देखो जाकर हाल ॥४४१॥

बहर खड़ी

इस सिंहनाद के होने से निश्चय धोखा हो जाता है ।
देखो जा शीघ्र जानकी को मेरे मन ऐसा आता है ॥
कहीं सीता हरने के कारण कपटी ने कपट चलाया हो ।
यह कर कुमन्त्रणा धोखे से इस कारण तुम्हें हटाया हो ॥
इस सिवा इस में मुझ को नहीं कारण और दरसता है ।
मालूम यहां तो पड़ता है सीता का त्याग सरसता है ॥
यह सुन रघुवर ने कुटिया का स्थान शून्य दिखलाया है ।
सीता नहीं नजर पड़ी हरि के लख कर मन में घबराया है ॥

बहर खड़ी

उठ कर फिर इधर उधर देखा * सीता का पता न पाया है।
सीता सीता कह दी अवाज * आगे को चरन बढ़ाया है॥
जब रक्त से राजित भू देखी * तो मन में भरम समाया है।
है पक्ष विहीन दीन पन में * भू पड़ा जटायु पाया है॥
लख कर यह दशा जटायु की * रघुवर ने मन अनुमान किया।
सीता का हरण हुआ अलबत्त * निश्चय यह मन म ध्यान किया
जिसने सीता का हरण किया * उसने पक्षी को मारा है।
इसने सामना किया होगा * इससे इस को संहारा है॥

दोहा

सीमा है कर उठा के * पक्षी को तत्काल।
महामन्त्र नवकार का * शरण दिया है हाल ॥४४३॥

बहर खड़ी

तत्काल ही मर कर यह पक्षा * चौथे सुरलोक सिधारा है।
सत् संगत मिलने से उसका * जग से हुआ निस्तारा है॥
हर तरफ देखते सीता को * सीता का पता न पाता है।
कर-कर सीता की याद राम * मन में अपने घबराता है॥
कर रहे संग्राम उधर लक्ष्मण * बल निशाचरों का संहारा।
खर को कर पीछे रण भू से * त्रिशिरा सम्मुख आ ललकारा॥
फिर रामानुज ने त्रिशिरा के * हृदय से मान निकाला है।
मानिन्द् पतंगिये के उस को * क्षण भर में भू पर डाला है॥

दोहा

सैना को ले संग में * आया तुरत विराध।
चन्द्रोदर का सुत चतुर * करता कारज साध ॥ ४४४ ॥

बहर खड़ी

लक्ष्मण लखा निकट राम * अपने मुख से शुभ शब्द उचारा है
हे भाय बधु ! तुम क्यों आये * यह क्या चित बीच विचारा है ॥
इस निर्जन बन में सीता को * किस तरह अकेली तज आये।
क्या कारण ऐसा था आता * जो पास दास के भज आये ॥
सुन सिंहनाद तेरा लक्ष्मण * आया सहायता करने का।
हर तरह सहायक हूँ तेरा * संकट तुझ पर से हरने को ॥
नहीं सिंहनाद मैंने कीना * प्रपञ्च किसी ने धारा है।
पाछे जाओ अति शीघ्र आप * धोखा इस में अति भारा है ॥

दोहा

दल बल कर संहार मैं * आता हूँ तत्काल।
आप पधारो शीघ्र अति * देखो आकर हाल ॥४४१॥

बहर खड़ी

इस सिंहनाद के होने से * निश्चय धोखा हो आता है।
दगा आ शीघ्र जानकी का * मेरे मन ऐसा आता है ॥
कहिं सीता हरन के कारण * कपटी ने कपट चलाया हो।
यह कर कुमन्त्रण भ्रात तुम्हें * इस कारण तुम्हें हटाया हो ॥
इस धोखा दन में मुझ को * नहिं कारन और दरसता है।
मालुम यहां सा पड़ता है * सीता का म्योग सरसता है ॥
यह सुन रघुबर ने कूँच किया * स्थान शून्य दिखलाया है।
सीता नहिं नजर पड़ी हरि के * लख कर मन में घबराया है ॥

दोहा

मन घबराये रामजी * देखा नयन पसार।
जनक सुता दीखे नहीं * धाई राम पुकार ॥४४२॥

बहर खड़ी

उठ कर फिर इधर उधर देखा * सीता का पता न पाया है।
सीता सीता कह दी अवाज * आगे को चरन बढ़ाया है॥
जब रक्त से रंजित भू देखी * तो मन में भरम समाया है।
है पक्ष विहीन वान वन में * भू पड़ा जटायु पाया है॥
लख कर यह दशा जटायु की * रघुवर ने मन अनुमान किया।
सीता का हरण हुआ अलबत्त * निश्चय यह मन में ध्यान किया
जिसने सीता का हरण किया * उसने पक्षी को मारा है।
इसने सामना किया होगा * इससे इस को संहारा है॥

दोहा

सीना है कर उठा के * पक्षी को तत्काल।
महामन्त्र नवकार का * शरण दिया है डाल ॥८४३॥

बहर खड़ी

तत्काल ही मर कर यह पक्षी * चौथे सुरलोक सिधारा है।
सत् संगत मिलने से उसका * जग से हुआ निस्तारा है॥
हर तरफ देखते सीता को * सीता का पता न पाता है।
कर-कर सीता की याद राम * मन में अपने घबराता है॥
कर रहे संग्राम उधर लक्ष्मण * चल विद्याधरों का संहारा।
खर को कर पीछे रण भू से * त्रिशिरा सम्मुख आ ललकारा॥
फिर रामानुज ने त्रिशिरा के * हृदय से प्राण निकाला है।
मानिन्द पतंगिये के उस को * क्षण भर में भू पर डाला है॥

दोहा

सेना को ले संग में * आया तुरत विराध।
चन्द्रोदर का सुत चतुर * करता कारज साध ॥ ८४४ ॥

बहर खड़ी

लक्ष्मण को नमस्कार कर के * श्रद्धायुत शब्द सुनाये हैं।
मैं आपके शत्रु का शत्रु * ऐसे लक्ष्मण समझाये हैं॥
अब युद्ध की आज्ञा दो मुझ को * मैं तुमरा दास कहाऊँगा।
बिन आपके अनुशासन स्वामी * नहिं पग भी कहीं उठाऊँगा॥
हँस कर के रामानुज बाल * सन्मान विलोको हँस-हँस कर।
संहार करूँ शत्रु दलों का * रह जाय रिपु सब फस-फँस कर
हैं दश भ्रात स्वामी तेरे * तू उनका दास कहावेगा।
अब लंक पयाला का मालिक * लक्ष्मण मुझ को बनवायेगा॥

दोहा।

खर खिसियाना हो गया * लख विराध को पास।
व्याकुल होकर तुरत * लेता लम्बी साँस॥ ४४५॥

बहर खड़ी

धनु पर चिल्ले को चढ़ा लिया * अरु ऐसा वचन उचारा है।
विश्वासघात की तू ने ही * शम्बुक कुमार को मारा है॥
रण ल विराध को अब तू क्या * कुछ रक्षित होना चाहता है।
इसकी सहायता ले कर के * कुछ अपना खोना चाहता है॥
उत्तर लक्ष्मण हँस कर दिया * क्यों इतना कोप जनाता है।
मालूम हुआ तू शम्बुक को * जल्दी से देखा चाहता है॥
त्रिशिरा ना पास मतलि के * आकर के खुश होता होगा।
अनि दप-दप मुख धूम-धूम * उसकी सूरत जोता होगा॥

दोहा

तू भी जो जाना चहे * शंबुक के यदि पास।
ना मैं पहुँचा दूँ तुझ * मत मन करे उदास॥ ४४६॥

बहर खड़ी

पैरों के नीचे आकर के * जैसे कीड़ा मर जाता है।
बस ही कुतुहल के वश हो * शम्बुक भी जान गँवाता है॥
कीड़ा प्रहार से तेरा सुत * मरने का सकट उठा गया।
कुछ पराक्रम उसमें नहीं था * जिसका कुकृत्य है फला गया॥
अपने को सुभट समझता है * सुभटों से अय पाने वाले।
रण कौतुक देख जरा मेरा * कर में घनु चमकाने वाले॥
लक्ष्मण पर सर तीक्ष्ण छोड़ * वर्षा वाणों की वर्षाई।
प्रहार किये अति शक्तिमान * भुजबल की शक्ति दिखलाई॥

दोहा

लक्ष्मण ने भी हजारों * छोड़े बाण कराल।
चले लप-लपाते तुरत * जैसे विषधर व्याल॥४४७॥

बहर खड़ी

छोड़े हैं बाण कराल लखन * आच्छादित असमान किया।
या मार्तण्ड के आगे आ * आवरण व्याल गण ने दिया॥
इस प्रकार युद्ध होता कराल * जिम व्याल हला हल छोड़े हैं।
खेचर गण देख देख सगर * रण से मुख अपना मोड़े हैं॥
मारा है बाण तान कर के * खर का धड़ से सिर दूर किया
पड़ गई खेचरों में हलचल * ऐसा रण चकनाचूर किया॥
दूषण सेना को ले कर के * लक्ष्मण के सम्मुख आन डटा
जिस तरह बाल क्रीड़ा करते * दूषण का ऐसे शीश कटा॥

दोहा

विजय युद्ध करके चले * लीना संग विराध।
चले रामजी के निकट * अपने मन को साध॥४४८॥

बहर खड़ी

जय विजय युद्ध करके लौटे * तो वाया नेत्र फड़कता था।

यह हाल देख लक्ष्मण सर ले * मैदान जंग में आये हैं।
देखा जब नाहर को आते * गीदड़ सारे दहलाये हैं॥
लक्ष्मण को लख कर सूर्पनखा * अपने सुत को समझाय दिया।
रावण की शरणे जा बेटा * यह सुत से अनुशासन किया॥

दोहा

सुत वचन सुन मात के * सूर्पनखा के साथ।
लंक पयाला में गया * राम लखन युग भ्रात॥४५५॥

बहर खड़ी

मिल कर के लंक पयाला में * पहुँचे हैं राम लखन दोनों।
देखा पताल लंका को जा * वतराते संग सखन दोनों॥
फिर राज पै लंक पयाला के * हरि ने विराध बैठाया है।
उसके कर मनोभाव पूरे * लख कर लक्ष्मण हर्षाया है॥
खर के महलों में आनन्द स * रहते हैं लखन राम दोनों।
युवराज तरह रहता है सुत * करते हैं सुगर धाम दोनों॥
भेजे विराध ने विद्याधर * सीता की खोज लगाने को।
हर तरफ सुभट दौड़े फिरते * मंगल आनंद सुनाने को॥

दोहा

उधर सिद्ध विद्या भई * साहस गति की आय।
प्रतारणी विद्या प्रबल * सिद्ध करत हुलसाय॥४५६॥

बहर खड़ी

सुंदर सुकंठ का रूप बना * आकाश के मारग धाया है।
करने को मनोभाव पूरा * किष्किंधा के तट आया है॥
मानिंद चोर के छुपा रहा * जब तक शुभ समय न पाया है।
उस समय तलक देखा रस्ता * घन में दिन रात्र गंवाया है॥
लख कर बसंत का शुभ समय * सुग्रीव कानन क्रीड़ा धाया।

यह हाल देख लछमण सर ले * मैदान जंग में आये हैं।
देखा जब नाहर को आते * गीदड़ सारे वहलाये हैं॥
लछमण को लख कर सूर्पनखा * अपने सुत को समझाय दिया।
रावण की शरणे जा बैठा * यह सुत से अनुशासन किया॥

दोहा

सुत वचन सुन मात के * सूर्पनखा के साथ।
लंक पयाला में गया * राम लखन युग भ्रात ॥४५५॥

बहर खड़ी

मिल कर के लंक पयाला में * पहुँचे हैं राम लखन दोनों।
देखा पताल लंका को आ * बतराते खग खगम दोनों॥
फिर राज पै लंक पयाला के * हरि ने विराध बैठाया है।
उसके कर मनाभाव पूरे * लख कर लछमण हर्षाया है॥
खर के महलों में आनन्द से * रहते हैं लखन राम दोनों।
युवराज तरह रहता है सुत * करते हैं सुगम धाम दोनों॥
भेजे विराध ने विद्याधर * सीता की खोज लगाने को।
हर तरफ सुभट दौड़े फिरते * मंगल आनंद सुनाने को॥

दोहा

उधर सिद्ध विद्या भई * साहस गति की आय।
प्रतारणी विद्या प्रबल * सिद्ध करत हुलसाय ॥४५६॥

बहर खड़ी

सुंदर सुग्रीव का रूप बना * आकाश के मारग धाया है।
करने को मनोभाव पूरा * किष्किंधा के तट आया है॥
मानिंद चोर के छुपा रहा * जब तक शुभ समय न पाया है
उस समय तलक देखा रस्ता * वन में दिन-रात गँवाया है॥
लख कर बसत का शुभ समय * सुग्रीव करन क्रीड़ा धाया।

इक लाख नव सहस पैदल हों * पुन साढ़े तीन सौ ऊपर हों।
दो लाख वसु सहस तीस और * कुल योग सु सख्या भू पर हो ॥

दोहा

होती है इतनी सुनो * इक अक्षोहणी सेन।
चौदह थी अक्षोहणी * दल भूपत के पेन ॥४५६॥

बहर खड़ी

जयवन्त दृष्टि आकर डाली * दोनों को इक सा पाया है।
नहिं किसी बात में अंतर है * ऐसा छल रूप बनाया है ॥
दोनों का बल अजमाने को * मन में एक मता उपाया है।
दोनों का मल्ल युद्ध अपने * मन में करवाना चाया है ॥
नहिं हार मानता है कोई * दोनों अति वीर झुझारे हैं।
साचा तो साँचा रहता है * आखिर झूँठ झकमारे हैं ॥
कलु हस हस एक रग हैं * सूरत मूरत सब इक सी है।
मोती अरु मीन मिलाने से * खुल जाय मगर यह कैसी है ॥

दोहा

हर प्रकार कर जाँच को * मत्री और नृपाल।
नहीं होय यह परीक्षा * किया बहुत सा खयाल ॥४६०॥

बहर खड़ी

लाकर के काँच मणी दोनों * देखो तो चमक मारती हैं।
लखता परखैया आकर के * तो नकल चमक बिसारती है ॥
कर ख्याल काग अरु कोयल पर * हैं दोनों रग समान सुधर।
विकसित ऋतुराज होय जिस दम * हो जाय परीक्षा शुभ सुन्दर॥
मत्री ने कर विचार मन में * समझाया है युवराजा को ।
दो भाग में सेन अब करके * नियटा दें तुरत अकाजा को ॥
सात अक्षोहणी युगल पक्ष को * देकर के युद्ध करा देंगे ।

चिड़िया को पकड़ ले बाज * इस मानिन्द करी उसने।
अरे इस नीच पापी का * हटा दोगे तो क्या होगा ॥२॥
सुनो लक्ष्मण मेरे देवर * तुम्हारी भाभी पर आकर।
पड़ी आफत यही भारी * मिटा दोगे तो क्या होगा ॥३॥
दयालु कोई दया करके * मेरी सब लीला की बातें।
अभी आराम पे जाकर * सुना दोगे तो क्या होगा ॥४॥
तन से जेवर गिराती हूँ * आना इस खोज को पाकर।
मुझे निराधार को आधार * बँधा दोगे तो क्या होगा ॥५॥
'चौथमल' कहे सुनो सज्जन * सिया रो रो पुकारे है।
कोई रघुनाथ से मुझ को * मिला दोगे तो क्या होगा ॥६॥

तरह खड़ी

पुष्पक विमान दशकधर ने * ऊँचा अस्मान उड़ाया है।
पूरण कर तुरत मनोरथ को * अति शीघ्र गमन कर धाया है॥
सीता पुकारती जाती है * रोती चिल्लाती जाती है।
आकाश धरती को रुदन से * तुरत रूलाती जाती है॥
लक्ष्मण देवर सग्राम तजो * आकर के मुझे छुड़ाओ तुम।
हे राम कहीं पर जो हो यदि * निशिचर से आन बचाओ तुम॥
भामण्डल वीर कहाँ तुम हो * जाता है लिये यह सीता को।
अरु पूज्य पिता जी बचाय * इस अपनी सुता सु प्रीता को॥

दोहा

जनक पड़ा है कान में * रत्नजटी के जाय।
खेचर मन सोचन लगा * निज मन में अकुलाय ॥४३३॥

तरह खड़ी

यह रुदन राम-पत्नी का है * ऐसा विचार मन में किया।
यह शब्द किधर से आता है * इसके ऊपर फिर ध्यान दिया॥

आता है रथन सिन्ध तट से * इस लिये आन यह पड़ता है।
धोखा दे राम सुलक्षमण को * सीता ले आगे बढ़ता है ॥
दशकंठ हरण कर सीता का * बैठा विमान आता दीखे ॥
सीता करती जाती है रुदन * यह उसको धमकाता दीखे ॥
इसलिये उचित है सीता का * जाकर के छुड़वाना चाहिये ।
लेजाकर अपने संग तुरत * रथनुपुर पहुँचाना चाहिये ॥

दोहा

ऐसा सोच विकट सुभट * लीना खड्ग निकाल ।
दाँत पीस दशकंठ पर * टूटा है तत्काल ॥४३४॥

बहर खड़ी

तलवार खींच कर रत्नजटा * रावण के ऊपर टूटा है।
जिस तरह मृगेश गजेन्द्रों पर * दशकंठ का मन भय लूटा है ॥
ऐसा है रत्नजटा भ्रात था * रावण मन में मुसकाया है।
विद्या बल से उसकी सारा * विद्या को क्षान गिराया है ॥
जैसे हो पंछी पंख रहित * यही गति उस की कर डाली।
विद्या विहीन कर पटक दिया * अपने सिर से आफत टाली ॥
कम्बू गिरि पर गिर गया तुरत * लाचार होय कर रहन लगा।
वह रत्नजटी भय से धन का * मारग छुप कर गहन लगा ॥

दोहा

बैठा आय विमान में * मारग ले आकाश ।
पार समुद्र कर रहा * देखा कर के क्यास ॥४३५॥

बहर खड़ी

उस समय सिया से कहन लगा * कामिन तू मान कहा मेरा।
खेचर भूचर का स्वामी है * यह दास बना चाहे तेरा ॥

तू पटरानी पद को पाकर अब ❁ सब पर हुक्म चलायेगी।
कर कर के रुदन वृथा अपने ❁ मन को विह्वल कर डालेगी॥
तज शोक हरष कर बात करो ❁ इस से ही सुख तुम को होगा।
मैं विनय कर रहा हूँ तेरी ❁ कुछ इस पर असर ज़रा होगा॥
वह मंद भाग्य वाला रघुवर ❁ जिस से तेरा विधि संग किया।
अनुचित यह जान मैंने भामिन ❁ सबध तुम्हारा तोड़ दिया॥

दोहा

उचित छल मैंने किया ❁ दिल में करो विचार।
करो प्रेम मुझ से प्रिया ❁ अपने मन हित धार ॥४३६॥

गायन

[तर्ज़—बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है]

सिवा सीता तेरे बोले ❁ नहीं दिल को करारी है।
कहे रावण ज़रा तो देख ❁ क्या मरज़ी तुम्हारी है ॥टेर॥

अठारह सहस्र मम रामा ❁ करूँगा सब में पटरानी।
मान ले बात सुलतानी ❁ तेरी ही इंतज़ारी है ॥ १ ॥

देखो लंका की अब बहार ❁ पहिनो मणि मोतियों का हार।
सजो दिल चाहे सो सिंगार ❁ सब हाज़िर तैयारी है ॥ २ ॥

फँसी आ मेरे कब्ज़े में ❁ कहीं अब जा नहीं सकती।
मेरे मिज़ाज के आगे ❁ क्या ताकत तुम्हारी है ॥ ३ ॥

राम लछमण तो बनवासी ❁ नहीं संग फौज जिनके है।
देख ले राजदल मेरा ❁ बड़ी कैसी सवारी है ॥ ४ ॥

कहे यों 'चौथमल' ज्ञानी ❁ तजो व्यभिचार की बातें।
मगर जो थी सती सच्ची ❁ सो रह गई बात सारी है ॥५॥

बहर खड़ी

ओ देवि ! दास की सेवा में × अब तो अपनी स्वीकार करो।

पति की वतियों से मान मुझे * मेरा कहना सरसार करो ॥
अब दास आपका सुन भामिन * दशकंठ भूप हो जायेगा ।
सारे खेचर खेचरियों पर * फिर तब शासन जम जायेगा ॥
यह शब्द सुनाये रावण ने * निज शीश चरण में रख दीना ।
हर तरह रहा परथा उनको * हृदय में भाय यही कीना ॥
सीता ने अन्य पुरुष लख कर * अपने युग पैर हटा लीने ।
मुख पर कर क्रोध दिया उत्तर * सम्बोधन शब्द कटुक कीने ॥

गायन

[तर्ज-न इधर के रहे न उधर के रहे]

अरे ज़ुल्मी क्यों ज़ुल्म पे बान्धे कमर ।
सतियों का सताना अच्छा नहीं ॥
ज़रा मन में सोच क्या इसमें मज़ा ।
दिल किस का जलाना अच्छा नहीं ॥ टेक ॥

मेरे रूप को देख आशिक हुआ ।
आक़बत का ज़रा भी न ख्याल किया ॥
तेरे हाथों से मुँह को क्यों तू काला करे ।
यह पाप दिखाना अच्छा नहीं ॥ १ ॥

न भला हुआ न होगा कभी ।
परनारी पे तूने जो ध्यान दिया ॥
रहे दूर न हाथ इधर को तू ला ।
धर्म किसी का घटाना अच्छा नहीं ॥ २ ॥

पूर्व पाप किया जिस से छूटे पिया ।
उस गम से भी शाद न हुआ जीया ॥
कर जोड़ी कहूँ प्रभु ऐसा समय ।
दुश्मन के भी घर आना अच्छा नहीं ॥ ३ ॥

चाहे चाँद हो गर्म या शीत रवि।
समुद्र मर्याद भी भङ्ग करे॥
तो भी मन तो गिरिवत् डुलता नहीं।
नाहक दिल ललचाना अच्छा नहीं॥ ४॥

क्या मजाल जो कोई मेरा शील हने।
मुझे मरने का खौफ जरा भी नहीं॥
मैं तो अच्छे के लिये जिताती तुझे।
दाग कुल के लगाना अच्छा नहीं॥ ५॥

यह काम हराम यदनाम करे।
अरे मान कहा अरे मान कहा॥
कहे 'चौथमल' समझाये सिया।
नहीं ध्यान में लाना अच्छा नहीं॥ ६॥

दोहा

बोली है सीता सुनर कर के क्रोध महान्।
लपट पन का अब तुझे जल्दी होगा मान॥४३७॥

छन्द खड़ी

लम्पट छल कपट तेरा अब सब भाग तेरे आ जायेगा।
निर्दयी निलज्ज निर्दया तू फल इसका जल्दी पा जायेगा॥
परत्रिया कामना का तुझ को फल मृत्यु हो कर मिल जाये।
यह कभी नहीं हो सकता है बिन मान के [illegible] मिल जाय॥
यह सुन कर रावण कहन लगा मेरा तप तेज निहार जरा।
मैं मान न त्यागूं तदपन्त [illegible] मन में धार जरा॥
क्यों मानी मनधारी हुई सती सुग्रीव [illegible] गिराता है।
कामान्ध मूर्ख मति हीन [illegible] मान मिटाता है॥

दोहा

जा कर ठहरा बाग में [illegible] पायेगा।

मन्त्री सारण आदि यहु * आ पहुँचे वलवान ॥४३८॥

वहर खड़ी

देखा है सग सिया को जब * सामत किया उत्सव भारी।
उत्साही साहसी बल धारी * त्रियखग्ड अधिपती सुखकारी॥
नदनवन के अनुमान विपिन * लका में पूरब दिश प्यारा।
सुर क्रीड़ा स्थल के से समान * सीता का जाकर बैठारा॥
खेचरों का रमणी जहाँ रमण * कर रमण रात दिन करती थीं।
नाना प्रकार के सुख भोगें * सुख मय आयुष मन धरती थीं॥
उस देव रमण उपवन में जा * सीताजी को ठहराया है।
इक अरुण अशोक विटप नीचे * बैठा कर मन हुलसाया है॥

दोहा

बैठी हैं सीता सती * तल अशोक के आन।
शोक सहित थी जानकी * मस्तक धर के पान ॥४३९॥

बहर खड़ी

उस समय सिया ने नियम किया * सूचना न जब तक पाऊँगी।
श्री राम लखन की क्षेम कुशल * मिल जाय तो भोजन खाऊँगी॥
जब तक नहिं समाचार मुझको * श्री राम लखन का मिले कहीं।
तब तक नहिं भोजन पान करूँ * जब तक हृदय नहिं खिले कहीं॥
भेज दिनी रावण ने रक्षिका * त्रिजटा आदि सुखमारी सी।
निश दिवस पास रहने वाली * वसु पहर रखें रखवारी सी॥
यह बदोबस्त कर दशकधर * अपने महलों को धाया है।
मन्दोदरी आदि सुन्दरी जहाँ * उस ही मदिर में आया है॥

दोहा

लछमण के तट रामजी * करके शीघ्र पयान।
आये देखा भ्रात को * करता युद्ध महान ॥४४०॥

बहर खड़ी

लक्ष्मण लखा निकट राम * अपने मुख से शुभ शब्द उचारा है
हे भ्रात बन्धु ! तुम क्यों आये * यह क्या चित बीच विचारा है॥
इस निर्जन बन में सीता को * किस तरह अकेली तज आये।
क्या कारण ऐसा था भ्राता * जो पास हमारे के भज आये॥
सुन सिंहनाद तेरा लक्ष्मण * आया सहायता करने का।
हर तरह सहायक हूँ तेरा * संकट तुझ पर से हरने को॥
नहीं सिंहनाद मैंने कीना * मपञ्च किसी ने धारा है।
पाछे जाओ अति शीघ्र आप * धोखा इस में अति भारा है॥

दोहा

खल बध कर सहार मैं * आता हूँ तत्काल।
आप पधारो शीघ्र अति * देखो जाकर हाल॥४४१॥

बहर खड़ी

इस सिंहनाद के होने से * निश्चय धोखा हो जाता है।
देखो जा शीघ्र जानकी को * मेरे मन ऐसा आता है॥
कहिं सीता हरने के कारण * कपटी ने कपट चलाया हो।
यह कर कुमन्त्रण भ्रात सुनो * इस कारण तुम्हें हटाया हो॥
इस धोखा देने में मुझ को * नहिं कारन और दरसता है।
मालूम यही तो पड़ता है * सीता का वियोग सरसता है॥
यह सुन रघुवर ने कूँच किया * स्थान शून्य दिखलाया है।
सीता नहिं नजर पड़ी हरि के * लख कर मन में घबराया है॥

दोहा

मन घबराये रामजी * देखा नयन पसार।
जनक सुता दीखे नहीं * पाई राम पछार॥४४२॥

बहर खड़ी

उठ कर फिर इधर उधर-देखा * सीता का पता न पाया है।
सीता सीता कह थी अवाज * आगे को चरन बढ़ाया है॥
अब रक्त से रंजित भू देखी * तो मन में भरम समाया है।
है पक्ष विहीन क्षत तन में * भू पड़ा जटायु पाया है॥
लख कर यह दशा जटायु की * रघुवर ने मन अनुमान किया।
सीता का हरण हुआ अलबत्त * निश्चय यह मन में ध्यान किया
जिसने सीता का हरण किया * उसने पक्षी को मारा है।
इसने सामना किया होगा * इससे इस को सहारा है॥

दोहा

सीना है कर उठा के * पक्षी को तत्काल।
महामंत्र नवकार का * शरण दिया है डाल॥४४३॥

बहर खड़ी

तत्काल ही मर कर यह पक्षा * चौथे सुरलोक सिधारा है।
सत् संगत मिलने से उसका * जग से हुआ निस्तारा है॥
हर तरफ देखते सीता को * सीता का पता न पाता है।
कर-कर सीता की याद राम * मन में अपने घबराता है॥
कर रहे संग्राम उधर लक्ष्मण * वह निशाचरों का सहारा।
खर को कर पीछे रण भू से * त्रिशिरा सम्मुख आ ललकारा॥
फिर रामानुज ने त्रिशिरा के * हृदय से मान निकाला है।
मानिन्द पतंगिये के उस को * क्षण भर में भू पर डाला है॥

दोहा

सैना को ले संग में * आया तुरत विराध।
चन्द्रोदर का सुत चतुर * करता कारज साध॥४४४॥

बहर खड़ी

लक्ष्मण को नमस्कार कर के * भरतानुज शब्द सुनाये हैं।
मैं आपका शत्रु का शत्रु * कह लक्ष्मण समझाये हैं॥
अब गुरुवर की आज्ञा से मुझ को * मैं तुम्हरा दास कहाऊँगा।
बिन आपके अनुशासन स्वामी * नहिं पग भी कहीं उठाऊँगा॥
हँस कर के रामानुज बोले * शाबाश विलाको हँस-हँस कर।
संहार करूँ शत्रु दलों का * रह जब रिपु सब फँस-फँस कर॥
हैं बड़े भ्रात स्वामी तेरे * तू उनका दास कहावेगा।
अब लंक पताका का मालिक * लक्ष्मण तुझ को बनवावेगा॥

दोहा

खर खिसियाना हो गया * राम विराध को पास।
मायासुर होकर तुरत * लेता लम्बी साँस॥ ४४८॥

बहर खड़ी

धनु पर चिल्ले को चढ़ा लिया * अरु ऐसा वचन उचारा है।
विश्वासघात की तू ने ही * शम्बुक कुमार को मारा है॥
सब से विराध को अब तू क्या * कुछ रक्षित होना चाहता है।
इसकी सहायता ले कर के * सुख अपना खोना चाहता है॥
उत्तर लक्ष्मण हँस कर दिया * क्यों इतना कोप जनाता है।
मालूम हुआ तू शम्बुक को * जल्दी से देखा चाहता है॥
त्रिशिरा तो पास भतीजे के * जाकर के खुश होता होगा।
अति हर्ष-हर्ष मुख चूम-चूम * उसकी सूरत जोता होगा॥

दोहा

तू भी जो जाना चहे * शम्बुक के अति पास।
तो मैं पहुँचा दूँ तुझे * मत मन करे उदास॥ ४४९॥

बहर खड़ी

परों के नीचे आकर के * जैसे कीड़ा मर जाता है ।
बस ही कुतुहल के वश हो * शम्बुक भी जान गँवाता है ॥
कीड़ा प्रहार से तेरा सुत * मरने का सकट उठा गया ।
कुछ पराक्रम उसमें नहीं था * जिसका कुकृत्य है फला गया ॥
अपने को सुभट समझाता है * सुभटों से जय पाने वाले ।
रण कौतुक देख जरा मेरा * कर में धनु चमकाने वाले ॥
लक्ष्मण पर खर तीक्षण छोड़ * वर्षा बाणों की वर्षाई ।
प्रहार किये अति शक्तियान * भुजबल की शक्ति दिखलाई ॥

दोहा

लक्ष्मण ने भी हजारों * छोड़े बाण कराल ।
चले लप-लपात तुरत * जैसे विषधर व्याल ॥४८७॥

बहर खड़ी

छोड़े हैं बाण कराल लखन * आच्छादित असमान किया ।
या मार्तण्ड के आगे आ * आवरण व्याल गण ने किया ॥
इस प्रकार युद्ध होता कराल * जिम व्याल हला हल छोड़े हैं ।
खेचर गण देख देख सगर * रण से मुख अपना मोड़े हैं ॥
मारा है बाण तान कर के * खर का धड़ से सिर दूर किया
पड़ गई खेचरों में हलचल * ऐसा रण चकमाचूर किया ॥
दूषण सेना को ले कर के * लक्ष्मण के सन्मुख आन डटा
जिस तरह बाल क्रीड़ा करते * दूषण का ऐसे शीश कटा ॥

दोहा

विजय युद्ध करके चले * लीना संग विराध ।
चले रामजी के निकट * अपने मन को साध ॥४८८॥

बहर खड़ी

जय विजय युद्ध करके लौटे * तो बायां नेत्र फड़कता था ।

उठती थीं हिलोरें दुरा-दुरी * और हृदय-कमल तड़फता था॥
यह असुगन लक्ष्मण के मन से * धीरजता को अब खोन लगी।
सिया अरुरामके लिये अशुभकी * मन में शंका होन लगी ॥
बैठे हैं राम अकेले ही * नहीं जनक-सुता है पास सुनो।
लक्ष्मण विचित्र स्थिति से रह * उठ गए हृदय से आश सुनो॥
सन्मुख हो गये अबे आ के * रघुवर न दृष्टि उठाई ना।
वन सारा सब शोकातुर था * औरों की खुशी सुहाई ना॥

दोहा

ऊँचा आनन कर रह * रघुवर करन विचार।
सीता को मैं ढूँढ़ता * घूमा विपिन मझार॥४४६॥

बहर खड़ी

पाया है नहिं पता सिया का * दुख दिया विधाता ने भारी।
वन देवी और वन देव कहीं * आ दृष्टि पड़ी वो कहो सारी॥
मैं गया जानकी को तज के * इस महा भयकर जगल में।
लक्ष्मण के पास तुरत पहुँचा * उस वीर युद्ध के दगल में॥
उस को भी उस रण में छोड़ा * दौड़ा पुनः इस वन में आया।
बहुतेरा इधर उधर ढूंढा * पर पता सिया का नहिं पाया॥
बुद्धि राम हुआ कैसा * सीता को छोड़ दिया वन में।
लक्ष्मण भ्राता को छोड़ दिया * आ विकट भयकर उस रन में॥

दोहा

इस प्रकार कहते हुये * राम हुये बे होश।
मूर्छित हो गिरने लगे * भूमी पे कर घोष ॥४५०॥

बहर खड़ी

उस समय दुख रघुवर का लख * वन का आरत होता था।
पशु क्रन्दन करते थे वन में * लख लख कर धीरज खोता था॥

यह हाल देख लक्ष्मण बोला * भ्राता तुम यह क्या करते हो।
खर को जीत यहाँ मैं आया * क्यों आरत मन धरते हो ॥
विजय शब्द कानों में आये * राम नैन जब खोले हैं।
धन धन लक्ष्मण तुम बलधारी * वचन यह मुख से बोले हैं।
फिर कंठ लखन को लगा लिया * मुख से हरि वचन उचारा है।
जनक-सुता का पता नहीं है * ऐसे श्री राम पुकारा है ॥

दोहा

लक्ष्मण अस समझा रहे * सुनो भ्रात धर ध्यान।
नाश किया जिसने छला * जनक-सुता को जान ॥४५१॥

बहर खड़ी

अब उसी लपटी कपटी को * सीता समेत मैं लाऊँगा।
आरत को तजो उठो भाई * सीता को लाय दिखाऊँगा ॥
यह वीर विराध खड़ा सन्मुख * मालिक है लंक पयाला का।
चलकर इस को दीजै स्वामी * पालो यह शब्द भुवाला का ॥
इनका चल राज इन्हें दाजे * यह वचन गुरु में दीना था।
इनकी करुणा सुन कर मैंने * आश्वासन इन से कीना था ॥
करुणा निधान करुणा कर के * अब पीर इन्हों की हर लीजे ॥
शरणागति को शरणा दीजै * निज कर से राज तिलक कीजे ॥

दोहा

दीने भेज विराध ने * खेचर चारों ओर।
बैठ विमानों में चले * लगी कठव्य से डोर ॥४५२॥

बहर खड़ी

देखे हैं धन वन सीता को * कहिं उसका पता न पाया है।
गिरि खोह विटप लता को देखी * नहिं चिन्ह नज़र तक आया है ॥
देखे म्हह महल नरेन्द्रों के * पुर नगर ग्राम बस्ती सारी।

जहाँ तक थी उनकी शक्ति सुनो * वहाँ तक कीनी कोशिश भारी॥
सब देख ढ़ेढ़ कर हार गये * कहीं उसका पता नहीं पाया।
खेचर दल बैठ विमानों में * निज स्वामी के सन्मुख आया॥
नीचा मुख कर सब खड़े हुये * नहिं ऊँची दृष्टि उठाई है।
क्या दें जवाब सोचें सब * हा लज्जा ने लिया दबाई है॥

दोहा

किया काम तुमने बड़ा * बोले राम सुजान।
यथा शक्ति शक्ती लगा * रखा बीयाबान॥४५३॥

बहर खड़ी

कुछ नहीं दोष तुमारा बीरो * है होनहार बलवान बड़ी।
विपरीत विधाता जब होता * विपता होती है आन खड़ी॥
यह सुन विराध कर जोर कहे * स्वामी मत सोच करो मन में।
कुछ सोच करे से लाभ नहा * यों कब तक पड़े रहो बन में॥
हर समय आप की सेवा को * कर जोड़ दास खड़ा रहेगा।
खबर विराध सब कहता है * हर दम यह पास खड़ा रहेगा॥
अब लंक पयाला को चलिये * सीता की खबर मँगाऊँगा।
भेजूँगा सुभट सवार कहीं * काह और देखने जाऊँगा॥

दोहा

राम लखन विराध सग * लंक पयाला पास।
सैन सहित आकर टिके * देखा कर के बयास॥४५४॥

बहर खड़ी

सैन लेकर खर का नंदन * झट त्यारी करके आया है।
यह सुन धीर करने को युद्ध * सन्मुख विराध के धाया है॥
हुवा है युद्ध खूब डट के * योद्धा कट-कट कर गिरते हैं।
मदमस्त भिड़ कुंजर से कुंजर * रण से पीछे नहिं फिरते हैं॥

यह हाल देख लक्ष्मण सर से * मैदान जंग में आये हैं।
देखा जब नाहर को आते * गीदड़ सारे घबराये हैं॥
लक्ष्मण को लख कर सूर्पनखा * अपने सुत को समझाय दिया।
रावण की शरणे आ बेटा * यह सुत से अनुशासन किया॥

दोहा

सुत वचन सुन मात के * सूर्पनखा के साथ।
लंक पयाला में गया * राम लखन युग भ्रात॥४५५॥

बहर खड़ी

मिल कर के लंक पयाला में * पहुँचे हैं राम लखन दोनों।
देखा पताल लंका को जा * यतराते संग सजन दोनों॥
फिर राज पै लंक पयाला के * हरि ने विराध बैठाया है।
उसके कर मनाभाव पूरे * लख कर लक्ष्मण हर्षाया है॥
खर के महलों में आनन्द से * रहते हैं लखन राम दोनों।
युवराज तरह रहता है सुत * करते हैं सुगर धाम दोनों॥
भेजे विराध ने विद्याधर * सीता की खोज लगाने को।
हर तरफ सुभट दौड़े फिरते * मंगल आनंद सुनाने को॥

दोहा

उधर सिद्ध विद्या भई * साहस गति की आय।
मतारणी विद्या प्रबल * सिद्ध करत हुलसाय॥४५६॥

बहर खड़ी

सुन्दर सुकंठ का रूप बना * आकाश के मारग धाया है।
करने को मनोभाव पूरा * किष्किंधा के तट आया है॥
मानिंद चोर के छुपा रहा * अब तक शुभ समय न पाया है
उस समय तलक देखा रस्ता * बन में दिन-रात गँवाया है॥
लख कर बसंत का शुभ समय * सुग्रीव करन क्रीड़ा धाया।

साहसगति समय पाय सुन्दर * सुग्रीव के महलों में आया ॥
तारा का रूप देख सुन्दर * खुश होता अरु हुलसाता है।
हिम्मत कुछ टूटी जाती थी * पकड़े में भी घबराता है ॥

दोहा

देखे तारा को हर्ष * मन ही मन ललचाय ।
तब तक नृप सुग्रीव जी * महलों में गय आय ॥४५७॥

बहर खड़ी

लख कर दरवान चकित हुआ * हृदय के बीच विचारा है ।
भूपति को आय समय थोड़ा * यह नकली रूप निहारा है ॥
ऐसा विचार दरवान तुरत * रोका है नृप को जाने से ।
महाराज पधारे महलों में * तुम दीखो रूप बनाने से ॥
यह सुना हाल वाली सुत ने * काकी के महलों में जा के ।
कपटी सुग्रीव निकाल दिया * मन में अत्यन्त गुस्सा खा के ॥
महलों के ताले जड़ दीने * किया विलम्ब नहिं एक पल का
पहरे पर आप खड़े हुये * लखने को दृश्य सु छल बल का॥

दोहा

वाली का सुत अति बली * प्रबल न बल का अन्त ।
द्वारपाल बन द्वार पर * खड़ हुये बलवन्त ॥ ४५८ ॥

बहर खड़ी

तारा की सुन्दरताई लख * सुरगाई भी शरमाती थी।
तारा प्रत्यक्ष मोहनी थी * रंभा रति रूप लजाती थी ॥
चौदह अक्षौहणी दल जिन के * ऐसा सुग्रीव भुवाला था।
प्रभुता अपार का पार नहीं * अद्भुत शक्ति बलवारा था ॥
दस सहस आठ सौ गज जिस में * तीस सहस आठ सौ सत्तर रथ
छप्पन हजार घोड़ सवार * आज्ञा में चलत व रत पथ ॥

इक लाख नव सहस पैदल हों * पुन साढ़े तीन सौ ऊपर हों।
दो लाख वसु सहस तीस और * कुल योग सु संख्या भू पर हो॥

दोहा

होती है इतनी सुनो * इक अक्षोहणी सेन।
चौदह थी अक्षोहणी * दस भूपत के ऐन ॥४५६॥

बहर खड़ी

जयवन्त नृपति आकर वाली * दोनों को इक सा पाया है।
नहिं किसी बात में अंतर है * ऐसा कुल रूप बनाया है॥
दोनों का बल अजमाने को * मन में एक मता उपाया है।
दोनों का मल्ल युद्ध अपने * मन में करवाना चाया है॥
नहिं हार मानता है कोई * दोनों अति वीर जुझारे हैं।
साचा तो साँचा रहता है * आखिर झूँठ झकमारे हैं॥
कलु हंस हंस एक रंग हैं * सूरत मूरत सब इक सी है।
मोती अरु मीन मिलाने से * खुल जाय अथर यह कैसी है॥

दोहा

हर प्रकार कर जाँच को * मन्त्री और नृपाल।
नहीं होय यह परीक्षा * किया बहुत सा ख्याल ॥४६०॥

बहर खड़ी

लाकर के काँच मणी दोनों * देखो तो चमक मारती हैं।
लखता परखया जाकर के * तो नकल चमक बिसारती है॥
कर ख्याल काग अरु कोयल पर * हैं दोनों रंग समान सुगर।
विकसित ऋतुराज होय जिस दम * हो जाय परीक्षा शुभ सुन्दर॥
मन्त्री ने कर विचार मन में * समझाया है युवराजा को।
दो भाग में सैन ख्य करके * नियटा दें तुरत अकाजा को॥
सात अक्षोहणी युगल पक्ष को * देकर के युद्ध करा देंगे।

साहसगति समय पाय सुन्दर * सुग्रीव के महलों में आया ॥
तारा का रूप देख सुन्दर * खुश होता अरु हुलसाता है।
हिंमत कुछ टूटी जाती थी * धड़कत में जी घबराता है ॥

दोहा

देखे तारा को रूप * मन ही मन ललचाय ।
तब तक नृप सुग्रीव जी * महलों में गए आय ॥४४७॥

बहर खड़ी

लख कर दरबान चकित हुआ * हृदय के बीच विचारा है ।
भूपति को आय समय थोता * यह नकली रूप निहारा है ॥
ऐसा विचार दरबान तुरत * रोका है नृप को आने से ।
महाराज पधारे महलों में * तुम यकिो रूप बनाने से ॥
यह सुना हाल बाली सुत ने * काफी के महलों में आ के ।
कपटी सुग्रीव निकाल दिया * मन में जबरदस्त गुस्सा खा के ॥
महलों के ताले जड़ दीने * किया विलम्ब नहिं एक पल का
पहरे पर आप खड़े हुये * लखने को दृश्य सु छल बल का॥

दोहा

बाली का सुत अति बली * प्रबल न बल का अन्त ।
द्वारपाल बन द्वार पर * खड़े हुये बलवन्त ॥ ४४८ ॥

बहर खड़ी

तारा की सुन्दरताई लख * सुरगाई भी शरमाती थी ।
तारा प्रत्यक्ष मोहनी थी * रमा रति देख लजाती थी ॥
चौदह अक्षोहणी दल जिन के * ऐसा सुग्रीव भुवाला था ।
प्रभुता अपार का पार नहीं * अद्भुत शक्ति बलवाला था ॥
दस सहस आठ सौ गज जिस में * तीस सहस आठ सौ सत्तर रथ
छासठ हजार घोड़े सवार * आगा में चलत थे सत पथ ॥

दोहा

तुरत बुला बजरंग को * युद्ध किया पुनः घोर।
समझ सके नहिं तत्त्व को * कौन शाह पुन चोर ॥४६३॥

बहर खड़ी

सोचे हैं चित सुग्रीव नृप१ * अब काम कौन सा करना है।
किस तरह न्याय होगा इसका * किस तरह परन अब परना है॥
बलवत महा बाली जग में * जो था सो सयम धरा है।
अब कौन योग है इस छल के * जो करे आन निपटारा है।
दशकधर अवश बली दीखे * पर छलियापन अति भारा है।
दोनों को मार भगा देगा * ले जाय आन कर सारा है॥
खर दूषर एक बहादुर था * जिसको रघुवर ने हन डारा।
दिया विराध को राज तुरत * न उन्होंने अपना पन हारा॥

दोहा

शरण राम की मैं तुरत * करूँ जाय स्वीकार।
ये ही संकट सिंधु से * कर दें नौका पार ॥४६४॥

बहर खड़ी

सुन कर विराध की विन्ती को * किय लंक पयाला का राजा।
उनकी शरण स्वीकार करूँ * बन जाय सकल मेरा काजा॥
ऐसा विचार सुग्रीव नृपत * विश्वासी दूत बुलाया है।
सब हाल दूत को समझा कर * रघुवर के निकट पठाया है॥
पहुँचा विराध के पास दूत * दीना है हाल सुना सारा।
इस समय सहायक हो आओ * अहसान तुम्हारा हो भारा॥
सुग्रीव भूप को पास मेरे * भेजो तुरत यहाँ से आ के।
उपकारी लछमन राम युगल * उनकी शरणागत लो आ के॥

महाराज हमारे आगे * नगला का अवश्य हुआ संग ॥

दोहा

दोनों में दला हुआ * युद्ध घोर संग्राम ।
लगे पलीता आन कर * पुर के पुरुष तमाम ॥४६१॥

बहर खड़ी

भालों की चोटों से अगनी * झड़ झड़ कर भूमि निकलती थी
करते थे उछल उछल चोटें * हिम्मत वारों का पड़ता था ॥
रथ से रथ हाथी से हाथी भिड़ भिड़ * सवार मन मरने लगे ।
पैदल के पैदल हो सनमुख * तमाम शूर सब करने लगे ॥
सुग्रीव भूप ने नकली को * आकर के सन्मुख ललकारा ।
लम्पटी समर भूमि पै ऐसा * कह कह कर उसको फटकारा ॥
सुन छद्म धर सुग्रीव तुरत * मदा मत्त नाग की तरह चला ।
कर रक्त नैन क्रोधित होकर * रण अटल रहा पग नहीं टला ।

दोहा

दोनों में होने लगा * विकट घोर संग्राम ।
झपटे कृपान के * झननन होय तमाम ॥ ४६२ ॥

बहर खड़ी

दोनों हैं विद्यावान बली * दोनों ही शस्त्र चलैया हैं ।
दोनों हैं खेचर शक्तिवान * दोनों ही मान रखैया हैं ॥
जैसे युग हाथी मत्त होय * आपस में मद मचाते हैं ।
चिंघार मार कर के वन में * वृक्षों को तोड़ गिराते हैं ॥
बस इसी तरह से नृप दोनों * संग्राम विकट अति करते हैं ।
झाड़ हैं शस्त्र समर कर के * पर पीछे चरन न धरते हैं ।
चक्कर में आया आसमान * धरती थर थर थर्राती है ।
दिग्पाल दहसे खड़ हुये * दीग्गज वाले हिल जाती हैं ॥

दोहा

तुरत बुला बजरंग को * युद्ध किया पुनः घोर।
समझ सके नहिं तत्व को * कौन शाह पुन चोर ॥ ४६३ ॥

बहर खड़ी

सोचे हैं चित सुग्रीव नृपत * अब काम कौन सा करना है।
किस तरह न्याय होगा इसका * किस तरह परन अब परना है॥
बलधत महा बाली जग में * जो था सो सयम धरा है।
अब कौन योग है इस छल के * जो करे आन निपटारा है।
दशकघर अयश यली वीखे * पर छलियापन अति भारा है।
दोनों को मार भगा देगा * ले आय आन कर तारा है॥
खर खेचर एक बहादुर था * जिसको रघुवर ने हन डारा।
दिया विराध को राज तुरत * न उन्होंने अपना पन डारा॥

दोहा

शरण राम की मैं तुरत * करूँ जाय स्वीकार।
वे ही संकट सिंधु से * कर दें नौका पार ॥ ४६४ ॥

बहर खड़ी

सुन कर विराध की विन्ती को * किय लंक पयाला का राजा।
उनकी शरण स्वीकार करूँ * बन आय सकल मेरा काजा॥
ऐसा विचार सुग्रीव नृपत * विश्वासी दूत बुलाया है।
सब हाल दूत को समझा कर * रघुवर के निकट पठाया है॥
पहुँचा विराध के पास दूत * दीना है हाल सुना सारा।
इस समय सहायक हो जाओ * अहसान तुम्हारा हो भारा॥
सुग्रीव भूप को पास मेरे * भेजो तुरत यहाँ से आ के।
उपकारी लक्ष्मन राम युगल * उनकी शरणागत लो आ के॥

महाराज हमारे जलेंग ☆ नकला को अवश्य हरा देंग ॥

दोहा

दोनों में होना हुआ ☆ युद्ध घोर समान ।
लगे परीक्षा आन कर ☆ पुर के पुरुष तमाम ॥४८१॥

बहर खड़ी

भालों का चोटों से अगनी ☆ भड़ भड़ कर भूमि निकलती थी
करते थ उछल उछल चोटें ☆ हिंमत यारों का बढ़ता था ॥
रथ स रथ हाथी स हाथी पयपय ☆ सवार मन मरन लगे ।
पैदल के पैदल हो सनमुख ☆ संग्राम शूर सब करन लगे ॥
सुमाव भूप ने नफली को ☆ आकर के सन्मुख ललकारा ।
लम्पटी समर भूमि प देखा ☆ फड़ फड़ कर उसका फटकारा ॥
सुन छुब धप सुमीय तुरत ☆ मस्त मस्त नाग की तरह चला ।
कर रक्त नैन क्रोधित होकर ☆ रण अटल रहा पग नहीं टला ।

दोहा

दोनों में होने लगा ☆ विकट घोर संग्राम ।
कपटे कपास के ☆ झनझन होय तमाम ॥ ४८२ ॥

बहर खड़ी

दोनों हैं विद्यावान बली ☆ दोनों ही शस्त्र चलैया हैं ।
दोनों हैं खेचर शक्तिवान ☆ दोनों ही मान रखैया हैं ॥
जैसे युग हाथी मस्त होय ☆ आपस में युद्ध मचाते हैं ।
चिंघार मार कर के बन में ☆ वृक्षों को तोड़ गिराते हैं ॥
बस इसी तरह से नृप दोनों ☆ संग्राम विकट अति करते हैं ।
छोड़ हैं शस्त्र समर कर के ☆ पर पीछे चरन न धरते हैं ।
चक्कर में आया आसमान ☆ धरती थर थर थर्राती है ।
दिग्पाल देखते चकित हुये दीगगज वाके हिल जाती हैं ॥

दोहा

तुरत बुला बजरंग को * युद्ध किया पुनः घोर।
समझ सके नहिं तत्त्व को * कौन साह पुन चोर ॥ ४६३ ॥

बहर खड़ी

सोचे हैं चित सुग्रीव नृप । * अब काम कौन सा करना है।
किस तरह न्याय होगा इसका * किस तरह परन अब परना है॥
बलवत महा बाली जग में * जो था सो स्वयम धरा है।
अब कौन योग है इस छल के * जो करे आन निपटारा है।
दशकंधर अवश बली दीखे * पर छलियापन अति भारा है।
दोनों को मार भगा देगा * ले जाय आन कर तारा है॥
खर खेचर एक बहादुर था * जिसको रघुवर ने हन डारा।
दिया विराध को राज तुरत * म उन्होंने अपना पन तारा ॥

दोहा

शरण राम की मैं तुरत * करूँ जाय स्वीकार।
वे ही संकट सिंधु से * कर दें नौका पार ॥ ४६४ ॥

बहर खड़ी

सुन कर विराध की विनती को * किय लंक पयाला का राजा।
उनकी शरण स्वीकार करूँ * बन जाय सफल मेरा काजा ॥
ऐसा विचार सुग्रीव नृपत * विश्वासी दूत बुलाया है।
सब हाल दूत को समझा कर * रघुवर के निकट पठाया है॥
पहुँचा विराध के पास दूत * बीता है हाल सुना सारा।
इस समय सहायक हो आओ * अहसान तुम्हारा हो भारा ॥
सुग्रीव भूप को पास मेरे * भेजो तुरत यहाँ से आ के।
उपकारी लक्ष्मन राम युगल * उनकी शरणागत लो आ के ॥

दोहा

राम लखन से आन के * फेर भूप अरदास ।
काम करें नृप का तुरत * दें दुश्मन का त्रास ॥ ४६८ ॥

बहर खड़ी

सब समाचार जाकर तुरत * सुग्रीव भूप को समझाये ।
सुन कर सेना को ले संग में * नृप लंक पयाला को धाये ॥
लेकर विराध को संग नृपत * रघुवर के सन्मुख आये हैं ।
करके प्रणाम राम को सब * मन भाव सकल समझाये हैं ॥
तुम हो पर दुख हरता स्वामी * मेरे भी दुख को हर लीजे ।
मैं दास आपके चरणों का * यह काज प्रभु मेरा कीजे ॥
जिम अथाह सिन्धु में डूबत को * नौका का एक सहारा है ।
बस इसी तरह इस सेवक को * अवलम्ब सु नाथ तुम्हारा है ॥

दोहा

सुन कर कपि-पति के वचन * बोले राम सुजान ।
काज तुम्हारा हो अवश * कीजे मन में ध्यान ॥४६६॥

बहर खड़ी

उत्तम मनुज निज कारज से * पर कारज अच्छा मानते हैं ।
अपने कारज को स्थगित करी * पर कारज करना ठानते हैं ॥
बस इसी तरह से रघुवर ने * सुग्रीव को आश्वासन दिया ।
होकर प्रसन्न हर रीति से * कारज करना स्वीकार किया ॥
पुन सिया हरन के समाचार * कह कर विराध समझाये हैं ।
सुग्रीव भूप ने सुन कर के * हरि को यों वचन सुनाये हैं ॥
हे प्रभु ! मेरे इन वचनों का * अब आप अवश विश्वास करो ।
इन पावन चरनों का मुझ को * हो सके जिस तरह दास करो ॥

दोहा

शत्रु पराजय होत ही * करूँ आपका काज ।

अनुचर हो कर के रहूँ * साजूँ सारे साज ॥४६७॥

बहर खड़ी

पुन लखन राम दोनों भ्राता * किष्किन्धा के तट आये हैं ॥
पुर के बाहर देख मही * आकर के चरन टिकाये हैं ॥
सुग्रीव असल ने आकर के * नकली को पुन ललकारा है।
सुन कर अवाज़ सग्राम हेतु * चट सन्मुख आन दहाड़ा है ॥
द्विज को आलस ना भोजन में * रण में आलस ना वीरों को।
बस इसी तरह से फायरता * होती न कभी रण धीरों को ॥
इस ही प्रकार युग वीरों ने * आकर के युद्ध मचाया है।
मदोन्मत्त करी जैसे भिड़ते * ऐसा ही दृश्य दिखाया है ॥

दोहा

निरख राम दोनोंन को * मन में किया विचार।
पड़े नहीं पहिचान में * देखा बहुत निहार ॥४६८॥

बहर खड़ी

दोनों को राम समान लखा * बल में पौरुष में हिम्मत में।
सुन्दरता में सुघराई में * चंचलता में अरु किस्मत में।
दोनों को देखा एक सार * नहीं कोई किसी से हारा है।
पहिचान न असली पड़ता है * रघुवर ने खूब निहारा है ॥
देखें हैं खड़े-खड़े रघुवर * आखिर में यही विचारा है।
लेकर वज्रावर्त धनुष तुरत * अपने कर बीच सँभारा है ॥
धनु की टंकार करी जिस दम * आकाश भूमि थर्राई है।
भागी है विद्या सग छोड़ * असली दिया रूप दिखाई है ॥

दोहा

छाया क्रोध प्रचण्ड मन * उठा लिया कोदण्ड।
एक बाण में ही किया * साहसगति का खण्ड ॥ ४६९ ॥

बहर खड़ी

लग फरक बाण गिरा धरनी ✻ गिर कर यों बचन उचारा है।
सुग्रीव सहायक बन कर के ✻ किस कारण अनुचर मारा है॥
क्या हित तुम को सुग्रीव से था ✻ साहस गति को क्या प्रभु जाना।
अपराध बिना किस कारन से ✻ मारना किसी को मन ठाना॥
तुम तो नैयायक पूरे हो ✻ और न्याय पथ पर चलते हो।
मेरे संग क्यों अन्याय किया ✻ हित मित्र के पथ से टलते हो॥
सज्जन पुरुषों को पर नारी ✻ माता भगनी सम होती है।
इसमें विशेष अपराध नहीं ✻ सारी दलील यह थोती है॥

दोहा

दिया राज सुग्रीव को ✻ रघुपत मन हर्षाय।
पुर जन सेवक भूप के ✻ चरनों झुकते आय॥४७०॥

बहर खड़ी

पुन मन विचार सुग्रीव नृपत ✻ श्रीराम से विन्ती करते हैं।
तेरह कन्यायें ग्रहण करो ✻ निज शीश चरन पर धरते हैं॥
बोले हैं राम सुनो भूपत ✻ मुझ को नहिं चाह किसी की है।
जगत में है जो आवश्यकता ✻ तो मन के बीच सिया की है॥
सीता का पता लगाओ तुम ✻ नहिं और चाह मेरे मन में।
हृदय में हृदय स्वामिनी है ✻ उस ही की फ़िकर लगी तन में॥
सुन कर सुग्रीव नृपत बोले ✻ स्वामी मैं जाकर आऊँगा।
महलों में धर आभूषण हैं ✻ उन को ला कर दिखलाऊँगा॥

दोहा

तुरत नृपत महलों गये ✻ भूषण लाय उठाय।
धरे राम के सामने ✻ कहन लगे समझाय॥४७१॥

बहर खड़ी

गिरि पर मैं स्वामी बैठा था ✻ दो चार मित्र थे साथ मेरे।

आनन्द देखते थे घन के * सुख के समान थे हस्त मेरे ॥
आया विमान उड़ता उस दम * उस में कोई नारि पुकारती थी।
भामण्डल भाई कहती थी * कब राम लखन उच्चारती थी ॥
उसने यह भूषण फैंक दिये * इनको मैं नाथ उठा लाया।
रख दिये महल में ला कर के * अब सन्मुख लाकर दिखलाया ॥
कीजे पहिचान आभ्रण की * जो पता इन्हीं से लग जाये।
तो बहुत खोज किस कारन हो * साता हृदय यदि जग जाये ॥

दोहा

देखे भूषण राम ने * लेकर अपने हाथ।
लक्ष्मण स कहने लगे * सुनो भ्रात मम बात ॥ ४७२॥

बहर खड़ी

यह लखन अब पहिचान करो * क्या भूषण जनक सुता के हैं।
इन में कुछ गध प्रेम की है * क्या उस ही विज्ञसुता के हैं ॥
इनको अपने कर में लेकर * भाई लक्ष्मण पहिचानो तो।
कुछ गौर करो इन के ऊपर * सीता के भूषण जानो तो ॥
कर जोड़ लखन श्री रघुवर से अति विनय सहित यों कहने लगा।
जिस तरह शान्ति रस के समुद्र* से ले तरंग शुभ बहन लगे ॥
यह तो भूषण ग्रीवा के हैं * इनको मैं कैसे बतलाऊँ।
जो चरण आभरण यदि होते * पहिचान उन्हीं की समझाऊँ ॥

दोहा

माताजी के चरण का * मैं हूँ सेवक नाथ।
सदा चरन मैंने लखे * और न जानूँ भ्रात। ४७३॥

बहर खड़ी

मैं तो सेवक हूँ चरणों का * चरणों की सेवा करता था।
अर्चन के योग चरन पावन * उन ही को हृदय धरता था ॥

पद-भूषण नाथ अगर होते ❋ तो उनको तनिक जानता मैं।
नहीं अन्य अंग देखा कैसे ❋ फिर उनको पहिचानता मैं॥
ऐसा कह आभरण रख दिया ❋ थी राम निहारे हैं उनको।
भूषण को कर में उठा उठा ❋ मन पांच विचारे हैं उनको॥
सुग्रीव राय आज्ञा पा कर ❋ अपने महलों को धाये हैं।
पुर बाहर शिविर लगे हरि के ❋ रघुवर रह कर सुख पाये हैं॥

दोहा

सुन कर खर दूषण मरन ❋ लंका शोक अपार।
आरत सब के है प्रगट ❋ महलों रोवे नार॥ ४७४॥

बहर खड़ी

संग सुत पुत्र को लेकर के ❋ सूर्पनखा लंक में आई है।
रावण के कंठ लिपट कर के ❋ रोवे अब हद मचाई है॥
तेरे बहनोई मानिज को ❋ जिसने निधड़क हो हन डारा।
धा वेयर और हने संग में ❋ खेचर सेना को भी मारा॥
तरी वो लंक पयाला को ❋ ली छीन दनि कर फाड़ा है।
दिना विराध को राज सौंप ❋ उसके आनन्द अति वाढ़ा है॥
मैं आत शरण अब तेरी हूँ ❋ शरणागति को शरणा दीजे।
तेरे होते अन्याय हुआ ❋ अन्याय दूर सारा कीजे॥

दोहा

आए हाथों से तेरे ❋ अब सोने की लंक।
जीते जी मत शीश पर ❋ अपने लगा कलंक॥४७५॥

बहर खड़ी

सोने का बना नगर तेरा ❋ कुछ दिन में यह छिन जायेगा।
जिस मान से तू अब बैठा है ❋ मान का सभी चिन्ह जायेगा॥
अगल के मील रहन वाले ❋ ऐसा साहस दिखलाते हैं।

ाते ही खबर यह सीता की * लंका पर चढ़ कर आते हैं ॥
रोदन करती हुई भगनी को * रावण ने कंठ लगा लिया ।
घबरा मत हृदय संभाल रखो * ऐसा कह आश्वासन दिया ॥
जिसने पति पुत्र तेरा मारा * उस पल में मार गिराऊँगा ।
जो लंक पयाला छीनी है * चल कर के तुझे दिलाऊँगा ॥

दोहा

दशकंधर इस शोक से * विह्वल हुआ अपार ।
विरह वेदना सिय की * से है यह बीमार ॥४७६॥

बहर खड़ी

बीमारी जैसे आ जाये * यह हाल हो रहा रावन का ।
भर साँस पलंग पर लौट रहा * है प्रेम भरा मन भावन का ॥
उस समय आन कर मंदोदरि * स्वामी की तरफ निहारती है ।
कर जोड़ लगी कहने पति से * क्या बात हृदय में धारी है ॥
सामान्य मनुष्यों की भाँति * निश्चेष्ट आप हैं पड़े हुये ।
साधारण सी इन बातों में * किस लिये आप हैं अड़े हुये ॥
यह सुन बोले दशकंठ भूप * प्यारी मुझ को दुख मारा है ।
फिर भी लंकापति जीता है * यह सभी प्रताप तुम्हारा है ॥

दोहा

सिय के विरह-ताप से * बेकल सकल शरीर ।
बिना मिले सिय के प्रिया * बंध न दिल को धीर ॥४७७॥

बहर खड़ी

सीता के विरह ताप से प्रिय * बेकल सा यहाँ पड़ा हूँ मैं ।
बेकल का फल कैसे आये * मिलने के हेत अड़ा हूँ मैं ॥
मुझ में सामर्थ नहीं प्यारी * कुछ करूँ या करके दिखलाऊँ ।
न मेरा हौंसला पड़ता है * जो उसके मैं सन्मुख आऊँ ॥

इसलिये मानती जो मुझ पर ✲ तू जीवित रखना चाहती है।
तो मान छोड़ कर सीता का ✲ आदर क्यों नहिं समझाती है॥
कर विनय पास में ला अपने ✲ कर प्रेम मुझे अपनाये यह।
दशकन्धर है जीवित जब तक ✲ जब पास मेरे आ जाय यह॥

दोहा

मैंने किया नियम यह ✲ गुरु समीप हरषाय।
अनइच्छु परतीय से ✲ प्रेम करूँ नहिं जाय॥ ४७८॥

बहर खड़ी

यह नियम आज मेरे सम्मुख ✲ अगल की तरह आ जाता है।
जब पास सिया के आता हूँ ✲ थर थर शरीर थराता है॥
सुन वचन सकल पति पीड़ा के ✲ सुनकर विह्वल हो जाती है।
मन से विचार सब त्याग दिया ✲ सब लाज का ख़ो आती है॥
पहुँची है वैद-रमण वन में ✲ जो जनक-सुता पर नज़र पड़ी।
बैठी अशोक तरु शोक मद ✲ जा करके सनमुख भई खड़ी॥
सीताजी शीश किये नीचा ✲ मन में विचार कुछ करती थी।
पावन रघुवर के चरण-कमल ✲ हृदय मन्दिर में धरती थीं॥

दोहा

कहन लगी मन्दोदरी ✲ सुनो सिया यह बैन।
पटरानी दशकंठ की ✲ मैं हूँ सुनिये चैन॥ ४७९॥

बहर खड़ी

मैं भी दासी होकर तेरी ✲ तेरा ही हुकम उठाऊँगी।
जो कुछ आज्ञा तेरा होगी ✲ उसको निज शीश चढ़ाऊँगी
लंकापति से यदि प्रेम करे ✲ लंकापति पत्नी पाओगी।
आज्ञा तेरी रहे तीन खण्ड ✲ शृंगार अनेकों साजोगी॥
है धन्य धन्य तुमको सीता ✲ अति भूर भाग वाली तुम हो।

प्रिय सब पति तुमको चाहे * शुभ लालों में लाली तुम हो ॥
जो विश्व पूज्य होकर तेरी * पूजा को करना चाहता है।
तेरे ही चरण कमल पावन * निज हृदय बीच बसाता है ॥

दोहा

वचन सुनत सीता हृदय * छाया क्रोध अपार ।
उष्ण स्वाँस चलन लगी * जिम नागिन फूकार ॥४८०॥

बहर खड़ी

क्या भोली बातें करती हो * कहाँ सिंह अरु कहाँ स्यार भला
कहाँ गरुड़ अरु कहाँ काग पाप* किस भाँति बराबर धार भला ॥
गुल की समता क्या खार करे * क्या नार नूर के समसल हो ।
क्या गधा हो सके कामधेनु * काग हंस हंस से उज्ज्वल हो ॥
कहाँ राम अरु कहाँ रावण है * कुछ सोच समझ उच्चारो तुम।
कहाँ तेजवान दिनकर रमेश * खद्योत कहाँ मन धारो तुम ॥
तेरा अरु पापी रावन का * सम्पति पन मानो योग ही है।
पर तिय गामी यह तू कुटनी * तेरा उसका सयोग ही है ॥

दोहा

होजा ओझल अलग हट * मुख मत मुझे दिखाय ।
समापण के योग तू * किञ्चित भी है नाय ॥४८१॥

बहर खड़ी

सन्मुख से तू हट जा मेरे * समापण के है योग नहीं ।
मैं तुझे नहीं देखा चाहूँ * मेरा तेरा सहयोग नहीं ॥
बस उसी समय दशकधर भी * सनमुख आकर के यों बोला।
हे सीता ! तू क्यों कोप करे * इन शब्दों से मुख को खोला ॥
यह मदोदरी दासी तेरी * है देवी तेरा दास हूँ मैं।
होकर प्रसन्न मुख से बोलो * हर समय तुम्हारे पास हूँ मैं ॥

तू अपनी अमृत दृष्टि से ✲ मुझ को प्रसन्न क्या नहिं करती
मेरा है प्रेम परम तुझ से ✲ क्यों प्रेम नहीं हृदय धरती॥

दोहा

सीता ने मुख फेर कर ✲ दीना कड़क जवाब।
मुझे पड़े मालूम यह ✲ बिगड़े तेरी आब॥ ४८२॥

बहर खड़ी

मैं जानूँ हूँ अब काल तेरे ✲ शिर के ऊपर मँडराया है।
जो सूने बन में से आकर तू ✲ मुझ को हर कर लाया है॥
जिम अरुण पुष्प की माला को ✲ फल आन स्थान ले जाता है।
खाने के समय देख उस को ✲ शिर धुनता अरु पछताता है॥
बस इसी तरह से तू मुझ को ✲ बिन राम उठा कर लाया है।
इससे मालूम यही पड़ता ✲ कि समय तेरा तट आया है॥
शत्रु का कालरूपी लक्ष्मण ✲ जिस समय खबर यह पायेगा।
लंका पर चढ़कर आयेगा ✲ अरु तुझ को मार गिरायेगा॥

दोहा

सीता के सुन कर वचन ✲ रावण कहे उचार।
मैं चन्द्र तू चाँदनी ✲ देखो दृष्टि पसार॥ ४८३॥

बहर खड़ी

किस तरह चन्द्र से चन्द्र-वदन ✲ अब कहो चाँदनी दूर रहे।
शशि लख सरोजनी खिले सदा ✲ किस कारण से मजबूर रहे॥
लख भाँति बिन्दु को अब सीपी ✲ किस कारण मुख को बंद करे।
कर सकता हेत न जो अपना ✲ औरों का क्या प्रबन्ध करे॥
विकसेगा रामचन्द्र जिस दम ✲ खिल जाय सुन्दरिया सीता सी।
जो हो सरोज सन्मुख राहु ✲ खिल जाय तो हो अचानिता सी॥
धोखा है यदि यादि ध यरसे ✲ सीपी का कभी मुख खिले नहीं।

कैसी ही चमकें हो विशेष * सुवर्ण का टुकड़ा झुले नहीं ॥

दोहा

देखी रावन नृपत की * मद मतवारी होत।
लखे कभी वारिज विमल * विकसत जुगनू जोत ॥४८४॥

बहर खड़ी

नहिं कमल खिलें जुगनू द्युति से * हो यूद चाहे चमत्कार करै।
सिंहनी नहीं डरती है जम्बुक से * चाहे जितनी धधकार करै॥
लख राम दिवाकर को पंकज * सीता हृदय खिल जाता है।
जम्बुक समान तू खड़ा खड़ा * नाहक धधकार सुनाता है॥
सीता की वाणी बाण तुल्य * रावण का हृदय वेधती है।
तीक्ष्ण कमान की बाण बनी * जिस तरह सु तन को छेदती है॥
वह काम क्रोध स अंधा हो * सीता को कष्ट पहुँचाने लगा।
विद्या के वनचर बना छोड़ * रावण महलों को जान लगा॥

दोहा

दशकन्धर मन क्रोध कर * कहे वचन स्पष्ट।
सीता को देने लगा * विद्या शक्ति से कष्ट ॥ ४८५ ॥

बहर खड़ी

फणपति फुँकार लगे करने * हरि ने हुँकार लगाई है।
चीत्कार करें गज आ आ कर * रहा अन्धकार निशा छाई है॥
चीते अपनी चिंघाड़ट से * दिल में डर पैदा करते हैं।
कहिं व्याघ्र पूँछ को फटकारें * धीरज का धीरज हरते हैं॥
परस्पर वीमियाँ लड़तीं हैं * कहिं अग्नि चिंगारी झड़तीं हैं।
कहिं विन्दु तीर सी पड़ती हैं * कहिं श्वान सिंहनी भड़तीं हैं॥
कहिं प्रेत पिशाच उछलते हैं * सीता को देख मचलते हैं।

बैताल भूत वरछियाँ लिये ✽ बदन का अस्त्र सँभलते हैं॥

दोहा

सीता ने मन में किया ✽ महामन्त्र का ध्यान ।
करी न परवाह प्रान की ✽ राखा अपना मान ॥४८६॥

बहर खड़ी

संकट पड़ने पर सिया ने ✽ निज मन को नहीं डिगाया है।
प्रलय समीर से जिम सुमेरु ✽ मन ऐसा अचल बनाया है॥
सारा वृतान्त विभीषण ने ✽ कानों से अब सुन पाया है।
उस देव रमण उद्यान बीच ✽ सीता के सन्मुख आया है॥
हे भद्रे ! कौन सुन्दरी तुम ✽ अरु किनकी सुता कहाई हो।
किस वीर पुरुष की प्रिया हो ✽ किस समय यहाँ पर आई हो॥
यहाँ कौन तुम्हें लाया था क ✽ इसका सब भेद बता दीजे।
निर्भीक हो मुझ से कह दीजे ✽ स्वीकार विनय मेरी कीजे॥

दोहा

समझ सहोदर आपना ✽ मती छुपाओ हाल।
जो कुछ हो वृतान्त सब ✽ कह दीजे तत्काल ॥४८७॥

बहर खड़ी

सज्जन सतपुरुष समझ उसको ✽ बोली सिय नीचा मुख करके।
लज्जा से नहीं वचन निकले ✽ शुचि राम चरण हृदय धर के॥
मैं जनक भूप की पुत्री हूँ ✽ भामण्डल मेरा भाई है।
दशरथ नृप की हूँ पुत्र-वधू ✽ मम नाम सिया सुन भाई है॥
श्रीराम, अनुज अरु वधू सहित ✽ दण्डकारण्य वन में आये।
यहाँ लखन मम देवर वन की ✽ कुछ सैर करन को मन लाये॥
आकाश से आता एक खड्ग ✽ वन में देवर के नजर पड़ा।
यह सुरत उन्हों ने कर में ले ✽ लख कर महान् असि मोद बढ़ा॥

दोहा

मन विचार कर लखन ने * लीना हाथ उठाय ।
पास घाँस के झाल पर * दीना उसे चलाय ॥४८८॥

बहर खड़ी

उस वंश झाल में साधक था * साधना खड्ग की करता था ।
अनजाने शीश कटा उसका * जो आश हृदय में धरता था ॥
पछताये लखन बहुत मन में * पछताय वहाँ से धाये हैं ।
निज जेष्ट भ्रात के निकट तुरत * कर पश्चाताप सु आये हैं ।
लक्ष्मण के चरण चिन्ह लखकर * एक त्रिय वहाँ पर आई है ।
मेरे स्वामी का रूप निरख * उनके ऊपर लुभियाई है ॥
उसकी अनुनय को स्वामी ने * सुन कर के नहिं स्वीकार करी ।
सुन कर वह वहाँ से चल दीनी * सैना जाकर तैयार करी ॥

दोहा

भारी सैना सग ले * आई रण मझार ।
लक्ष्मण ले कर में धनुष * हुये युद्ध को त्यार ॥४८९॥

बहर खड़ी

उस समय लखन से राम कहा * जो मुझे बुलाना चाहो तुम ।
तो सिंह नाद करना भ्राता * संकेत हृदय में लाओ तुम ॥
माया से सिंहनाद उसने * वन में जाकर करवाया है ।
जब राम युद्ध में चले गये * रावण मुझ को ले आया है ॥
जो था वृतान्त प्रारम्भित से * भाई वह तुम्हें सुनाया है ।
इस में है चूक नहीं किंचित * सब अर्थ तुम्हें समझाया है ॥
सुन कर के वचन विभीषणजी * दरबार पिता में आये हैं ।
कर नमस्कार अति विनय सहित * रावण को शीश झुकाये हैं ॥

दोहा

भाई किया आपने * यह क्या खोटा काम ।

चलत चलाता लाय कर * दिया मद्र मुकाम ॥४६०॥

बहर खड़ी

काली नागिन बिन मरी मरी * पर नार धरी स्वर में ला कर।
निज तरह हा सबे अब इसका * छोड़ा बन ही में लेजा कर॥
सम्पदा नाश करनी तरुनी * अति तीक्षण अपति निशानी है।
यह सती आप न अ पैठ * पैठी बन हो खिसियानी है॥
हो सुन्दर चाहे असुन्दर यह * आखिर को वस्तु बिरानी है।
यह काल रूप हो कर आई * औरों को वस्तु दिखानी है॥
लो मान विनय मेरी भाई * कुल कीरत बहुत पुरानी है।
अपकीरत जगत् में हो भारी * अपयश की निकले बाना है॥

दोहा

सीता को ले जाय कर * उसी ठाम दो छोड़।
राम लखन ना आ सके * अब तक लो मुख मोड़॥४६१॥

बहर खड़ी

जो आओ आप नहीं भाई * तो आज्ञा मुझ को दे दीजे।
जाकर के पहुँचा आऊँ मैं * यह विनय दास की सुन लीजे॥
दशकंठ क्रोध कर कहन लगा * सुन ले तू अनुज वीर मेरे।
लाई वस्तु नहीं फेर सकूँ * जब तक हैं कुशल बदन मेरे॥
हैं भील राम लक्ष्मण दोनों * बन के बासी कहलाते हैं।
अन बाहन चरण-विहारी यह * जिस तरह उदासी आते हैं॥
बाहन विद्या का जोर मेरे * यह आकर यहाँ करेंगे क्या ?
आ गये भूल से लंकपुरी - बिन आई मौत मरेंगे क्या ?

दोहा

आ आयें यदि लंक में * तो उन को तत्काल।
छल-बल कर मरवाय दूँ * दूँ पताय को टाल॥४६२॥

बहर खड़ी

ज्ञानी ने जो कुछ वचन कहे * वह असत्य नहीं हो सकते हैं।
होनी ने हमको बता दिया * किस तरह समय खो सकते हैं॥
सीता के कारण लंका का * इक रोज नाश हो जायेगा।
कुल नष्ट होगा रावण का सब * अत्यन्त त्रास यही पायेगा॥
ज्ञाना ने कह दीना जो कुछ * वह समय शीघ्र आता दीखे।
इस लंक पुरी का राज भ्रात * तेरे कर से जाता दीखे॥
ऐसा नहिं होता जो भाइ * तो मेरे वचन मान लेता।
इस आग सुलगती सीता को * लंका से तुरत टाल देता॥

दोहा

वचन विभीषण के सुने * लोचन हो गये लाल।
लगा काँपने क्रोध से * भैराई सम ज्वाल॥४१३॥

बहर खड़ी

ऐसे क्या बोल रहा भीरू * तू मेरे बल को भूल गया।
मैं बहु पराक्रमी रावण हूँ * सब देख-भाल प्रतिकूल गया॥
यह राह-रास्त पर आकर के * सीता मेरी हो जायेगी।
कुछ दिन में खुश होकर मुझसे * कर रघुवर से धो जायेगी॥
फिर राम लखन गर आयेंगे * तो आकर के पछतायेंगे।
या लंक देख फिर जायेंगे * या नाहक जान गवायेंगे॥
कर जोड़ विभीषण कहन लगे * होनी ने बुद्धि बिगारी है।
जो हो भविष्य वह अवश्य होय * होनी ने बल पसारी है॥

दोहा

कहन विभीषण की नहीं * मानी रावण एक।
उठ कर तट से चल दिया * रखी आपनी टेक॥४१४॥

बहर खड़ी

उठ कर कर गवन चला वह तो * उपवन अशोक में आया है।

चलता है झूमता गज सुमस्त ॥ इस तरियों चरन बढ़ाया है ॥
देखी अशोक तल शोक मयी ॥ सीता विचार कुछ करती है।
या महामन्त्र का जाप करे ॥ या राम चरन उर धरती है ॥
पुष्पक विमान में सीता को ॥ रावन ने पुनः बैठाया है।
क्रीड़ा के शुभ स्थान जहाँ हैं ॥ उस ठाम सिया को लाया है ॥
वैभव विख्याता है अपना ॥ मुख से यह वचन उचारे हैं।
हे हंस गामिनी ! नज़र करो ॥ यह रमण धाम शुभ मारे हैं ॥

दोहा

शिखर रत्नमय शुभ सुगर ॥ शैल शैल आनन्द ।
झरने सुंदर नीर के ॥ झरें किये मकरन्द ॥४६५॥

बहर खड़ी

स्वादिष्ट सलिल के यह धाते ॥ पर्वत से बह कर आते हैं ।
अपने बहने की लहरों से ॥ यह शायद तुम्हें बुलाते हैं ॥
यह क्रीड़ा धाम हमारे हैं ॥ नन्दनवन को शरमाते हैं।
करने अब क्रीड़ा आते हैं ॥ यह देख हमें सरसाते हैं ॥
स्वेच्छानुरूप भोगने के यह ॥ योग बना भारा ग्रह है ।
अरु इस इसमा सहित नीर ॥ सागर सा यह सुंदर ग्रह है ॥
यह स्वर्ग ग्रह के तुल्य बना ॥ रति ग्रह हमारा सुंदर है।
इस को यहाँ आकर देख देख ॥ शरमाता स्वमम पुरन्दर है ॥

दोहा

सीता ने उत्तर नहीं ॥ दीना उसको पेक ।
काप हिये में गोप के ॥ धारा बुद्धि विवेक ॥४६६॥

बहर खड़ी

दशकंठ रमण-स्थान सभी ॥ सिया को दिखाता फिरता है।
उन सुंदर सुगढ़ सुधामों की ॥ रचना दिखलाता फिरता है ॥

जब सिया का उत्तर नहिं पाया * तो अपने मुख को मोड़ लिया।
भ्रमण करया कर के सिय का * आ देव रमण में छोड़ दिया॥
यह हाल विभीषण ने देखा * रावण उन्मत्त हुआ भारी।
समझाये नहीं मानता है * ठुकरा दी नेक सला सारी॥
इस पर विचार करन के हेत * बुलवाये हैं मन्त्री सारे।
रख के प्रस्ताव दिया सन्मुख * और वचन इस तरह उचारे॥

दोहा

दशकंधर के शीश पर * हुवा काम असवार।
यह मारग दे छोड़ कर * करो कोई उपचार॥४१७॥

बहर खड़ी

इस पथ को जो नहिं त्यागेगा * तो अनर्थ भारी हो जाये।
सब में है कहो कौन ऐसा * जो जाकर उसको समझाये॥
इस कामदेव के कारण ही * यह आफत में फँस जायेगा।
सफा गढ़ धूल मिलायेगा * कस अटिल पाश में जायेगा॥
केवल हम नाम के मन्त्री हैं * मन्त्री का साहस आप में हैं।
समझाओ उन्हें आप आकर * जो फँसे नाथ सताप में हैं॥
हो असर हमारे कहने का * हमको अनुमान नहीं होता।
मिथ्यादृष्टि को जिस तरिया * जिन धर्म का ज्ञान नहीं होता।

दोहा

लक्ष्मन राम से मिल गये * बड़े बड़े बलवान।
पौरुष उनका देख कर * कपि कपि अरु हनुमान॥४१८॥

बहर खड़ी

न्यायी महात्माओं का पक्ष * कहो कौन ग्रहण नहिं करता है।
सत गुरु के सुन्दर सुगर शब्द * अपने सिर कौन न धरता है॥

इस ही सीता के निमित्त सुनो * रावण कुल क्षय हो जायगा।
आयेंगे राम लखन जब चढ़ * उनसे फिर कौन बचावगा।
रावण के कुल का नाश खास * ज्ञानिन ने अस फरमाया है।
दशकठ का मरना लक्ष्मण के * हाथों से सुनो बताया है॥
तो भी उपाय करना कुल का * सु सभ्य जनों के याग ही है।
सकट से शोक से बचने में * करना सब को सयाग ही है।

दोहा

जिस नर घर की कामिना * लाया हर लकेश।
यह नर-नाहर किस तरह * आवे ना इस देश॥ ४९९॥

बहर खड़ी

दिया निमन्त्रण जिस नर घर को * वह तो भोजन को आयेगा।
जिस तरह हो सकेगा अपना * कर काज सिद्ध वह जायेगा॥
नहिं ढील विभीषण करी जरा * सामान समर का करन लगे।
अब आदि इकाधित करवा के * दुर्ग के कोषों में भरन लगे॥
कोटों कोटों पर तोपों के * अति बन्दोबस्त करवाये हैं।
बुर्जों पर दुर्ग के यन्त्रों को * ले आकर के धरवाये हैं॥
गोलदाजों को तुरत हुकम * जब वीर विभीषण दीना है।
चतन हो के कारज कीजे * हुशियार सभी को कीना है॥

दोहा

बीते सीता विरह में * दिवस मास अनुमान।
बेकल होकर लखन से * बोले राम सुजान॥ ५००॥

बहर खड़ी

जैसे जैसे जाता है वक्त * तन विरह वेदना बढ़ती है।
जिस तरह गरल की लहर * जहर से वायु दूनी चढ़ती है॥
बस यही हाल रघुवर का है * कुछ काम न करना भाता है।

इन ही सीता के निमित्त सुनो * रावण कुल क्षय हो जायेगा।
आवेंगे राम लखन जब यहां * उनसे फिर कौन बचायेगा।
रावण के कुल का नाश खास * ज्ञानिन ने अस फरमाया है।
दशकण्ठ का मरना लक्ष्मण के * हाथों से सुनो बताया है॥
तो या उपाय करना दुख का * सु गम्य जनों के योग ही है।
सकट से शोक से बचने में * करना सब को सयाग ही है।

दोहा

जिस नर घर की कामिना * लाया हर लंकेश।
वह नर-नाहर किस तरह * आवे ना इस देश॥ ४६६॥

बहर खड़ी

प्रिया निमन्त्रण जिस नर घर को * वह तो भोजन को आयेगा।
जिस तरह हो सकेगा अपना * कर काज सिद्ध वह जायेगा॥
नहिं ढील विभीषण करी जरा * सामान समर का करन लगे।
अन्न आदि इकत्रित करवा के * दुर्ग के कोषों में भरन लगे॥
कोटों कोटों पर तोपों के * अति बन्दोबस्त करवाये हैं।
बुर्जों पर दुर्ग के यन्त्रों को * ले आकर के धरवाये हैं॥
गोलंदाजों को तुरत हुकम * जब वीर विभीषण दीना है।
चलन हो के कारज पीछे * हुशियार सभी को कीना है॥

दोहा

बीते सीता विरह में * दिवस मास अनुमान।
बेकल होकर लखन से * बोले राम सुजान॥ ५००॥

बहर खड़ी

जैसे जैसे आता है यह * तन विरह वेदना बढ़ती है।
जिस तरह गरल की लहर * जहर से वायु पूर्ण चढ़ती है॥
बस यही हाल रघुवर का है * कुछ काम न करना भाता है।

लक्ष्मण के चरण पकड़ लाने ❁ अपराध तुरत स्वीकारा है ।
हो आप क्षमा सागर प्रभु ❁ अनगिनत अपराध हमारा है ॥
लक्ष्मण झुंझला कर बोल उठे ❁ रघुवर की तुझ को खबर नहीं।
निर्भय हो तू सुख भोग रहा ❁ समझा तुझ से को जबर नहीं ॥

दोहा

सीता की मँगवा खबर ❁ कहूँ तुझ से समझाय ।
भला इसी में जान तू ❁ जो सुख अपना चाय ॥५०३॥

बहर खड़ी

जो चाहत हो तुम सुख अपना ❁ तो सिय की खबर मँगाओ तुम ।
इस ही में भला समझ लेना ❁ रघुवर के सन्मुख आओ तुम ॥
सुन कर सुग्रीव हुवा आगे ❁ पीछे लक्ष्मण धनुधारी है ।
श्रीराम के सन्मुख कपिपति ने ❁ आकर के अरज़ गुज़ारी है ॥
हे देव ! दयालु आप तो हैं ❁ मैं दास आप के चरणों का ।
चाहता हूँ दया दृष्टि निश दिन ❁ है बड़ा भरोसा करमों का ॥
योद्धा बुलवा लीने सारे ❁ सब बैठ मता यों कीना है ।
चलने को आप तयार हुवा ❁ और हुक्म सबों को दीना है ॥

दोहा

आज्ञा मानी भूप की ❁ खेचर बैठ विमान ।
फिरें खोज करते सभी ❁ गिरवर बीयावान ॥५०४॥

बहर खड़ी

पर्वत वन खंड खोह सरिता ❁ फिरते हैं ढूँढ़ते सीता को ।
द्वीपों में नगरों में ग्रामों में [illegible] सब साता को ॥
भामण्डल को जब मिली खबर [illegible] जाने की ।
हो कर सवार चल दि[illegible] [illegible]ने की ॥
बैठे हैं राम निकट [illegible] पाया ।

लछमण के चरण पकड़ लीने ❀ अपराध तुरत स्वीकारा है ।
हो आप क्षमा सागर प्रभु ❀ अलयत अपराध हमारा है ॥
लछमण झुँझला कर बोल उठे ❀ रघुवर की तुझ को खबर नहीं।
निर्भय हो तू सुख भोग रहा ❀ समझा तुझ से को ज़बर नहीं ॥

दोहा

सीता की मँगवा खबर ❀ कहूँ तुझ से समझाय ।
भला इसी में जान तू ❀ जो सुख अपना चाय ॥५०३॥

बहर खड़ी

जो चाहत हो तुम सुख अपना ❀ तो सिय की खबर मँगाओ तुम ।
इस ही में भला समझ लेना ❀ रघुवर के सम्मुख आओ तुम ॥
सुन कर सुग्रीव डरा आगे ❀ पीछे लछमण धनुधारी है ।
श्रीराम के सम्मुख कपिपति ने ❀ आकर के अरज़ गुज़ारी है ॥
हे देव ! दयालु आप तो हैं ❀ मैं दास आप के चरणों का ।
चाहता हूँ दया दृष्टि निश दिन ❀ है बड़ा भरोसा करमों का ॥
योधा बुलवा लीने सारे ❀ सब बैठ भला यों कीना है ।
चलने को आप तयार हुवा ❀ और हुक्म सबों को दीना है ॥

दोहा

आज्ञा मानी भूप की ❀ खेचर बैठ विमान ।
फिरें खोज करते सभी ❀ गिरवर बीयाबान ॥५०४॥

बहर खड़ी

पर्वत बन खड खोह सरिता ❀ फिरते हैं ढूँढ़ते सीता को ।
द्वीपों में नगरों में ग्रामों में ❀ देख रहे अब साता को ॥
भामण्डल को जब मिली खबर ❀ सीताजी के हर जाने की ।
हो कर तयार चल दिये तुरत ❀ सुध भूले पीने खाने की ॥
बैठे हैं राम निकट आके ❀ सेवा करने को मन भाया ।

लक्ष्मण के चरण पकड़ लीने ❁ अपराध तुरत स्वीकारा है ।
हो आप क्षमा सागर प्रभु ❁ अक्षयत अपराध हमारा है ॥
लक्ष्मण झुँझला कर बोल उठे ❁ रघुवर की तुझ को खबर नहीं।
निर्भय हो तू सुख भोग रहा ❁ समझा तुझ से को ज़बर नहीं ॥

दोहा

सीता की मँगवा खबर ❁ कहूँ तुझ से समझाय ।
भला इसी में जान तू ❁ जो सुख अपना चाय ॥५०३॥

बहर खड़ी

जो चाहत हो तुम सुख अपना ❁ तो सिय की खबर मँगाओ तुम ।
इस ही में भला समझ लेना ❁ रघुवर के सन्मुख आओ तुम ॥
सुन कर सुग्रीव हुआ आगे ❁ पीछे लक्ष्मण धनुधारी है ।
श्रीराम के सन्मुख कपिपति ने ❁ आकर के अरज़ गुज़ारी है ॥
हे देव ! दयालु आप तो हैं ❁ मैं दास आप के चरणों का ।
चाहता हूँ दया दृष्टि निश दिन ❁ है बड़ा भरोसा करनों का ॥
योद्धा बुलवा लीने सारे ❁ सज बैठ भला यों कीना है ।
चलने को आप तयार हुआ ❁ और हुक्म सबों को दीना है ॥

दोहा

आज्ञा मानी भूप की ❁ खेचर बैठ विमान ।
फिरें खोज करते सभी ❁ गिरवर वीयावान ॥५०४॥

बहर खड़ी

पर्वत बन खड खोह सरिता ❁ फिरते हैं ढूँढ़ते सीता को ।
द्वीपों में नगरों में ग्रामों में ❁ देख रहे अब सीता को ॥
भामण्डल को अब मिली खबर ❁ सीताजी के हर जाने की ।
हो कर तयार चल दिये तुरत ❁ सुध भूले पीने खाने की ॥
बैठे हैं राम निकट आके ❁ सया करने को मन चाया ।

अत्यन्त राम को देख दुखित * भामण्डल का मन भर आया॥
स्वामी के दुःख को लख विराध * भारी सेना ले आया है।
प्यादे की तरह रहन लागे * ऐसा मन में ठहराया है॥

दोहा

मन सुग्रीव विचार कर * कम्बू द्वीप दरम्यान।
आ निकले उस वन विषे * ऐसा धर कर ध्यान॥५०५॥

बहर खड़ी

जब रत्नजटी ने कपि पति को * आता निज ओर निहारा है।
रह गया सोचता वहीं खड़ा * कुछ मन में किया विचारा है॥
अब मुझे मारने के काजे * रावण ने इसे पठाया है।
सुग्रीव भूप बलवान महा * इस कारण ही यह आया है॥
पहिले तो विद्या हर लीनी * अब हरना चाहे प्रानों से।
किस तरह बचूं अब मैं इस से * हन डालेगा यह बानों से॥
सोचे था खड़ा-खड़ा मन में * जब तक सुग्रीव यहाँ आया।
इस तरह कहे सुग्रीव भूप * क्यों देख मुझे मुख कुमलाया॥

दोहा

रत्नजटी कहने लगा * सुनो भूप धर ध्यान।
हरण जानकी का किया * रावण वन दरम्यान॥५०६॥

बहर खड़ी

उस वन में रावण को रोका * संग्राम छिड़ गया भारी है।
मैंने जब रोका मारग को * हर ली विद्या मम सारी है॥
जब से मैं वन में पड़ा हुआ * यम-फल खा दिवस बिताता हूँ।
जब देखूँ हूँ आते जाते * तो वृक्षों में छुप जाता हूँ॥
सुग्रीव भूप ने रत्नजटी * अपने विमान बैठाया है।
तत्काल उड़ाया वायुयान * रघुवर के तट ठहराया है॥

स्वामी यह पता जानकी का * सारा तुम को बतला देगा।
जिस तरह जानकी जाती थी * सब सच्चा हाल सुना देगा॥

दोहा

बोले राम सुजान जब * दे खेचर को धीर।
सीता का सब हाल अब * सत्यासत्य कहो वीर ॥५०७॥

बहर खड़ी

यह सुन कर रत्नजटी बोला * स्वामी सब हालत सुन लीजे।
उस कपटाचारी रावण की * दुर्नीति अब चित्त में दीजे॥
यह क्रूर जिस समय सीता को * बैठा विमान ले आता था।
दशकंठ दुरातम तेजी से * अति वायुयान उड़ाता था॥
सीता मुख राम-राम लक्ष्मण * यह शब्द निकलते आते थे।
भामंडल भाई कह:कह कर * हृदय के भाव उछलते थे॥
यह हाल देख मेरे तन में * गुस्से का वेग समाया था।
संग्राम किया उससे मैं ने * मम विद्या छीन गिराया था॥

दोहा

सीता का वृतान्त सुन * रघुवर मन हर्षाय।
रत्नजटी को झपट कर * लीना कंठ लगाय ॥५०८॥

बहर खड़ी

पूछे हैं रघुवर बार बार * पुनः रत्नजटी बतलाता है।
श्री राम सु मन बहलाने को * सीता का नाम सुनाता है॥
सुग्रीव आदि सब सुभटों को * सादर निज निकट बुला लिया।
लंका है कितनी दूर कहो * ऐसा रघुवर ने प्रश्न किया।
यह लंका दूर या निकट होय * पर विकट वीर दशकंधर है।
है विश्वविजेता तेजवान * प्रतापी ईश पुरन्दर है॥
उसके समान बलवान कोइ * भूमि पर नज़र नहीं आता।

विद्या में बल में छल-बल में * अरु दूजा वीर नहीं पाता ॥

दोहा

ऐसी बातों का कुछी * करिये मती विचार ।
विजय पराजय युद्ध में * नैना लेश्रो निहार ॥ ५०६ ॥

बहर खड़ी

तुम हमें अलग से रावण को * दर्शन के तौर दिखा देना ।
फिर दूर खड़े होकर तुम सब * सग्राम का सुन्दर रस लेना ॥
लछमण के बाणों की वर्षा * वर्षे जब रावण के ऊपर ।
ग्रीवा में उसके विषियर से * लिपटेंगे जब कुछ होय असर ॥
तुम जिसे वीर बतलाते हो * कायर कपटी अरु क्रूर है यह ।
लम्पटी हठी परतिय गामी * जिसको बतलाते शूर है यह ॥
लछमण के धनु स विषधारी * जब निकले प्राण हरत बान ।
उस समय देख लेना कैसा * लछमण निकले सामर्थ वान ॥

दोहा

सुन लछमण कहने लगे * कर के क्रोध कराल ।
मेरे धनु के बाण हैं * उसको विषियर व्याल ॥५१०॥

बहर खड़ी

ऐसे की क्या तारीफ करो * जो मात्र मारन जानता है ।
कूकर की तरिया छुप-छुप कर * त्रिय को उचारन जानता है ॥
किस तरह युद्ध करता होगा * जो धोखा देना जानता है ।
कर कपट रूप छल-बल करके * नारी हर लेना जानता है ॥
मैं समर क्षेत्र में जब उसको * अपने सन्मुख लख पाऊँगा ।
सग्रामी सभ्य रूपी नाटक * कर के उसको दिखलाऊँगा ॥
रणभूमि अपने बाणों से * व्यालों की तरियां भर दूँगा ।
क्षत्रियाचार से पल भर में * शिर छेदन उसका कर दूँगा ॥

दोहा

जामवत कहने लगे * सुनो लगा कर कान ।
ज्ञानी पुरुषों ने कहा * यह सुन लीजे ध्यान ॥५११॥

बहर खड़ी

आये थे अनल वीर्य ज्ञानी * उनने ऐसा फरमाया था ।
जो कोटि शिला उठा लेगा * उस के कर काल बताया था ॥
सामर्थवान तुम सब कुछ हो * वीरों में भी प्रधान हो तुम ।
गुणवान अरु बलवान हो तुम * तपवान पौरुषवान हो तुम ॥
ज्ञानी के शब्द असत नहीं है * किस ही भी यत्न हो सकते हैं ।
जो अंकित हृदय पट पर हैं * क्योंकर उन को धो सकते हैं ॥
जो कोटि शिला आप चल कर * अपने कर में यदि धारेंगे ।
होगा विश्वास देख मन में * आप ही रावण को मारेंगे ॥

दोहा

लक्ष्मन वचन सुन कर हुये * चलने को तैयार ।
जहाँ होय कोटि शिला * मैं लूँ उसे निहार ॥५१२॥

बहर खड़ी

बैठे हैं वायुयान वीर * मार्ग आकाश के धाये हैं ।
जिस गिरि पर कोटि शिला पड़ी * उस गिरि पर लक्ष्मण आये हैं ॥
देखा है शिला आन कर के * उस को तत्काल उठा लिया ।
परिचय सामर्थ तुरत अपना * उन सब को लक्ष्मन दिखा दिया
आकाश से पुष्पों की वर्षा * खुश होकर सुर वर्षाई है ।
जै कारे होते रहे गगन * आमद बधाई छाई है ॥
हो गई प्रतीत सबों के मन * अति प्रीति रीति का भाव पड़ा ।
पुन राम लखन के संग रहे * ऐसे सब के मन चाव बढ़ा ॥

दोहा

आये हैं प्रतीत कर * लक्ष्मन राम के पास ।
अब सब मिल कर दूत की * करने लगे तलाश ॥५१३॥

बहर खड़ी

सब सूख पुरुष मिल कर बैठे * आपस में मता उपाया है ।
साहसा विवेकी बुद्धियान * हो दूत यही मन भाया है ॥
यदि समाचार देने से ही * जो अपना काम सँमल जाये ।
किस कारण फिर संग्राम होय * क्यों सारा दल चढ़ कर जाये॥
हो प्राक्रमी और बुद्धिमान * जो बन कर दूत वहाँ आये ।
आकर के मिले विभीषण से * उसको हर तरियाँ समझावे ॥
वह नीतिवान बुद्धियान भी है * अरु राक्षक-कुल में आला है।
रावण को वह समझा कर के * झगड़ा निपटाने वाला है ॥

दोहा

सुमत बुला सुग्रीव ने * दीना भेज तुरंत ।
समझा कर कह दीजियो * लाओ बुला हनुमंत ॥ ५१४॥

बहर खड़ी

सुन कर के आज्ञा चला दूत * प्रह्लाद नगर में आया है।
प्रणाम किया अति हर्ष सहित * सारा अहवाल सुनाया है ॥
सुनते ही हनुमत चल दीने * नहिं पथ में वार लगाई है ।
आगये वीच किष्किंधा के * गये तुरत सभा में आई है ॥
सविनय प्रणाम राम को कर * हर्षा हनुमान चरन लागे ।
उन पावन चरन कमल के बन * अलि शुभ सुंदर रस में पागे ॥
सुग्रीव भूप ने रघुवर से * बजरंग का परिचय करवाया ।
सुत वीर पवनञ्जय के यह हैं * ऐसा कपिपति ने फरमाया ॥

दोहा

सीताजी के शोध के * योग यही बलवान ।

इन को आज्ञा दीजिये * जायेंगे हनुमान ॥ ५१५ ॥

बहर खड़ी

सुन कर के हनुमान बोले * मेरे सम वीर घनेरे हैं ।
कपिपति की मुझपर दया बहुत * करुणानिधेश यह मेरे हैं ॥
हैं गव गवाद गवया शर भज * नल नील द्विविध अति बलशाली
गंध मादन जामवन्त अंगद * हैं मैंद आदि प्रतिभाशाली ॥
हैं बहुत उपस्थित विद्याधर * सब एक एक से बल वाला ।
विद्या में गुण में और बल में * सभी शस्त्र चलाने में आला ॥
सब द्वीप राक्षस सहित अगर * आज्ञा पाऊँ तो ले आऊँ ।
रावण को बंधुओं सहित बाँध * लंका को तुरत उठा लाऊँ ॥

गायन

[तर्ज-कव्वाली]

प्रभु तेरी कृपा से आज * बल इतना रखायें हम ।
राक्षस द्वीप से लंका * उठा के यहाँ पे लावें हम । १ ॥
सहित रावण कुटुम्ब सारा * बाँध के ला धरें प्रभु पाँ ।
कहो निर्वंश रावण का * करें ना वार लावें हम ॥ २ ॥
सत्यवती सती-सीता को * लाऊँ मोद से यहाँ पर ।
हुक्म दीजे कृपा सिन्धु * कार्य करके दिखायें हम ॥ ३ ॥
'चौथमल' राम कहे ऐसे * सत्य हनुमान तुम समरथ ।
एक दफे जाय कर आवो * खबर जल्दी से पावें हम ॥ ४ ॥

दोहा

सुन उत्तर देने लगे * सुनो वीर हनुमान ।
सब प्रकार सामर्थ तुम * शुभ बल बुद्धि निधान ॥ ५१६ ॥

बहर खड़ी

पर अभी काम यह है भाई * कि जनक सुता के तट जाओ ।

लंका में आकर के देखो * सूचना सिया को पहुँचाओ ॥
यह चिह्न रूप मुद्री मेरी * सीता को जाकर दे आना ।
और जनक सुता का चूड़ामणि * तुम चिह्न रूप में ले आना ॥
कहना मेरा संदेश जाय * अरु कुशलक्षेम सुनाना तुम।
जैसा वहाँ दृश्य नज़र पड़े * वह आकर मुझे बताना तुम ॥
तुम राम विरह से हे देवी * निज जीवन मती छोड़ देना।
आशा से थोड़े दिवस जियो * मत अपनी आश तोड़ देना ॥

दोहा

अब वियोग में आपके * लगे न किंचित स्वाद।
घड़ी घड़ी पल-पल समय * आवे तुमरी याद ॥५१७॥

बहर खड़ी

फल दिन में पड़े नहीं किंचित * अरु निश में नींद न आती है।
हर घड़ी ध्यान तेरा रहता * तुझ बिन तबियत घबराती है॥
कुंजर जैसे वन में खुश हो * मैं खुश हूँ देख तुम्हें प्रिया।
जिम योगी योग किये खुश हो * मैं तुम्हें देख कर खुश सिया ॥
लक्ष्मण के बाणों से रावण * जल्दी विकल हो जायेगा ।
जैसा छल किया दशानन ने * वह वैसा ही फल पायेगा ॥
मेरे भेजे हैं हनुमान * इनसे मुद्री ले लेना तुम ।
अपनी चूड़ामणि चिह्न तौर * इनको खुश हो देना तुम ॥

दोहा

कर प्रणाम श्री राम को * चले वीर हनुमान।
शीघ्र गमन वाला लिया * अपने साथ विमान ॥५१८॥
पवन-तनय संकट हरन * रघुनायक के दूत।
हो सहाय वर दीजिये * भुज बल कर मजबूत ॥५१९॥

बहर खड़ी

ऐसा न हुआ न होए आवे * भविष्य को ज्ञानी जानते हैं।
था मल अकूत मजबूत महा * इस को सब ही पहिचानते हैं॥
हे राम तनय अब बात बने * हो दया आप की ओ स्वामी।
कर काज लाज रखियो मेरी * गुणवान वली अम्बर गामी॥
मैं तुझे मनाता हूँ हनुमत * अब विजय करवैयो आकर के
कर दीजे मेरा क्रत पूरण * धीरज धरवैयो आकर के॥
कर याद तुम्हें हृदय में मैं * अब राम की लीला गाता हूँ।
कहे 'चौथमल मुनि' हृदय में * इस कारज तुम्हें मनाता हूँ॥

दोहा

गगन गती जाते चले * सुगर वीर हनुमान।
मारग में सु हष्टी पड़ा * महेन्द्रपुर सु स्थान॥ ८२०॥

बहर खड़ी

लख कर पुर पवन क्रोध छाया * अब याद पुरातन आई है।
मम मात अञ्जनी निरपराध * पुर से नृप ने कढ़वाई है॥
ऐसा विचार कर हनुमत ने * बाजा रण का बजवाया है।
आकाश में ध्वनि छाई भारी * नृपति चक्कर में आया है॥
कोलाहल महेन्द्रपुर में छाया * सारी प्रजा घबराई है।
उस बाज जुझाऊ की अवाज * कानों भूपत के आई है॥
राजा महेन्द्र संग पुत्रों के * सैना को लेकर चढ़ आया।
देखा है पुर को घिरा हुआ * आकर के गुस्सा तन छाया॥

दोहा

प्रसन्न कीत कहने लगे * सुनो पिता धर ध्यान।
समर भूमि में आय कर * देखूँ इसका मान॥ ८२१॥

बहर खड़ी

यह समर करूँगा समर समर * धरती आकाश दहल जाय।

सागर का नीर उछलने लगे * पर्वत पहाड़ सब हल आये ॥
वर्षा वर्षा यूँ मानों वर्षा * जिम हस्त नक्षत्र की धार पड़े ।
भागें शत्रु मैदान छोड़ * जब रिपु पर मारा मार पड़े ॥
इतना कह धावा कर दिया * हनुमान के सन्मुख आया है ।
छिड़ गया युद्ध चलते शस्त्र * झपाटा सा बन छाया है ॥
सन सन कर बाण निकल जाते * आते हैं बिषियर काले से ।
हनुमत वीर भी डटे रहे * जैसे कुँजर मतवाले से ॥

दोहा

मन विचार हनुमत ने * नृप सुत बाँधा जाय ।
बँधा पुत्र को जान कर * भूप दहाड़े आय ॥ ५२२ ॥

बहर खड़ी

छोड़े हैं शस्त्र तीक्ष्ण तीखे * हनुमान विफल कर देते हैं ।
विविध प्रकार नाना के बाण * निज वक्षस्थल पर लेते हैं ।
बेकार हुये शस्त्र जिस दम * महेन्द्र भूपति घबराये हैं ।
हनुमान देख उनको विह्वल * कर जोर सामने आये हैं ॥
मैं दुश्मन नहीं आपका हूँ * माता अंजनी का जाया हूँ ।
आता कारज स्वामी के था * तुम से मिलने को आया हूँ ॥
वीरोचित कर्म देख भूपत * अति ही प्रसन्न हुये मन में ।
फूले नहीं अंग समाते हैं * हनुमत को लगा लिया तन में ॥

दोहा

मैं जाता हूँ लंक को * निज स्वामी के काज ।
मिलो जाय तुम राम से * जहँ कपि पति का राज ॥५२३॥

बहर खड़ी

प्रसन्न हुये महेन्द्र भूपत * आनन्द की सीमा नहीं रही ।
कल्याण होय हो काज सफल * शुभ वाणी भूप ने हृष कही ॥

नाना का आशीर्वाद पाया ✻ हनुमत करी है किलकारी।
मारी फुलाँच चढ़ वायुयान ✻ आगे बढ़ जावे बलधारी ॥
तेजी से छोड़ा वायुयान ✻ आकाश मार्ग से जाते हैं ॥
पहुँचे हैं दधि मुखी द्विप बीच ✻ यहाँ का अहवाल सुनाते हैं ॥
उस बन के बीच प्रज्ज्वलित थी ✻ बरनी प्रचण्ड अति बलशाली।
करते थे वो मुनि ध्यान जहाँ ✻ जब कपी नज़र उन पर डाली ॥

दोहा

तप करतीं थीं विपिन में ✻ कन्या तीन निहार।
हनुमत ने कीना तुरत ✻ अपने हृदय विचार ॥ ५२४ ॥

बहर खड़ी

होती है घास वृथा इनकी ✻ यह अग्नी में जल जायेंगे।
नहिं छोड़ इन्हें जाना चाहिये ✻ अपने कारज बन जायेंगे ॥
ऐसा विचार कर हनुमत ने ✻ सागर से पानी लाकर के।
बरनी पर किया प्रोक्ष तुरत ✻ दीनी है आग बुझा कर के।
कन्याओं की सब गई बिथा ✻ मन में आनन्द समाया है ॥
अपना सारा अहवाल आन ✻ हनुमत को तुरत सुनाया है।
हैं गा धन धन बलवान तुम्हें ✻ संतों का उपद्रव टाल दिया ॥
जो आया था आँधी समान ✻ वर्षा कर उसे निकाल दिया ॥

दोहा

पवन तनय कहने लगे ✻ कौन तुम्हारा ग्राम।
मात पिता हैं कौन से ✻ कौन सुगर है धाम ॥ ५२५ ॥

बहर खड़ी

दधि मुख्यनगर गान्धर्व राय है ✻ मारी प्रिया कुसुममाला।
उनकी हम तीनों कन्या हैं ✻ अहवाल सत्य सब कह डाला
मुनियों ने पितु से भविष्य कहा ✻ जो साहस गति को मारेगा।

इन कन्याओं को वही वरे * ये ही यश माला डारेगा ॥
पितु बहुत तलाश करी उनकी * पर उनका पता न पाया है ।
पछता के बैठ रहे पित तो * हम विद्या साधन आया है ॥
सुन कर हनुमान लगे कहने * जिसने साहस गति मारा है ।
वह वीर रहे किष्किंधा में * वही राम भक्त का प्यारा है ॥

दोहा

अस कह कर किया गमन * पवन तनय हनुमान ।
पवन गति से जा रहे * उड़े हुए असमान ॥५२८॥

बहर खड़ी

लंका के निकट विकट लंका * होकर निशंक जब आया है ।
देखा आशालिका विद्या को * अग्नी का कोट बनाया है ॥
बोली है विद्या हनुमत से * आगे को तु कहाँ जाता है ।
मैं खड़ी राह देखूँ तेरी * मुझ से क्यों बदन छुपाता है ॥
मैं यही चाहती थी हनुमत * आय उसका आहार करूँ ।
क्षुधा लग रही बहुत मुझको * तुझ से अब अपना पेट भरूँ ॥
केशरी कुमार यह सुन कर के * विद्या के मुख में तुरत गये ।
उर को विदार निकस बाहर * रवि बदली से जिम प्रगट भये ॥

दोहा

धाये कोट फरलांग कर * गये लंक दरम्यान ।
नाम वज्र मुख राक्षस * तुरत वहां का आन ॥५२७॥

बहर खड़ी

उस गढ़ का रक्षक वह निश्चर * जो कोट की रक्षा करता था ।
हर तरह भूप दशकंधर के * हृदय को निश दिन भरता था ॥
लख हनुमान गुस्सा कर के * कृपान उठाकर बढ़न लगा ॥
दीखे है काल कराल आन * हनुमान वीर से लड़न लगा ॥

एक ही चपेटे में उसको ❁ हनुमान वीर ने मार दिया।
जैसे गज कमल नाल तोड़े ❁ इस तरह खण्ड कर डार दिया॥
मार्ग के कंटक प्रथक् किये ❁ कुछ आगे बढ़ना चाया है।
जब तक आ लंका सुन्दरी ने ❁ मार्ग को आन दबाया है॥

दोहा

बल बुध विद्या रूप में ❁ जो थी अति हुशियार।
वज्जर मुख की बालिका ❁ मुद्द लड़न को त्यार ॥ ५२८ ॥

बहर खड़ी

अति रूपवान विद्याशाली थी ❁ लंक सुन्दरी एक नारी।
निज पितु का बदला लेने को ❁ आकर बाधन की बुधि मारी॥
अति चूर सूर भरपूर युवा ❁ संग्राम के हित ललकारी है।
देखा है हनुमान उसको ❁ जब मन के बीच विचारी है॥
हनुमत कर रहे विचार अभी ❁ उसने इक बाण चलाया है।
रोका उसको हनुमान तुरत ❁ बीच ही में काट गिराया है॥
उसने छोड़े हथियार बहुत ❁ हनुमत ने निष्फल कर दिये।
नहिं किया वार नारी ऊपर ❁ यह नीति वचन चित्त धर लिये

दोहा

असल रूप धर वीर ने ❁ किये शस्त्र ये काम।
सुन्दरता लख वीर की ❁ शरमाया मन काम ॥ ५२९ ॥

बहर खड़ी

जब चला ओर नहीं हनुमत से ❁ भर दृष्टि पुनः निहारा है।
हनुमत का रूप विलोक सुन्दरी ने ❁ तन मन धन वारा है॥
पित वैर के हित बिन जाने ही ❁ तुम से संग्राम किया मैंने।
अब क्षमा करो अपराध मेरा ❁ सागर पे काम किया मैंने॥
वाणी भविष्य मुनिराज ने की ❁ जो तेरे पित को मारेगा।

यह पुरयवान तेरा पति हो * सब तेरा कारज सारेगा ॥
अब शरण आप के आई हूँ * आशा मेरी पूर्ण कीजे ।
दासी को अपनाओ स्वामी * खुश होकर नाथ वचन दीजे ॥

दोहा

विनय वचन सुन वीर ने * कर गन्धर्व विवाह ।
कन्या को अपनाय कर * ली आगे की राह ॥४२०॥

बहर खड़ी

हनुमत प्रिय से ले चल दीने * लंका में गया कपि प्यारा है ।
लंकापुरी को देखी सारी * मन्दिर एक उच्च निहारा है ॥
गये भक्त विभीषण के घर में * सादर उनको बैठारा है ।
आने का कारण हनुमत से * पूछा मोदित हो सारा है ॥
लंका पति सीता को हर कर * वन में से यहाँ ले आया है ।
तुम दो छुड़ाय जा सीता को * मैंने तुमको समझाया है ॥
दशकंठ के योग न था यह छल * जो गलती से कर डाला है ।
जिसको यह आमन समझे थे * निकला वह भौंरा काला है ॥

दोहा

कहन विभीषण यों लगे * सुनो वीर बजरंग ।
दशकन्धर के शीश पर * छया कुमत का रंग ॥४२१॥

बहर खड़ी

बोले हैं विभीषण हनुमत से * सच सारा कथन तुम्हारा है ।
समझाया जेष्ठ बन्धु को बहुत * नहीं माने कहा हमारा है ॥
अब मान आज्ञा आपकी मैं * पुनः भाई को समझाऊँगा ।
जो आपकी आज्ञा है मुझ को * उस ही को शीश चढ़ाऊँगा ॥
अब पुनः प्रार्थना करूँ कपि * मैं सीता के छुड़वाने की ।
हर तरह करूँगा कोशिश मैं * लंकेश के भय समझाने की ॥

अच्छा हो उसके हृदय से यह * कुमत का जाल निकल जाये।
ले कहना मान दास का अब * और जिद सुमन से टल जाये॥

दोहा

सुनकर महलों से चले * तुरत वीर हनुमान।
पहुँचे बजरंग धाय कर * देव रमण उद्यान॥ ५३२॥

बहर खड़ी

बैठी सीता है शोक मयी * अशोक वृक्ष के नीचे हैं।
मुख पर उड़ रहे हैं श्याम केश * दोनों नैनों को मींचे हैं॥
नैनों से नीर वर्ष कर के * जड़ तरु अशोक की सींचे हैं।
उस जड़ में से जा उपज आय * कर देव भूमि पर कीचे हैं॥
जिस तरह कमलिना हिम पीड़ित * ऐसा आनन मुरझाया है।
जिस तरह कृष्ण की चन्द्र लोक * तन ऐसा जीर्ण बनाया है॥
या विद्यु भूल घन आम गिरि * उसकी आभा सब क्षीण भई।
या इन्द्रलोक की इन्द्राणी * मार्ग को भूल मलीन भई॥

दोहा

अधर शुष्क हैं दुःख से * व्याकुल हैं सब गात।
नीचा मुख है साय का * शीश धरे युग हाथ॥ ५३३॥

बहर खड़ी

वस्त्र मलीन तन क्षीण महा * अति दुखित विपिन बैठी सिया।
हनुमत देख अति दुखी हुए * अपने विचार मन में किया॥
होते हैं नैन पवित्र दर्श * ऐसी सतियों के करने से।
प्रत्येक धाम को इनके गुण * अपने हृदय के भरने से॥
इस महासती के विरह बीच - पीड़ित यदि राम सुजान जो है।
है दुःख उन्हें सो सम्भव है * इस शीलवती का ध्यान जो है॥
ऐसी सुन्दर और शीलवती * मिलती है पुण्यवान नर को।

है राम भूप को धन्य धन्य जो * न्याय को बैठे फर भर फो ॥

दोहा।

मणि मुद्रि हनुमान ने * लीनी हाथ उतार।
हो अदृश्य चढ़ वृक्ष पर * दी गोदी में डार ॥ ८३४ ॥

बहर खड़ी

सुन्दर मुद्रि को लख सीता * हो गई शुभ तेज कमर सी है।
हो मोह सिन्धु के बीच पड़ी * यह मुद्री आन भँवर सी है॥
खुश हो सीता ने ली उठा * प्यारी मुद्री पिय प्यारे की।
ले हाथ लगी बतराने को * इस जीवन के रखवारे की॥
किस तरह लंक में तू आई * तू राम के कर की प्यारी है।
मैं यदि हृदय की प्यारी हूँ * तू मुझ से भी अति प्यारी है॥
क्या मेरी तरह तुझे कोई * लंका में हर ले आया है।
या तुझे सहायक अपना कर * मेरी सुध लेने आया है॥

दोहा

उन कर की तू मुद्रिका * जो कर कमल प्रधान।
यह कर कैसे त्याग कर * लंका पहुँची आन ॥ ८३५॥

बहर खड़ी

छायाँ है जिनकी तीन खण्ड * ऐसे कर तजकर आई है।
क्या हृदय चन्द्र के राघव की * कुछ मुझे सूचना लाई है॥
आँखों से लगा लगा सीता * मुन्द्रि को हृदय लगाती थी।
फूली नहीं अंग समाती थी * मुन्द्रि से प्रेम बढ़ाती थी॥
लखकर प्रसन्न मन सीता को * आकर त्रिजटा ने खबर करी।
अति दुखित रहे थी जो सीता * उसके मन हुलास भरी॥
भारत सब गाथ सुना उसका * अति मोद समाया है मन में।
हँसती प्रसन्न चित्त बैठी है * अति फूल रही है वह तन में॥

दोहा

सुन कर मन्दोदरी से * बोले रावण बैन ।
आज सिया प्रसन्न है * लो मनाय यह कहन ॥ ५३६॥

बहर खड़ी

आकर सीता को समझाओ * वह आज राम को भूली है।
अनुराग तरफ मेरी हुवा * और मोद से मन में फूली है ॥
पति का दूतीपन करने को * सुनकर मन्दोदरी चल दीनी।
सीता का सुमन लुभाने को * राह अशोक वन की लीनी ॥
देखी है जनक सुता बैठी * प्रसन्न चित्त अति पाई है।
हिम कण से कमल हुआ पावन * ऐसी छवि आनन छाई है ॥
फिर विनय भाव से सीता के * मन को निज हाथ उठाया है।
सम्पत्तिवान और अति सुंदर * दशकंठ तुम्हें समझाया है ॥

दोहा

सुन्दर, सुगर, सुहावना * लावण्यता की खान।
लंकापति के योग तुम * सुनो लगा कर कान ॥ ५३७ ॥

बहर खड़ी

यद्यपि उस मूर्ख विधाता ने * नहिं योग पती तुम को दिया।
नहिं यान तलक जिसके तट था * ऐसे से व्याह साथ किया ॥
अब योग पुरुष जानकी तुम्हें * रावण जैसा मिल जायेगा।
दिन रवि कुमलाई कमलिनी थी * दिनकर लख दिल खिल जायेगा॥
माने हैं बड़े बड़े जिसको * नृप अर्चन योग सु देवा है।
वही लंकेश करे प्यारी * आकर के तेरी सेवा है ॥
ऐसे स्वामी के मिलने से * फिर भी तुम मुँह छिपाती हो।
जो तुम को तन मन से चाहे * तुम उसको क्यों नहिं चाहती हो

दोहा

सीता बोली क्रोध कर * सुन मन्दोदरी बात ।

दूती पापिन मुर्मुखी * कहते नहीं लजात ॥ ४३८ ॥

बहर खड़ी

तेरे प्रियतम दशकंठ का अब * तू आया समय समझ लीजो।
लंका का नाश तुरत होगा * मेरे वचनों पर चित्त दीजो ॥
जिसने खर आदिक को मारा * यह लंक में आने वाला है।
तेरे पति को और देवर को * परलोक पठाने वाला वाला है॥
तुझ को वैधव्य दान देकर * मनसा पूरण कर जायेगा।
नहीं बाकी रहें निशाचर यहाँ * ऐसी सम्पत्ति भर जायेगा ॥
हो दूर यहाँ से तू कुटनी * मत मुझको मुख दिखलैयो तू।
है शपथ तुझे निज स्वामी की * मत मेरे सन्मुख अइयो तू ॥

दोहा

आया है दशकंठ पुनः * देखा दृष्टि पसार ।
सीता से कहने लगा * कर में ले तलवार ॥४३८॥

बहर खड़ी

सीता ले मान कहा मेरा * मत ज्यादा मुझे सताये तू।
येकल दिल को कल दे देवी * कलपा के न कलपाये तू ॥
बस भला इसी में तेरा है * लंकापति की आज्ञा मानो।
हट छोड़ हठीली तू अपनी * हट को अपनी अब मत तानो ॥
हट करी हठीली गर अब जो * कृपान तेरा खूँ चाटेगी ।
जो अब जिह्वा पर ना आई * तो जिह्वा तेरी काटेगी ॥
स्वीकार प्रेम मेरा जो करे * तो पटरानी हो जायेगी ।
इनकार किया इससे तैने * तो नाहक मारी जायेगी ॥

दोहा

इस भयकी से सिंहनी * भय नहिं करे लगार।
घायन को डरपा रहा * खड़ा सामने स्यार ॥ ४४० ॥

गायन

(तर्ज—बिना रघुनाथ के देखे)

कहे सीता सुनो रावण * तू डर किसको दिखाता है।
सिवा श्री राम के मुझ को * नज़र दूजा न आता है ॥टेर॥
तुझे है राज का अभिमान * या सोने की लंका का।
मगर ना चीज़ जानूँ मैं * क़दर तू क्यों घटाता है ॥१॥
अठारह सहस्र घर नारी * सबर तुझ को नहीं आता।
गैर औरत से इस दिल को * अरे! क्यों नहीं हटाता है ॥२॥
स्वयंवर जीत के लाता * क़ायदा था नरेशों का।
चुरा के तू मुझे लाया * फेर मुँह क्यों दिखाता है ॥३॥
अगर गंगा चले उल्टी * चाँद से आग भी निकले।
फेर सूरज भी शीतल हो * मगर ये सत न हटता है ॥४॥
नहीं परवा सुरेन्द्र की * तेरी फिर हैसियत है क्या।
भेज दे राम पे मुझ को * जो तू आराम चाहता है ॥५॥
सिया ने बहुत रावण को * कहा लेकिन नहीं माना।
'चौथमल' कहे जो होनी हो * नहीं फिर ध्यान आता है ॥६॥

बहर खड़ी

जम्बुक वरकंठ समझ मन में * मैं सिंह पुरुष की नारी हूँ।
गीदड़ के डर से क्या डर कर * मैं तज सकती आचारी हूँ॥
कागा से कोयल किस तरियाँ से * कहो प्रेम कर सकती है।
कहीं काम धेनु भी गधे की * मूरख नारी बन सकती है॥
बिन चन्द्र के विकसे किस तरियाँ * सर में नलिनी खिल सकती है।
किस तरह असुर से सुरपति की * रानी आकर मिल सकती है॥
तू दिखाता रहा रूपाल किसे * रूपाल काम नहीं आयेगी।
सुख सम्पति धन वैभव तेरी * सब पड़ी यहाँ रह जायेगी॥

दोहा

सब रह जायेगी यहीं * पड़ी हुकूमत शान ।
गम गले क्षण में तेरे * निकल जायेंगे प्रान ॥५४१॥

बहर खड़ी

गज रथ सब यहाँ के यहीं रहें * संग आवे न वासकी पालकी है
योधा सब रहें देखते ही * अब लाठी भूमें काल की है ॥
जिन रत्नों को चमकाता है * यह रत्न काम नहीं आयेंगे ।
लक्ष्मण के बाणों के सन्मुख * सब मान तेरे ढल जायेंगे ॥
तलवार की ताकत तुझ में थी * तो राम के सन्मुख ले लाता ।
क्यों कूकर कासा कर्म किया * सिंहों की तरह निडर आता ॥
अब समय आ गया है तेरा * इस से मन मेरा खोल रहा ।
मरना लक्ष्मण कर से चाहे * इसलिये बोल यह बोल रहा ॥

दोहा

यह सुन दशकंधर गया * करके क्रोध कराल ।
उतर विटप से आ गये * सन्मुख कपि तत्काल ॥५४२॥

बहर खड़ी

जाता देखा है रावण को * कर जोड़ खड़े हनुमान हुये ।
माताजी कुशल राम लक्ष्मण * कह कर कुश पुष्प समान हुये ॥
मैं राम की आज्ञा से माता * यहाँ तुम्हें खोजने आया था ।
सारी लंका में खोज करी * जब आपको यहाँ पर पाया था ॥
अब खबर आपकी लेकर के * यहाँ से किष्किंधा जाऊँगा ।
उस समय राम को संग लेके * माता मैं लंका आऊँगा ॥
अब हनुमान को जनक सुता * ऊँचा कर शीश निहारा है ।
नैनों में जल कण छाय रहे * सिया देखा वचन उचारा है ।

दोहा

हे धीरा तुम सच कहो # अपना सत्त बयान ।
नाम ग्राम का दो पता # तुमरा कहाँ स्थान ॥८४३॥

बहर खड़ी

किस नृप के यदि पुत्र तुम हो # सब अपना हाल बता देना ।
क्या नाम आपका है मुझ को # शुभ नाम से सूचित कर देना ॥
यह सुन कर पवन कुमार अपना # सब नाम धाम बतलाते हैं ।
प्रह्लाद नगर के पवन भूप # उनके हम पुत्र कहाते हैं ।
है मात नाम है हनुमान # अजनी मात का जाया हूँ ।
रघुनाथ का कारज करने को # मैं लंक पुरी में आया हूँ ॥
श्रीराम लखन अति मन प्रसन्न # किष्किंधापुर में ठहरे हैं ।
बस विरह आपके के उनके # अति घाव जिगर में गहरे हैं ॥

दोहा

वायुयान द्वारा किया # सागर मैंने पार ।
पुन सागर को लाँघ कर # आया लंका द्वार ॥८४४॥

बहर खड़ी

जिस तरह बिछड़ कर गौ छौना # माता के हेत फड़कता है ।
बस इसी तरह लक्ष्मण तुम बिन # माता दिन रात फड़कता है ॥
सुग्रीव भूप उनको निश दिन # आश्वासन देते रहते हैं ।
भामन्डल और विराध धीर # उत्साहित करते रहते हैं ॥
महेन्द्र आदि भारी राजा # सब राम की सेवा करते हैं ।
सेना होगई एकत्र बहुत # संग्राम का श्रम दम भरते हैं ॥
देकर मुद्रिका राम मुझ को # माता तब पास पठाया है ।
विश्वास के कारण चूड़ामणि # तुम से भी माता मँगाया है ॥

दोहा

पूछा है हनुमान ने * मात कहो सब बात।
भोजन कब से नहिं किये * जो कुमलाया गात ॥५४५॥

बहर खड़ी

बीते है दिन इकतीस वीर * धीरज धर मन बहलाती हूँ।
मैं राम चरन का ध्यान धरूँ * न पीती हूँ न खाती हूँ॥
यह सुन कर वीर कुलाच भरी * फल फूल तोड़ कर लाये हैं।
हनुमान आग्रह से सिय को * पुनः भोजन तुरत कराये हैं॥
दीनो उतार फिर चूड़ामणि * लो वत्स इस तुम ले जाना।
मेरा यह चिन्ह स्वरूप जाय * रघुनाथ को धीरा दिखलाना॥

गायन

[तर्ज—मी नदजी के कन्हैयालाल मारे घर आवजो रे]

मुद्रिका मुझ कर की हनुमान * लेई ने जाव जो ॥ २ ॥ टेर ॥
कहीजो सीताजी ने सास * प्रभु को चित्त तुम्हारे पास।
लग रही एक मिलन की आश * यही सुनावजो ॥ २ ॥ १ ॥
स्वाय न लागे अन-जल पान * सुन्दर एक ही तेरा ध्यान।
योगी जैसे भजे भगवान् * धैर्य बधावजो ॥ २ ॥ २ ॥
विश्वास खूब उसे दिराजो * कहेजो मरना प्राण गमाजो।
भाता चूड़ामणि तुम लाजो * भूल मत जावजो ॥ २ ॥ ३ ॥
'चौथमल' कहे राम यूँ फेर * लक्ष्मण आने की है देर।
मार रावण को वरताये सैर * म सहाय लावजो ॥ २ ॥ ४ ॥

बहर खड़ी

अब शीघ्र गमन कर लंका से * यदि राक्षस आया जानेंगे।
तो तुम्हें कष्ट पहुँचायेंगे * नाहक में रार बढ़ावेंगे॥

दोहा

सीता माता के बचन * सुन बोले हनुमान।

माता मेरी ओर को * दीजे किंचित ध्यान ॥४४६॥

बहर खड़ी

वात्सल्य प्रेम से माताजी * तुमने यह वचन उचारा है।
जो तीनों लोक विख्यात हैं * उनका यह दूत पियारा है॥
इस बाल्य अवस्था पर मेरी * मत मात ध्यान कुछ करना तुम
मेरे लिये इन निशाचरों ने * मन में मात न डरना तुम॥
इतना कह कर हनुमान वानर * अपना बदन बढ़ाया है।
विद्या से वीर रूप धर कर * माताजी को दिखलाया है॥
फिर विकट भेष धर बजरंगा ने * ऐसे वचन उचारा है।
माता जब कृपा आपकी तो * रावण क्या चीज विचारा है॥

दोहा

जो आज्ञा दो तुम मुझ * तो माता इस वार।
सन साहित लंकेश का * पहुंचाऊं यम द्वार ॥४४७॥

बहर खड़ी

ऐसा कौतुक कर दिखलाऊं * निश्चरों को यम पुर पहुंचाऊँ।
डूं डुवा सिन्धु में लंका को * तुम को घर कन्ध लजाऊं॥
सुन कर सीताजी हनुमत से * खुश होकर यस कहन लगी।
जिसतरहशाम्भिसुरसरितिमस्त * ले ले उमग मन बहन लगा॥
हे भद्रे! तुम्हारे वचनों की * प्रतीत मेरे मन आई है।
मैं जान गई तुम को वीरा * हनुमत बड़ा बलदाई है॥
जो वचन सुनाये हैं मुख से * तू पूरे कर दिखला देगा।
ले जाके हर्ष सहित मुझ को * श्री राम निकट बैठा देगा॥

दोहा

शक्ति इसी प्रकार की * है तेरे तन मांहि।
पर मैं दूज पुरुष का * तन परसूंगी नांहि ॥४४८॥

गायन

(तर्ज-श्री मंतजी के कर्मेमाखाख मारे घर आयजो रे)

लेकर चूड़ामणि हनुमान * वेगा आय जो रे ॥ टेक ॥
प्रभुने कहीजो तुम्हारी दासी * आपके दर्शन की है प्यासी।
जानकी रहवे सदा उदासी * सविनय सुनायजो रे॥१॥
मरती सिया न संशय लगार * जीवी नाम तणों आधार।
लीजो सुध कौशल्या कुमार * न देर लगाय जो रे ॥ २ ॥
यह है दुश्मन का ही स्थान * हुश्यार तुम रहना हनुमान।
अर्ज मेरी जहाँ पर है भगवान् * ठेठ पहुँचायजो रे ॥ ३ ॥
'चौथमल'कहे सीता हितकार* लगाओ मत रघुवर अब वार ।
भैया लछमन को ले लार * वेगा आय जो रे ॥ ४ ॥

बहर खड़ी

अब तुरत राम के पास वीर * ले चूड़ामणि चले जाओ ।
हो चुका काम यहाँ का सारा * नाहक तुम मार मती खाओ ॥
जाऊँगा तुरत राम तट मैं * पर परिचय इन्हें करा जाऊँ।
संसार में और बली कोई * है या नहिं जरा दिखा जाऊँ ॥
वीरों का धर्म यही माता * दिखला पराक्रम है जाना।
रावण सर्वत्र विजयी बनता * नहिं और किसी का बल जाना॥
हो विजय तेरी जाओ बेटा * सीता ने आशीर्वाद दिया ।
पद शीश झुका कर हनुमत ने * सीता के तट से गमन किया॥

दोहा

देखा जा बजरंग ने * उपवन दृष्टि पसार।
बड़े बड़े तरु वाणिक में * कीने तुरत उखार ॥ ५४१ ॥

बहर खड़ी

भुजबल से देव रमण वन के * तरु तोड़ तोड़ कर डारे हैं।

इमली और आम्र अनार विटप # जड़ में से तुरत उखारे हैं ॥
कदली कदम्ब पुवरू कटेर # सलि उखाड़ भू पटके हैं ।
गेंदा गुलाब चम्पा मरुआ # केतकी चेमली झटके हैं ॥
रक्षक यह देख देख धाये # हनुमत के सन्मुख आये हैं।
हनुमत ताड़-तोड़ सब को # रक्षकों के शीश झुकाये हैं॥
बहुतेरे हुवे धराशायी # जो रहे सो आये पुकारे हैं।
आया हनुमान अशोक विपिन # अरएय सब तोड़-तोड़ कर डारे हैं

दोहा

वशक घर से आय कर # रक्षक करें पुकार।
आया कपि एक बाग में # कीना विपिन उजार ॥ ५५० ॥

बहर खड़ी

तरवर पर सब सेव शरीफों के # सारे उपवन से तोर दिये
नींबू अनार और नारंगी # टहनी को पकड़ मरोर दिये ॥
आड़ू अमरूद आम्र इमली # अब देते नहीं दिखाई हैं।
तोड़ अशोक तरवर सारे # लता को तोड़ गिराई हैं ॥
तोड़ा है राय बेल बेला # ग्राम जुही चमेली सारी है।
चम्पा और चाँदनी चन्दन की # डाली डाली कर डारी है॥
सारा उद्यान उजाड़ दिया # रक्षक भी मारे सारे हैं।
यह तड़फ रहे उपवन में पड़े # जिनके तन घायल भारे हैं ॥

दोहा

सुन कर रक्षकों के वचन # किया क्रोध कराल।
अक्ष कुँवर को सैन संग # भेज दिया तत्काल ॥ ५५१ ॥

बहर खड़ी

सैना के संग तुरत रावण # अक्षय कुमार भिजवाया है।
देखा है देख रमण उपवन # उजाड़ लख मन झुंझलाया है ॥

रे कपि मूर्ख विपिन साग * तैने ऊजड़ कर डारा है ।
रक्षकों को मारा क्यों तूने * इनने क्या तेरा बिगाड़ा है ॥
यह कह बाणों की वर्षा कर * हनुमान से वह लड़ने लागा।
सैना के बल पर फूल फूल * आगे सन्मुख बढ़ने लागा ॥
जँवे हनुमान ने यह देखा * भारी एक वृक्ष उखारा है ।
कर में उठाय कर घुमा घुमा * अक्षय कुमार के मारा है ॥

दोहा

अक्षय कुमार का सुन मरन * रावण किया विचार ।
इन्द्रजीत को बाग में * भेज दिया उस बार ॥५५२॥

बहर खड़ी

सुन कर के भाई का मरना * मन इन्द्रजीत झुँझलाया है।
सेना के संग तुरत उठकर * हनुमान के सन्मुख आया है ॥
मारुती खड़ा रहे खड़ा रहे * छुपने से चलता काम नहीं ।
सन्मुख आकर संग्राम करो * खाली कर जाना धाम नहीं ॥
ऐसा कह करी बाण वर्षा * बजरंग भी डट मैदान गये ।
चलते हथियार दुसर्फा से * गिरते धरती पर ज्यान गये ॥
एक एक पर शस्त्र छोड़ रहे * नभ भान नहीं दरसाते हैं।
कल्पान्त काल कैसे कराल * विकाल बाण बरपाते हैं ॥

दोहा

युद्ध भयंकर हो रहा * रण का छाया रंग ।
देख हाल तरु तोर कर * लिया हाथ बजरंग ॥५५२॥

बहर खड़ी

मारा है ताल घुमा कर के * निर्भर सेना थर्राई है ।
मैदान छोड़ भागने लगी * डटती नहिं भूमि डटाई है ॥
अब इन्द्रजीत ने यह देखा * अपने मन में झुँझलाया है ।

इमली और आम्र अनार विटप * जड़ में से तुरत उखारे हैं ॥
कदली कदम्ब कुचरू कटेर * लीने उखाड़ भू पटके हैं ।
गेंदा गुलाब चम्पा मरुआ * केतकी चेमली झटके हैं ॥
रक्षक यह देख देख धाये * हनुमत के सन्मुख आये हैं ।
हनुमत लाड़-तोड़ सब को * रक्षकों के शीश झुकाये हैं ॥
बहुतेरे हुवे धराशायी * जा रहे सो आये पुकारे हैं ।
आया हनुमान अशोक विपिन * अरण्य तरु तोड़-तोड़ कर डारे हैं

दोहा

दशकन्धर से आय कर * रक्षक करें पुकार ।
आया कपि एक बाग में * दीना विपिन उजार ॥ ५५० ॥

बहर खड़ी

तरवर पर सब सेब शरीफों के * सारे उपवन से तोर दिये
नींबू अनार और नारंगी * टहनी को पकड़ मरोर दिये ॥
आड़ू अमरूद आम्र इमली * अब देते नहीं दिखाई हैं ।
तोड़ अशोक तरुवर सारे * सब को तोड़ गिराई हैं ॥
तोड़ा है बाग बेल बेला * जूम जुही चमेली सारी है ।
चम्पा और चाँदना चन्दन की * डाली डाली कर डारी है ॥
सारा उद्यान उजाड़ दिया * रक्षक भी मारे सारे हैं ।
यह तड़फ रहे उपवन में पड़े * जिनके तन घायल भारे हैं ॥

दोहा

सुन कर रक्षकों के वचन * किया क्रोध कराल ।
अक्ष कुँवर को सैन संग * भेज दिया तत्काल ॥ ५५१ ॥

बहर खड़ी

सैना के संग तुरत रावण * अक्षय कुमार भिजवाया है ।
देखा है देव रमण उपवन * उजड़ा तब मन झुंझलाया है ॥

फूले पलास की तरह पाप * तसु फल का यह आया है।
पावेंगे हा हा कार नगर * जारन के हित अगारा है॥
जा के ठहराये सभा बीच * रावण की नज़र गुजारा है।
राजे यह देख देख हँसत * दशकंधर वचन उचारा है॥

दोहा

दुर्मति तैंने क्या किया * बिना विचारे कार।
राम लखन आश्रित मेरे * तुम क्यों हुये लार ॥५५६॥

बहर खड़ी

वासी हैं वन के फल अहारी * अति दीन मलीन वस्त्र पहरे।
जैसे कि राम रहते वन में * वलकल धारण कर अति गहरे॥
यह भूचर हैं अति बुद्धिमान * आगे मोहरे पर भेजा है।
किस तरह यहाँ पर यह आते * इतना कहाँ बड़ा कलेजा है॥
तुझ पर प्रसन्न जो हो भी गये * तो तुझ को यह क्या दे देंगे।
तेरी मैय्या को मझाह वन * क्या जग समुद्र से ले लेंगे॥
पहले सेवक तू मेरा था * अब उनका दूत कहाया है।
भीलों के कहने से मूरख तू * लंकागढ़ में आया है॥

दोहा

आया बन कर दूत तू * अवध इसी से जान।
वरना कर जाते तेरे * आज ही प्रान पयान ॥५५७॥

बहर खड़ी

पर सजा अवश्य ही अब तुझ को * अपने कर्मों की पानी है।
बँध कर आये मेरे सम्मुख * कर लीनी यह मनमानी है॥
दशकंठ की बातें सुन कर के * हनुमत वीर ललकारे हैं।
सेवक हम तेरे थे कब से * हुये स्वामी आप हमारे हैं॥
लज्जित नहीं होते कहते में * हम सदा सहायक तेरे थे।

फर लोचन लाल-लाल दोनों * कर तीक्षण बाण उठाया है॥
जितने शस्त्र रिपु ने छोड़े * हनुमन्त ने काट गिराये हैं।
यह युद्ध कला दिखला दोनी * सब सब ने चक्कर खाये हैं॥
पुष्कलावर्त सम मेघ धार * दश पुत्रों ने वर्षाई है।
बजरंग वीर ने देख युद्ध * किलकारी एक लगाई है॥

दोहा

कटकटाय कर कड़क कर * कर लीना हथियार।
इन्द्रजीत के कूद कर * मारी है पुन मार॥५५४॥

बहर खड़ी

नहीं सहन हुआ बजरंग धार * जब इन्द्रजीत उर धारा है।
अहि बाण लिया धनु पै चढ़ाय * हनुमत के ऊपर मारा है॥
बँध गये वीर बजरंग तुरत * कस लिया व्याल ने तन सारा।
जिस तरह लिपटता चन्दन से * अति व्याल वृद आकर भारा॥
गिरते गिरते बजरंगी ने * ऐसी माया फैलाई है।
निश्चर के दल के दल सारे * धरती पे दिये गिराई है॥
फिर सोचा सरगम करूँ पाश * पर कौतुक नजर न आवेगा।
इसलिय पाश में बँधा रहूँ * दरबार मुझे ले जावेगा॥

दोहा

यह विचार कर वीर ने फैलाई नहिं शक्ति।
सोच समझ कर रह गये * सच्च राम के भक्ति॥५५५॥

बहर खड़ी

आये हैं भूमि के ऊपर * छवि जिस पै छटा चमकती थी
दिनकर सम दम दमाट हुआ * दम दम में दमक दमकती थी॥
बाँध बजरंग रंग भू से * सब संग सैन की धाया है।
रावण कर कर्म कुकर्मों क * फैलाने का मकार है॥

दोहा

लख राम सय आ रहा * सारा कपिदल फूल।
पहुँचे निकट महेन्द्रपुर * काटा है तम सूल ॥५६७॥

बहर खड़ी

पहुँचे महेन्द्रपुर में आ के * पुर बाहर ठहरी सेना है।
यहाँ के नृप सेतु समुद्र युगल * देखा लश्कर भर नैना है॥
रोका लश्कर को आकर के * सेना से युद्ध मचाया है।
नल ने समुद्र को बाँध लिया * कस नील सेतु को लाया है॥
कर दिये खड़े हरि के सन्मुख * दोनों राजों को जाकर के।
श्री राम ने छोड़ दिये दोनों * लीना उनको अपना कर के॥
भूपत समुद्र ने लक्षण को * तीनों कन्या परणाई है।
फिर संग राम के हो लीने * सारी सैना सजवाई है॥

दोहा

आगे जाकर दधि में * आया सुवेल गिरि धाम।
नृप सुवेल को जीत के * वहीं किया विश्राम ॥५६८॥

बहर खड़ी

होते ही भोर पयान किया * सागर के किनारे आये हैं।
गज, बाज पयादे, रथ आगे, * आके सब ही ठहराये हैं।
देखा कर बैठ गये रघुवर * सुर लौन सेठिया आराधा है॥
प्रभु प्रेम के पूर्ण होते ही * दी दूर हटा सब बाधा है।
आकर के सुर प्रकट हुआ * अदा युक्त शीश झुकाया है॥
कर जोर कहा कहिये भगवन् * किस कारण मुझे बुलाया है।
मैं दास आपका हूँ भगवन् * कृपा कर शीघ्र सुना दीजे॥
जो कारज दास के योग होय * उस कारज की कृपा कीजे।

दोहा

सुन कर प्रभु कहने लगे * करन भार जग धार।

चूड़ामणि दीनो हाथ तुरत * सारा अहवाल सुनाया है ॥

दोहा

कर उठाय लिया तुरत * चूड़ामणि उस बार ।
बार बार कर में उठा * उसको रहे निहार ॥ ५६२ ॥

बहर खड़ी

सीता की भाँति चूड़ामणि को * अति प्रेम से राम निहार रहे ।
हृदय से लगाते बार बार * कर उसके प्रति सत्कार रहे ॥
फिर पुत्र की तरियां हनुमत का * रघुवर ने कंठ लगा लिया ।
मैं तुम उऋण न हो सकता * ऐसा विचार प्रगट किया ॥
तुम सुभटों में हो परम सुभट * वीरों में तुम बलवान हो ।
हृदय के प्यारे हो मेरे * हनुमन्त भरत सम भाई हो ॥
पुन लंका का वृत्तान्त सभी * हनुमत स सुन हर्षाये हैं ।
हनुमत की प्रशंसा सब ही * राजा-जन मिल कर गाये हैं ॥

दोहा

सीताजी का सब सुना * श्री राम ने हाल ।
करी चढ़ाई हर्ष युत * रघुवर ने तत्काल ॥ ५६३ ॥

बहर खड़ी

सब कटक विकट सज गया तुरत * सुग्रीव आदि बहु राजे हैं ।
भामण्डल, जामवन्त, अंगद * नल नील सुभादि विराजे हैं ॥
कपि पति नद सलील आदि * महेन्द्र पवनञ्जय के नंदन ।
सग वीर विराध महा बल भी * भूपति सुखे न करते वन्दन ॥
विद्याधर बैठ विमान चले * रथ गज तुरग कोई धाये हैं ।
उत्साह सहित मिलके सबने * रण के बाज बजाये हैं ॥
नभ मंडल गूँज उठा सारा * रवि रथ छुप गया विमानों में ।
धूल बादल सा आ रहा बड़ा * छाया गुबार असमानों में ॥

बहर खड़ी

धन धन्य कुशलता को नृपवर * जब तक यह सेतु बँधा रहेगा।
जब तक जग में हो अक्षय सुयश * नल नील को धन धन जग कहेगा॥
जब उतर सैन गई सेतु पार * तो हंस द्वीप में आये हैं।
लख दल को हंस द्वीप के * सब नर नारी मन दहलाये हैं॥
फिर तुरत हंस रथ दी आज्ञा * सब कटक राम का रोक दिया।
लिया है राम ने जीत उसे * निशा में फिर यहीं कयाम किया॥
यह हुई सूचना लंका में * कि राम लखन चढ़ आये हैं।
घर घर में मचा कुलाहल सा * नर नारी सब दहलाये हैं॥

दोहा

जैसे राशी झक विषय * आन शनी दैराय।
उसके आन से तुरत * खलबल जग मच जाय ८६६॥

बहर खड़ी

बस यही दशा लंका की थी * घर घर में खल बल मची हुई।
प्रत्येक नारि नर के मन में * लंका जाने की ऊँची हुई।
नज़रों में प्रलय काल का सा * उनको यह समय दिखाता है॥
शंका लंका की है सबको * हृदय घबराया जाता है॥
जब मिली सूचना रावण को * लंका के निकट राम आये।
मारीच आदि तय्यार हुये * पुन हस्त प्रहस्त तुरत धाये॥
मदमस्त निशाचर लड़ने को * श्रीराम लखन तयार हुए।
रणशूर हुआ दशकंधर का * योद्धा सारे हुशियार हुए॥

दोहा

अति उतावला विभीषण * गया जहाँ लंकेश।
बोला है वाणी मधुर * विनती करी विशेष ॥८७०॥

बहर खड़ी

य धु धव समय शान्त हो कर * एक अर्ज़ मेरी सुन लीजे तुम।

मार्ग हमको दीजिये * हम आयेंगे पार ॥५६६॥

बहर खड़ी

सुन कर सुर वानी को बोला * जो बड़े बड़ापन धारते हैं।
वह छोटों की हर समय नाव * डूबी हुई यों ही उबारते हैं॥
हे नाथ ! आपकी दृष्टि से * प्रलय का समय दिखाता है।
लोचन फिर जाते हो रौरव * अलकापुर सम हो जाता है॥
सेवक आज्ञा के करने को * हर समय समय तैयार हो है।
अनुशासन स्वामी का सिर पर * रखना मुझको स्वीकार तो है॥
इस खाड़ी सागर का स्वामी * इसका तो सेतु बँधा लीजे।
इस में विलम्य नहिं हाय जरा * मार्ग निष् कटक कर दीजे॥

दोहा

सुगम पथ कीजे प्रभु * लीजे सेतु बँधाय।
दीजे आज्ञा दास को * जो मन और समाय ॥५६७॥

बहर खड़ी

दो नरेश आपकी सभा में * जो साथ आ रहे हैं रण में।
नल नील अतिशय ज्ञान कर * हुशियार बहुत हैं इस फन में॥
सुन कर रघुनायक ने दोनों * राजों को पास बुलाया है।
तुम सतु बाँध दो सागर का * यह हर्षा हुकुम सुनाया है॥
पाषाण शिला मँगवा कर क * चातुरता भूप दिखाते हैं।
बँध गया सेतु यह आकर क * रघुनायक को समझाते हैं॥
अब चरण धारिये असुरारी * लो देख सेतु तैयार हुआ।
सेना को आज्ञा द दीजे * अब आय उतर सरसार हुआ॥

दोहा

बाँधा सेतु सुहावना * देखा दृष्टि पसार।
राम लखन मन हो मुदित * कहत बारम्बार ॥५६८॥

लंकेश आप कामन्ध बने * तुमको कुछ नज़र नहीं आता।
शुभ परामर्श जो होता है * वह तेरे जिगर नहीं भाता॥
यह बात विभीषण की सुन के * रावण के क्रोध समाया है।
ले खड्ग हाथ अपने रावण * भाई के ऊपर धाया है॥
यह देख विभीषण सम्ह उठा * रावण के सन्मुख आया है।
पुन इन्द्रजीत और कुम्भकरण * दोनों को पृथक् कराया है॥

दोहा

छोड़ तुरत जाओ चले * लंका को तत्काल।
मुख मत दिखलाना मुझे * आ हो धार कराल॥५७३॥

बहर खड़ी

दशकंठ वचन को सुन कर के * लंका को छोड़ सिधार चले।
वह भक्त विभीषण राम की * सेवा को करके स्वीकार चले॥
दश सहस आठ सौ थे हाथी * तीस हज़ार आठ सौ सत्तर रथ।
छियासठ हज़ार घोड़े सवार * ले लिया विभीषण के संग सथ॥
एक लक्ष नव सहस्र थे पैदल * तीन सौ पचास पैदल जानो।
यह पूरा योग अक्षौहणी का * ऐसी ही तीस अक्षौहणी मानो॥
यह दल बल लिया संग उनके * दशकंठ न परवाह ज़रा करी।
पहुँच हैं निकट राम दल के * श्रद्धा उनके मन बीच भरी॥

दोहा

देखा है सुग्रीव नृप * बोले हर्षे बैन।
लंकापति का भ्रात प्रभु * आये संग ले सैन॥५७४॥

बहर खड़ी

भेजा है दूत विभीषण ने * आने की ख़बर पठाई है।
पहुँचा है दूत तुरत हरि पर * सब जाकर ख़बर सुनाई है॥
विश्वासपात्र सुग्रीव और * जब राम ने तुरत निहारा है।

शुभ फल प्रकटाने वाली मम ❁ बातों पे लक्ष सु दीजे तुम ॥
आये हैं राम सिया के हित ❁ सीता को ले जाओ स्वामी।
हर्षा के मिलो राम से जा ❁ शुभ शब्द हृदय लाओ स्वामी।
स्वागत से लंका में लाकर ❁ उनका सत्कार करो स्वामी।
ये वचन आपके हित के हैं ❁ हृदय के बीच धरो स्वामी॥
यदि ऐसा नहीं करोगे तुम ❁ तो फिर पीछे पछताओगे।
जिसने साहस गति और खरका ❁ मारा वह मार्ग पाओगे॥

दोहा

सुन कर योला इन्द्रजय ❁ कायर क्रूर महान ।
सारा कुल दूषित किया ❁ सूरसपम में आन ॥ ५७१ ॥

बहर खड़ी

ऐसी ही बातें कर कर के ❁ पितु को डरपोक बनाते हो।
पहिले भी ठगा पिताजी को ❁ तुम अब भी ठगना चाहते हो॥
दशरथ के मारने के कारण ❁ पहिले भी तुम ही धाये थे।
आकर कह दिया मार आये ❁ पर बिन मारे ही आये थे॥
होकर निर्लज्ज भूचरों का डर ❁ अब भी तुम दिखलाते हो।
और राम की रक्षा इस कर से ❁ अब भी तुम करना चाहते हो।
तुम राम के पक्षी दिल से हो ❁ लंका का बुरा चाहते हो।
चाहते हो विजय राम की ❁ तुम उन्हीं के गुण को गाते हो॥

दोहा

पक्ष ना रिपु दल का मुझे ❁ मगर आप का ध्यान ।
आत समझ के बात को ❁ निज मन में पहिचान॥५७२॥

बहर खड़ी

यह इन्द्रजीत कुल शत्रु हो ❁ कुल में उत्पन्न हुआ आकर।
मानेगा यह जय ही सुमित्र ❁ सारे कुल को क्षय करवा कर॥

शुभ फल प्रकटाने वाली मम * बातों पै ध्यान सु दीजे तुम ॥
आये हैं राम सिया के हित * सीता को ले जाओ स्वामी ।
हर्षा के मिलो राम से जा * शुभ शब्द हृदय लाओ स्वामी ॥
स्वागत से लंका में लाकर * उनका सत्कार करो स्वामी ।
ये वचन आपके हित के हैं * हृदय के बीच धरो स्वामी ॥
यदि ऐसा नहीं करोगे तुम * तो फिर पीछे पछताओगे ।
जिसमें साहस गति और खरका * मारा यह मार्ग पाओगे ॥

दोहा

सुन कर बोला इन्द्रजय * कायर क्रूर महान ।
सारा कुल दूषित किया * मूरखपन में आन ॥ ५३१ ॥

बहर खड़ी

ऐसी ही बातें कर कर के * पितु को डरपोक बनाते हो ।
पहिले भी ठगा पिताजी को * तुम अब भी ठगना चाहते हो ॥
दशरथ के मारने के कारण * पहिले भी तुम ही धाये थे ।
आकर कह दिया मार आये * पर बिन मारे ही आये थे ॥
होकर निर्लज्ज भूचरों का डर * अब भी तुम दिखलाते हो ।
और राम की रक्षा इस कर से * अब भा तुम करना चाहते हो ।
तुम राम के पक्षी दिल से हो * लंका का बुरा चाहते हो ।
चाहते हो विजय राम की * तुम उन्हीं के गुण को गाते हो ॥

दोहा

पक्ष ना रिपु दल का मुझे * मगर आप का ध्यान ।
भ्रात समझ के बात को * निज मन में पहिचान ॥५३२॥

बहर खड़ी

यह इन्द्रजीत सुन शत्रु हा * कुल में उत्पन्न हुआ आकर ।
मानेगा यह जय ही सुनिय * सारे कुल को हाय करवा कर ॥

र ने खुश होकर उसको * आश्वासन दे समझाया है ।
है घनी आप हा हो * एसा मुख से फरमाया है ॥
ा कुशल स तुम भाइ * निर्भय सब भय का दूर करो।
नृपत क संग रहो * आनंद सुख भरपूर करो ॥

दोहा

आठ दिवस यहा * श्री रघनाथ श्याम ।
लंका तट आय कर * देखा है शुभ धाम ॥४७७॥

बहर खड़ी

योजन बीस भूमि * आकर सेना ठहराइ है ।
रचा विशाल व्यूह * सारी सब भूम दिखलाइ है ॥
। सुन लंका वासी * अपने दिल में घबराने लगे।
भटा भटारी चढ़ * हृदय में इष्ट मनाने लगे ॥
द्वीप में आठ दिवस * रह कर हरि सेना बढ़ाय है ॥
काल क जैसे घन * दल बादल से यों छाये है ।
बाहर आकर के * मारु डंका बजवाय दिया ।
घोर विशाल हुआ * दशकंठ सैन को हुक्म किया ॥

दोहा

वर का सु आज्ञा * सुन कर वीर महान ।
ादि योधा सजे * कर में ले कृपाण ॥ ४७८ ॥

बहर खड़ी

ा ही आज्ञा के * रण साज सजाने को धाइ ।
धार जिरेह बख्तर * कृपाण कमर में लटकाइ ॥
धी कोइ घोड़े पर * कोई होकर सिंह सवार चले।
गधे पर भागे हैं * कोई रथ में हो असवार चले ॥
की तरह मनुष * असवारी उत्तम आते हैं ।

शुभ फल प्रकटाने वाली मम * बातों पै लक्ष्य सु दीजे तुम ॥
आये हैं राम सिया के हित * सीता को ले जाओ स्वामी।
हर्षा के मिलो राम से जा * शुभ शब्द हृदय लाओ स्वामी ॥
स्वागत से लंका में लाकर * उनका सत्कार करो स्वामी।
ये वचन आपके हित के हैं * हृदय के बीच धरो स्वामी ॥
यदि ऐसा नहीं करोगे तुम * तो फिर पीछे पछताओगे।
जिसमें साहस गति और सरका * मारा यह मार्ग पाओगे ॥

दोहा

सुन कर बोला इन्द्रजय * कायर क्रूर महान ।
सारा कुल दूषित किया * मूरखपन में आन ॥ ४७१ ॥

बहर खड़ी

ऐसी ही बातें कर कर के * पितु को डरपोक बनाते हो।
पहिले भी ठगा पिताजी को * तुम अब भी ठगना चाहते हो ॥
दशरथ के मारने के कारण * पहिले भी तुम ही धाये थे।
आकर कह दिया मार आये * पर बिन मारे ही आये थे ॥
होकर निर्लज्ज भूचरों का डर * अब भी तुम दिखलाते हो।
और राम की रक्षा इस पर से * अब भी तुम करना चाहते हो।
तुम राम के पक्षी दिल से हो * लंका का बुरा चाहते हो।
चाहते हो विजय राम की * तुम उन्हीं के गुण को गाते हो ॥

दोहा

पक्ष ना रिपु दल का मुझे * मगर आप का ध्यान ।
भ्रात समझ के बात को * निज मन में पहिचान ॥४७२॥

बहर खड़ी

यह इन्द्रजीत कुल शत्रु हो * कुल में उत्पन्न हुआ आकर।
मानेगा यह अब ही सुनिये * मार पुरा को [illegible] कर ॥

श्री राम ने खुश होकर उसको * आश्वासन दे समझाया है ।
लंका के धनी आप ही हो * ऐसा मुख से फरमाया है ॥
अब रहो कुशल से सुख मांह * निर्भय सब भय का दूर करो ।
सुग्रीव नृपसे के संग रहो * आनंद सुक्ख भरपूर करो ॥

दोहा

किया आठ दिवस वहां * श्री रघुनाथ कयाम ।
फिर लंका तट जाय कर * देखा है शुभ धाम ॥५७७॥

बहर खड़ी

घेरी है योजन बीस भूमि * आकर सेना ठहराई है ।
सेना का रचा विशाल व्यूह * सारी सज धज दिखलाई है ॥
कोलाहल सुन लंका वासी * अपने दिल में घबराने लगे ।
देखे हैं अटा अटारी चढ़ * हृदय में हुए हमान लगे ॥
वस हंस द्वीप में आठ दिवस * रह कर हरि चरण बढ़ाय हैं ॥
कल्पान्त काल के जैसे घन * दल बादल से यों धाये हैं ।
लंका के बाहर आकर के * मारू बाजा बजवाय दिया ।
सेना का शोर विशाल हुआ * दशकंठ सभ को क्षुब्ध किया ॥

दोहा

दशकन्धर की सु आज्ञा * सुन कर वीर महान ।
प्रहस्तादि योद्धा सजे * कर में ले कृपान ॥ ५७८ ॥

बहर खड़ी

सेना पाते ही आज्ञा के * रथ साज सजाने को धाई ।
सैनापति धार जिरेह बक्तर * कृपान कमर में लटकाई ॥
कोई हाथी कोई घोड़े पर * कोई होकर सिंह सवार चले ।
कोई बैठ गधे पर धाये हैं * कोई रथ में हो असवार चले ॥
कोई कुबेर की तरह मनुष * असवारी उत्तम आते हैं ।

सुग्रीव ने पाके समय हाल * मुख पसे वचन उचारा है ॥
है देव जन्म से ही सारे * निशचर मायावी होते हैं।
आये हैं विभीषण आने दो * यह प्रेम के बीजे बोते हैं ॥
हम गुप्त रीत से उनका सब * हृदय का भाव समझ लेंगे।
जो होय हमारे शुभ में जो * सो निज दल में रहने देंगे ॥

दोहा

देखा विभीषण सैन युत * खचर कहे विशाल ।
लंका में धर्मात्मा * एक यही सुण हाल ॥५७५॥

बहर खड़ी

सीता के छुड़ाने का आग्रह * रावण से विभीषण कीना था।
जब कुपित होय दशकंधर ने * इसको निकाल झट दीना था ॥
यह विभीषण ने देखा सो * शरण आपकी आया है।
इस में नहीं मिथ्या बात कोई * सब मैंने हाल सुनाया है ॥
नहिं भली चाँदनी चोरों को * और झूँठ न सांचों को नीका।
लम्पट का शील नहीं भाये * अंध का काँच सदा फीका ॥
आगया विभीषण शिविर बीच * आओ लंकेश कहा हरि ने ।
पूछे हैं कुशलो क्षेम सुभट * मिल बार बार हरि नरवर ने ॥

दोहा

दिवस आज धन है प्रभो * दर्शन मिला अमोल ।
आप चरन सदा करूँ * बोले ऐसे बैन ॥ ५७६ ॥

बहर खड़ी

मैं चरण शरण आया भगवन * अब बना रहे आशा भारी ।
मुझ को भी दास समझ लीजे * शरणा दीजे जग हितकारी ॥
सबको जो आशा होगी * यह ही होगा सब काम प्रभू ।
निज जगह मुझ ठहरा लोगे * यह ही होगा शुभ धाम प्रभू ॥

श्री राम ने खुश होकर उसको * आश्वासन दे समझाया है ।
लंका के धनी आप ही हो * ऐसा मुख से फरमाया है ॥
अब रहो कुशल से सुन भाई * निर्भय सब भय का दूर करो ।
सुग्रीव नृपत के संग रहो * आनन्द सुफल भरपूर करो ॥

दोहा

किया आठ दिवस यहां * श्री रघुनाथ कयाम ।
फिर लंका तट जाय कर * देखा है शुभ धाम ॥४७७॥

बहर खड़ी

धरी है योजन बीस भूमि * आकर सेना ठहराई है ।
सेना का रचा विशाल व्यूह * सारी सज धज दिखलाई है ॥
कोलाहल सुन लंका वासी * अपने दिल में घबराने लगे ।
देखे हैं अटा अटारी चढ़ * हृदय में हुए ममान लगे ॥
उस हंस द्वीप में आठ दिवस * रह कर हरि लश्कर चढ़ाय है ॥
कल्पान्त काल के जैसे घन * दल बादल से यों धाये है ।
लंका के बाहर आकर के * मारु डंका बजवाय दिया ।
सेना का घोर विशाल हुआ * दशकंठ सभा को हुक्म किया ॥

दोहा

दशकन्धर की सुन आज्ञा * सुन कर वीर महान ।
महस्तादि योद्धा सजे * कर में ले कृपाण ॥४७८॥

बहर खड़ी

सेना पाते ही आज्ञा के * रथ साज सजाने को धाए ।
सेनापति धार शिरोह बख्तर * कृपाण कमर में लटकाए ॥
कोई हाथी कोई घोड़े पर * कोई होकर सिंह सवार चले ।
कोई बैठ गधे पर धाये हैं * कोई रथ में हो असवार चले ॥
कोई कुबेर की तरह मनुष * असवारी उत्तम आते हैं ।

कोई भैंसे पर हो सवार * यमराज की समता ठाने हैं ॥
कोई विमान में बैठ चले * कोई धाये अश्व सवारी पै।
हथियार बाँध कर के सुवीर * खुश हैं रण की तयारी पे ॥

दोहा

आखें लाल मसाल सी * भई क्रोध से आन ।
थर थर तन काँपन लगा * लीनी कर कृपान ॥५७६॥

बहर खड़ी

लेके आयुध नाना प्रकार * दशकंठ थान आसीन हुवे ।
सन्मुख भई छींक बैठते ही * इस तरह चिन्ह कुछ दीन हुवे ॥
रथ से नाचे दशकंठ उतर * दरबार में आन पधारा है।
मन में विचार का वेग बड़ा * होनी का पथ नियारा है ॥
दरबार राम के में अंगद * हनुमान आदि सब साथ रहे।
नल नील सुन्द भामन्डल नृप * सब बैठे मुख सफोष रहे ॥
श्री राम उपस्थित हैं जिस जा * और जामवन्त आदिक राजा।
परस्पर विचार किया सब ने * जिससे सब सफल होय काजा॥

दोहा

अंगद को भेजा तुरत * रावण के दरबार ।
जा के सब कहना सुना * यहाँ के सम्माचार ॥ ५८० ॥

बहर खड़ी

सुन कर के वचन चल अंगद * रावण के सम्मुख आये हैं।
श्री राम लखन के समाचार * आकर सब तुरत सुनाये हैं ॥
माना दशकंठ वचन मत * कुछ समझा मैं आया हूँ।
संग्राम वृथा न हो तुम से * यह समाचार मैं लाया हूँ ॥
सीता को देकर मिल जाओ * इसमें ही भला तुम्हारा है।
यह राम अजित वीर सदा * यह मानो वचन हमारा है ॥

तो धनुष उन्होंने उठा लिया * तो युद्ध तुरत छिड़ जायेगा।
फिर बन्दोबस्त नहिं हो कोई * संग्राम शुरु हो जायेगा॥

दोहा

दशकन्धर कहने लगे * लोचन करके लाल।
चढ़ कर यह आये नहीं * लाया उनका काल॥५८१॥

बहर खड़ी

जिस तरह समुद्र सी सेना मेरी * चढ़ कर के आयेगी।
जिसके बल को तृण पुंज * बहा कर के छिन में ले जायेगी॥
क्या तुच्छ भी लड़े बनवासी * आकर मुझ से संग्राम करें।
अर साहसगत समझा मुझको * नाहक निज सूना धाम करें॥
कर सकती क्या वानर सेना * निश्चर दल मार भगावेगा।
उन दोनों को एक इन्द्रजीत * आकर के मार गिरावेगा॥
सुन कर के अंगद कहन लगे * नहिं लाज तुम्हें कुछ आती है।
सुन सुन कर झूठी बातों को * तन में धरनी थर्राती है॥

दोहा

बाली का बल किस तरह * गये दशकधर भूल।
जिस सेना को अब रहे * देख देख कर फूल॥५८२॥

बहर खड़ी

उस समय कहाँ थी यह सेना * बाली ने तुम्हें हराया था।
निज काँख दबा कर सागर का * चक्कर तुम को दिलवाया था॥
अब जोर दिखाते हो किस को * बल आप का सारा देख लिया।
कब भूमो आती तुम ने * कहाँ कहाँ पे दप का काम किया
अच्छा पैर जमाता हूँ * जो मेरा चरण उठा लेगा।
संग्राम शान्ति करवा दूँगा * सब झगड़े को मिटवा लेगा॥
देखा कह चरण जमा दिया * सब बड़े बड़े बलवान उठे।

कोई भैंसे पर हो सवार * यमराज की समता ठान दें ॥
कोई विमान में बैठ चले * कोई धावे अश्व सवारी पे।
हथियार बाँध कर के सुवीर * खुश हैं रण की तयारी पे ॥

दोहा

आयें लाल मसाल सा * भइ क्रोध से आन ।
थर थर तन काँपन लगा * लीनी कर कृपान ॥५७६॥

बहर खड़ी

लेके आयुध नाना प्रकार * दशकंठ थान आसीन हुये ।
सन्मुख भई छींक बैठते ही * इस तरह चिन्ह कुछ दीन हुये ॥
रथ से नीचे दशकंठ उतर * दरबार में आन पधारा है ।
मन में विचार का वेग बढ़ा * होनी का पथ नियारा है ॥
दर्बार राम के में अंगद * हनुमान आदि मन सोच रहे ।
नल नील सुन्द भामन्डल नृप * सब बैठे मुख सकोच रहे ॥
श्री राम उपस्थित हैं जिस जाँ * और जामवन्त आदिक राजा ।
परस्पर विचार किया सब ने * जिससे सब सफल होय काजा॥

दोहा

अंगद को भेजा तुरत * रावण के दरबार ।
जाके सब देना सुना * यहाँ के सम्माचार ॥ ५८० ॥

बहर खड़ी

सुन कर के वचन चल अंगद * रावण के सन्मुख आये हैं ।
श्री राम लखन के समाचार * आकर सब तुरत सुनाये हैं ॥
माना दशकंठ वचन मेरे * कुछ समझाने मैं आया हूँ ।
संग्राम वृथा न हो तुम से * यह समाचार मैं लाया हूँ ॥
सीता को देकर मिल जाओ * इसमें ही भला तुम्हारा है ।
वह राम अद्वितीय वीर महा * यह मानो वचन हमारा है ॥

जो धनुष उन्होंने उठा लिया * तो युद्ध तुरत छिड़ जायेगा।
फिर बन्दोबस्त नहिं हो कोई * सग्राम शुरु हो जायेगा॥

दोहा

दशकन्धर कहने लगे * लोचन करके लाल।
चढ़ कर यह आये नहीं * लाया उनका काल॥४८१॥

बहर खड़ी

जिस तरह समुद्र सी सैना मेरी * चढ़ कर के जायेगी।
तिसके दल को तृण पुंज * यहां कर के छिन में ले जायेगी॥
क्या तुच्छ भी सकें वनवासी * आकर मुझ से सग्राम करैं।
कर साहसगत समझा मुझको * नाहक निज सूना धाम करैं॥
कर सकती क्या वानर सेना * निश्चर दल मार भगायेगा।
उन दोनों को एक इन्द्रजीत * आकर के मार गिरायेगा॥
सुन कर के अगद कहन लगे * नहिं लाज तुम्हें कुछ आती है।
तुम सुन कर झूठी वातों को * तन में वरनी मैरातो है॥

दोहा

बाली का बल किस तरह * गये दशकंधर भूल।
जिस सैना को भय रहे * देख देख कर फूल॥ ४८२॥

बहर खड़ी

उस समय कहाँ थी यह सेना * बाली ने तुम्हें हराया था।
निज काँख दबा कर सागर का * चक्कर तुम को दिलवाया था॥
अब जोर दिखाते हो किस को * बल आप का सारा देख लिया।
कब भूमा जाती तुम ने * कहाँ कहाँ पौरुष का काम किया
अच्छा पैर जमाता हूँ * जो मेरा चरण उठा लेगा।
सग्राम शान्ति करवा दूँगा * सब झगड़े को मिटवा देगा॥
ऐसा कह चरण जमा दिया * लख बड़े बड़े बलवान उठे।

कोइ भैंसे पर हो सवार * यमराज की समता ठाने हैं ॥
कोई विमान में बैठ चले * कोइ धाये अश्व सवारी पे।
हथियार बाँध कर के सुवीर * खुश हैं रण की तयारी पे ॥

दोहा

आखें लाल मसाल सा * भई क्रोध से आन ।
थर थर तन काँपन लगा * लीनों कर कृपान ॥४७६॥

बहर खड़ी

लेके आयुध नाना प्रकार * दशकंठ यान आसीन हुये ।
सन्मुख भई छींक बैठते ही * इस तरह चिन्ह कुछ हीन हुये ॥
रथ से नीचे दशकंठ उतर * दरबार में आन पधारा है।
मन में विचार का वेग बड़ा * होनी का पंथ नियारा है ॥
दरबार राम के में अंगद * हनुमान आदि मन सोच रहे।
नल नील सुग्रीव भामण्डल नृप * सब बैठे मुख सकोच रहे ॥
श्री राम उपस्थित हैं जिस जां * और आमवन्त आदिक राजा ।
परस्पर विचार किया सब ने * जिससे सब सफल होय काजा॥

दोहा

अंगद को भेजा तुरत * रावण के दरबार ।
आके सब देखा सुना * यहाँ के सम्माचार ॥ ४८० ॥

बहर खड़ी

सुन कर के वचन चला अंगद * रावण के सन्मुख आये हैं।
श्री राम लखन के समाचार * आकर सब तुरत सुनाये हैं ॥
मामा दशकंठ वचन मेरे * कुछ समझाने मैं आया हूँ।
संग्राम वृथा न हो तुम से * यह समाचार मैं लाया हूँ ॥
सीता को देकर मिल आओ * इसमें ही भला तुम्हारा है।
वह राम अद्वितीय वीर महा * यह मानो वचन हमारा है ॥

जो धनुष उन्होंने उठा लिया * तो युद्ध तुरत छिड़ आयेगा।
फिर धन्वोयस्त नहिं हो कोई * संग्राम शुरु हो आयेगा ॥

दोहा

दशकन्धर कहने लगे * लोचन करके लाल।
चढ़ कर यह आये नहीं * लाया उनका काल ॥५८१॥

बहर खड़ी

जिस तरह समुद्र सी सेना मेरी * चढ़ कर के आयेगी।
जिसके दल को दश पुंज * बहा कर के क्षिण में ले आयेगी ॥
क्या तुच्छ भी लड़े वनवासी * आकर मुझ से संग्राम करैं।
कर साहसगत समझा मुझको * नाहक निज सूना धाम करैं ॥
कर सकती क्या वानर सेना * निशचर दल मार भगावेगा।
उन दोनों को एक इन्द्रजीत * जाकर के मार गिरावेगा ॥
सुन कर के अगद कहन लगे * नहिं लाज तुम्हें कुछ आती है।
सुन सुन कर झूठी बातों को * तन में धरनी मेराती है ॥

दोहा

वाली का बल किस तरह * गये दशकधर भूल।
जिस सेना को भय रहे * देख देख कर फूल ॥ ५८२॥

बहर खड़ी

उस समय कहाँ थी यह सेना * बाली न तुम्हें हराया था।
निज काँख दबा कर सागर का * चक्कर तुम को दिलवाया था।
अब जोर दिखाते हो किस को * बल आप का सारा देख लिया।
कब भूला जाती तुम ने * कहाँ कहाँ पे दप का काम किय
अच्छा पैर जमाता हूँ * जो मेरा चरण उठा लेगा।
संग्राम शान्ति करवा दूँगा * सब झगड़े को निवटा लेगा ॥
ऐसा कह चरण जमा दिया * लप बड़े बड़े बलवान उठे।

कोइ भैंसे पर हो सवार * यमराज की समता ठाने हैं ॥
कोइ विमान में बैठ चले * कोइ धाये अश्व सवारी पे।
हथियार बाँध कर के सुर्वीर * खुश हैं रण की सवारी पे ॥

दोहा

आखें लाल मसाल सी * भइ क्रोध से आन ।
थर थर तन काँपन लगा * लीनी कर कृपान ॥५७६॥

बहर खड़ी

लेके आयुध नाना प्रकार * दशकण्ठ थान आसीन हुये ।
सन्मुख भई छींक बैठते ही * इस तरह चिन्ह कुछ दीन हुये ॥
रथ से नीचे दशकण्ठ उतर * दरबार में आन पधारा है ।
मन में विचार का वेग बड़ा * होनी का पथ नियारा है ॥
दर्बार राम के में अंगद * हनुमान आदि मन साथ रहें ।
नल नील सुग्रीव भामन्डल नृप * सब बैठे सुख सकोच रहें ॥
श्री राम उपस्थित हैं जिस जाँ * और जामवन्त आदिक राजा ।
परस्पर विचार किया सब ने * जिससे सब सफल होय काजा॥

दोहा

अंगद को भेजा तुरत * रावण के दरबार ।
आके सब देखा सुना * यहाँ के सम्माचार ॥ ५८० ॥

बहर खड़ी

सुन कर के वचन चले अंगद * रावण के सम्मुख आये हैं ।
श्री राम लखन के समाचार * आकर सब तुरत सुनाये हैं ॥
माना दशकंठ वचन मेरे * कुछ समझाने मैं आया हूँ ।
संग्राम वृथा न हो तुम से * यह समाचार मैं लाया हूँ ॥
सीता को देकर मिल आओ * इसमें ही भला तुम्हारा है ।
वह राम अद्वितीय वीर महा * यह मानो वचन हमारा है ॥

दोहा

कोई लीन मयूर की * सर्प ध्वजा कोई थाम।
कोई स्वान की ले ध्वजा * गर्जें हैं संग्राम ॥४८५॥

बहर खड़ी

कोई धनुष किसी के हाथ चक्र * कोई लिये भुशन्डी धाये हैं।
कोई मुग्दर त्रिसूल लिये कोई * परघ हाथ में लाये हैं॥
कोई कुठार कोई पाश लिये * प्रतिपक्षी को ललकार रहे।
रण-स्थल में यह बड़ी बड़ी * आतुरता हृदय धार रहे॥
प्रतिकूल सैनिकों की निंदा * दोनों दल वाले करते हैं।
आगे को कदम बढ़ाते हैं * कर में हथियार पकड़ते हैं॥
झनकार होय हथियारों की * विद्युत् से चक्र चमकते हैं।
कोई ताल ठोंकते चलते हैं * किस ही क धनुष धमकते हैं॥

दोहा

चक्र शक्र भाले परिध * गदा धनुष अरु तीर।
गर्जे तर्जे के जा रहे * समर जुझारे वीर ॥४८६॥

बहर खड़ी

शस्त्रों से घन ढँक गया तुरत * नहिं दिनकर पड़े दिखाई है।
थी असित पताका घटा घनी * बिजली कृपाण चमकाई है।
गर्जना समर धीरों की जो * वह ही घन गर्जन दरस रही॥
बर्षे हैं बाण जो अम्बर से * यह ही ऋतु पावस बरस रही॥
तीरों में बिंधे शीश उड़ते * आकर आकाश सुहाये हैं।
दिनकर के इधर उधर दीखे * राहू केतु से छाये हैं॥
मुग्दर की मारों से हाथी * मर मर कर भू पर गिरते हैं।
कहिं पैदल से पैदल जाकर * संग्राम भूमि में भिरते हैं।

दोहा

सिर कट पट कर भूमि पर * रिपु दल के रह लोट।

यदि चरण किसी से उठता है * बल बुद्धि अरु तेज निधान उठ॥

दोहा

चरण न अंगद का उठा * झुँझलाये लंकेश।
पैर उठाने के लिये * उठे तुरत नृपेश ॥४८३॥

बहर खड़ी

दशकंठ को अंगद ने देखा * आता है चरण उठाने को।
सम्पत्ति मद में अन्धा हुआ * और विजय लक्ष्मी पाने को॥
झट चरन उठा कर अंगद ने * मुख से यों वचन सुनाया है।
मेरे चरनों के छूने से * कुछ लाभ नहीं समझाया है॥
छू कर चरण राम से मिल * सारा संकट कट जायगा।
वह भक्ति हितैषी हैं उनके * मिलने से भय फट जायेगा॥
ऐसा कह वहाँ से चल दिये * और राम के सन्मुख आये हैं।
श्री राम लखन को समाचार * लंका के सब समझाये हैं॥

दोहा

इधर राम दल हो गया * लड़ने को तैयार।
लंका से दशकंठ भी * हो कर चला सवार ॥४८४॥

बहर खड़ी

दशकंठ संग में कुम्भकरण * कर में त्रिशूल सम्भाला है।
संग इन्द्रजीत भी चल दिये * लीना उठाय कर भाला है॥
सामन्त धुम्र मारीच आदि * सारण शुक सब तय्यार हुये।
रण काज चतुर हथियार बाँध * रण के लिये हुशियार हुये॥
संग एक हजार अक्षौहणी है * दल सिंधु वेग सा आता है।
काला कज्जल गिरी के समान * आग को बढ़ता आता है॥
है सिंह ध्वजा वाला कोई * कोइ अष्टापद की ध्वजा लिये।
डमरू की ध्वजा लिये कोई * कोई गज ध्वज से प्रेम किये॥

बहर खड़ी

सेना रावण की घायल होकर * समर भूमि से भगने लगी।
जिस तरह भान की तेजी से * सम तौम सैना भगने लगी॥
नन्दन वानर ने ज्वर निश्चर को * अति घायल कर डारा है।
उस तुरत तुरित मे शुक्र राक्षस * बह बलकर भू पै पारा है॥
अब राम की सैना खुश होकर * किलकार मारती फिरती है।
यह प्रथम विजय समझ अपनी * दिल हर्ष धारती फिरती है॥
दिनकर ने गमन किया ह्यों * पश्चिम दिश आप पराय गये।
अब राम सैन के योधा सब * अपन लश्कर में आय गये॥

दोहा

बीती रात दिनकर उदित * हुये पूर्व दिश आन।
कपिपति के तट बैठ कर * सोच रहे हनुमान॥४१०॥

बहर खड़ी

इस तरह व्यू रचना को करो * जो शत्रु दल आन फसे उस में।
फिर समय समय हटी हाले * रहे सदा मुक्ति की कोशिश में॥
जब तक निश्चर सैना मे * हरिदल पर धावा धाल दिया।
जैसे वानर वर्षां पर चढ़े * इस तरह स्वदल को ताल दिया।
निश्चर दल बांध बैठ रथ में * रावण सचालन करता था।
उत्साहित सेना को करता था * हिम्मत सब की नृप भरता था।
क्रोधान्ध हो रहा था रथ में * पथ म नहीं धार लगाता था।
आखों से अग्नि झपती थी * आग को आता जाता था॥

दोहा

विविध भाँति अस्त्रों सहित * सज दश ंधर आज।
दिपै मयकर वीर सा * मानों हो यमराज॥४११॥

बहर खड़ी

सैना नायक अपने सारे सुरपति * सम सुमन समझता था।

प्रति पक्षी सैना नायकों को लख ॥ गुणयत यह मूल गजता था ॥
दशकंठ की सना घरु सेना ॥ नायक यद् यद् कर लड़ते थे ।
करते थे युद्ध वानरों से ॥ भिड़ जात और झगड़ते थे ॥
देवता देखत थे अकाश ॥ मन्डल से बैठ विमानों में ।
निश्चर लड़ते थे जमा पैर ॥ रहते थे अपनी शानों में ॥
हुँकार सुनी जय रावन की ॥ यद् कर दल आगे आया है ।
रामादल पर की मार मार ॥ शस्त्रों का मेह वर्षाया है ।

दोहा

युद्ध स्थल में आ रहा ॥ शस्त्रों की झन्कार ।
सन सन कर आयें निकल ॥ बाण आर स पार ॥५६२॥

बहर खड़ी

बहे निकली सरिता शोणित की ॥ भूमी सब सुरंग नजर आती ।
कट कर कर-पद झक सम बहते ॥ यह दशा वहाँ की दर्शाती ॥
करियों के कलेवर पर्वत स ॥ दासे रण भू में पड़े हुए ।
ढालें हैं मकर मुख टूटे रथ ॥ जो पथ घर कर अड़े हुये ॥
निश्चर योद्धा मगरों समान ॥ शोणित की काटने धार लगे ।
जो शस्त्र के सम्मुख हुआ खड़ा ॥ उसको उतार म पार लगे ॥
सह सके न वानर वीर मार ॥ पीछे को चरन उठाने लगे ।
दशकंठ अनी को सभी मे ॥ आगे को सुरत बढ़ाने लगे ॥

दोहा

सेना को पीछे लखा ॥ हटते कपि पति हाल ।
क्रोध बढ़ा सुग्रीव को ॥ धनुष उठा तत्काल ॥ ५६३॥

बहर खड़ी

सेना को लेकर सग वीर ॥ सुग्रीव अगाड़ी बढ़न लगे ।
जैसे तम नाशन को दिनकर ॥ अति ही तेजी से चढ़न लगे ॥

बजरंग देख कर गदा उठा * सुग्रीव राय को रोक दिया।
आगे को स्वय तैयार हुवे * रण स्थल के हित गमन किया॥
जहाँ करी राक्षस व्यूह-रचना * अगिणित सैनिक यहाँ डटे हुवे।
चौ तर्फा घेर रहे उसको * शस्त्रों से मार्ग पटे हुए॥
दुर्भेद्य व्यूह में पवन तनय * सूक्ष्म भ्रम से प्रवेश किया।
जैसे मदिराचल सागर में * घुस कर के रूप विशेष किया।

दोहा

पवन तनय को देख कर * करता व्यूह-प्रवेश।
दुर्जयमाली नाम का * राक्षस आय विशेष ॥५६४॥

बहर खड़ी

घन गर्जन करता हुआ तुरत * दुर्जयमाली अब आन चढ़ा।
टंकार धनुष की करता है * जैसे घन गर्जे आस्मान चढ़ा॥
दोनों में युद्ध परस्पर से * जब होने लगा विकाल महा।
सुर-पति सा हनुमत दास रहा * निश्चर दीखे है काल महा॥
या सिंह आन दो लड़ते हैं * फटकार पूँछ की करते हैं।
मन विजय कामना भरते हैं * और चरम अगाड़ी धरते हैं॥
हनुमत ने दुर्जयमाली को * शस्त्र विहीन जब कर दिया।
क्या युद्ध करूँ बूढ़े तुझ से * ऐसे कह उपदेश दिया॥

दोहा

आया और कहने लगा * वज्रोदर कर घोर।
रे! दुर्यमी किस तरह * बड़ा मचावे शोर ॥५६५॥

बहर खड़ी

सन्मुख संग्राम करो मेरे * मैं तुझ को आज छकाऊँगा।
देखूँ तू कैसा वीर तुझे * क्षण में यमलोक पठाऊँगा॥
सुन कर के शब्द वज्रोदर के * हनुमान वीर झुँझलाये हैं।

घनपति की तरह गर्जना कर * निश्चर के सन्मुख आये हैं ॥
होकर विकाल महा हनुमत * बन गये काल के काल महा।
वर्षा बाणों की लगे करन * करके लोचन युग लाल महा ॥
कोपित महा होय हनुमान * घमसान युद्ध लगे करने को।
ढक दिया बाण वर्षा के घन * तड़फे है भूमि निश्चरने को ॥

दोहा

बाणों को वेष्ठित किया * वज्रोदर बलवान् ।
गर्ज तर्ज के सामने * आया जहँ हनुमान ॥ ५१६ ॥

बहर खड़ी

पुन हनुमान ने मार मार * वज्रोदर पट कर डालो है।
अपने बाणों से वज्रर्मी ने * रण भू खाली कर डाली है ॥
जहाँ कोट नाम मजुमान वीर * हनुमान तेज दिखलाने लगे।
लख कर सग्राम वीर का सब * निश्चर मन में अकुलाने लगे ॥
जहाँ चले बाण गोली समान * छुरी पटा ढाल नजराते हैं।
निश्चर महान् लागे परान * कर से निशान गिर जाते हैं ॥
जहाँ चमक चमक कर चरम चरत * गिर परत निशाचर बलधारी।
चलते अपार जिम अनीवार * हथियार मार अति ही मारी ॥

दोहा

लिया शीश उतार कर * वज्रोदर का हाल ।
करके कोप कराल अति * रावण सुत तत्काल ॥ ५१७ ॥

बहर खड़ी

आया है जोर बाँध कर के * जम्बूमाली तत्काल वहाँ ।
ललकार मारता भभाता * लड़ते हैं अंजनीलाल जहाँ ॥
ललकार हुंकार हुंकार मार * हथियार परस्पर छोड़े हैं।
लेकर कुधार झूमे हुंकार * नहीं हार मान मुख मोड़े हैं ॥

अम्बूमाली के रथ छोड़े * सारथी रहित कर डाले हैं।
फिर उस पर गदा मार मारी * बल सारे तुरत निकाले हैं ॥
मूर्छित होकर गिर गया धरन * अम्बूमाली बेहोश पड़ा ।
यह देख महोदर बलकारी * हनुमत के सम्मुख आन खड़ा ॥

दोहा

चारों ओरी से लिया * बजरंगी को घेर ।
करी बाण वर्षा प्रबल * मचा दिया अंधेर ॥४६८॥

बहर खड़ी

बाणों की होती है वर्षा * बजरंगी लड़ते डट डट के।
अंजनी कुँवर के शस्त्रों से * गिरते हैं निशचर कट कट के॥
किस ही निश्चर की भुजा कटी* किस ही के कट कर पैर गिरे।
किसी के हृदय घुस गया बाण* किस ही के सिर वे सैर गिरे॥
अंजनी लाल उस समय हुवे * शोभित अति तेजवान रन में।
सागर में वड़वानल जैसे * दावानल घोर विकट वन में॥
तम के समूह को मार्तण्ड * जिस तरह नष्ट कर देता है।
हनुमत भी निश्चर सैन नष्ट कर* अमल कांति सुख लेता है॥

दोहा

देखा राक्षस सेन में * भगदड़ मचा अपार ।
कुम्भकरण आया तुरत * कर में ले हथियार ॥४६६॥

बहर खड़ी

टूटा है रामादल पै आ * और मार मार एक सग करी।
शस्त्रों की वर्षा कर कर के * दिये गेर मही पर बहुत हरी॥
कल्पान्तकाल सागर समान * रावण के तपस्वी भाई ने।
कर दिया कुलाहल सब दल में * वानर दल के दुखदाई ने॥
यह देख झपट कर भामण्डल * सुग्रीव कुमुद अंगद धाये।

दधिमुख महेन्द्र पुन अन्याअन्य # रावे पक्रम से चढ़ आये ॥
नाना प्रकार के शस्त्रों की # वर्षा रण में वर्षाई है ।
छा गया तुरत ही अंधकार # नहीं हाथों हाथ दिखाई है ॥

दोहा

कुंभकरण अस देख कर # किया क्रोध कराल ।
आगे बढ़कर के चला # जैसे द्वितीय काल ॥६००॥

बहर खड़ी

लीना है प्रस्थापननामा कर में # अमोघ अस्तर ठाया ।
वानर सना पर दिया छोड़ # विद्या के बल को दिखलाया ॥
निंद्रावश वानर सेन भई # नहिं खड़ा हुआ जाता रण में ॥
यह हाल देख सुग्रीव भूप # करते विचार अपने मन में ॥
सुग्रीव भूप ने उसी समय # प्रबोधनी बाण चलाया है ।
जाग्रत हुई सारी सैना # पुनः होश सभी को आया है ॥
कपि-पति ने गदा प्रहार किया # रथ तोड़ भूमि पर डाला है ।
यह देख कुंभकरण ने अपने # शस्तर को तुरत सँभाला है ॥

दोहा

दौड़ा है लेकर गदा # कुम्भकरण इक संग ।
गिरे झपट में आन कर # वानर हुये कुरंग ॥६०१॥

बहर खड़ी

रोका है रोक नहीं मानी # सुग्रीव भूप पर धाया है ।
मारी है गदा तान कर के # रथ को कर चूर गिराया है ॥
आकाश उड़ा सुग्रीव भूप # उड़ कर के बुद्धि निकाली है ।
एक भारी शिला तुरत लाकर # निशचर पति ऊपर डाली है ॥
फिर कुंभकरणने उसे बीच ही में # चूरा कर उड़ा दिया ।
सुग्रीव ने विद्युति अस्त्र उठा # दशकण्ठ भ्रात पर वार किया ॥

उस कुम्भकरण को मूर्छित कर * भूमिपर तुरत गिराया है।
यह हाल देख कर इन्द्रजीत * झट समर क्षेत्र में आया है ॥

दोहा

दशकन्धर को रोक कर * आया इन्द्रजीत।
युद्धस्थल में घूमता * रण से कर के प्रीत ॥६०२॥

बहर खड़ी

लख इन्द्रजीत को वानर दल * रण छाड़ छोड़ कर भागा है।
जिस तरह मृग वन से भागे * यह आन मृगपति आगा है ॥
सुग्रीव आन कर रणस्थल में * रिपु के सन्मुख ललकारा है।
रे मूर्ख जा रहा भगा किधर * या कस के जाय किनारा है ॥
सुग्रीव से इन्द्रजीत भिड़े * घन वाहन से भामण्डल है।
चारों दिग्गज से दीख रहे * करते जिम विजय अखण्डल है॥
उनका रण देख कँपी पृथ्वी * ऊँचे पहाड़ भी काँप उठे।
सागर में उथल पुथल फैली * सुरमी निज मुख को ढाँप उठे ॥

दोहा

छोड़े हैं हथियार बहु * दीखे नहीं दिनेश।
बाण सप-सपाते चले * जैसे विषधर शेष ॥६०३॥

बहर खड़ी

फिर इन्द्रजीत घन वाहन ने * अस्तर अहि बाण चलाया है।
बँध गये वीर दोनों उस में * मन में धोखा हुलसाया है ॥
जब कुम्भकरण को होश हुआ * हनुमत पर गदा प्रहार किया।
हो गये मूर्छित बजरंगी * ऐसा शत्रु ने मार किया ॥
ले चला बगल में दाब उन्हें * लंका की ओर सिधारा है।
अंगद ने मार्ग घेर लिया * इक हाथ गदा का मारा है ॥
जब कुम्भकरण ने अंगद के * मारन को हाथ उठाया है।

दधिमुख महेन्द्र पुन अन्याअन्य ॥ राजे एकदम से चढ़ आये ॥
नाना प्रकार के शस्त्रों की ॥ वर्षा रण में वर्षाई है ।
छा गया तुरत ही अंधकार ॥ नहीं हाथों हाथ दिखाई दे ॥

दोहा

कुम्भकरण अस देख कर ॥ किया क्रोध कराल।
आगे वढ़कर के चला ॥ जैसे द्वितीय काल ॥६००॥

बहर खड़ी

लीना है प्रस्थापननामा कर में ॥ अमोघ अस्तर ठाया ।
वानर सभा पर दिया छोड़ ॥ विद्या के बल को दिखलाया ॥
निंद्रावश वानर सेन भई ॥ नहिं खड़ा हुआ आता रण में ॥
यह हाल देख सुग्रीव भूप ॥ करते विचार अपने मन में ॥
सुग्रीव भूप ने उसी समय ॥ प्रबोधनी बाण चलाया है ।
जाग्रत हुई सारी सैना ॥ पुनः होश सभी को आया है ॥
कपि-पति ने गदा प्रहार किया ॥ रथ तोड़ भूमि पर डाला है ।
यह देख कुंभकरण ने अपने ॥ शस्तर को तुरत सँभाला है ॥

दोहा

दौड़ा है लेकर गदा ॥ कुम्भकरण इक संग।
गिरे झपट में आन कर ॥ वानर हुये कुरंग ॥६०१॥

बहर खड़ी

रोका है रोक नहीं मानी ॥ सुग्रीव भूप पर धाया है।
मारी है गदा तान कर के ॥ रथ को कर चूर गिराया है ॥
आकाश उड़ा सुग्रीव भूप ॥ उड़ कर के बुद्धि निकाली है।
एक भारी शिला तुरत लाकर ॥ निश्चर पति ऊपर डाली है ॥
फिर कुम्भकरणने उसे बीच ही में ॥ चूरा कर उड़ा दिया ।
सुग्रीव ने विद्युति अस्त्र उठा ॥ दशकण्ठ भ्रात पर वार किया ॥

दोहा

जै जै कार हो रहा * रामादल के बीच ।
शोक छया रावण मह * शकित निश्चर नीच ॥६०६॥

बहर खड़ी

दुर्जन दुष्टों का जन्म मात्र * सज्जन को दु ख पहुँचाते हैं ।
जिस तरह मक्खिकायद मच्छर * तन चूँट चूँट कर खाते हैं ॥
हरि-दल की खुशी देख निश्चर * दिल में बहु शोक मनाया है ।
शोकातुर निश भर पड़े रहे * हुआ प्रातः उजाला छाया है ॥
निश्चर दल कर धावा आया * छाया है वानर सेना को ।
कर रहे मथन सेना भीतर * मुख बोल करय कटु बैना को ॥
इस तरह सरोवर में सूकर * पानी में खल बल करता है ।
बस इसी हाल से निश्चर दल * वानर सेना को मलता है ॥

दोहा

पवन तनय सुग्रीव पुन * वानर वीर महान् ॥
निश्चर दल में घुस गये * ले ले कर कृपान ॥६०७॥

बहर खड़ी

कीनी है मारा मार महा * निश्चर दल मन घबराया है ।
गये पैर उखड़ युद्धस्थल से * भगना सभी ने चाया है ॥
जिस तरह गरुड़ को देख सर्प * अपने दिल में घबराते हैं ।
जिस तरह बन सके छुप-छुपकर* वह अपने प्राण बचाते हैं ॥
सेना के पैर उखड़ते लख * दशकण्ठ क्रोध में छाया है ।
होकर रथ में असवार तुरत * संग्राम भूमि में आया है ॥
थर्राने लगी मेदनी भी * सन्ताप सैन में छाया है ।
जैसे दावानल में तर वर * मर्कट का कटक घबराया है ॥

दोहा

देखा रावण युद्ध में * प्रलय रहा दिखाय ।

हनुमान फदक आकाश गये ☆ यह अद्भुत खेल दिखाया है ॥

दोहा

आज्ञा लेकर राम से ☆ चले विभीषण धाय।
इन्द्रजीत ने सोच कर ☆ लीना वदन घुमाय ॥६०४॥

बहर खड़ी

पितु अनुज बन्धु पित के समान ☆ ऐसा मन बीच विचारा है।
नहिं करें युद्ध इन से जाके ☆ मरण पना दिल में धारा है॥
यह नाग-पाश में बँधे हुये ☆ शत्रु अलबत्त मर जायेंगे।
सो छोड़ पड़ा मैदाने जग ☆ आखिर को दुख टर जायेंगे॥
दोनों के निकट विभीषणजी ☆ आकर मलीन मुख खड़े हुये।
श्री राम लखन दोनों भाई ☆ अच्छा करने पर अड़े हुये॥
किया है याद महालोचन ☆ सुर तुरत राम तट आया है।
कर नमस्कार हो कर प्रसन्न ☆ चरणों में शीश झुकाया है॥

दोहा

सिंहनाद शुभ नाम की ☆ विद्याकारी प्रदान।
हल मूसल अरु रथ दिया ☆ हो प्रसन्न महान ॥६०५॥

बहर खड़ी

लक्ष्मण को गरुड़ यान दीना ☆ विद्युति गदा प्रदान करी।
आग्नेय अस्त्र वायव्य अस्त्र ☆ दिव्यास्त्र आदि दिये आन हरी॥
दीना है रथ गारुड़ी एक ☆ अद्भुत जिसका चमत्कार है।
दीना छत्र अमोल महा ☆ देकर के देव सिधारा है॥
गारुड़ी यान पर हो सवार ☆ नागमण्डल के तट आये हैं।
लख गरुड़ तुरत यह नाग पाश के ☆ प्राण छोड़ कर भाये हैं॥
छुटते ही दोनों वीर तुरत ☆ लग गये राम के चरणों पे।
बलिहारी बार बार जाते हैं सब ☆ अविग्न निज परणों पे॥

बहर खड़ी

भय वचन श्रवण कर के भ्राता * हृदय में जरा विचारो तुम।
नीतज्ञ आप भू मण्डल में * नीति को दिल में धारो तुम॥
मैं युद्ध का मिस कर के उनसे * तुम को समझाने आया हूँ।
रह आये लाज निश्चर कुल की * तुम को जतलाने आया हूँ॥
मेरे वचनों को हृदय धार * साता तुरत भेज दीजे।
इस में कुछ नहीं बिगड़ता है * इतना कहना मेरा कीजे॥
न मौत के डरसे राम के तट * मैंने कुछ आश्रय पाया है।
ना आन राज का लोभ मुझ * ना आप से कुछ दुःख पाया है॥

दोहा

मय मुझ को अपवाद का * और नहीं कुछ ख्याल।
कर दीजे प्रथक प्रभु * यह कलंक तत्काल ॥६११॥

बहर खड़ी

जो विनय प्रभु स्वीकार करा * तो लंका में आजाऊँ मैं।
आश्रय आप का ग्रहण करूँ * और आज्ञा सम उठाऊँ मैं॥
यह सुन दशकंठ क्रोध कर के * मुख एसा वचन सुनाया है।
कुबुद्धी कायर डरपोका * मुझ को समझाने आया है॥
मैं करूँ भ्रात हत्या से केवल * यह सोच विचार मुझे।
तू मुझ को ही डरपाता है * हूँ चढ़ा खड्ग की धार तुझे॥
ऐसा कह कर दशकन्धर ने * कर उठा धनुष टंकार करी।
हो गये हुशियार विभीषणजी * रण भू में मारा मार करी॥

दोहा

दोनों योद्धा युद्ध से * भूमी रहे कँपाय।
तीय शस्त्र छोड़े खड़े * जैसे घन वर्षाय ॥६१२॥

बहर खड़ी

मेघों की धारा के समान * अस्मान से बाण बर्षते हैं।

धनुष उठा कर हाथ में * राम चले हैं धाय ॥६०८॥

बहर खड़ी

बोले हैं आन विभीषण जब * मत नाथ चरण आगे धरिये।
यह सेवक रण को जाता है * स्वामी ना आप कछु करिये॥
हो कर रथ में आरूढ विभीषण * रावण के सन्मुख आया है।
उससमयदशकण्ठभ्रात को * समझाना मन में भाया है॥
तूने किस का आश्रय लिया * जो डर से जान बचाता है।
आगे तुझ को ही भेज दिया * निज जान बचाना चाहता है॥
जिस तरह शिकारी सूकर पर * श्वानों को ही दौड़ाता है।
जाकर वह घेर गिरा लेते * जब अपना वार चलाता है॥

दोहा

इस प्रकार रघुनाथ ने * भेजा तुझ को भ्रात।
करी बुद्धिमत्ता बहुत * आप न डाला हाथ ॥६०६॥

बहर खड़ी

सुन अनुज विभीषण तू मेरा * मैं पुत्र से ज्यादा जानता हूँ।
हे वत्स प्रेम मेरा तुझ पर * मैं अपना तुझ को मानता हूँ॥
तू जा अपने स्थान पे अब * और नहीं विशेष समझाऊँगा।
मैं राम लखन को सैन सहित * अब यम द्वारे पहुँचाऊँगा॥
मरने वालों की सूची में क्यों * अपना नाम लिखाता है।
स्थान चला जा खुशी खुशी * क्यों मेरे सामने आता है।
अब भी मेरा हित है विशेष * तुझ पर तू प्यारा भाई है।
नहिं मुझे और की कुछ परवाह * तब प्रीती हृदय समाई है॥

दोहा

वचन विभीषण ने कहे * सुनो भ्रात धर ध्यान।
मैंने रोका है उन्हें * जो हैं राम सुजान ॥६१०॥

लक्ष्मण ने अपने बाणों से * कर खन्डन तुरत विफल किया।
कर कर के बाणों की वर्षा * रावण दल बेकल कर दिया॥
तब विजय अरथी रावण ने * शक्ति अमोघ कर धारी है।
वह शक्ति उठा कर के नृप ने * अपने कर तुरत सँभारी है॥
ले शक्ति क्रोध करके कर में * ऊँची कर उसे घुमाया है।
वानर दल में हल चल फैली * उसको लख दल घबराया है॥

दोहा

तब तक करती शक्ति को * रघुवर तुरत निहार।
लक्ष्मण से कहने लगे * अपने स्वमन विचार॥६१५॥

बहर खड़ी

यह शक्ति विभीषण पर आई * तो राक्षस अन्त हो जायेगा।
इसके प्रहार को झेल सका नहीं * जो तो प्राण भाग जायेगा॥
सुन लखन विभिषण के आगे * आकर के आप खड़े हुये।
नहिं करी जान की कुछ परवा * आश्रत के आगे खड़े हुये॥
डट गये देवता सन्मुख से * लक्ष्मण ने पीठ नहीं मोड़ी।
कर क्रोध तुरत दशकन्धर ने * शक्ति को निज कर से छोड़ी॥
फिर वज्र तुल्य उस शक्ती का * लक्ष्मण पर झट प्रहार किया।
लगते ही तुरत बे होश हुए * भूमि पर लखन को गेर दिया॥

दोहा

लखन वीर धरनी गिरे * हुवा हा हा कार।
पवानन रथ बैठ कर * राम चले उस बार॥६१६॥

बहर खड़ी

आ के रावण के वाहन का * कर चूरमचूर भू पर डारा।
इस तरह पाँच रथ रावन के * का चूरा हरि ने कर डारा॥
कुछ सोच समझ कर दशकधर* लंका की ओर सिधार गया।

पड़ते हैं आ जिसके ऊपर * यह जीवन देते तरसते हैं ॥
डट गये युद्ध में कुम्भकरन * और इन्द्रजीत बलवान महा।
मारे हैं अस्त्र शस्त्र तीक्षण * कर रण में घमसान महा ॥
यह हाल देख कर राम लखन * युध-रण स्थल में आये हैं।
घेरा है कुम्भकरण को आ * ललकार सामने धाये हैं ॥
और इन्द्रजीत के आ सम्मुख * नाहर सम लखन दहाड़ा है।
सिंहअ घन और भिड़ गये भीम * यों युद्ध परस्पर धाड़ा है ॥

दोहा

दुर्गति और स्वयम्भू * दुर्मुख आदि जवान।
शम्भु और मल आन कर * किया युद्ध घमसान ॥६१३॥

बहर खड़ी

मय अंगद अरु स्कन्द चन्द्र नल * भामन्डल जम्बूमाली ।
श्री दत्त कुम्भ हनुमान आदि * सुग्रीव कुन्द अरु सुखमाली ॥
होता है युद्ध परस्पर से * हथियार वीर नर छोड़ रहे।
हुंकार मारते बढ़ बढ़ कर * शत्रु की शक्ति तोड़ रहे ॥
फिर इन्द्रजीत ने लक्ष्मण पर * एक तामस अस्त्र चलाया है।
रामानुज ने पवनास्त्र चला * उसको काट गिराया है ॥
फिर नाग-पाश में लखन वीर ने * इन्द्रजीत को बाँध लिया।
और राम ने कुंभकरण बाँधा * लाकर शिविर बीच में डार दिया

दोहा

लिये राम सुजान ने * योद्धा बाँध महान।
घन वाहन आदिक बहुत * धरे सुभटी आन ॥६१४॥

बहर खड़ी

यह दृश्य देख कर दशकन्धर * अपने मन में झुंझलाया है।
व्याकुल हो उठा क्रोध करके * जय लक्ष्मी शस्त्र चलाया है ॥

लक्ष्मण ने अपने बाणों से * कर खन्डन तुरत विफल किया।
कर कर के बाणों की वर्षा * रावण दल बेकल कर दिया॥
तब विजय आरथी रावण ने * शक्ति अमोघ कर धारी है।
यह शक्ति उठा कर के नृप ने * अपने कर तुरत सँभारी है॥
ले शक्ति क्रोध करके कर में * ऊँची कर उसे घुमाया है।
वानर दल में हल चल फैली * उसको लख दल घबराया है॥

दोहा

तड़ तड़ करती शक्ति को * रघुवर तुरत निहार।
लक्ष्मण से कहने लगे * अपने स्वमन विचार॥६१२॥

बहर खड़ी

यह शक्ति विभीषण पर आई * तो राजन घात हो जायेगा।
इसके प्रहार को झेल सका नहीं * जो तो दाग लग जायेगा॥
सुन लखन विभिषण के आगे * आकर के आप खड़े हुये।
नहिं करी जान की कुछ परवा * भ्राता के आगे अड़े हुये॥
हट गये देवता सन्मुख से * लक्ष्मण ने पीठ नहीं मोड़ी।
कर क्रोध तुरत दशकन्धर ने * शक्ति को निज कर से छोड़ी॥
फिर वज्र तुल्य उस शक्ती का * लक्ष्मण पर झट प्रहार किया।
लगते ही तुरत बे होश हुए * भूमि पर लखन को गेर दिया॥

दोहा

लखन वीर धरनी गिरे * हुआ हा हा कार।
पंचानन रथ बैठ कर * राम चले उस बार॥६१३॥

बहर खड़ी

आ के रावण के वाहन का * कर चूर-चूर भू पर डारा।
इस तरह पाँच रथ रावन के * का चूरा हरि ने कर डारा॥
कुछ सोच समझ कर दशकंधर * लंका की ओर सिधार गया।

शोकाकुल राम लखन तट आ * गोदी में भ्रात समार गया ॥
यह शोक देख के दिनकर भी * पाच्छिम की ओर पयान किया।
छुप गये तुरत आकाश में जा * भूमि को कर सुनसान दिया।
लक्ष्मण को मूर्छित देख राम * भूमि पर चक्कर खाय गिरे ॥
सुग्रीव आदि सब आकर के * हरि क चरणों मेंराय गिरे ॥

दोहा

चन्दन आदिक वीर को * सींचा हाथों हाथ ।
पास बैठ कर राम के * बोले मुख से बात ॥६१७॥

गायन

[तर्ज-बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है]

लगा जो तीर लक्ष्मण के * पड़े गश खा के भूमि पर।
कहे तब राम आँसू भर * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥टेर॥
सिया रावण के कब्जे में * और तुम ने करी ऐसी ।
मेरा इस वन में बेली कौन * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥१॥
अरे रण बीच सेना को * सिया तेरे हटाबे कौन ।
गिराया क्यों धनुष तेने * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥२॥
तेरी हिम्मत पे ही बन्धु * चढ़ाई की जो लंका पे ।
बँधाबो धीर अब हम को * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥३॥
रहे गर्मा यहाँ दुश्मन * इन्हों क गर्व को गालो ।
नहीं यह वक्त सोने का * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥४॥
ये सुग्रीव और हनुमान * विभीषण पास हैं ठाड़े ।
दे विश्वास अब इनको * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥५॥
अगर नफरत हो लड़ने स तो * फिर वन को चलें वापस ।
कुछ भी तो कहो भाई * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥६॥
तुम्हें बिन देख के हम को * माता रो-रो के पूछेगी ।

कहेंगे क्या ज़बां से तब * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण॥७॥
जिसके लिये ले लश्कर * था के जोश आये यहाँ ।
मिटावे कौन दुख उस का * उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण॥८॥
दयालु शख्स के कहने से * विसल्या को लाये हनुमान ।
भगी शक्ति सती को देख * उठे लक्ष्मण उठे लक्ष्मण॥६॥
हुआ आराम लक्ष्मण को * पाया सुख राम और सेना ।
जीत रावण को ली सीता * उठे लक्ष्मण उठे लक्ष्मण ॥१०॥
हुआ मङ्गल अयोध्या में * आये जब राम और लक्ष्मण ।
'चौथमल' कहे खुशी घर घर * उठे लक्ष्मण उठे लक्ष्मण ॥११॥

बहर खड़ी

कुछ मुख से कहो बात अपने * क्या दुक्ख आप सन छाया है।
किस सकट में तुम पड़े हुये * किस शोक ने आन दबाया है ॥
किस लिये धारण मौन किया * किसलिये भूमि पर पड़े हुये।
मुख बोलो नैन खोल देखो * किस ज़िद् में तुम हो पड़े हुये ॥
कुछ करो इशारा ही हम से * कुछ रण का हाल सुनाओ तो।
अपने बाँधव के प्रश्नों का * उत्तर आता समझाओ तो ॥
सौंपा था मुझे घरे हर ली * क्या जाकर मैं दिखलाऊँगा।
रो-रो कर माता पूछेंगी * जब उनको क्या बतलाऊँगा ॥

दोहा

दशकधर को मार कर * यूँ झगड़ा निपटाय ।
बदला तेरे कष्ट का * लूँगा अभी चुकाय ॥६१८॥

बहर खड़ी

अब ठहर ठहर निश्चर पति तू * यह कह कर धनुष समार लिया
हो गये खड़े क्रोधातुर हो * मन में ऐसा प्रण धार लिया॥
सुग्रीव अगाड़ी आकर के * श्री रघुवर को ठहराया है।

शोकाकुल राम लखन तट जा ॥ गोदी में भ्रात समार गया ॥
यह शोक देख के दिनकर भी ॥ पच्छिम की ओर पयान किया
छुप गये तुरत आकाश में जा ॥ भूमि को कर सुनसान दिया।
लक्ष्मण को मूर्छित देख राम ॥ भूमि पर चक्कर खाय गिरे ॥
सुग्रीव आदि सब आकर के ॥ हरि के चरणों में राय गिरे ॥

दोहा

चन्दन आदिक बीर को ॥ सींचा हाथों हाथ ।
पास बैठ कर राम के ॥ बोले मुख से बात ॥६१७॥

गायन

[तर्ज–बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है]

लगा जो तीर लक्ष्मण के ॥ पड़े गश खा के भूमि पर।
कहे तब राम आँसू भर ॥ उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥टेर॥
सिया रावण के कब्जे में ॥ और तुम ने करी ऐसी ।
मेरा इस वन में बेली कौन ॥ उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥१॥
अरे रण बीच सेना को ॥ सिवा तेरे हटावे कौन ।
गिराया क्यों धनुष तैने ॥ उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥२॥
तेरी हिम्मत पे ही बन्धु ॥ चढ़ाई की जो लंका पे ।
बँधाओ धीर अब हम को ॥ उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥३॥
रहे गर्मा यहाँ दुश्मन ॥ इन्हों के गर्व को गालो।
नहीं यह वक्त सोने का ॥ उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण॥४॥
ये सुग्रीव और हनुमान ॥ विभीषण पास हैं खड़े ।
दे विश्वास अब इनको ॥ उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥५॥
अगर नफरत हो मुझसे तो ॥ फिर घर को चलें वापस ।
कुछ भी तो कहो भाई ॥ उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥६॥
तुम्हें बिन देख के हम को ॥ माता रो-रो के पूछेगी।

मैंने तो तेरे बल पर ही * लंका हने का सक्षम किया ।
हो गये रुष्ट तुम किस कारन * कैसे मुझ से मुख फेर लिया॥
कर धनुष उठाओ अब भाई * संग्राम में धूम मचाओ तुम ।
रावन दल चढ़ा चला आवे * लड़ कर के इसे भगाओ तुम॥

दोहा

यह सुन कर सुग्रीव ने * लिया से उस धार ।
सात कोट तह शुभ रचे * रक्खे चार द्वार ॥ ६२१ ॥

बहर खड़ी

पूर्व द्वारे पर बजरंगी * सुग्रीव आदि बहु वीर खड़े ।
उत्तर में अंगद कूर्म आदि * जहँ बड़े बड़े रण धीर खड़े॥
पश्चिम में समरशील दुर्धर * मनमथ जय विजय खड़े आके
दक्षिण दिश भामण्डल विराध * गज हुवे द्वार रक्षक जाके॥
उस समय खबर यह सीता को* आकर के कोई सुनाई है।
सुन कर के सीता को इक दम * मूर्छा ने लिया दबाई है॥
विद्या धारियों ने आकर के * शीतल जल मुख पै डाला है।
शीतल वायु के चलने से पुन * कुछ कुछ होश सँभाला है॥

दोहा

सीताजी को जिस समय * होश हुआ है आन ।
आक्रन्दन करने लगी * धरे शीश पर पान ॥ ६२२ ॥

बहर खड़ी

तुम कहाँ लखन धाये वीरा, * तज ज्येष्ट भ्रात को जगत में।
तुम चले गये शोकातुर तज * इस भारी विपत अमगल में।
तुम बिन यह एक महूरत भी * जीना अच्छा नहिं जानते हैं।
बिन आपके नश्वर जगत बीच* नहिं खाना पीना मानते हैं॥
मुझ मन्द भागिनी का जग में * जीना संसार असार का है।

हे पूज्य ! आपने रात्रि समय * अब कहाँ को आना चाया है ॥
लक्ष्मण को होश में लाने का * उपचार करो अब तो स्वामी ।
पीछे रावण को वध करना * यह हृदय विनय धरो स्वामी ॥
यह सुन के राम लखन पुन * अपने कर बीच उठा लिया ।
हे भ्रात ज़रा मुख से बोलो * ऐसा कह कह के विलाप किया

दोहा

हरण सिया का हो गया * लखन गये सुर धाम ।
अब भी तो जीवित रहा * हाय हाय यह राम ॥९१६॥

बहर खड़ी

किस तरह धीर धारूँ मन में * होता विदीर्ण नहीं सीना है ।
अब लखन सरीखा भ्रात गया * धिक्कार जगत् में जीना है ॥
सुग्रीव विराध नल नील सुनो * निज निज घर को जाओ भाई ।
हनुमत सुनो यह वेदनसी * किसको कहूँ समझाओ भाई ॥
नहिं सीय हरण का रञ्ज मुझे * न रञ्ज भ्रात के मरने का ।
लंका नहिं मिली विभीषण को * है रंज वचन के हरने का ॥
रावण को प्रातः के होते ही * अपने हाथों से मारूँगा ।
जब राज विभीषण को दे दूँ * उस समय धीर मन धारूँगा ॥

दोहा

सौंपूगा लंका तुम्हें * होते ही प्रभात ।
फिर आऊँगा उस जगह * जहँ गया लक्ष्मण भ्रात ॥९२०॥

बहर खड़ी

सुन कर के कहा विभीषण ने * क्यों होते आप अधीर प्रभु ।
कुछ यन्त्र मन्त्र से लिप भर में * होनी चाहिये तदवीर प्रभु ॥
सुन कर के राम कहन लागे * लक्ष्मण भाई मुख से बोलो ।
अब उठो उठो निद्रा त्यागो * सुन कर अवाज आँखें खोलो ॥

शशि मण्डल का मैं नन्दन हूँ * प्रति चन्द्र मेरा है नाम प्रभु ।
शुभ प्रभा नाम है माता का * सर्गीत पुर है ग्राम प्रभु ॥

दोहा

आता था मैं सेर को * अपने बैठ विमान ।
सहस विजय ने आन कर * पथ रण ठाना ठान ॥ ६२५ ॥

बहर खड़ी

फिर चक्ररथा शक्ति कर ले * उसने मुझ पे प्रहार किया ।
मैं गिरा अयोध्या के बन में * ऐसा बह तीक्षण वार किया ॥
मुझ को यहाँ पड़ा देख्न सुख में * कृपालु भरत न लाकर के ।
कुछ नीर सुगंधित मँगवाया * पुनः उसको दिया लगा कर के ॥
उस जल से शक्ति निकल गई * मुझ को आराम मिला भारी ।
तुम उस जल को मँगवा लीजे * भारत को मन स द्य टारी ॥
उस जल का सारा हाल मुझे * कर कृपा तुरत सुना दिया ।
जो कुछ बीता था हाल सभी * सब आप के सम्मुख ब्यान किया ॥

दोहा

सुन कर राम सुजान ने * नहीं लगाई बार ।
भाम एडल सुमित्रजा * अगद हनुमत धार ॥ ६२६ ॥

बहर खड़ी

चल दिये आज्ञा पा कर के * तेजी से यान चढ़ाया है ।
आ गये अयोध्या नगरी में * भूपत जहाँ सोता पाया है ॥
आकाश में वायुयान रोक * गायन करना प्रारम्भ किया ।
निद्रा खुल गई भरतजी की * गायन पर अपना चित्त दिया ॥
नीचे सब तुरत उत्तर आये * था नमस्कार नृप को किया ।
संग्राम क्षेत्र का समाचार सब * ब्योरेवार सुना दिया ॥
कुछ समय सोच कर भरत भूप * कौतुक मंगल पुर को धाये ।

मेरे ही हेत राम लच्मण पर * हत हाय यह मार का है ॥
हे मही मात! अपने उर में * स्थान मुझे कुछ दे दीजे।
हे हृदय तु ही फट जा जल्दी * इस यश को निज सिर पर लाजे

दोहा

सीता के लख रुदन को * हृदय दया गई आय।
एक निशचरी इस तरह * कहन लगी समझाय ॥ ६२३ ॥

बहर खड़ी

सीताजी के दुख सुख का हाल* विद्या से तुरत निहारा है।
अच्छे हो जायें मातः लखन * ऐसा उन वचन उचारा ॥
हे देवी! मैंन विद्या से यह * सारा दृश्य निहार लिया।
जैसा मुझ को दीखा यहना * वैसा मैंने उच्चार दिया ॥
रावण सभा में आकर के * मन में अति मोद धारता है।
मैंने लछमण को मार दिया * ऐसे मुख शब्द उचारता है ॥
जब इन्द्रजीत और कुम्भकरण * इत्यादि की सुनी गिरफ्तारी।
तो हाय लगे करने रावण * मन में अति शोक हुआ जारी ॥

दोहा

सेना में आया तुरत * एक विद्या धर वीर।
भामण्डल से आन कर * वचन कहे धर धीर ॥ ६२४ ॥

बहर खड़ी

जो चाहते हो लछमण को * अच्छा करना तो वीर सुनो।
ले चलो राम के पास मुझे * यह शब्द मेरे रणधीर सुनो ॥
लछमण जीवित होने का * उसको उपचार बताऊँगा।
जिस तरह लखन फिर सजग होय* यह सारा हाल सुनाऊँगा ॥
भामण्डल उसका हाथ पकड़ * श्री राम के तट ले आये हैं।
करके प्रणाम विद्याधर ने * अपने सब पते बताये हैं।

गायन

विकल निकल मचल मचल जाय कहाँ को ॥ टेर ॥
लक्ष्मण को विकल कर, अब तन से निकल कर,
जाने के शकल कर।
अटल मटल मचल मचल धाय कहाँ को ॥ १ ॥
तेरा करूँ निपात, अब तू है मेरे हाथ,
लक्ष्मण चरण में माथ।
रिगड़-रिगड़ बिगड़-बिगड़ छाय कहाँ को ॥ २ ॥
मुख से शपथ करो, फेर न चरण धरो,
हरि के चरण परो।
वचन रचन सचन को लजाय कहाँ को ॥ ३ ॥
कहते हैं चौथमल, सब काम कर सँभल,
रहे धर्म पर अटल।
अकथ कथय कर्म की, सुलझाय कहाँ को ॥ ४ ॥

दोहा

सुन कर शक्ति के वचन ॥ दिया वीर ने छोड़ ।
अन्तर ध्यान हुई तुरत ॥ लज्जित हो मुख मोड़ ॥८२१॥

बहर खड़ी

फेरा है हाथ विशिल्या ने ॥ लक्ष्मण की निन्द्रा जागी है।
चन्दन आदिक का लेप हुआ ॥ शक्ति की दुविधा भागी है॥
लक्ष्मण उठ खड़े हुए भू से ॥ रघुवर ने कंठ लगाया है।
पुन सती विशिल्या का हरि ने ॥ सारा अहवाल सुनाया है॥
पुन राम आज्ञा से रण में ॥ लक्ष्मण का पाणिग्रहण किया।
मिल कर विद्याधर वीरों ने ॥ जै जै से गगन गुँजा दिया ॥
जंगल में मंगल देख-देख ॥ सब सैनिक खुशी मनाते थे।

पुन द्रोण मेघ के पुर में आ ❋ नृप के शुभ महलों में धाये ॥

दोहा

दिया है सारा सुना ❋ रण का तुरत पयान ।
एक सहस्र संग सखिन के ❋ दीई विशल्या आन ॥६२७।

बहर खड़ी

बैठाया वायुयान तुरत ❋ अति शीघ्र गमन कर धाये हैं ।
भरत को उतार अयोध्या में ❋ लंका की ओर सिधाये हैं ॥
था वायुयान का वेग महा ❋ जिसको लख सेना घबराई ।
समझा प्रकाश भान का है ❋ वैसी भ्रम घटा हिये छाई ॥
जब उतरा यान भूमि आकर ❋ सैना ने मोद बढ़ाया है ।
भामण्डल लिये विशल्या को ❋ श्री राम के सन्मुख आया है ॥
क्यों लाये विशल्या को यों ❋ इसका मतलब समझो सभी
गन्धोदक कहाँ छिपा रक्खा ❋ लाकर के मुझ दिखाओ सभी

दोहा

भामण्डल ने राम को ❋ दिया हाल सुनाय ।
पास लखन के ले गये ❋ सती विलम्ब ली जाय ॥६२८॥

बहर खड़ी

कर परस लखन के वपु ऊपर ❋ शक्ति का जी घबराया है ।
तन से भागी है तुरत निकल ❋ हनुमान ने आन दबाया है ॥
हनुमान से शक्ति कहन लगी ❋ बजरंगी मैं निर्दोषी हूँ ।
धरणेन्द्र ने रावण को दीनी ❋ अब मैं उस ही की पोषी हूँ ॥
पिता है प्रजापति वहन ❋ मैं उसकी बहन कहाती हूँ ।
है पूरब पुण्य विशिल्या का ❋ बस उस ही से घबराती हूँ ॥
इसकी बरदाश्त नहीं मुझ में ❋ तप तेज सती का भारा है ।
तुम मुझे छोड़ दो अब हनुमत ❋ होगा अहसान तुम्हारा है ॥

दोहा

भाई ना मन्त्रियों की * दशकन्धर को राय ।
तुरत दूत बुलवाय कर * हरि तट दिया पठाय ॥ ६३२ ॥

दोहा

जिस तरह हो सके रघुवर को * यहाँ आकर के समझाना तुम ॥
उस कुम्भकरण व इन्द्रजीत को * तुरत छुड़ा कर लाना तुम ॥
पाकर आज्ञा चल दिया दूत * और राम लखन तट आया है ।
कर विन्ती विनय भाव सेती * चरणों में शीश झुकाया है ॥
दो छोड़ भ्रात सुत मेरे को * रावण ने यह कहलाया है ।
मैं दूँगा आधा राज तुम्हें * ऐसा मुख से फरमाया है ॥
सीता के बदले तीन हजार * कन्या राजों की दिखलाऊँ ।
जो माने नहीं वचन मेरे * तो सैना सहित पछड़वाऊँ ॥

बहर खड़ी

वचन सुने जब दूत ने * बोले राम सुजान ।
दशकन्धर से जाय कर * करना ऐसा ब्यान ॥ ६३३ ॥

बहर खड़ी

नहिं इच्छा मुझे राज की है * न सम्पति की है चाह कुछी ।
न मैं लड़ने को आया हूँ * न हो सकता निर्वाह कुछी ॥
जो पुत्र बन्धु को यदि अपने * रावण छुड़वाना चाहता है ।
तो सीता की पूजा कर के * क्यों पास न लेकर आता है ॥
बिन मुक्त किये सीता जी के * नहिं उसके भ्रात व पुत्र छूटे ।
चाहे जितना संग्राम होय * जो अटल बन्ध हैं ना टूटे ॥
मेरे वचनों को जाकर के * रावण के निकट सुना देना ।
सब ब्यौरे वार बता देना * और हाल सभी समझा देना ॥

दोहा

बोला है सामन्त फिर * मुख से वचन सँभार ।

वानरदल उछल-उछल कर के ॐ अति मंगल गायन गाते थे ॥

दोहा

लक्ष्मण का नहिं कर सकी ॐ शक्ति कुछ ही बिगाड़ ।
अब आगे की किस तरह ॐ बाँध सकेंगे पाड़ ॥६३०॥

बहर खड़ी

मेरा था यह ख्याल अभी ॐ रामानुज अब मर जायगा ।
उसके वियोगमें तड़फ तड़फकर ॐ राम काल कर जायगा ॥
वानर-दल जाये आप भाग ॐ अब राम लखन नहिं पायेंगे ।
सो कुम्भकरण और इन्द्रजीत ॐ आदिक छुट कर आजायेंगे ॥
लीला विचित्र है कर्मों की ॐ नहिं देवगाते का पता लगा ।
शक्ति से लक्ष्मण मरा नहीं ॐ सोते से पुनरपि सिंह जगा ॥
अब कुम्भकरण और इन्द्रजीत ॐ के छुड़वाने का यत्न करो ।
जिस तरह हो सके उस तरियाँ ॐ सारे रिपु-दल का पतन करो ॥

दोहा

सीता को छोड़े बिना ॐ होय नहीं छुटकार ।
कुम्भकरण आदिक अभी ॐ आवें तुमरे द्वार ॥ ६३१ ॥

बहर खड़ी

सीता के दिये बिना स्वामी ॐ हो सकता नहिं निस्तारा है ।
अब राम को सीता दे दीजे ॐ यह मामो वचन हमारा है ॥
कुछ और भयानक लंका पे ॐ आफत आती सी नजर पड़े ।
रोते हैं रात दिवस कूकर ॐ तब चित आती सी नजर पड़े ॥
जो गये उन्हें तो जाने दो ॐ जो रहे करो रक्षा उनकी ।
जा करो प्रार्थना रघुवर से ॐ अब पाओगे भिक्षा उनकी ॥
उनकी रक्षा के लिये राम से ॐ ही अर्जी करनी होगी ।
श्रीराम की आज्ञा को स्वामी ॐ अपने शिर पर धरना होगी ॥

बारह खड़ी

पुन बोला मंत्रियों से पूछा * अब काम कहो क्या करना है
वह राम लखन दोनों भाई * चाहें मम कर से मरना है ॥
सुन कर के मंत्री कहन लगा * अब राम को सीता दे दीजे।
है यही उचित सलाह स्वामी * इस को हृदय में धर लीजे ॥
सब राम विरोध का फल तुमरी * आंखों के आगे आया है।
नाहिं काम किसी ने भी सारा * जो किया वही फल पाया है ॥
अब करके प्रेम और देखो * जो होगा सो हो जायेगा।
नम्रता से कारज सिद्ध होय * पर रण में सभी कट जायेगा ॥

दोहा

सीता को अर्पण करो * सुनी जिस समय कान।
मौन साध कर रह गया * कीना मन में ध्यान ६३७ ॥

चहर खड़ी

हट तजूं किस तरह से अपनी * ऐसा विचार मन में छाया।
नस-नस में रक्त प्रवाह हुआ * और क्रोध उमड़ मन में आया ॥
लाचार हाय मन में विचार * विद्या की सुरत सम्हारी है।
सब जाये शत्रु का दल सारा * बहु रूप विद्या भारी है ॥
कर दिये रवाना मंत्री सब * ऐसा दिल बीच समाया है।
विद्या साधन करने के हित * स्थान परम में आया है ॥
मणि पिट्टका पर बैठा है * मन थिर कर सुमरन करन लगा।
आसन अविचल कर विद्या का * निज ध्यान हृदय में धरन लगा ॥

दोहा

बैठा आसन पदम कर * ज्यों आसीम महस।
जयमाला ले हाथ में * विधि से जाप जपत ॥६३८॥

गजल

देवाधिदेव भगवन * कारज सुफल करीजै।

एक सिया के कारने ❋ मम ठानो तकरार ॥ ६३४ ॥

बहर खड़ी

तुम एक स्त्री के कारण ❋ संशय में प्राण डालत हो।
या त्याग सिया का मोह ममत ❋ नाहक में झगड़ा पालत हो॥
प्रहार से रावणके लक्ष्मण को ❋ अब की धार बचा लिया।
अब हरगिज नहिं बच सकता है❋ जो दशकंधर ने वार किया॥
यह रावण विश्व जीतने की ❋ अपने कर ताकत धरता है।
कोई जीत नहीं सकता उसको ❋ ऐसा हम दिल में भरता है॥
जो वचन न मानोगे मेरे ❋ तो समय सकल खो जायेगा।
इस सैना सहित लखन के भी ❋ जीवन का अन्त हो जायेगा॥

दोहा

लखन वचन कहने लगे ❋ छाया क्रोध प्रचण्ड।
समर करन को लखन के ❋ फड़क उठे भुज दण्ड ॥ ६३५॥

बहर खड़ी

दशकण्ठ ने अब तक रघुवर की ❋ शक्ति को नहिं पहिचाना है।
इसका फल आगे होगा क्या ❋ इसको अब तक नहिं जाना है॥
सारा परिवार मरा उसका ❋ जो बचा बँधा यह समर पड़ा।
बाकी त्रिया रह गई शेष ❋ इस पर भी अपनी टेक अड़ा॥
अब भी है उसे गुमान यही ❋ कि विजय लक्ष्मी पाऊँगा।
वानर सेना और राम लखन ❋ मैं सब को मार भगाऊँगा॥
यह महा धृष्टता है उसकी ❋ नीचा नहिं होना जानता है।
यह सूखा काष्ट बना कैसे ❋ जो लचना नहिं पहिचानता है॥

दोहा

वीरों ने गर्दन पकड़ ❋ दीना दूत निकाल।
लंका में आ दूत ने ❋ कह दीना सब हाल ॥ ६३६ ॥

जिसतरह रोक नहिं सकते घन ॥ दिनकर को कभी प्रकाशन से ॥
मदोदरि की चोटी अंगद ॥ जिस दम पकड़ कर लाया है।
रावण दिशा-दिशा सन्मुख ॥ रानी को त्रास दिखाया है ॥
रे रावण ! शरण विहीन बना ॥ अब यह पाखण्ड रचाया है।
अनहोने पर रघुवर के ॥ तू ला सिया चुरा कर लाया है॥
पर देख तेरे सम्मुख ही हम ॥ मन्दोदरि को ले जाते हैं।
तू बैठा देख रहा कायर ॥ तेरे नहिं नैन लजाते हैं ॥

दोहा

भभक उठा अब क्रोध मन ॥ अंगद गुस्सा खाय ।
केश पकड़ मंदोदरी ॥ सम्मुख पटकी लाय ॥६४१॥

बहर खड़ी

कर रुदन पुकारती मंदोदरि ॥ और शोक हृदय में भरने लगी।
करुणा स्वर से दशकंधर के ॥ सम्मुख विलाप यों करने लगी॥
कपि कटकसे मुझ को लो छुड़ाय॥ ऐसा कह कर चिल्लाती है।
स्वामी यह अपाति करें मेरी ॥ रोती है और अश्रु बहाती है॥
आकाश को प्रकाशित करती ॥ बहुरुपणी विद्या आई है॥
मन इच्छित पूर्ण करूँ काज ॥ ऐसे मुख से फरमाई है॥
यह सुन कर यों दशकंठ कहे ॥ अब इच्छा होय बुला लूँगा।
उस समय काज के करने की ॥ हर्षा कर के आज्ञा दूँगा॥

दोहा

सुन कर के विद्या हुई ॥ पल में अन्तर ध्यान।
वानर भी सब चल ॥ आये निज-निज स्थान ॥६४२॥

बहर खड़ी

सुन कर मंदोदरी की बातें ॥ रावण को गुस्सा आया है।
वह दाँत पीस रह गया खड़ा ॥ अपने मन में झुँझलाया है ॥

परमातम रूप स्वामी ✿ हृदय में शान्ति दीजे ॥
त्रिय छत्र शीश सोहे ✿ सुन्दर स्वरूप मोहे ॥
प्रभु वन्दना हमारी ✿ अब तो स्विकार लीजे ॥
मन कामना हमारी प्रभु ✿ हो सफल अवश हीं।
यह मंत्र नाम सुमरा ✿ जिस पर सुभक्त रीझे ॥
इक नाम से तुम्हारे ✿ सारे हों सिद्ध कारज।
उन नेत्रों से भगवन ✿ अनुचर को देख लीजे ॥
जो आपका हृदय में ✿ धरता है ध्यान भगवन।
अब 'चौथमल' का बेड़ा ✿ जिनराज पार कीजे ॥

दोहा

पास बुला मन्दोदरी ✿ दीना हुक्म सुनाय।
आठ दिवस तक नगर में ✿ कीजे धर्म अघाय ॥ १३६ ॥

बहर खड़ी

जिनधर्म का पालन करें सभी ✿ आंबिल उपास व्रत दान करें
सब जीवों को साता देकर ✿ दुखियों के सारे दुःख्ख हरें
जा गुप्तचरों ने कपिपति को ✿ यह सारी खबर सुनाई है
बहुरूपणी विद्या सिद्ध करें ✿ दशकन्धर अति दुःख दाई है
जो विद्या सिद्ध हुई उसको ✿ तो झगड़ा बहु बढ़ जायेगा
फिर बहुत परिश्रम से रावण ✿ संग्राम में मारा जायेगा
मैं करूँ किस तरह आक्रमण ✿ यह पथ बहुत ही गूढ़ बना
यह सुनकर राम सुजान कहें ✿ रावण जो ध्यानारूढ़ बना

दोहा

सुन कर रघुवर के वचन ✿ अंगदादि बहु वीर।
पहुँचे उस स्थान में ✿ जहँ बैठा रणधीर ॥ ४४० ॥

बहर खड़ी

दीना है कष्ट बहुत उस को ✿ दशकठ उठा नहिं आसन से।

जो मार विरानी को तकते * वह रोते और पछताते हैं ॥
इस से तो समर भूमि आ के * दोनों को बाँध ले आऊँगा।
फिर सीता उन को दे दूँगा * दुनिया में कीरत पाऊँगा ॥
यश होगा जगह-जगह मेरा * सब नीतिवान पुकारेंगे।
धर्मश कहेंगे सब मुझ को * हृदय में निश्चय धारेंगे ॥

दोहा

माना भाँति विचार में * बीती रैन गँवाय।
प्रात होत रण भूमि में * आन लगे हैं आय ॥६४५॥

बहर खड़ी

दर्पण कर में ले मुख देखा * मुख उसको नहीं नजर आया
पुन खड्ग म्यान से निकल पड़ा * मन्दोदरि का दिल घबराया ॥
ठोकर खा शिर का मुकट गिरा * मंजारी मार्ग काट गई।
दिया छींक किसी ने आ सम्मुख * जोगनी एक को चाट गई ॥
मन्दोदरि ने दामन गह कर * कर जोर पती से विनय करी।
मत आज समर में तुम जाओ * ऐसा कह पति के चरण परी ॥
नहीं मानी बात एक, रावण * हो कर सवार रण धाया है।
नाना प्रकार के शस्त्र सजा * संग्राम भूमि में आया है ॥

दोहा

वीरों की हुँकार से * लगी काँपने भूम।
ताल ठोकते गर्जते * मचा रहे हैं धूम ॥ ६४६ ॥

बहर खड़ी

शूरों की ताल ठोकने से * मन में दिग्गज भी काँप उठे।
चिल्लाने लगे जन्तु वन के * आकाश में मुख सुर ढाँप उठे।
जिम रुई के पहलों को समीर का * चल कर वेग उड़ा देता।
निशचर सेना पर इसी तरह * रामानुज सर वर्षा देता ॥

मज्जन कर भोजन पान किया ❁ तन पर हथियारें सम्हारे हैं।
खुश हो कर देवरमण वन में ❁ दशकंधर ने पग धारे हैं॥
सीता से ऐसे कहन लगा ❁ मैं युद्धस्थल पग धारूँगा।
और राम लखन को सैन सहित ❁ रण में आकर संहारूँगा॥
मैं बहुत दिनों से विनय तेरी ❁ आकर रोज़ाना करता था।
अनियम भंग कर अपमाऊँ ❁ ऐसा विचार चित्त धरता था॥

दोहा

सुन कर रावण के वचन ❁ गिरी मूर्छा खाय।
चेत हुआ कुछ देर में ❁ उठ बैठी घबराय ॥६४३॥

बहर खड़ी

यदि लखन राम की मृत्यु के ❁ जो समाचार सुन पाऊँगी।
है त्याग खान और सभी ❁ अनशन कर दिवस बिताऊँगी॥
सुन कर के प्रतिज्ञा सीता का ❁ दशकंठ बहुत घबराया है।
आरत मन में वह गया अधिक ❁ कुछ मन में सोच समाया है॥
सूखे में कमल उगाना जिम ❁ सीता से प्रेम का करना है।
इच्छायें सारी व्यर्थ हुई ❁ क्या राग प्रिया से धरना है॥
उस वीर विभीषण की मैंने ❁ वृथा ही अवज्ञा कर डारी।
अफसोस कलंकित कुल हुआ ❁ मर्म की बात लगी सारी॥

दोहा

सीता को इस समय जो ❁ राम निकट दे भेज।
भीरू सब संसार कहे ❁ घटे मान अरु तेज ॥६४४॥

बहर खड़ी

सीता को जो इस समय अगर ❁ रघुवर के तट पहुँचावेंगे।
संसार कहे भीरू मुझ को ❁ कायर कपोत बतावेंगे॥
परतिय गामियों के हृदय ~ ऐसे ही कलुषित हो जाते हैं।

अपराध क्षमा अपना करवा * सीता को संग लिया लाओ ॥
दशकंठ क्रोध कर ये बोले * नहिं शस्त्र धरन में धारूँगा ।
मुक्के से रिपु का नाश करूँ * और चूर-चूर कर डारूँगा ॥

दोहा

दशकन्धर के वचन सुन * लक्ष्मण मन रिसियाय ।
चक्र उठा कर हाथ में * दीना तुरत चलाय ॥६४६॥

बहर खड़ी

जब चक्र चला दशकन्धर पर * मुक्का रावण ने मारा है ।
किरणें हजार होगई प्रचण्ड * दशकंठ का शीश उतारा है ॥
थी एकादशी जेष्ठ कृष्ण * जिस दिन पूर्ण संग्राम भये ।
रामादल में आनन्द हुआ * रावण मर एक प्रभा धाम गये ॥
देवों ने जै जै कार किया * आकाश से पंकज बर्षाये ।
लक्ष्मण के ऊपर गिरे फूल * गल माल पहर कर हर्षाये ॥
वानर सेना हर्षित होकर * किलकार लगाती आती है ।
करते हैं नृत्य मोद भर के * बहु खुशी हृदय में आती है ॥

दोहा

जै जै कारे कर रहे * सुर सब बैठ विमान ।
धन्य धन्य तुम को प्रभो * कीना सुख प्रदान ॥ ६५० ॥

गायन

[मारवाड़ी धुन]

अब चिरकाल तुम्हारा सुयश * मही पर फैले महाराज ।
दशकन्धर का मार कर * कीना उत्तम काज ।
आनन्द उत्सव मन रहे * होते उत्तम काज ॥
मन ध्यान धर के प्रजा सारी * साजे सुम्ब साज ॥ १ ॥
सुन्दर भूषण साज कर * सारी सुखद समाज ।

भागा निश्चर दल भय खा के ॥ रावण ने करी बाण वर्षा।
यह युद्ध भयंकर देख प्रलय काल रूप आन आगो दर्शा॥
रण देख देख रावण के मन ॥ में हो गई विजय शंका।
छाया विचार ऐसा दिल में ॥ यह चली हाथ से अब लंका॥

दोहा

सुमरण की बहु रूपणी ॥ विद्या झटक संभार।
आय उपस्थित हो गई ॥ रूप सुघर निज धार॥६४७॥

बहर खड़ी

उस विद्या से नृप रावण ने ॥ अपने बहु रूप बना लिये।
चहुँ ओर चमकते हैं रावण ॥ ऐसे विद्या ने रूप किये॥
लक्ष्मण ने बहु रावण देखे ॥ तो मार मार एक संग करी।
गये गरुड़ यान पर तुरत बैठ ॥ तर्कस तूँणी को कमर धरी॥
लक्ष्मण की मार देख रावण ॥ मन में अपने घबराया है।
निज कर में चक्र उठा कर के ॥ उँगली रख उसे घुमाया है॥
चमत्कार चक्र की देख-देख ॥ मन में सुर भी घबराये हैं।
गये काँप वीर सुग्रीव आदि ॥ आ राम को शब्द सुनाये हैं॥

दोहा

दशकन्धर ने चक्र को ॥ दिया लखन पर छोड़।
चम चमाट कर चल दिया ॥ हित रावण से तोड़॥६४८॥

बहर खड़ी

चट चक्र प्रदक्षिण लक्ष्मण की ॥ देकर दक्षण कर आय गया।
नहिं काम सुदर्शन ने किया ॥ अब दशकन्धर घबराय गया॥
जिस तरह उदय गिरि पर्वत पै॥ सूरज ने आ स्थान किया।
बस उसी तरह लक्ष्मण कर पै ॥ आ चक्र निवास स्थान किया॥
बोले हैं पुनः विभीषणजी ॥ ओ अब भी आप समझ जाओ

अति उग्र भाव से मक्त विभीषण * ने यहाँ रुदन मचाया है ॥
हे वीर भ्रात तुम सा भाई * अब कैसे जग में पाऊँगा ।
पूछे अब कोई आकर के * उसको क्या बतलाऊँगा ॥
भाई मृत्यु होने से अति * शोक विभीषण ने किया ।
निश्चय, मरना अपना करके * कर से कटार को काढ़ लिया ॥
चाया है मार कर मर जाना * रघुवर ने पकड़ा हाथ तुरत ।
वीरों का यह कर्तव्य नहीं * हो गये मरने को साथ तुरत ॥

दोहा

वीरों के कर कृत को * जिसमे कीना नाम ।
जो वीरों का कर्म था * यों ही कीना काम ॥६५३॥

बहर खड़ी

जिस कृत हेत यह आया था * यहाँ आकर पूर्ण काज किया ।
पाई है समर में वीर गति * अद्भुत लंका का काम किया ॥
जिस वीर से रणस्थल में था * मर्दि देवों ने भी भय पाई ।
उस वीर प्रतिक्षी ने अपनी * दुनियाँ में कीरत फैलाई ॥
मार्हि आते जी सीताजी * जिसने देना स्वीकार किया ।
यह वीर प्रतिक्षी था भारी * मार्हि मान हाथ से आन दिया ॥
जो नाम कर चुका आ जग में * उसके लिये रोना क्या है ?
रोना तो है उनको पक्का * ये काम किये सोना क्या है ॥

दोहा

स्थापमा कीरत करी * जिसने जग में आय ।
वीर गति जिसको मिली * सुभटपना दिखलाय ॥६५४॥

बहर खड़ी

रोते देखा मन्दोदरी को * रघुपति ने धीर बँधाया है ।
रोने से अब क्या होता है * ऐसा कह कर समझाया है ॥

चरण पड़ी श्री राम के * धन्य धन्य दिन आज ॥
सर सारी सारी सुरन मण्डली * धजा रही शुभ याज ॥२॥
सूर्य चन्द्र भ्रमण करें * जब तक भू पर आन।
नाम अमर तुमरा रहे * तब तक भूवयो थान ॥
यह कार तुम ने कर के स्वामी * रखी सती की लाज ॥३॥
'चौथमल' गुण गाय कर * रसना करी पवित्र।
सब को साता दे सदा * होकर सुफल इकत्र ॥
लक्ष मार सारी निश्चर सेना * घबराई सिर ताज ॥ ४ ॥

दोहा

दशकधर को लखा मरा * मक्त विभीषण आय।
रघुवर के सन्मुख खड़े * चरनों शीश नमाय ॥६५१॥

बहर खड़ी

आज्ञा पाकर चल दिये तुरत * तट रावण राय के आये हैं।
निश्चर दल कासख दिया * जल नैनों में भर लाये हैं ॥
बलदेव आठवें हैं रघुवर * लक्ष्मण वसुदेव कहलाते हैं।
आओ सब इनकी शरणों में * ऐसा कह कर समझाते हैं ॥
सुन कर के वचन विभीषण के * आश्रय सब ने चरनों का लिया।
श्री राम लखन मन हर्षा के * छाया अपने करणों का किया ॥
होते हैं धीर सदा दयालु * दयालुता उन्होंने दिखलाई ॥
सब को धीरजता दे कर के * सब मेटा आरत दुखदाई।

दोहा

देखा है जब भ्रात को * पड़ा भूमि पर आन।
शोक विभीषण हो रहा * उर में दुक्ख महान ॥६५२॥

बहर खड़ी

हे भाई ! माने वचन नहीं * आकर भविष्य सिर छाया है।

दर्शन मुनि के करन सिधाये * वन्दन कर मुनि को सिर नाये ॥
मुनिवर धर्मोपदेश सुनाया * सुना देशना मन हुलसाया ।
इन्द्रजीत अस विनय सुनाई * पूर्व भव दीजै समझाई ॥
मुनि ने पूर्व भवों का हाला * कहना किया समझ तत्काला ।
मुनि बोले मन हर्ष बढ़ाई * सुनिये अप तुम श्रवण लगाई ॥

दोहा

भरत क्षेत्र के बीच में * नग्र कौसम्बी जान ।
निर्धन ग्रहस्थी के भये * दोनों भ्रात समान ॥६५७॥

बहर खड़ी

प्रथम पश्चम था शुभ नामा * रहते कर दोनों आरामा ।
भगवत्त मुनि उस नगर पधारे * सुना धर्म मन में हर्षा रे ॥
दिक्षा ले भये शान्ति रूपाई * विचरे मन अति शान्ति बढ़ाई
फिर कौशम्बी नग्र पधारे * होय वसन्तोत्सव अति भारे ॥
क्रीड़ा करते नृप अविलोका * मन म वह आनद विलोका ।
पश्चम मुनि ने किया नियाना * प्रथम ने जब यह पहिचाना ॥
प्रथम मुनि ने बहु समझाया * तेरी समझ में येक न आया ।
मर कर इन्दुमती के जाया * रति वर्द्धन शुभ नाम सु पाया ॥

दोहा

राजा होकर राज का * करन लगे शुभ काज ।
मन आनद मनाय के * लगे भोगने राज ॥ ६५८ ॥

चौपाई

प्रथम मुनि तप कर अति भारा * देवलोक पांचवें सिधारा ।
अवधि ज्ञान जब देव लगाया * क्रीड़ा रति भ्रात को पाया ॥
सुर ने मुनि का रूप बनाया * देन देशना भू पर आया ।
रतिवर्द्धन ने आसन दीना * मुनि ने सत उपदेश सु कीना ॥
पूर्व भव का हाल सुनाया * सुन कर रति वर्द्धन मन लाया ।

फिर कुम्भकरन आदिक को आ० श्रीराम लखन ने छोड़ दिया।
धीरज सब को दीना हुआ ० शत्रुता से मुख का मोड़ लिया
सम्बन्धी हितु मिले सारे ० सब रख हुये संपुरखाई है।
चन्दन जो असल बावना था ० उस से रच चिता रचाई है॥
ले अगर कपूर आदि वस्तु से ० सस्कार मिल कीना है।
स्नान आदि कर के सब ने ० रघुवर चरनों मन दीना है॥

दोहा

दोनों भ्रातों ने कहा ० कुम्भकरन से आय।
राज करा तुम पूर्ववत् ० मन आनंद मनाय॥६५५॥

चौपाई

बोले राम वचन हुलाई ० करो राज अपना सुख पाई।
चाह न सम्पति की मन मेरे ० सुख पाओ सुख साज घनेरे॥
समरा में चाहूँ कल्याना ० कुम्भकरन तुम भाँति सुजाना।
सुन कर राम वचन अस बोले ० कुम्भकरन पट घट के खोले॥
भुज विशाल मेरी तुम लीजे ० करुणा अब हम पर प्रभु कीजै।
नहीं राज की हम का इच्छा ० अब हम को प्रभ लेनी दीक्षा॥
तज झंझट को दीक्षा धारें ० अपना आतम काज सँमारें।
मोक्ष धाम का काज सँभारें ० तप संयम नहिं मन से हारें॥

दोहा

मुनिवर का आना हुआ ० कुसुमायुध उद्यान।
उसी रात में मुनि को ० प्रकटा केवल ज्ञान॥६५६॥

चौपाई

अप्रमेय बल मुनि का नामा ० जहँ विचरें करें पावन धामा।
केवल उत्सव को सुर आये ० जै जै कार गगन ध्वनि छाये॥
प्रात उठे श्री राम सुजाना ० कुम्भकरण आदिक बलवाना।

मंगल मोद भरा घर-घर में * आनंद छाया लंका भर में।
लंकागढ़ को राम निहारा * वन अशोक में चलन विचारा॥

दोहा

पुष्प गिरी निकटस्थ ही * पहुँचे राम सुजान।
जहँ बैठी थी जानकी * मन में शोक महान् ॥६६१॥

चौपाई

हनुमंत ने जो हाल सुनाया * उसी हाल में सिय को पाया।
द्वितीय जीवन सम निज नारी * रघुवर ने निज तट बैठारी॥
यह लख सुर गण मन हर्षाये * नभ से पंकज सुम बर्षाये।
जय जय महासती सीता की * पति-पद-रतिगुण गण गीता की
लक्ष्मण सी के चरन सिर धारा * हृद प्रभु चले ज्यों परनारा।
सूँघा मस्तक सीय लखन का * आशीर्वाद दिया खुश मन का॥
चिरजीवी हो लखन पियारे * चिर आनंदी रहो हुलारे।
शत्रु सनमुख रहो विजेता * सत पुरुषों के बनो निकेता॥

दोहा

भामण्डल नृप सिर झुका * सिय को किया प्रणाम।
भाई को मन हर्ष के * दी असीस सुख धाम ॥६६२॥

चौपाई

कपि पति और विभीषण धीरा * सिय के चरन छुये धर धीरा।
अंगद हनुमान हर्षा के * सिय के चरन पड़े हैं जा के॥
भुवनालंकृत हाथी मँगवाया * राम सिया को सग बैठाया।
संग विभीषण निर्भर धीरा * सुग्रीवादिक सब रण धीरा॥
रावण के जा महल निहारे * सहस्र थम्भ के महल पधारे।
कहैं विभीषण नाथ पधारो * मुझ चरनों का दास विचारो॥
वचन विभीषण का हरि माना * प्रेम विभीषण को पहिचाना।

प्रगटा जाती स्मरण ज्ञाना * हुआ पूर्व भव का जब माना ॥
तज कर संसार दीक्षा धारी * रतिवर्द्धन हुये व्रतधारी ।
संयम से तप किना भारा * देवलोक पांचवें पधारा ॥

दोहा

सुर पुर की पूर्ण करी * आयुष दोनों संग ।
महा विदेह में विबुधपुर * जन्मे हुआ रस रंग ॥८५६॥

चौपाई

दोनों प्रगटे नृप घर भाई * पूर्व पुण्य शुभ समकित पाई ।
तप में दोनों चित्त लगाये * देव लोक धारवें सिधाये ॥
सुर पुर से चय कर युग भाई * दशकधर ग्रह जन्मे आई ।
इन्द्रजीत घनवाहन साता * यहाँ आकर हुये दोनों भ्राता ॥
इन्दुमति सधुतिक भव पाके * मंदोदरी भई यहाँ आ के ।
सुन कर पूर्व भव युग भाई * लीनी दीक्षा मन हुलाई ॥
शुभकरम मंदोदरि रानी * दीक्षा ले तप की मन ठानी ।
तप संयम में सुमन लगाया * समझा अनित्य अथिर यह काया

दोहा

मुनिवर को कर वंदना * किया राम पयान ।
जहँ शिविर था राम का * पहुँचे उस स्थान ॥ ६६० ॥

चौपाई

लक्ष्मण राम चले युग भाई * कपि पति संग चले हर्षाई ।
चले संग भजनी कुमारा * विजय हुए जिनके मन भारा ॥
नाना वाहन संग में लीने * गमन हर्ष लंका पुर कीने ।
लंका को अति ही शृंगारा * देख मुदित मन हो अति भारा ॥
आगे चले विभीषण जाते * रघुवर को मार्ग दिखलाते ।
विद्याधरी गान शुभ गावें * भर अंजलि पुष्प वर्षावें ॥

दोहा

कुम्भकरण नर्बदा तट * किया मन हुलसाय ।
संथारा कर मुक्ति को * पहुँचे हैं मुनिराय ॥६६५॥

चौपाई

अवधपुरी में कौशिल माता * याद करे सुत की दिन राता ।
सऊमित्रा कुलदेव मनावें * कब तक दर्शन पुत्र दिखावें ॥
चिंता सुत की हृदय समाई * मिलें राम कब हर्ष बढ़ाई ।
इस अवसर नारद मुनि आये * रानिन ने झुक शीश नमाये ॥
कर सत्कार ऋषी बैठारे * देख ऋषी के वचन उचारे ।
मन मलीन कहि कारण रानी * सत्य कहो सब बात सुरानी ॥
उत्तर दिया कौशल्या माता * राम लखन की खबर न आता ।
आज्ञा पितु की शीश चढ़ा के * पुत्र वधु सुत वन गये जा के ॥

दोहा

सीता को हर विपन से * ले गया रावण राय ।
हुआ युद्ध उन स वहाँ * सुनो ऋषी चित लाय ॥६६६॥

चौपाई

शक्ति लखन के हृदय मारी * हुआ मूर्छित सुत यशधारी ।
योद्धा सेन विशल्या आये * ले लंका वो तुरत सिधाये ॥
आगे हाल न कुछ भी पाया * इस कारण हृदय घबराया ।
इतना कह रानी विलापे * हाय हाय कर रुदन मचावे ॥
नारद मुनि ने ढाढस दीना * तुम ने सोच वृथा ही कीना ।
नारद तुरत पथ निज लीना * चरण आय लंका में दीना ॥
कर सत्कार राम बैठाया * आसन दे कर मोद बढ़ाया ।
आने का पूछा सब कारन * सुन कर नारद लगे उचारन ॥

दोहा

माताओं का दुःख सब * नारद दिया सुनाय ।

भोजन आदिक से सतकारा * मणी सिंहासन पर बैठारा ॥

दोहा

युगल चरन पखराय के * बोले वचन समार ।
स्वामी करुणा दृष्टि से * सेवक ओर निहार ॥६६३॥

चौपाई

सुवर्ण रत्न आदि भंडारा * कोष सैन सब शस्त्रागारा ।
राक्षस द्वीप महत्व प्रभु कीजे * चरण सिंहासन चल कर दीजै ॥
मैं सेवक बन कर सियकाइ * करूँ सेव पद की दृढ़ाई ।
लंका का अधिकार समारो * पावन करो राज यह सारो ॥
विनय दास की चित्त में दीजे * अनुग्रहीत प्रभु हमको कीजे ।
सुन कर हरि ने उत्तर दीना * राज तिलक प्रथम ही कीना ॥
प्रेम विवशमय भूले कैसे * भक्ति विवश हो गये तुम ऐसे ।
भक्त विभीषण समझा दीना * मन में राम चितवन कीना ॥

दोहा

मन विचार श्री राम ने * बिठा विभीषण पास ।
हर प्रकार समझाय कर * दीना है विश्वास ॥६६४।

चौपाई

राम विभीषण पै चित दीना * राजतिलक लंका का कीना।
इन्द्र भवन में सुरपति जैसे * रावण महल राम गये तैसे ॥
विद्याधरों की सुता दुलाई * थी जिन हित उनको परणाई ।
खेचरियों ने मंगल गाये * अद्भुत बाज सु साज बजाये ॥
सुग्रीव आदिक वानर राजा * करें राम सेवा का काजा ।
पटवर्ये आनंद मनाया * मन माता से मिलना चाया ॥
इन्द्रजीत घन वाहन भाये * अमल मरु स्थली में आये ।
मुक्ति गये कर के तप भारे * अपने आतम काज सँमारे ॥

चौपाई

सुनत भरत मन में हर्षाये ॥ हनुमत को घट कंठ लगाये।
भरत शत्रुघन दोनों भाई ॥ करि पै बैठ चले हैं धाई ॥
स्वागत हित कर के तैयारी ॥ धाये तुरत हर्ष मन धारी।
भ्रात देख आकाश विमाना ॥ भरत मोद अति मन में माना ॥
हाथी से नीचे युग आये ॥ भरत शत्रुघन हृय घबराये।
देख भरत को राम सुजाना ॥ हृदय आदृ प्रेम समाना ॥
भूमि उतारा वायुयाना ॥ मोद नहीं मन माँहि समाना।
राम लखन दोनों युग भ्राता ॥ देख भरत को मन मुशकाता ॥

दोहा

भरत शत्रुघन दोड़ कर ॥ चरण पड़े हैं आय।
राम लखन ने उठा कर ॥ लीना कंठ लगाय ॥६७०॥

चौपाई

मस्तक चूम देह रज झाड़ी ॥ प्रेमातुर भय मन में भारी।
चारों भ्रात बैठ कर याना ॥ हुये अवध को तुरत रवाना ॥
घन मंडल भूमंडल साजे ॥ सुर सब बजा रहे हैं बाजे।
पुर वासिन की भीर अपारा ॥ अनिमिष देख रहे इक धारा ॥
जै जै कार अवध में भारी ॥ गुण गावें मिल नर अरु नारी।
पास महल के गया विमाना ॥ देख महल मन मोद समाना ॥
मुक्ता कनक पुष्प बर्षावें ॥ नारी हँस बधावे गावें।
जैसे जलधर की हो धारा ॥ ऐसे बर्षे कनक अपारा ॥

दोहा

तुरत उतर माता [illegible] ॥ आये राम सुजान ।
चरण पड़े हर्षाय कर ॥ देखा घर के ध्यान ॥ ६७१ ॥

चौपाई

सब के चरण छुये रघुवर ने ॥ प्रेम लगीं मातायें करने।

व्योग तुम्हारे में रही ✲ माताजी विलखाय ॥६६७॥

चौपाई

सुन कर राम सुःख मन पाया ✲ तुरत विभीषण पास बुलाया।
तुम से अति प्रसन्न हम भाई ✲ अब तुम विदा करो हर्षाई ॥
दर्शन जाये मात के पाये ✲ उनकी पद्-रज शीश चढ़ाये।
दो सप्ताह और तुम रहिये ✲ पन्द्रह दिन पीछे प्रभु जइये ॥
यह सुन राम वचन जब बोले ✲ अपने पुन घट के पट खोले।
माता को गगा सम जानूँ ✲ तीर्थ रूप मात पहिचानूँ ॥
गर्भ माँहि माता नव मासा ✲ रक्खे उठाये सारे त्रासा।
पोषण करें सुमन हर्षावे ✲ वे आराम आप दुख पाये ॥

दोहा

भेजे कारीगर तुरत ✲ लकापति हर्षाय।
जा शृँगारो अवध को ✲ थार करो मत माय ॥६६८॥

चौपाई

लका के कारीगर आये ✲ सुगर अयोध्या धाम सजाये।
इन्द्रपुरी सम अवध बनाई ✲ अमर पुरी सब लज्जा खाई ॥
नारद शीघ्र गमन कर आये ✲ समाचार शुभ आय सुनाये।
माता मोद कौशिल्या माई ✲ फूली अति नहीं हर्ष समाई ॥
दिवस सोलवें सजा विमाना ✲ बैठ राम लखन गुणवाना।
रामिन सग चले युग भ्राता ✲ सुरपति युगल संग जिम जाता।
सग सुग्रीव विभीषण राजा ✲ भामण्डल सग सकल समाजा ॥
हनुमान अतुलित बलधारी ✲ राम लखन के चले अगारी ॥

दोहा

निकट अयोध्या आ गई ✲ हनुमत पहुँचे आय।
समाचार सब मोद युत ✲ दिये तुरत सुनाय ॥६६९॥

राम का राज्याभिषेक

दोहा

राज बहुत किया मैंने * सुनो भ्रात धर ध्यान।
आज्ञा पाली आपकी * कर चरणों का मान ॥६७३॥

चौपाई

अब अपना तुम राज सभारो * प्रजा को कीजे निस्तारो।
जो चित आज्ञा पै नहिं देता * तो पित संग दीक्षा लेता ॥
मैं जग से अब हुआ निराशा * अब कीजे पूर्ण मम आशा।
राज प्रभु अपना अब लीजे * राज काज निज कर स कीजे॥
प्रभु नयन भर कर रघुराया * भरत भ्रात का वचन सुनाया।
भ्रात आपने क्या मन ठाना * जो यह शब्द पड़े मम काना॥
आप बुलाये हम यहाँ आये * अब तुमने क्या वचन सुनाये।
जैसे राज आज तक किया * राज काज अब तक चित दिया॥

दोहा

जाते हो अब तज हमें * आप राज के साथ।
प्रथम भाँति मम आज्ञा * अब भी मानो भ्रात ॥६७४॥

चौपाई

आग्रह देख भरत उठ धाये * लक्ष्मण ने कर पकड़ बिठाये।
देखा भरत भूप को सीता * बोली वचन सुखद कर प्रीता॥
जल क्रीड़ा हित समझाया * तुरत विशल्या वचन सुनाया।
आग्रह जान भरत मुसकाना * वचन विशल्या का मन माना॥

आशीर्वाद दिया हर्षा के ☆ फूलो फलो पुत्र हर्षा के ॥
सीता और विशिल्या आई ☆ चरन पड़ीं मन में हर्षाई।
आशीर्वाद हष कर दीना ☆ प्रेम सहित मन में सुख कीना॥
यनों वीर पुत्रों की माता ☆ दे सद्बुद्धि तुम्हें विधाता।
बार बार कौशल्या माता ☆ पूछे लक्ष्मण से कुशलाता॥
हो प्रसन्न हाथ सिर फेरे ☆ कहे धन्य धन्य पारुष तेरे।
जीता दशकन्धर बलधारी ☆ बल पराक्रम दिखाया भारी॥

दोहा

दर्श मिले सद्भाग स ☆ पुत्र तुम्हारे आय।
पुनर्जन्म तुमरा हुया ☆ हुआ पुण्य सहाय॥ ६७२॥

चौपाई

तुम सेवा से सीता रामा ☆ कुशलक्षेम रहे वन धामा।
लक्ष्मण कहें सुनो हो माता ☆ आय बन्धु राम बड़ भ्राता॥
पिता तुल्य करते मम पालन ☆ सीता मात समझ निज लालन
दोनों न मन में दुख दीना ☆ पालन पुत्र समान ही कीना॥
मर कारन ही बन धामा ☆ राघव से हुआ संग्रामा।
सीता हरी मेरे ही कारन ☆ ऐसा लक्ष्मण किया उच्चारन॥
मुझ कारन आपत्ति उठाई ☆ सकट सहे बहुत ही भाई।
रिपु सागर को करके पारा ☆ आ के तुमरा चरन निहारा॥

सुरादयो चन्द्रोदय धाये * भव भव भ्रमण किया दुख पाये ॥
गजपुर नृप के हुये सलामा * हुया कुलकर जिसका नामा ।
सुरोदय भी द्विज के घर आया * श्रुति रति नाम उन्होंने पाया ॥

दोहा

एक दिवस नृप कुलकर * तापस आश्रम माँहि ।
मार्ग में मुनि मिल गये * अवधज्ञान जिन छाँहि॥६७७॥

चौपाई

अभिनन्दन मुनि पथ पाये * नृप को ऐसे वचन सुनाये ।
जिनके निकट आप नृप जाते * वह पंच अग्नि तपन तपाते ॥
उस लक्कड़ में है इक व्याला * जो उस में रह कर प्रतिपाला ।
उसको पिता मात निज जानो * उसको जाकर के पहिचानो ॥
रक्षा करो उस सर्प की जा के * हाल दिया तुम को समझा के ।
सुन कर शीघ्र भूप उठ धाया * तापस के आश्रम में आया ॥
फड़वाया वह लक्कड़ जा के * विस्मय हुये सर्प को पा के ।
भूप कुलकर के मन आया * दीक्षा धारण करना चाया ॥

दोहा

श्रुति रति द्विज वहँ आ गया * बोला वचन समार ।
अंतिम आयु में नृपत * लेना दीक्षा धार ॥ ६७८ ॥

चौपाई

सुन कर हुआ लोप उत्साहा * लख पक्ष माँहि रहा मर नाहा ।
थी दामी रानी है तासा * श्रुति रति से वह करत विलासा
दुर्मति रानी को हुई शंका * मेरा भेद समझे नृप बंका ।
मारेगा निश्चय नृपाला * ऐसा सोच समय को टाला ॥
सलाह करी श्रुति रति से जाई * राजा को दें अब मरवाई ।

तानिन सहित भरत तब धाये ॥ तीर सरोवर के झट आये।
जल क्रीड़ा कीनी सुखदाई ॥ एक महूर्त सब हर्षाई॥
राज हंस की भाँति निकल कर॥ आये हैं सरवर के तट पर।
भुवलाँछन हाथी मदमाता ॥ देखा भरत भूप ने भ्राता॥

दोहा

देखा है जब भरत को ॥ हाथी दृष्टि पसार।
गया उतर मद करी का ॥ हुवा जै जै कार॥६७५॥

चौपाई

सुन कर करि को द्वन्द मचाते ॥ राम लखन आये झुंझलाते।
हाथी घट हथशाल पठाया ॥ संग महावत के भिजवाया॥
केवल ज्ञानी मुनि पधारे ॥ कुल भूषण देश भूषण भारे।
राम लखन मिल दोनों भाई ॥ भरत शत्रुघन मन हर्षाई॥
चारों भ्रात संग परिवारा ॥ वंदन करने हेत पधारा।
कर वंदना बैठ मुनि पासा ॥ पूछन लगे पूर्व भव भ्यासा॥
भुवलांछन हाथी मदमाता ॥ दख भरत को भया सिहाता।
देश भूषण मुनि केवल धारी ॥ मुख से देसी गिरा उचारी॥

दोहा

ऋषभदेव के संग नर ॥ दीक्षित चार हजार।
भगवन के संग विचरकर ॥ चले करन मन धार॥६७६॥

चौपाई

मौन धार कर विचरन लागे ॥ ममत मोह निज तन से त्यागे।
शुद्ध मिले नहीं भोजन पानी ॥ निराहार विचरे मुनि ज्ञानी॥
सहन हुई नहिं भूख पियासा ॥ और मुनि हुये फिर त्रासा।
तापस बन गये मुनी अनेका ॥ विद्यावान एक से एका॥
सुप्रभ नृप के सुत अभिरामा ॥ चंद्रोदय था जिसका नामा।

दर्शी हेत अब चरम पढ़ाया * मार्ग बीच सर्प ने खाया।
शुभ गतियों में भ्रमण कीना * जन्म विदेह में आकर लीना॥

दोहा

अचल नाम सम्राट् के * पैदा हुए आय।
प्रिय दर्शन शुभ नाम से * हुआ अलकृत चाय॥ ६८१॥

चौपाई

सयम लेने को मन चाया * पिता सयम को नहिं ठुकराया।
तीन हजार कन्या तस ब्याहीं * सुख पावे मन में हर्षाई॥
चौसठ सहस वर्ष पर्यन्ता * धर्माचरण किया गुणवन्ता।
मर कर पंचम स्वर्ग सिधारे * व्रत उपवास बहुत किये सारे॥
चव मर कर पोतनपुर आया * अग्नि मुखि द्विज पुत्र कहाया।
कर अनीत नहिं नीत सँभाला * द्विज ने घर से तुरत निकाला॥
इधर उधर वह भटकन लागे * सीखन कला समय पर लागे।
धूर्त बना अपने मह आया * आ कर काज करन मन चाया॥

दोहा

अत समय सयम लिया * पाला दृढ़ मन लाय।
मर कर हुआ देवता * पचम सुर पुर जाय॥६८२॥

चौपाई

पूर्व कपट जो मन में आया * गज का जन्म यहाँ पर पाया।
प्रिय दर्शन का जीव सुख पाई * हुए भरत आप के भाई॥
देख भरत को निज मन माना * उपजा जाति स्मरण ज्ञाना।
उत्तम भव इस कारण तिस का * हाल बताया तुमको जिसका॥
सुन कर नृप भये वैरागा * सयम से धारा अनुरागा।
एक सहस नृप साथे समाजा * दीक्षा ली भरत महाराजा॥
किया तप अति ही मन धारी * मोक्ष पंथ की करी तयारी।

समय सोच कर कारज किया ॥ रानी नृप को मरवा दिया ।
श्रुति रति द्विजभी मरण पाया॥ दोनों भव भव में भ्रमाया
बहुत काल बीता इस भाँती ॥ दुख पाते युग दिन और राती

दोहा

जनम लिया द्विज महल में ॥ दोनों ने इक साथ ।
कपिल ब्राह्मण के तनय ॥ हुये दोनों भ्रात ॥ ६७६ ॥

चौपाई

नाम विनोद रमण युग जानो ॥ रमण गया पढ़ने मन मानो ।
विद्याध्ययन किया हर्षाई ॥ आये पुन मन हर्ष बढ़ाई ॥
बीत गई निशा अति अधिकाई ॥ नग्र बीच नहीं गमने भाई ।
यक्ष महल में सोय आ के ॥ सोचा जायें रात बिता के ॥
तिय विनोद की महलों आई ॥ देखा मित्र को मन हर्षाई ।
पृष नहीं उसके गृह आया ॥ रमण संग उन प्रेम लगाया ॥
शाखापति विनोद जब आया ॥ तुरत रमण को मार गिराया ।
शाखा ने विनोद को मारा ॥ भव भव में भ्रमा जग सारा ॥

दोहा

दोनों जा पैदा हुये ॥ इक धनाढ्य ग्रह जाय ।
इक प्रसिद्ध धन नाम से ॥ इक भूषण भव थाय ॥६८०॥

चौपाई

ब्याहीं उसको बत्तीस नारी ॥ एक एक से रुप अधिकारी ।
इक दिन निशा के चौथे पहरा ॥ बैठ विचार करे मन गहरा ॥
इसी समय श्री धर मुनि राया ॥ निर्मल केवल ज्ञान उपाया ।
केवल ज्ञान की करने महिमा ॥ सुर आय हर्ष सु मैना ॥
केवल उत्सव अति हर्षा के ॥ देखा भूषण मोद बढ़ा के ।
धर्म भाव मन में बढ़ आये ॥ दर्शन हेत सुमन मन लाये ॥

दोहा

उन रघुवर के धर्म से * सुखिया सब नर नार।
अधिक नहं युग आत में * दृष्टि पड़े सर सार ॥६८५॥

चौपाई

जलधर अधिक मेघ बरसावें * कृषिक सारे आनन्द पावें।
सुरभि दुग्ध दें अधिकाई * अधिक फूल फल प्रगटे आई॥
होय लाभ वाणिज्य में भारा * अधिक काज हों जग में सारा।
चाकर अधिक आज्ञाकारी * अति उत्तम सैना सरकारी॥
अधिक पुत्र कलित्र होय सुखारा* कमला किलोल करे अति भारा।
अधिक दान तप शील अपारा * अधिक होय तप सब प्रकारा॥
अधिक भावना पूज्य सुपावन * करणी अधिक होय सुख धावन।
पावा अधिक अधिक समायक * अधिकाचार होय शुभ लायक॥

दोहा

अधिक सर्व सुख अवध में * अधिक बढ़ा अधिकार।
प्रगटे अति धर्मम जहँ * होता जै जै कार॥ ६८६॥

चौपाई

क्रोधी कायर क्रूर न देशा * हिंसा झूँठ नहीं लवलेशा।
नहीं चोर नहीं लम्पट जारा * नहीं लोभी नहीं द्वेष लिगारा॥
वाद विवाद नहीं पर निंदा * प्रजा सब करती आनन्दा।
नहीं कराल काल विकराला * नहीं विभ्रम नहीं कुष्ठ जंजाला॥
नहीं प्रपंच रघु पुर माँही * जहाँ बरते आनन्द सदा ही।
नहीं जार नहीं कोइ व्यभिचारी * ऐसी प्रजा है सुखकारी॥
जहँ की उपम नहीं जग माँही * जहाँ राज करें राम गुसाइ।
आनन्द जहाँ रात दिन छाया * सब दस सब के मन भाया॥

दोहा

दिया राक्षस द्वीप भी * भक्त विभीषण राज।

सवारा कर मुक्ति पधारे ॥ होते जिनके जै जै कार ॥

दोहा

सकल प्रजा कर आग्रह ॥ गई राम के पास ।
पावन सिंहासन करो ॥ सुनो मेरी अर्दास । ६८३॥

चौपाई

खेचर वृन्द करै अरदासा ॥ पूर्ण करो प्रजा की आशा ।
राज अवध का नाथ सँभारो ॥ शशि मुकुट त्रिखण्ड का धारो ॥
यह सुन बोले राम सुजाना ॥ लक्ष्मण करै अवध का थाना ।
लक्ष्मण है अष्टम वसुदेवा ॥ इन ही की सब करिये सेवा ॥
परामर्श सब ने स्वीकारा ॥ सिंहासन लक्ष्मण बैठारा ।
प्रथम कलश लक्ष्मण पै ढाला ॥ किया महूर्त शुभ तत्काला ॥
वासुदेव पद का उत्सव कर ॥ जै जै कार करें सब मन भर ।
उत्सव पुन बलदेव का कीना ॥ हर्ष बढ़ा कर मुद मन दीना ॥

दोहा

लक्ष्मण वासुदेव आठवें ॥ हरि अष्टम बलदेव ।
राज करो मन हर्ष के ॥ सुर नर सारे सेव ॥ ६८४ ॥

चौपाई

वासुदेव बल का नहिं पारा ॥ सेव करें सुर आठ हजारा ।
रहें सदा बलदेव उदारा ॥ सेवक जिन सुर चार हजारा ॥
सोलह हजार दश जिन माना ॥ राजा रहें उपस्थित नाना ।
हयवर गयवर रथवर भारे ॥ पैंतालीस लाख मन धारे ॥
अड़तालीस क्रोड़ दस सैना ॥ जिनका निरर्थक आय न वैना ।
वर्ते जग में आन अखन्डा ॥ सेवक सुर करें राज प्रचण्डा ॥
सब जग का जब मालिक रामा ॥ हमें राज से फिर क्या कामा ।
राज भ्रात लक्ष्मण को दीना ॥ हर्ष मान यह कारज कीना ॥

दोहा

उन रघुवर के धर्म से * सुखि गा सब नर नार।
अधिक मह युग आस में * दृष्टि पड़े सर सार ॥६८५॥

चौपाई

जलधर अधिक मेघ बरसावें * कृषिक सारे आनन्द पावें।
सुरभि दुग्ध में अधिकाई * अधिक फूल फल प्रगटे आई॥
होय लाभ वाणिज में भारा * अधिक काज हो जग में सारा।
चाकर अधिक आज्ञाकारी * अति उत्तम सेवा सरकारी॥
अधिक पुत्र कलित्र होय सुखारा * मजा किलोल करे अति भारा।
अधिक दान तप शील अपारा * अधिक होय तप सब प्रकारा॥
अधिक भावना पूज्य सुपावन * करणी अधिक होय सुख चावन।
पापा आधिक अधिक समायक * अधिकाचार होय शुभ लायक॥

दोहा

अधिक सर्व सुख अवध में * अधिक बढ़ा अधिकार।
प्रगटे अति धर्मग जहँ * होता जै जै कार॥ ६८६॥

चौपाई

क्रोधी कायर क्रूर न देखा * हिंसा झूँठ नहीं लवलेशा।
नहीं चोर नहीं लम्पट जारा * नहीं लोभी नहीं द्वेष लिगारा॥
वाद विवाद नहीं पर निंदा * प्रजा सब करती आनन्दा।
नहीं कराल काल विकराला * नहीं विघन नहीं कुछ जंजाला॥
नहीं प्रपच रघु पुर माँही * जहाँ बरते आनन्द सदा ही।
नहीं जार नहीं कोइ ठगारी * ऐसी प्रजा है सुखकारी॥
जहँ की उपम नहीं जग माँही * जहाँ राज करें राम गुसांई।
आनन्द जहाँ रात दिन छाया * सब दस सब के मन भाया॥

दोहा

दिया राक्षस द्वीप भी * भक्त विभीषण राज।

कपिपति को कपि द्वीप का * सौंपा सारा काज ॥६८७॥

चौपाई

हनुमत को श्री पुर का राजा * सौंपा राम करो सब काजा ।
दी विराध को लंक पयाला * नील ऋक्ष पुर राज सँभाला ॥
मित सुय को हनुपुर हरि दिया * रत्न जटी यथोगति किया ।
भामण्डल रथनुपुर दिया * जहाँ राज नृप ने जा किया ॥
यथायोग सब को दे देशा * सब को खुश कर राम नरेशा ।
शत्रुघन से हरि फ़रमाया * लेवो देश जो कुछ मन भाया ॥
मथुरा देश तेरे मन भाया * जिसमें संकट होय सुभाया ।
मथुरा का मधु नृप है राजा * करे जहाँ वह सब सुख काजा ॥

दोहा

चमर इन्द्र ने शूल एक * जिसको किया प्रदान ।
रिपु को हन आवे तुरत * उस में गुण यह महान ॥६८८॥

चौपाई

आप निशाचर गढ़ सर कीना * राज विभीषण को फिर दीना ।
मधु को क्या नहिं जीत सकूँगा * यह उपाय मैं आप करूँगा ॥
शत्रुघन का आग्रह जाना * देना मथुरा का मन ठाना ।
आज्ञा पाये शत्रुघन धाये * दल बल से मथुरापुर आये ॥
अक्षय बाण रिपुघन को दिये * कृतांत सेनापति सग किये ।
लक्ष्मण अग्नि बाण धनु दिया * बिदा शत्रुघन को पुन किया ॥
मथुरा ओर शत्रुघन चाले * यमुना के तट डेरे डाले ।
गुप्तचरों को तुरत पठाया * लौट तुरत सब हाल सुनाया ॥

दोहा

मधु मथुरा पति इस समय * गया यदि उद्यान ।
निर्भय क्रीड़ा कर रहा * सुना निडर महान ॥६८९॥

चौपाई

शस्त्रागार शूल को धारा # क्रीड़ा करने आप सिधारा ।
ऐसा अवसर फेर न आओ # अच्छा समय देख चढ़ जाओ ॥
निश में मथुरा किया प्रवेशा # देखा सब रमणीय सुदेशा ।
मधु मथुरा के तट जब आया # मार्ग मधु का तुरत रुकाया ॥
हुवा दोनों में सग्रामा # विकट युद्ध कीना उस धामा ।
शत्रुघन ने मधु सुत मारा # क्रोध विकट कर मधु ललकारा ॥
धनु उठाय भूप मधु धाया # शत्रुघन के सम्मुख आया ।
अस्त्र शस्त्र बहु भाँति चलाये # शत्रुघन मन में कुँभलाये ॥

दोहा

लिया हाथ उठाय कर # धनुप लखन का हाल ।
अग्नि बाण तस धनुप पर # साम लिये तत्काल ॥६१०॥

चौपाई

अग्नि बाण से मधु सहारा # गिरा धरन पर नृप उस वारा ।
शूल हाथ नाह मेरे आया # शुभ कारज कुछ नहीं कराया ॥
जाप न कुछ जिनवर का कीना # तप सयम में ना चित दीना ॥
कर से दान सुपात्र न दीना # न कोई व्रत मुनि से लीना ॥
शुभ भावना मन में धारी # शुभ करनी मन में तब भाई ।
मर कर तीजे स्वर्ग सिधारे # देवलोक आनन्द मय भारे ॥
देख सुरों ने कुसुम गिराये # जै जै कारे कर हुलसाये ।
पुष्प वृष्टि करते सुर हुवा # आनन्द बहुत सु मन में सरा ॥

दोहा

चमर इन्द्र के तट गया # वह त्रिशूल सिधार ।
छल कर शत्रुघन दिया # मधु राजा को मार ॥ ६११ ॥

चौपाई

मित्र मरन करनन सुन पाया # चमर इन्द्र सुन धरन पधाया ।

छत्रपति लख कर हर्षाये ॥ चमर इन्द्र को वचन सुनाये
किस कारण तुम कहाँ को जाते॥ शीघ्र शीघ्र जो चरन बढ़ाते
मित्र शत्रु को मारन जाऊँ ॥ मथुरा पुरी रंग समझाऊँ।
वैणुदारी वचन सुनाये ॥ उनसे विजय होय नहिं जाये
विजय शक्ति दशकधर पासा ॥ विफल किया कर के मन हास
वासुदेव लक्ष्मण ने जीता ॥ रावण मार ले आये सीता
उस लक्ष्मण की आज्ञा पा के ॥ मधु मारा शत्रुघन ने आ के।

दोहा

चमर इन्द्र कहने लगा ॥ करके क्रोध कराल ।
शत्रुघन को जाय कर ॥ अवश हनूँ तत्काल ॥६६२॥

चौपाई

सत प्रभाव शक्ति को जीता ॥ हुई विशल्या अब पति माता।
वह प्रभाव नहिं हो सकता है ॥ मुझे कौन फिर जो सकता है॥
अवश मित्र शत्रु को मारूँ ॥ उससे मित्र का बदला निकारूँ॥
इन्द्र चला तन क्रोध समाया ॥ मथुरा नगरी में सुर आया ॥
देखा रिपु घन का शुभ शासन॥ प्रजा करती लखी विलासन ।
मथुरा में व्याधि फैलाई ॥ दुःख किये नर नारी आई ॥
नृप उपचार बहुत करवाये ॥ चारा नहीं कुछ चले चलाये।
कुल देवी का सुमरण कीना ॥ देवी ने आ दर्शन दीना ॥

दोहा

देवी बोली नृप सुनो ॥ चमर इन्द्र रिस आय ।
सुरपति ने मथुरा में ॥ व्याधि दीय फैलाय ॥६६३॥

चौपाई

यह सुन रिपु घन अवध सिधाये ॥ राम लखन को वचन सुनाये ।
कुल भूषण केवली पधारे ॥ देश भूषण संग रहे सुधारे ॥

राम लखन शत्रुघन तीनों * मुनि के चरण कमल शिर दीनों
किया प्रश्न राम हर्षाई * कृपा कर दीजे बतलाई ॥
मथुरा का क्यों आग्रह किया * ऐसा चित्त क्यों रिपुघन किया।
देश भूषण बोले मुनिराया * पूर्व भव का हाल सुनाया ॥
प्रकटा मथुरा में कई बारा * इससे मथुरा नगर पियारा।
ऐक बार श्रीधर द्विज नामा * रूपवान अति ही जिम कामा॥

दोहा

रानी ने लिया बुला * श्रीधर को निज तीर।
पास बुला कर विप्र से * कही हृदय की पीर ॥६६४॥

चौपाई

ललित गया ललिता मन भाई * तुरत लिया द्विज को बुलवाई।
नृप महलों में चरन धकाया * भय से द्विज को चोर बताया।
भूपत ने अस हुकुम सुनाया * द्विज को बध स्थल भिजवाया।
मुनि कल्याण दया मन लाई * दीना द्विज को तुरत छुड़ाई ॥
ले संयम अति ही तप कीना * आय चरम सुरपुर में दीना।
सुरपुर से चवि मथुरा आया * चन्द्रप्रभा नृप के घर आया ॥
अचल नाम पाया सुखकारा * राजा रानी को अति प्यारा।
सात भ्रात ने स्वमन विचारा * मार अचल को वैं जिय धारा।

दोहा

खबर मन्त्री को पड़ी * अचल दिया चेताय।
घर तज वन को चल दिया * अपनी जान बचाय ॥६६५॥

चौपाई

काँटा पैर लगा अति भारी * हुआ अचल को दुख अति आरी।
गिरा भूमि पर दुख अति पाया * काष्ठ भार ले इक नर आया ॥
देख दया उसके मन आई * काष्ठ भार को दिया गिराई।

काँटा आकर तुरत निकाला * कष्ट दुखी का सब ही टाला॥
बोले अचल सुनो तुम भाई * मुझ पर दया करी तुम आई।
जब तुम सुनो राज मैं पाया * सारूँ काज तेरा जो चाया॥
अचल गया कौसम्बी माँही * नृप से जाय मिले उस ठाहीं।
बाण कुशलता नृपत दिखाई * हुवा खुशी अति मन हर्षाई॥

दोहा

प्रमुदित मन हुये नृपति * मन में किया विचार।
निज पुत्री दी अचल को * छाई खुशी अपार॥६६८॥

चौपाई

लश्कर सैन मन भरा उछाया * अंग नगर ऊपर चढ़ धाया।
विजय पाय मन में हर्षाये * अरुण शत्रु बहु यहाँ से पाये॥
मथुरा पर कर चला चढ़ाई * मन में बल देखन की आई।
सातों भ्रात बाँध लिये जा के * मत्रिम करी प्रार्थना आ के॥
मत्री तुरत अचल समझाया * मत्री नृप को हाल सुनाया।
सुन कर चन्द्र प्रभा हर्षाया * धूम धाम से अचल बुलाया॥
राज अचल को हर्षा दिया * मथुरा का नृपत अस किया।
रहे भ्रात नृप के आधीना * ऐसा कृत निज मन स कीना॥

दोहा

देखा एक दिन अंक को * नाटक शाला बीच।
धक्के देते थे उसे * अनुचर छोटे नीच॥६६७॥

चौपाई

अचल नृपत ने पास बुलाया * भी बस्ती का भूप बनाया।
राज काज दोनों मिल कीना * मत्री भाव हृदय में दीना॥
समुद्राचार्य के तट आ के * दीक्षा ली दोनों हर्षा के।
काल योग से मृत्यु पा के * भटके पंचम सुरपुर जा के॥

यहाँ से च्यव भूमन्डल आये * भ्रात आप ऋपु घन हुलसाये।
सैनापति कृतान्त सिधारा * अक हुवा तस तुम अधिकारा॥
सुन कर राम अवध में आये * शत्रुघन को निज सग लाये।
प्रभापुर के नृप श्रीनन्दा * सात पुत्र आदिक सुर नन्दा॥

दोहा

अष्टम सुत प्रकट हुआ * राजा के तिस बार ।
सातों सुत के सहित नृप * दीक्षा लीनी धार ॥६६८॥

चौपाई

मुनिवर किया कार सुधारा * उनसे सयम धार सिधारा।
श्री नन्द तप किया अपारा * क्षयारा कर मोक्ष पधारा॥
सप्त मुनि हुवे जघा चारी * एक बार सातों मुनि विहारी।
करते विहार मथुपुरी आये * वर्षा ऋतु के अवसर पाये॥
पर्वत गुहा में किया निवासा * मथुरा में रक्खा चौमासा।
छट्टम अट्ठम कर उपवासा * तप करते मुनिवर मन मासा॥
पारनो जाय अन्य पुर करते * ऐसे भाव सुमन में धरते।
उनके तप सयम से माई * रोग तुरत ही गयो पलाई॥

दोहा

मुनि चरनों को धोय कर * पानी जो ले जाय।
सींचें जाकर मित्र सदन * सारा दुख मिट जाय ॥६६६॥

चौपाई

अयधपुरी मुनि पर पग धारा * अर्हत के गये घर उस वारा।
लखा मुनि को संयमयन्ता * चौमासे में कस विचरन्ता॥
सेठ कहे सुनिये मुनिराया * कैसा तुम आचार गँवाया।
भेप साधु का लख आहारा * ले उपासरे गये अनगारा॥
आचारज ने आसन दीना * विनय सहित वन्दन तब कीना।

अन्य साधु मुनि शफा आइ ॥ वन्दन नहिं करी मन लाई ॥
कर पारणा मुनिराज सिधारे ॥ पूछा करी तुरत अणगारे।
मुनि तुरत मथुरा में आये ॥ आचारज स्तुति करें बनाये॥

दोहा

स्तुति सुन कर साधु सब ॥ करते पश्चात्ताप ।
मुनि को मन से क्षमा कर ॥ प्रथक किया सताप ॥७००॥

चौपाई

अर्हत सेठ तुरत वहाँ आये ॥ सुन मुनिवर को तुरत खमाये।
कार्तिक सित सप्तमी सुधारा ॥ मथुरा पुरी गया उस बारा ॥
कर वन्दन अपराध क्षमाया ॥ मन में सेठ बहुत पछताया।
सप्त मुनि से सुश्रु सब देशा ॥ सुन पुनम को आये नरेशा ॥
विनय करी मन में सुबु मारो ॥ आदर हेत प्रभु भवन पधारो।
सुन कर मुनिवर अस फ़रमाई ॥ राज पिंड हम लेते नाहीं ॥
शत्रुघन नृप वचन उचारे ॥ रोग नसो प्रताप तुम्हारे ।
कुछ दिन और करो स्थाना ॥ यह विनती करिये प्रमाना ॥

दोहा

मुनिवर अस कहने लगे ॥ सुनो भूप धर ध्यान ।
साधु नहीं ममता करे ॥ कहिये वचन प्रमान ॥७०१॥

चौपाई

आंबिल रहो सदा करवावे ॥ रोग होय शांति वतावे ।
ऐसा कह मुनि चरन पधाये ॥ शत्रुघन मन में हर्षाये ॥
गिरि वैताढ़ रत्नपुर धामा ॥ रत्नरथ तहाँ राजा नामा ।
रूपवती अति सुता सुहाई ॥ मनोरमा सुन्दर वपु पाई ॥
तरुण भये नृप किया विचारा ॥ कौन भूप संग हो व्यवहारा ।
नारद नाम लक्ष्मण का लीना ॥ रत्नरथ सुत क्रोध सु कीना ॥

अनुचर से फर दिया इशारा ॥ नारद लक्ष कर तुरत सिधारा।
चित्र खींच कन्या का लीना ॥ आये लक्ष्मन के कर में दीना ॥

दोहा

लक्ष्मण रूप निहार कर ॥ सैन करी तैयार ।
राम लक्ष्मन दोनों चले ॥ रत्नपुर उस बार ॥ ७०२ ॥

चौपाई

विजय किया रथनुपुर आई ॥ गिरि वैताढ़ ध्यान मनधाई।
श्री रामा रघुवर को दीनी ॥ मनोरमा लक्ष्मण सग कीनी ॥
गिरि वैताढ़ विजय कर सारा ॥ मन आनन्द मनाया भारा।
साधन फर गिरि अवध पधारे ॥ होय सुमगल घर घर भारे ॥
सोलह सहस लक्षम की रानी ॥ जो पति को निश दिन सुखदानी
पटरानी थी आठ विशाला ॥ आदि विशल्या अरु वन माला॥
रत्नमाल कल्याण सुमाला ॥ सुखमाला पद्मा सुखवाला ।
अभयवती सुन्द अवधारा ॥ मनोरमा मोहनी सु नारा ॥

दोहा

ढाई सौ मदन हुते ॥ युद्ध कला सर सार ।
रूपवन्त गुणवन्त अति ॥ पूरा सुर शुभकार ॥ ७०३ ॥

चौपाई

विशल्या श्रीधर सुत नामा ॥ रूपवती पृथ्वी तिलक सु धामा।
वन माला का अर्जुन धीरा ॥ जित पद्मा का थो केश धीरा ॥
मगल कल्याणि माला जाया ॥ सुपार्श्व कीरत थनद सु पाया।
मनोरमा का सुर सद मदन ॥ मनोरमा का नद सु कदन ॥
विमल रत्न माला सुत जाया ॥ अभयवती सत कीर्ति सुहाया।
ऋतु असमान किया श्री सीया ॥ विमल सेज सैन मन दिया ॥
अष्टापद युग स्वप्न निहारे ॥ सुरपुर से सुख माँहि पधारे।

हाल राम को सभी सुनाये ॰ सुन कर राम बहुत हुलसाये॥

दोहा

देवी होयेंगे आप के * युगल पुत्र बलवान ।
अष्टापद देखे युगल ॰ होते बला महान ॥ ७०४ ॥

चौपाई

धर्म प्रभाव आप कृपा से ॰ अच्छा होगा मास बया से।
सुन कर राम मोद मन लाये ॰ प्रेम और हो गये सवाये ॥
सीता शीतल शशी समाना * सुन्दर सुखद शोभनी आना ॥
भीत सरीखा शुलन और। * सौत करै नहिं छत अघोरा ।
सौत कहो क्या करन दिखाये ॰ सौत-सौत को देख खिजावे।
सौत शत्रु से ताखी जानो ॰ सात प्रताप तेज अति मानो ॥
मंत्र से सांपणी कीली जावे * सौत मंत्र को मन नहिं लावे।
काँजी दूर रहे पय नीका * काँजी गिर फटे होय नाका ॥

दोहा

सीताजी से छल किया ॰ शोक भाव उर धार ।
रावण कैसा था बदन ॰ करो चित्र तैय्यार ॥ ७०५ ॥

चौपाई

मैंने देखा नहीं शरीरा * चित्र किस तरह करूं सुधारा।
केवल पैर निहारे मैंने * और नहीं कुछ शब्द कहे मैं ॥
अच्छा लिखकर चरन दिखाओ॰ कुछ तो उसका चिन्ह बताओ।
दशकधर के पैर बनाये ॰ उसी समय राम यहाँ आये ॥
देख राम को सौतें बोली * हृदय कपट गाँठ को खोली ।
साता प्रिय आपकी स्वामी * रावण स्मरण करै सु नामी ॥
दशकधर पद चित्र बना के * करे याद हृदय हुलसा के।
बात ध्यान में रखने योगा * शायद कभी मिले सजोगा ॥

दोहा

सोतों ने मिल सलाह कर * दासी दीं सिखाय ।
प्रजा में प्रसिद्ध यह * दीनी वात कराय ॥७०६॥

चौपाई

आया मास वसन्त सुहायन * राम कहें सुनिये मन भावन ।
गर्भ कए हो प्रथक सुकान्ता * खेलें चलकर बाग वसन्ता ॥
अति ही सुगढ़ महेन्द्रउद्याना * विनोदार्थ सुन्दर सुख नाना ।
वहाँ चल क्रीड़ा करन को * मोद विनोद सुमन भरने को ॥
वकुल वक्षरी अति सुखकारी * लता लवंग फूल रही प्यारी ।
सीता कहे दोहिला आया * पकवान पुंज तोड़ मँगवाया ॥
मंडप रचा करी तैयारी * पूरा किया दोहिला भारी ।
सीता सहित विपन में आये * उपवन में आ अति सुख पाये ॥

दोहा

विविध वसन्त विनोद में * मचा रहे बहु ख्याल ।
सीधा लोचन सिय का * फड़क उठा तत्काल ॥७०७॥

चौपाई

सीधा फड़कत देखा नैना * शक भइ मन हुआ कुचैना ।
काँपन लगी सिया की काया * हा पुन्य यह सकट फिर आया ॥
उमगा हिया नैन जल छाया * प्रथम सकट बहुत उठाया ।
सिया राम से कहे विशेषा * सुन कर सोचें राम नरेशा ॥
सीधा नैन नहीं हो नीका * बोली सुन कर वचन पति का ।
निश्चर द्वीप देव ने दिया * पर सतोप न अब तक किया ॥
सुन कर रघुवर धीर बँधाया * कमलानन कैसे मुरझाया ।
नियम धरम से दुःख विसराओ * होगी होनहार सुख पाओ ।

दोहा

काटा है दिन वर्ष सम * मन अति हुआ उदास ।

जाने हैं सब केवली * जो प्रकटा दुख तास ॥७०८॥

चौपाई

आरत हरन करन रघुराया * जनक सुता का मान बढ़ाया।
घट घट महल महल यश छाया * हृष सिया के मन प्रकटाया॥
महिमा विश्व बढ़ी सीता की * सौतन शोच करें अति ताकी।
विजय सुरदेव सुजाना * पिंगल कश्यप अरु मधुमाना॥
कालक्षेम इत्यादिक नाना * रहें गुप्तचर नम्र विधाना।
राम निकट आये घर धीरा * थरथर काँपे होय अधीरा॥
राम कहें सुनिये चित्त लाइ * अभय किया रहो मन में भाई।
हाल सत्य जो होय सुनाओ * अपन मन में मता डराओ॥

दोहा

अभय वचन सुन राम के * बोला विजय प्रधान।
हे स्वामी इक बात है * सुनिये धर कर ध्यान॥७०९॥

चौपाई

सिय अपवाद लोग करते हैं * सीताजी के सिर धरते हैं।
हरण करी दशकन्धर सिया * कैसे रावण ने तज दिया॥
जब मोअम भूखे तट आवे * कैसे उन्हें कहो नहीं खावे।
सम्पट के सग लिया अकेली * होय निकट यदि नार नवेली॥
कैसे कर वह उसको त्यागे * होय असम्भव कंठ न लागे।
यह अपवाद अवध में जारी * चरचा करें मगर नर नारी॥
दिनकर सम तप तेज तुम्हारा * अब घर घर अपयश है भारा।
सुन कर राम मौनता धारी * मन में अपने बात बिचारी॥

दोहा

किया काज तुमने परम * अच्छा सुनो सुधार।
चेताया मुझ आन कर * मानूँगा उपकार॥७१०॥

चौपाई

गुप्तचरों को दीई विदाई * अपने मन सोचा रघुराई ।
उसी रात को बाहर आ के * गली-गली विपन में आ के ॥
चरचा सुनी लगा कर काना * कहते सुने लोग स्याना ।
सुन कर राम महल में आये * अन्य गुप्तचर पुन पठाये ॥
समाचार पुन बोही दिये * सुन कर राम मौन धर लिये ।
लखन क्रोध कर बोले बैना * हुये लाल बरण दोऊ नैना ॥
तुरत लखन ने बाण सँभाला * दुष्टों को मैं काल समाना ।
जल पर यदपि तरैं पाषाण * पश्चिम दिश चाहे ऊगे भाना ॥

दोहा

चाहे वैश्या हो सती * सुधा हलाहल होय ।
रवि से तम चाहे हो प्रगट * गौ पद सिन्ध समोय ॥७११॥

चौपाई

जल भीतर चाहे घरनी लागे * चाहे सिंह गिद्ध लख भागे ।
चाहे कमल प्रकटे पत्थर पे * आम्र लगें कीकर तरवर पे ॥
ऐसे होय उपद्रव भारी * सत्य तजे नहीं सीता नारी ।
यह सुन कहें राम सुन भ्राता * सुनी जाय नहीं ऐसी बाता ॥
सीता को महलों से टारूँ * सिर से अपयश भार उतारूँ ।
बोले लखन तुरत खिसयाई * नम्र शीश हूँ हुकम कराई ॥
मुख पर वचन सिय के लाये * मायाप्रवर दयड यह पाये ।
सीता सती जगत सब जाने * सुरनर मुनि सब मन में माने ॥

दोहा

लिया तुरत बुलाय कर * कृतान्त वक्र को पास ।
सीता को घर से अलग * दीजे तुरत निकास ॥७१२॥

चौपाई

निर्भय विपन जाय तज आजे * ममता नेक नहिं मन में कीजे ।

सुनकर वचन लखन विलखाये * राम चरन पद वचन सुनाये ॥
सीता नहीं त्यागने योगा * महासती किम सहै वियोगा ।
कहने में नहीं है कुछ सारा * रघुवर मुख से वचन उचारा ॥
देखे काल रूप थी रामा * लखन गये तज कर निज धामा ।
गिरि समेत का करो बहाना * वन में सिय का तज कर आना ॥
जा वृतान्त सुनाई वाता * होगई सिया चलन को साता ।
रथ को आगे तुरत बढ़ाया * गंगा निकट यान झट आया ॥

दोहा

सीता को अशकुन बहुत * हुये पथ में आय ।
मन में अति घबरा रही * मुख से कहा न जाय ॥७१३॥

चौपाई

गंगा के उतरे जब पारा * सिंह निनाद विपन मंझारा ।
रथ को वहीं खड़ा कर दिया * सोच अधिक निज मन में किया ॥
मुख मलीन धुनि भई काया * जल आकर नैनों में छाया ।
सीता देख स्वमन घबराई * सैना पति को गिरा सुनाई ॥
सेनापति कहि कारन रोया * धीरज कहो किस तरह खोया ।
सैनापति बोले कर जोरी * माता सुनो विनय यह मोरी ॥
धिक धिक दास कर्म जगमांही * परतन्त्रता जैसो दुख नाहीं ।
जग करता अपवाद तुम्हारा * राम महल से तुम्हें निकारा ॥

दोहा

रावण के अपवाद से * तुम को दिया निकाल ।
गुप्तचरों ने मन्न का * आन सुनाया हाल ॥७१४॥

चौपाई

लक्षमण क्रोध किया अति भारा * राम आज्ञा से महल सिधारा ।
फिर आज्ञा मुझ को दे दीनी * सेवक आज्ञा पूरी कीनी ॥

पुण्य आपका यहाँ रखवाला * वो ही रक्षा करे समाला।
सुन कर वचन सिया मुरझाई* रथ से गिरी तुरत गश खाई॥
सैना पति अति रुदन मचाया * हाय हाय कर बहु चिल्लाया।
वन में शीतल चली समीरा * सीता के जब लगी शरीरा॥
होश हुआ सीता को आई * सेनापति को गिरा सुनाई।
अवधपुरी है कितनी दूरा * मुख से कहो सत्य तुम शूरा॥

दोहा

वचन कहे सैनापति * सुनो मात धर ध्यान।
अवध पुरी बहु दूर है * कोसों विनय प्रमान॥७१५॥

चौपाई

रघुवर से कहना तुम जा के * बात न रखना कुछी छुपा के।
लोकपवाद सुना जब मेरा * किया नहीं क्यों प्रयत्न सवेरा॥
लेते आन परीक्षा मेरी * बुद्धिमता से करते जेरी।
मद भागनी सीता भारी * वन में सकट सहे अपारी॥
दुर्जन वचन वाण सम लागा * सुन कर जैसे मुझ को त्यागा।
मात मान दुष्टों का कहना * जैन धर्म को मत तज देना॥
इतना कह पुन गिरी धरन में * कसर नहीं कुछ रही मरन में
सावधान होकर पुन बोली * फिर नैनों की पुतली डोली॥

दोहा

सीता बोली पुन वचन * सैनापति से आय।
कहना हरि से जाय कर * मेरी इतनी जाय॥ ७१६॥

चौपाई

होय राम कल्याण तुम्हारा * लक्ष्मण को आशीश हमारा।
सुन कर सेनापति सिधारा * सीता तजी विपन मझधारा॥
जनक-सुता वन भटकत डोले * मुख स राम-राम ही बोले।

विलख विलख सिय रोवे घन में॰ धीर धरे नहीं किंचित मन में॥
निज मुख से नहीं राम उचारा॰ विश्वासी दिया देश निकारा॥
निज आनन जो वचन सुनाते ॰ रसना श्रम कर तनिक हिलाते।
आज्ञा तन नहिं धरना देती ॰ न कुछ मैं अनशन कर लेती।
नहीं कूप सागर में पड़ती ॰ ना फाँसी के ऊपर चढ़ती॥

दोहा

सुन कर सिय के रुदन को ॰ सोचे यक्ष नरेश।
यह करुणामय कहाँ से ॰ आते शब्द विशेष॥७१७॥

चौपाई

सुन कर रुदन भूप तट आया॰ देख सती को सोच बढ़ाया।
धरे आभरण सिया उतारी ॰ बोली अस सतवन्ती नारी॥
देख आभरण नृप मन सोचा ॰ कैसा समय आ गया पोचा।
वहम न शका मन में धारो ॰ अभय हो शृंगार सुधारो॥
अपना सकल हाल समझाओ ॰ वन आने का सबब बताओ।
मंत्री सुमत कहे अस बैना ॰ यह नृप वज्र जघ सुन बैना॥
पुडरीक पुर के यह राजा ॰ करें राज के सुन्दर काजा।
श्रावक भूप महा सतधारी ॰ मात बहन समझे पर नारी॥

दोहा

गज पकड़न के हेत नृप ॰ आये विपिन मझार।
रुदन शब्द तुमरे सुने ॰ इससे दुखित अपार॥७१८॥

चौपाई

हाल सती ने दिया सुनाई ॰ कहत कहत हिलकी भर आई।
गद्-गद् हुये राय के नैना ॰ धीर बाँध बोले अस बैना॥
धर्म बहन तुम को मैं मानी ॰ कहूँ सत्य मुख से मैं बानी।
लोक अपवाद से हरि ने त्यागा॰ रंज तजो तुम मम शुभ लागा॥

मामण्डल सम मैं तब भाइ * मेरे ग्रह रहो बेन आ छाइ ।
शिवका तुरत मँगा भूपाला * सीता को उसमें बैठाला ॥
नगर पहुँच शुभ महल दिया * सादर भूप स्वागत किया ।
धर्म ध्यान कर समय निकारे * मन में खिन्न राम का धारे ॥

दोहा

सैना नायक सब विया * हाल सुना उस धार ।
कहते कहते नेन से * गिरा अश्रु का धार ॥७१६॥

चौपाई

सिंह निनाद विपन कर आया * एक सदेश तुम्हें भिजवाया ।
एक पक्ष की सुन-सुन बातें * राम न करते ऐसी घात ॥
किसी नीत में यह नहिं आया * एक पक्ष में नियाय पाया ।
हैं अभाग्य मरा अस भारी * जो मुझ को रघुनाथ विसारी ॥
सुन अपवाद राम ने त्यागा * मन में नहिं विचार कुछ पागा ।
मिथ्यावत के सुन कर वना * जैन धर्म को मत तज देना ॥
इतना कह गिरा भू मुरझाइ * मने रथ दिया अम बढ़ाइ ।
आ कर हाल सुनाया सारा * सुन कर मन में राम विचारा ।

दोहा

सीता मुर्छित पुन भई * कह कर सारा ध्यान ।
बिन मेरे कैसे रहें * जीवित राम सुजान ॥ ७२० ॥

चौपाई

सुन कर वचन मूर्छा आइ * गिरे सिंहासन से भू आई ।
लाकर चन्दन का जल डाला * लक्ष्मन ने आ तुरत सँभाला ॥
बोले राम कहाँ है सीता * महासती यह परम पुनीता ।
लोक अपवाद जान कर त्यागा * क्या मन बीच उपद्रव जागा ॥
कहन लगे लक्ष्मण लघु भ्राता * जीवित हो वन सीता माता ।

विरह आप के में मर जाना * मैंन मन में ये ही जाना ॥
मरने से पहिले पग धारो * दास विनय का तुम श्रुत धारा
सुन कर वचन राम कर ध्याना" मँगवा लीना तुरत विमाना ॥

दोहा

कपि पति अरु कृतान्त को * लीना रघुवर साथ।
चले यान आसीन हो * रघुवर मलत हाथ ॥ ७२१ ॥

चौपाई

सिंह निनाद विपन में आये * तुरत विमान मही पर लाये।
जहाँ सिया को थी छिटकाई * वहा नहीं पुन साता पाई ॥
जल थल गिरि गुहा सकल निहारा * हाथ शीश निज दे-दे मारा।
कै चीता के वाघ सताया * या कोई अरु जन्तु न खाया ॥
यह विचार कर राम सुजाना * आरत करें शोक मन ठाना।
लौट अवध म रघुवर आये * लक्ष्मण को सब वचन सुनाये ॥
आस्त क्रोध शोक मन छाये * राम अधिक मन में घबराये।
मृतु कर्म सिय के सब किये * राम दुखी भर आय हिये ॥

दोहा

वज्रजंघ भूपाल के * साता जाये लाल ।
अमग लवण मदनांकुश * युगल पुत्र सुविशाल ॥७२२॥

चौपाई

आनन्द मंगल भूप मनाये * प्रचलित लव कुश कहलाये।
पाच धाय कमियाँ ले लालन * प्रेम युक्त करती है पालन ॥
मान कला सम दिन-दिन बढ़ते * छवि वपु में निश वासर चढ़ते।
चाल कला जब करने लागे * वज्रजंघ नैनों के आगे ॥
भूपत देख आनन्द मनाये * हर्ष हृदय नहीं बीच समाये।
सिद्धार्थ मुनि अणुव्रत धारी * विद्यावल में कुशल सुमारी ॥

देश विदेश सब इच्छा चारी * अघाचारी गगन विहारी ।
सिय के भवन चरन मुनि धारे * भोजन पानी हेत पधारे ॥

दोहा

सीता पूछे शान्तिता * मुनि बोले हर्षाय ।
गुरु प्रसाद मन शान्ती * सिद्ध कार्य कियो आय ॥७२३॥

चौपाई

सीता का शुभ कर मुनि हाला * सिद्धार्थ शुभ शब्द निकाला ।
चिंता करो न किंचित मन में * लछमण श्रेष्ठ पढ़े इन तन में ॥
राम लखन सम ही यह धीरा * दें सदा तुमरे मन धीरा ।
पूर्ण करें मनोरथ सारे * होंय सुफल मन काज तुमारे ॥
साग्रह सिया किया अति भारा * शिक्षा हित मुख वचन उचारा ॥
सिद्धारथ ने हर्ष पढ़ाई * लव कुश को विद्या सिखलाई ॥
सारी कला साख युग भाई * माता को सब दिया सुनाई ।
युवा अवस्था में पग धारा * काम बसन्त मनो वपु प्यारा ॥

दोहा

वज्रजंघ ने निज सुता * लव को दी परनाय ।
शशि चूला रानी सुगढ़ * सतवती कहलाय ॥७२४॥

चौपाई

कुश के व्याहन की मन लागी * पृथु भूप की कन्या माँगी ।
पृथुभूप करके अभिमाना * वज्रजंघ का वचन न माना ॥
कैसे कन्या हूँ तुम आना * जिसके वंश का नहीं ठिकाना।
सुन वज्रजंघ रिसियाये * युद्ध करन को तुरत सिधाये ॥
व्याघ्ररथ भूप बाँध झट लिया * ऐसा प्रबल युद्ध नृप किया ।
पोतनपुर का नृप चढ़ आया * वज्रजंघ निज सुतन बुलाया ॥
लव कुश संग चलो युग भाई * नहिं माने की बहुत मनाई ।

पहुँचे युद्धक्षेत्र में आइ * लव कुश द्वय रहे युग भाई ॥

दोहा

दोनों सेनाओं में * युद्ध हुआ घमसान ।
शत्रु दल घर पड़ गया * होकर के बलवान ॥७२५॥

बहर खड़ी

दोनों सेना युद्धस्थल में * अपना पराक्रम दिखाती हैं ।
भर रही है विजय कामना मन * नहिं पीछे चरन बढ़ाती हैं ॥
बलवान शत्रुओं के दल ने * नृप दल को तुरत परास्त किया।
मामा की पराजय देख समर * लव कुश ने आकर चरन दिया॥
नाना प्रकार के शस्त्रों को * रिपु पै तुरत चलाया है ।
यह विकट मार नहिं सहन हुई * शत्रु का दल घबराया है ॥
जय समर छोड़ भागन लागे * अंकुश ने हँस कर बचन कहा।
प्रख्यात वंशवाले होकर * नहिं सम पर मेरा वार सहा ॥

दोहा

ऐसी वानी श्रवण कर * लौटा प्रथु राज ।
नम्र भाव से कहे रहा * बचन भूप स लाज ॥७२६॥

बहर खड़ी

देखा भारी बल आपका अब * सब यश हाल पहिचान लिया।
पराक्रमी वीर उच्च वंशज * पराक्रम से मैंने जान लिया ॥
नृप वज्रजघ ने मम कन्या * कुश के हित मुझ से माँगी है।
कन्या देना स्वीकार मुझे * कन्या मेरी बड़ भागी है ॥
तब नृपवरों के ही सम्मुख * प्रथु राजा ने वचन दिया ।
शुभ समय मुहूर्त लग्न देख * कुश के संग तुरत विवाह किया
कोई दिन रहे छावनी में * नारद मुनि वन में आये हैं ।
लव कुश के वंश के सब वृतान्त * प्रभु को सभी सुनाये हैं ॥

दोहा

बोले नारद हर्ष कर * सुनो हमारी बात ।
कुल इन का क्या पूछते * विश्व घना विख्यात ॥७२७॥

बहर खड़ी

जिस कुल की उत्पत्ति प्रथम ही * भगवान ऋषभ के हाथ हुई ।
जिस कुल में सु प्रसिद्ध भरत * सम्राट् कीर्ति जिन साथ हुई ॥
बलदेव और वसुदेव अवध * पुर में जिस कुल के राजा हैं।
जिस कुल की आन है तीन खंड * माने यश सकल समाजा है ॥
उस ही कुल में बलदेव राम * उनके यह दोनों बालक हैं।
अष्टापद के सुत अष्टापद * और शत्रु कुल के घालक हैं ॥
जिस समय गर्भ में यह दोनों * माताजी के बहलाने को ।
अपवाद जान कर जनता का * निज सिर से उसे छुड़ाने को ॥

दोहा

अवध पुरी यहँ से कहो * है मुनि कितनी दूर ।
करें वास जहँ पर पिता * कुटुम्ब सहित भर पूर ॥७२८॥

बहर खड़ी

सुन कर उत्तर नारद दिया * यह अवधपुरी है दूर बहुत ।
जहाँ राम रहें निर्मल चरित्र * बाल हैं संग में शूर बहुत ॥
योजन हैं एक सौ साठ सुनो * जहाँ राम सुहाई फिरती है ।
होता है जै जै कार सदा जहाँ * क्षमा शांति युग मिरती है ॥
यह सुन कर वज्रजंघ नृप से * होकर विनीत यों अर्ज़ करी ।
हम देखें राम राज्य आ कर * देखन की मन में हौंश भरी ॥
कैसे हैं राम लखन दोनों * जिसने दशकन्धर को मारा ।
विद्याधर सेना के सहित बली * रावण को जिसने संहारा ॥

दोहा

लव अंकुश की बात को * भूप करी स्वीकार ।

पहुँचे युद्धक्षेत्र में आइ * लव कुश इय रहे युग भाई ॥

दोहा

दोनों सेनाओं में * युद्ध हुआ घमसान ।
शत्रु दल पर पड़ गया * होकर के बलवान ॥७२५॥

बहर खड़ी

दोनों सैना युद्धस्थल में * अपना पराक्रम दिखाती हैं ।
भर रही है विजय कामना मन * नहिं पीछे चरन बढ़ाती है ॥
बलवान शत्रुओं के दल ने * नृप दल को तुरत परास्त किया।
मामा की पराजय देख समर * लव कुश ने आकर चरम दिया॥
नाना प्रकार के शस्त्रों को * रिपु पै तुरत चलाया है ।
यह विकट मार नहिं सहन हुई * शत्रु का दल घबराया है ॥
जब समर छोड़ भागन लागे * अंकुश ने हँस कर वचन कहा।
प्रख्यात् वंशवाले होकर * नहिं रण पर मेरा वार सहा ॥

दोहा

ऐसी बानी श्रवण कर * लौटा मधु राज ।
मन्द भाव से कह रहा * वचन भूप स लाज ॥७२६॥

बहर खड़ी

देखा भारी बल आपका जब * सब वंश हाल पहिचान लिया।
पराक्रमी वीर उच्च वंशज * पराक्रम से मैंने जान लिया ॥
नृप वज्रजंघ ने मम कन्या * कुश के हित मुझ से माँगी है।
कन्या देना स्वीकार मुझे * कन्या मेरी बड़ भागी है ॥
सब नृपवरों के ही सम्मुख * मधु राजा ने वचन दिया ।
शुभ समय मुहूर्त लग्न देख * कुश के संग तुरत विवाह किया
कोई दिन रहे छावनी में * नारद मुनि वन में आये हैं ।
लव कुश के वंश के सब वृतान्त * प्रभु को सभी सुनाये हैं ॥

बहर खड़ी

दीनी आशीश सिया खुश हो * हो राम लखन से बल शाली।
यश ध्वजा गगन में उड़े सदा * दीरत छाये क्षित निरयाली॥
अवसर समाल नृप बज्रजंघ * लव अंकुश से यों कहन लगे।
है समय तात से मिलने का * शुभ अवसर कर में गहन लगे॥
कुन्तल कालर्बु लम्पाक शलभ * रुम अनलशूल संग राजे हैं।
रथ पैदल गजपालकी अश्वसव * अवधपुरी को साजे हैं॥
यह सुनकर परम पावनी सिय * लवकुश से बचन उचारे हैं।
वह राम लखन दोनों भ्राता * अति बांके वीर जुझारे हैं॥

दोहा

ऐसा साहस मत करो * मानो बचन हमार।
तीन खंड का अधिपति * जिसे किया असुरार॥७३२॥

बहर खड़ी

दल बल संग ले कर मत जाओ * यह मानो बचन हमारा है।
अन्यथा युद्ध आकर मिलना * बेटा यह धर्म तुम्हारा है॥
हे मात आपका परित्याग * करके शत्रुता कमाई है।
इस कारण प्रेम भाव कर के * जाने में कौन बड़ाई है।
इस रीति हमारे जाने में * उन को भी लज्जा आयेगी।
यदि युद्ध आयहन दें उनको * तो बात मात रह जायेगी॥
वीरों का धर्म यही जननी * चरित्य दिखा कर मिल जाना।
मात पिता के चरणों में * चरित्य दिखा कर गिर जाना॥

दोहा

सुन कर चुप सीता रही * उत्तर नहीं दिया।
दोनों ने संग सैना ले * तुरत पयान किया॥७३३॥

बहर खड़ी

भरी सैना के संग अयोध्या को * हो गये रवाना हैं।

कनक माल को प्रभू ने * रथ में करी सवार ॥७२६॥

चहर खड़ी

कर विदा कनक माला को दी * प्रभू के सग भूपाल चले।
लव अंकुश वज्रजग भूपत * सेना के सहित नृपाल चले॥
मार्ग में विजय बहु देश किये * पुन लम्पापुर तट आया है।
शुभ विपिन देख करके लव ने * लश्कर को वहीं टिकाया है॥
आया कुबेर कान्त राजा * लव का सारा दल घेर लिया।
मृगों के झुन्ड में यों मृगपति * लव का अंकुश ने ढेर किया॥
कर विजय अगाड़ी धरे चरन * आठ शत भूपत जीता है।
गंगा को कर के पार चले * युग भ्रात बड़े निर्भीता हैं॥

दोहा

चाले हैं उत्तर दिशा * दोनों भ्रात अभीत।
नन्दन चारु नृपत को * लिया सहज ही जीत ॥७३०॥

चहर खड़ी

कुंतल कालाबु नवि नन्दन * सिंहल अरु अमल शूर सारे।
जीते हैं शलभ भीम आदिक * नृप बड़े बड़े यश दल धारे॥
आकर के सिन्धु किनारे पर * पुन विजय पताका फहराई।
माता के चरण परसें ने की * युग भ्रातों के मन में आई॥
फिर पुन्डरीक पुर का मार्ग * हर्षा दोनों ने लिया है।
कुछ चन्द रोज के अरसे में * अपने नगर पग दिया है॥
निज विजय पताका फहराते * माता के महलों आये हैं।
अति विनय सहित दोनों बन्धव* चरनों में शीश झुकाये हैं॥

दोहा

चरन कमल निज मात के * परसें प्रेम बढ़ाय।
मस्तक सूँघा मात ने * दी आशीष हर्षाय ॥७३१॥

लव कुश ने मन प्रसन्न होय # मामा को नमस्कार किया।
मामण्डल ने मस्तक चूमा # खुश होकर आशिर्वाद दिया॥
मम बहन वीर पत्नी प्रथम थी # अब यह शुभग घड़ी आई।
सद्भाग से हुई वीर गर्भा # पुन वीर माता भी कहलाई॥
सुत वीर हुये तुमरे समान # जिनकी जग में प्रभुताई है।
निर्मलता सुर सर सलिल शुभ्र सो गुन शशि से उजलाई है॥

दोहा

काका के अरु पिता के # करो न सग सग्राम।
अचल अद्वितीय भ्रात युग # समर युद्ध के धाम॥७२६॥

बहर खड़ी

दोनों भाई हैं वीर प्रबल # अतुलित बल पौरुष भारा है।
अष्टापद राम लखन दोनों # जिन रावण रोह सहारा है॥
जिसकी भृकुटी पर बल आते # घन वारिधार को छोड़े था।
सुर असुर भाग भर हार ये # नहिं कोई नैना जोड़े था॥
ऐसे रावण को राम लखन ने # बुरी तरह से मारा था।
विद्या बल भुज बल सैना बल # भारी को तुरत पछारा था॥
ऐसे हैं वीर पिता काका तुमरे # तुम मत सग्राम करो।
सो कहन हमारी मान पुत्र # मिल कर के सग विश्राम करो॥

दोहा

मामा आप स्नेह वश # रहे भीरता दिखाय।
ऐसे ही माता ने हमें # चाहा प्रेम कराय॥७२७॥

बहर खड़ी

माना कि यह हैं वीर महा # उन से हमरी सामर्थ्य नहीं।
सग्राम छोड़ कर आयें भाग # इसका भी कोई अर्थ नहीं॥
फिर कहो पिता से मिलने का # क्या मार्ग और विचारा है।

पहुँचे जा निकट अयधपुर के ✿ पुर याहर दल ठहराया है ॥
जय राम लखन को खयर पड़ी ✿ कोई शत्रु दल चढ़ आया है।
सुन कर के लक्ष्मण कहन लगे ✿ यह क्यों मन में गर्माया है ॥
जिस तरह अग्नि की लौ लखकर ✿ लड़ने को पतंगी धाता है।
नहीं कुछ यिगड़ा है धरनी का ✿ यों अपने पंख जलाता है ॥
यस इसी तरह से शत्रु दल ✿ यह अपना नाश करावेगा।
क्या भान के आगे है जुगनू ✿ भुनगे की तरह मर जावेगा ॥

दोहा

समर करन को चल दिये ✿ राम लखन युग वीर।
सुग्रीवादिक संग में ✿ यड़े यड़े रणधीर ॥ ७२४ ॥

यहर खड़ी

आ के नारद सीता का जिक्र ✿ भामंडल को समझाते हैं।
सीता है पुंडरीक पुर में ✿ यह वियान सभी पहुँचाते हैं ॥
भामण्डल बैठ विमान शीघ्र ✿ सीता के सम्मुख आये हैं।
कर जोड़े हुये चरन आ के ✿ सब समाचार सुन पाये हैं ॥
सीता भामण्डल यालों ही ✿ जाने को समर तैयार हुये।
नहीं यार करी किंचित महलों ✿ आकर विमान असवार हुये ॥
अति शीघ्र गति धारण करके ✿ दल में विमान जब आया है।
दोनों सुत सिंह समान देख ✿ सीता का मन हर्षाया है ॥

दोहा

सीता माता के युगल ✿ चरनों शीश नमाय।
नमस्कार कर मात को ✿ बैठे हैं तट आय ॥ ७२५ ॥

यहर खड़ी

सीता माता जब लव कुश से ✿ कृपा कर यचन उचरती हैं।
मामा तुमरे हैं भामण्डल ✿ समझा कर मन को भरती हैं ॥

लव कुश ने मन प्रसन्न होय * मामा को नमस्कार किया।
मामण्डल ने मस्तक चूमा * खुश होकर आशिर्वाद दिया॥
मन चहन वीर पत्नी प्रथम थी * अब यह शुभग घड़ी आई।
सद्भाग से हुई वीर गर्भा * पुन वीर माता भी कहलाई॥
सुत वीर हुये तुमरे समान * जिनकी जग में प्रभुताई है।
निर्मलता सुर सर सलिल शुभ्र* सो गुन शशि से उजलाई है॥

दोहा

काका के अरु पिता के * करो न संग संग्राम।
अचल अद्वितीय भ्रात युग * समर युद्ध के धाम॥ ७३६॥

बहर खड़ी

दोनों भाई हैं वीर प्रबल * अतुलित बल पौरुष भारा है।
अष्टापद राम लखन दोनों * जिन रावण सिंह संहारा है॥
जिसकी भृकुटी पर बल आते * घन वारिधार को छोड़े था।
सुर असुर नाग नर हार थे * नहिं कोई जैसा जोड़े था॥
ऐसे रावण को राम लखन ने * बुरी तरह से मारा था।
विद्या बल भुज बल सैना बल * भारी को तुरत पछारा था॥
ऐसे हैं वीर पिता काका तुमरे * तुम मत संग्राम करो।
लो कहन हमारी भाग पुत्र * मिल कर के संग विश्राम करो॥

दोहा

मामा आप स्नेह वश * रहे भीरुता दिखाय।
ऐसे ही माता ने हमें * चाहत चैन कराय॥ ७३७॥

बहर खड़ी

माना कि यह हैं वीर महा * उन से हमरी सामर्थ्य नहीं।
संग्राम छोड़ कर जायें भाग * इसका भी कोई अर्थ नहीं॥
फिर कहो पिता से मिलने का * क्या मार्ग और विचारा है।

ऐसा यतलाओ पथ कोइ * अपमान न होय हमारा है ॥
यहाँ पर यह परामर्श होता * संग्राम भूमि संग्राम छिड़ा ।
ले ले कर शस्त्र युद्धस्थल * वीरों से आकर वीर भिड़ा ॥
जब लगे बाण बर्षन भूमि * ज्यों प्रलय काल की हो वर्षा ।
प्रारम्भ युद्ध हो गया यहाँ * मरते उत्साह वीर हर्षा ॥

दोहा

आशका से यान में * हो कर तुरत सवार ।
भामडल आये यहाँ * जहाँ युद्ध सर सार ॥७३८॥

बहर खड़ी

लव कुश दोनों हथियार बाँध * मैदान जंग में खड़े हुए ।
जिस तरह हिमाचल अरु सुमेरु * सागर के तट पर अड़े हुए ॥
सुग्रीवादिक ने जब देखा * भामन्डल युद्ध निहार रहे ।
बैठ विमान के बीच भूप * कुछ मन में सोच विचार रहे ॥
कपि पति यों लगे पूछने को * दोनों कुमार यह किनके हैं ।
हैं प्रसन्न केहरी बतला दो * मालुम होय जो जिनके हैं ॥
उत्तर दिया भामन्डल ने * यह दोनों राम कुमार सुना ।
सीताजी के अगज दोनों * वीरों के हैं सरदार सुनो ॥

दोहा

सीताजी के यह तनय * सुना जिस समय ब्यान ।
सुग्रीवादिक चल दिये * पहुँचे सिय तट आन ॥७३९॥

बहर खड़ी

कर नमस्कार चरणाम्बुज में * आकर के शीश नमाया है ।
पूछा कुशल क्षेम सारा * दर्शन कर मन हुलसाया है ॥
संग्राम भूमि में लव कुश ने * आ मारा मार मचाई है ।
भगदड़ मच गया राम दल में * कर शस्त्र भर दें दिखलाई है ॥

लक्ष्मण के सन्मुख युग आता * हथियार लिये कर आये हैं ।
दू-दूर पुत्रों को देख राम * लक्ष्मण दोनों घबराये हैं ॥
मन देख-देख इन दोनों को * भर प्रेम उछाले खाता है ।
लूँ लगा कंठ इन दोनों को * हृदय में ऐसा आता है ॥

दोहा

लव अंकुश रथ आन कर * सन्मुख दिया अड़ाय ।
फिर अंकुश कहने लगे * सुनिये कान लगाय ॥७४०॥

बहर खड़ी

वीरों से युद्ध करें रण में * मन में अभिलाषा भारी है ।
सुन अजयवार को विजय किया * हम देखें कला तुम्हारी हैं ॥
विजयी वीरों के दर्शन पा * प्रसन्न हुआ मन भारा है ।
हे राम करो पूरी आशा * ऐसा शुभ भाव हमारा है ॥
दशकण्ठ ने जो इच्छा पूरी नहीं * करी, उसे हम कर देंगे ।
नाना प्रकार के शस्त्रों से * संग्राम से मन को भर देंगे ॥
लव अंकुश राम लखन चारों * टंकोर धनुष की करते हैं ।
कृतान्त सारथी वज्रजंघ * दोनों कर बाग समरते हैं ॥

दोहा

आगे यान बढ़ा दिये * पहुंचे परस्पर आन ।
चारों वीरों में छिड़ा * युद्ध घोर घमसान ॥ ७४१ ॥

बहर खड़ी

मानी मानुष हित मान क दी * जीना और मरना जानते हैं ।
प्राणों से माम विशेष मान * निज प्राण को दना टामते हैं ॥
इस ही आशय पर राम लक्ष्मण * लव कुश से हुआ संग्राम महा ।
छोड़े हैं नाना भाँति अस्त्र * नहिं देखें छाया घाम महा ॥
दीनी है आज्ञा राम तुरत * कृतान्त बढ़ाया रथ आगे ।

थम से थक गये अश्व रथ के ✱ नहीं एक कदम भी अब आगे।
बाणों में विंधे अश्व रथ के ✱ रथ भी तो खण्डन सा हुवा।
रिपु आगे बढ़ा चला आवे ✱ संग्राम सु मण्डन सा हुवा ॥

दोहा

मेरा भारी धनुष भी ✱ अब नहिं देता काम।
देवमयी हथियार भी ✱ हुये आज निष्काम ॥७४२॥

बहर खड़ी

थी यही दशा लछमन की भी ✱ नहीं भुज बल कर्तव करते हैं।
नहिं काम कोई हथियार दे ✱ मन रोष अधिकतर धरते हैं ॥
अंकुश ने बाण मार दीना ✱ लक्ष्मण को मूर्छा आई है।
यह हाल देख कर करके विराध✱ दिया रथ को तुरत भगाई है ॥
मार्ग की शीतल हवा लगी ✱ पुन चेत लखन को आया है।
बोले सरोष झुँझला कर के ✱ क्या कर्तव नया दिखाया है ॥
दशरथ नृप के सुत के लिये ✱ अनुचित समर से जाना है।
रिपु के सन्मुख चल खड़ा करो ✱ इस ही में सब कुछ माना है ॥

दोहा

मेरे वाहन को तुरत ✱ ले चल रण मैदान।
चक्र सुदर्शन से करूँ ✱ रिपु का मैं कल्याण ॥७४३॥

बहर खड़ी

लक्ष्मण के वचन सुने जिस दम✱ रथ को पीछे लोटाया है।
मन में विराध प्रसन्न हुवा ✱ रण भूमि ओर चलाया है ॥
आ गये युद्ध स्थल में अब ✱ हो गये मैन रतनारे हैं।
देखा अंकुश को खड़ा हुवा ✱ लक्ष्मण कर क्रोध पुकारे हैं ॥
अब निकट आ गया समय तेरा✱ यों कह कर चक्र उठाया है।
शत्रु का शीश काट कर ला ✱ ऐसा कह खूब घुमाया है ॥

छोड़ा है चक्र सुदर्शन को * अंकुश नहिं मन घबराया है।
देकर प्रदक्षिणा अंकुश की * पुनः चक्र हाथ पर आया है॥

दोहा

छोड़ा है पुन चक्र को * लक्ष्मण कुछी धार।
दे प्रदक्षिणा आ गया * किया नहीं प्रहार ॥७४४॥

बहर खड़ी

देखा है हाल चक्र का जब * मन में विचार हुआ भारी।
बलदेव और वसुदेव यही हुए * भरत क्षेत्र में अवतारी॥
उस समय दर्श नारद मुनि ने * आ के रघुवर ने दिया है।
लक्ष कर के राम लक्ष्मन दोनों * पद वन्दन ऋषि का किया है॥
फिर कहा देव ऋषि राम आज * किस तरह उदासी छाई है।
इस हर्ष समय में आनन पे * कुछ सुस्ती पड़े दिखाई है।
आरत का कारण है यही * रिपु नहीं पराजय होते हैं॥
इन के ऊपर नहीं धार होय * हथियार पड़ गये थोथे हैं॥

दोहा

सीता के सुत किस तरह * माने तुम से हार।
असल केसरी के समय * पद नहिं रखें पिछार ॥७४५॥

बहर खड़ी

सीता के शूरवीर सुत दो * तुम से मिलने को आये हैं।
शुभ नाम सु लव कुश दानों का * दोनों नाहर के जाये हैं॥
सीता का आद्योपान्त हाल * नारद ने सभी सुनाया है।
संग्राम के मिस से राम लक्ष्मन का * आकर के दर्शन पाया है॥
सुन कर प्रेमाश्रु छाये नैनों * उत्साह भरा मन भारा है।
लक्ष्मण को लेकर साथ तुरत * मिलने को हरि पग धारा है॥
लव कुश ने जब आते देखा * रथ त्याग भूमि पर आये हैं।

रघुवर के चरणों में पड़ कर ☆ दोनों ने शीश नमाये हैं ॥

दोहा

लिया है हृदय लगा ☆ राम सुतों को हृप।
मस्तक चूमा माथ कर ☆ किया सुकर स्पर्श ॥७४६॥

बहर खड़ी

गोदी में लेकर पुत्रों को ☆ रघुवर ने हृप मनाया है।
आरत गारत हो गई मेरी ☆ आनंदित शुभ दिन आया है।
लक्ष्मण ने दोनों पुत्रों को ☆ हर्षा कर लिया गोद आ के।
मस्तक चूमा हाथ फर फेरा ☆ मुसकाये सुमन मोद पा के ॥
रिपुघन को दोनों पुत्रों ने ☆ मन मोद बढ़ा प्रणाम किया।
शत्रुघन ने अति मोद बढ़ा ☆ ले गोद प्रेम का वचन दिया ॥
सब हो गये एकत्रित सब ☆ आनन्द सु मन में भरे हैं।
सुत राम के राम समान जान ☆ करते सब जै जै कार हैं ॥

दोहा

वज्रजंघ से राम की ☆ करवाई पहिचान।
भामण्डल ने राम को ☆ सुना दिया सब ध्यान ।७४७॥

बहर खड़ी

सुन कर के राम लखन दोनों ☆ स्नेह भाव मन लाये हैं।
भामण्डल से ज्यादा तुम हो ☆ हरि पले वचन सुनाये हैं ॥
तुम ने इन दोनों पुत्रों का ☆ लालन पालन हित से किया।
जब योग्य अवस्था में हुए ☆ हर्षा कर विद्या-दान दिया ॥
लव-कुश-युत राम-लखन दोनों ☆ पुष्पक विमान असवार हुये।
सारी सेना ने कूंच किया ☆ अवधपुरी को तैयार हुये ॥
पुत्रों का आगमन सुन कर के ☆ सारी प्रजा हर्षाई है ।
नर-नारी सभी विलोक रहे ☆ घर घर में बँटे बधाई है ॥

दोहा

उत्सव किया राम ने * अवधपुरी में आय।
पुत्र महोत्सव जान कर * आनद रहे मनाय ॥७४८॥

बहर खडी

एक दिवस लखन सुग्रीव * विभीषण हनुमान अंगद मिलकर
करते हैं राम से आ विनती * ज्यों पुष्प वर्षते हैं खिल कर ॥
पुत्र विहीना सीताजी * किस रीति रैन दिन काटेंगी।
इस विरह अथाह समुन्द्र को * काहे से कहिये पाटेंगी ॥
जो हमें आज्ञा मिल जाये * सादर माता को लावें हम।
कृपा कर इतनी कह दीजे * आ जाये तो पुनः अपनावें हम॥
सुन उत्तर रघुवर ने दिया * अपवाद अवध में फैल रहा।
मैं जानूँ महासती सीता * दिल में नहिं किंचित् मैल रहा

दोहा

अग्नि परीक्षा धार कर * सिय को लूँ अपनाय।
लोक भ्रम जाता रहे * सब को सत्य दिखाय ॥७४९॥

बहर खडी

स्वीकारी आज्ञा रघुवर की * मन हर्ष सबों के छाया है।
आज्ञानुकूल रघुनायक के * मंडप विशाल बनवाया है॥
योगानुसार रच दिये मंच * नहिं रच काम कुछ बाकी है।
खेचर राजों के यान सुगर * प्रजा को धाम कुछ बाकी है॥
हुये आसीन प्रजा राजा * बैठे हैं राम लखन दोनों।
लाजै थी शुभ सभा लख कर * आसीन भये बन ठन दोनों ॥
सीता के लाने की आज्ञा * सुग्रीव भूप को दीनी है।
हो वायुयान असवार तुरत * आकाश की रस्ता लीनी है॥

दोहा

सीताजी को जाय कर * कपि पति किया प्रणाम।

सीता को अग्नि परीक्षा का * कर देना यदि स्वीकार जो है
मम अग्नि परीक्षा की सुन कर * सीता मन में हर्षाई है।
स्वीकृति दीनी मुसका कर * अग फूली नहीं समाई है॥
सुन कर स्वीकृति सीता का * रघुनायक हुकम सुनाया है।
तीन सौ हाथ लम्बा चौड़ा * भू में गड्ढा खुदवाया है।
दो पुरुष बराबर गहराई * लकड़ी चन्दन की भरवाई है।
नहिं किंचित भूमि रही बाकी * पुन अग्नि तुरत लगवाई है॥

दोहा

उत्तर श्रेणी में सुगड़ * गिरि वैताढ़ निशान।
हरि विक्रम सुन्दर सुगर * सुत जय भूषण आन ॥७५८॥

बहर खड़ी

सुन्दर वसु सत नारी जिसके * सब का यह पुरुष प्यारा था।
सब पर सम प्रेम दृष्टि रखता * सब के हित को स्वीकारा था
थी किरण मण्डला एक नारी * अध में रति उसको लेख लिया।
हिम शिख के संग रमण करते * जय भूषण नृप ने देख लिया॥
कर क्रोध तुरत उस रानी को * महलों से बाहर काढ़ा है।
दीनी बन में नृप ने निकाल * घन खण्ड विकट उजाड़ा है।
पुन आप महाव्रत दीक्षा कर के * तप संयम में मन दिया।
उस किरण मण्डला ने मर कर * विद्युत् दृष्टा का जन्म लिया।

दोहा

दिवस धीस पुन पूव दिन * जय भूषण मुनि आन।
कायोत्सर्ग का वन विषे * लगा दिया मुनि ध्यान ॥७५६॥

बहर खड़ी

ध्यानारूढ़ मुनिवर वन में * कर अचल भाव से ध्यान किया॥
उस राक्षसी ने आकर के * उपसर्ग मुनि को बहुत दिया॥

मुनि अचल रहे शुभ ध्यान विषे * मन को नहीं रथ चलाया है।
कर्मों का करके नाश मुनिश्वर * केवलज्ञान छु पाया है ॥
उत्सव करने को इन्द्रादिक * होकर एकत्र जहाँ आये हैं।
सीता के सारे समाचार * सुरपति ने भी सुन पाये हैं ॥
सुरपति ने सती की रक्षा को * सुर सैनिक अपना भेज दिया ॥
उस अग्नि कुण्ड के तट ऊपर * सीता ने सत का ध्यान किया ॥

दोहा

आखों से था देखना * जिसके लिये मुहाल ।
अग्नि जहाँ मैरा रही * निफल रहा है ख्याल ॥७५७॥

बहर खड़ी

बोली है समय आन सीता * अय लोक पाल तुम ध्यान करो।
जो कुछ मैं शब्द सुनाती हूँ * तुम सुनो इधर को कान करो ॥
मिलकर निशकर तुम साक्षी हो * मैं कहूँ उस सब सुन लेना।
मन वच काया से जो मैंने * दृष्टि भी धारी हो देना ॥
जगते में सोते में मैंन * सुपने में भी चित्त दिया हो।
इक सिया राम के रमण अगर * इच्छित अन इच्छित किया हो ॥
जो सीता सत पर होय आरूग- तो अग्नि का पानी हो जाये।
जो सत से वंचित रच हुई * सो भस्म अग्नि में हो जाये ॥

दोहा

पढ़ कर मम नवकार को * कूद पड़ी इक संग।
पावक का पानी हुवा * खिला शाल का रंग ॥७५८॥

बहर खड़ी

सीता के सत ने अग्निकुण्ड का * निर्मल सलिल बनाया है।
बन गया बीच में पद्म-कमल * सिंहासन अमर रचाया है ॥
उस रत्न मयी सिंहासन पर * सीता को तुरत बिठाल दिया।

जो अशुभ सती पर समय पड़ा * सीता के सत्त ने टाल दिया ॥
जल के समुद्र की भाँति तरंग * नीर बराबर लेता था ।
लेकर के चला उछाले जब * जनता को बहाये देता था।
हुँकार ध्वनी होती थी कहीं * गुल गुल शब्द निकलत थे।
कहिं भेरा की आवाज़ होय * कहिं सुरपति आन मचलते थे॥

दोहा

जै जै कारे कर रहे * सुर सब बैठ विमान।
नीर बढ़ा मर्याद तज * फला मध्य मैदान ॥ ७५६ ॥

बहर खड़ी

ले ले कर उछाले जल प्रवाह * धड़ता था मच बढ़ाता था।
कोई जल में गोते खाता था * कोई बाढ़ में डूबा जाता था ॥
नर-नारी सब भयभीत हुये * क्या प्रलय काल ही आता है।
जो नीर उछलता आता है * और अपनी दिखाता आता है॥
छाये हैं जा अस्मान बीच * विद्या धर बैठ विमानों में।
भूचारी करते हाय हाय * पहुँची पुकार यह कानों में॥
हे महा सती सीता देवी * अब रक्षा करो हमारी तुम।
हम शरण तुम्हारी हैं माता * पुत्रों की करो रखवारी तुम॥

दोहा

सोता ने जिस दम सुनी * करुणामयी पुकार ।
ऊँचे उठते नीर को * बींमा भू बैठार ॥७६०॥

बहर खड़ी

स्पर्श हुए कर जल से जब * सब नीर सिमट कर आया है।
शोभा सौ गुनी हुई उसकी * जो सरवर सुगढ़ सुहाया है ॥
उत्पन्न कुमुद आदिक पंकज * अरु पद्म कमल भी खिलते थे।
नलिनी व नलिन सग खिल-खिल कर * भर प्रेम परस्पर मिलते थे ॥

उड़ती थी शुभ्र सुगन्ध जहाँ * मधुकर जिन पर गुँजार रहे।
मणियों के घाट चौ तर्फ बने * स्वच्छ नीरज मौजें मार रहे॥
सीता के शील की प्रशंसा * नारद मुख से उच्चार रहे।
वीणा को हाथ समार रहे * गुण ग्राम गाय हर बार रहे॥

दोहा

सीता का सत समझ कर * सुर सन्तुष्ट अपार।
पुष्प वृष्टि करने लगे * बोले जै जै कार ॥७६१॥

बहर खड़ी

माता का सुयश प्रभाव देख * लवणाँकुश परम प्रसन्न भये।
निर्मल जल बीच उतर दोनों * निज माताजी के पास गये॥
सीता ने भाल सूँघ उनका * दोनों को निकट बिठाया है।
कमला के इधर उधर गज सुत* लख शोभा अंग हुलसाया है॥
भामण्डल, लक्ष्मण, शत्रुघन, * सुग्रीव, विभीषण, ने आ के।
श्रद्धायुत नमस्कार किया * सीताजी को मन हर्षा के॥
फिर क्षमा प्रार्थना रघुवर ने * श्री सीताजी से चाही है।
देवी तुम क्षमा करो मुझ को * प्रजा ने धूम मचाई है॥

दोहा

सीता ने उत्तर दिया * सुनो श्री रघुराय।
दोष न लोगों का कुछी * सुनिये कान लगाय ॥७६२॥

बहर खड़ी

लोगों का दोष नहीं किंचित् * नहिं इस में दोष राम का है।
है दोष पूर्व के कर्मों का * या दोष बुरा विध वाम का है॥
दुख चक्कर आने वाला था * उसने कर्त्तव्य दिखाया है।
कर्मों से अब छुटकारा हो * दीक्षा को मम मन चाया है॥
बालों को निज कर से लोचा * और राम के आगे रख दिये।

मैं करूँ आत्मा की शुद्धि ॥ शुभ शब्द उच्चारण हैं किये ॥
कच देख राम मूर्छित हुये ॥ मन में आरत आ छाया है।
सीताजी न मन में दिचार ॥ आगे को चरन बढ़ाया है ॥

दोहा

समत प्रयष्ट कर आपकी ॥ निकट मुनि क आय।
जय भूपण से दीक्षा ॥ लीनी है हर्षाय ॥७६३॥

बहर खड़ी

सीता को मुनिवर ने दीक्षा ॥ देकर मार्ग बतलाया है।
सुप्रभा सती गुरुनी के निकट ॥ सीताजी को पहुँचाया है ॥
चन्दन आदिक का जल मँगवा ॥ श्रीराम के ऊपर डाला है।
शीतल समीर का असर हुआ ॥ रघुवर जब होश सँभाला है।
सीता सीता मुख रटन लगे ॥ सीता ने नहिं दृष्टि उठाई है।
घबरा के बैठे हुये तुरत ॥ आज्ञा रघुनाथ सुनाई है ॥
खेचर विद्याधर भूचर सब ॥ अनुशासन मान तुरत आओ।
जिस तरह जहाँ पर हो सीता ॥ ले कर मेरे सम्मुख आओ ॥

दोहा

तुरत धनुष कर धार के ॥ धाये श्री रघुनाथ।
लक्ष्मण जब कहने लगे ॥ जोड़े दोनों हाथ ॥७६४॥

चौपाई

जैसे सीता को तुम त्यागा ॥ लोप लोक कैसे भय लागा।
ऐसे ही सीता ने जग त्यागा ॥ परभव का भय उन मन आगा
केश लोच प्रभु के कर दीने ॥ धार महाव्रत मुनि तट लीने।
हुआ आज मुनि केवलज्ञाना ॥ सुर सुरेन्द्र मन हर्ष समाना ॥
कर्त्तव्य निज पालन प्रभु कीजे ॥ दर्शन हित आगे पग दीजे।
सीता सती महाव्रत धारे ॥ आतम शुद्धि करत हैं प्यारे ॥

सिय के दर्शन यहीं प्रभु पाओ * चल कर लोचन सुफल बनाओ
सुन कर वचन राम हर्षाये * धन्य सिया सुख वचन सुनाये

दोहा

लखन, राम, सुग्रीव अरु * भामण्डल, हनुमान ।
दर्श केवली मुनि के * कीने सब ने आन ॥७६५॥

चौपाई

आये राम मुनि के तीरा * बैठ सन्मुख धर के धीरा ।
पूछा मुनिवर से रघुनायक * दीजे बता समझ निज पायक ॥
मैं हूँ भव्य सुनो मम स्वामी * या अभव्य हूँ अन्तर्यामी ।
बोल मुनि केवली सुधामा * मुक्ति इसी भव से हो रामा ॥
राम कहें सुनिये मुनिराया * मुक्ति बिना तप किसने पाया ।
सुख बलदेव सु पद का पा के * पञ्चमि गति जाओगे धा के ॥
भोगावली कर्म के बीते * होंगे शुभ सब मन के चीते ।
निःसन्देह महाव्रत पाओ * कर्म खपा शिवपुर को जाओ ॥

दोहा

पूछा है पुन विभीषण * दीजे प्रभु बताय ।
किन कारण सीता हरी * था दशकन्धर राय॥७६६॥

चौपाई

ऐसा कौन कर्म था भारा * जो लक्ष्मण ने रावण मारा ।
सुग्रीव भामण्डल अधिकारी * राम सनेह रक्खे किम भारी ॥
मुनि पुनः पूर्व भव समझाया * दक्षिण भरत देश एक माया ।
क्षेमपुरा नगर इक भारी * नयदत्त वणिक रहे सुखकारी
दो सुत थे जिनके अति प्यारे * धनदत्त अरु वसुदत्त सुखारे
योग बल वय से थी मिताई * उससे प्रेम करें युग भाई ॥
दूजा सागरदत्त सु नामा * दो सन्तान तासु सुख रामा ।

गुणधर सुत कन्या गुणवन्ती * धन दत्त को दीनी सुख कन्ती

दोहा

माता न धन हित किया * हितु स्वय श्री कान्त ।
याज्ञवल्क को हो गई * इस की मन मे भ्रान्त ॥७६७॥

चौपाई

जाय सूचना तुरत सुनाई * क्रोधित मन हुये दोऊ भाई ।
श्रीकान्त को मारन हेता * वसुदत्त धाया त्याग निकेता ॥
दोनों घायल हो अति भारे * दोनों तज संसार सिधारे ।
विंध्याचटी विपिन में आ के * मृग हुये दोनों वपु पा के ॥
दोनों लड़ कर प्राण गँवाये * भ्रमण रहे करते दुख पाये ।
धनदत्त के मन भ्रात वियोगा * हुवा प्रकट छाया अति सोगा ॥
मृगी हुई गुणवती नारी * लड़े वहाँ दोनों अति भारी ।
सतों को लख भोजन माँगे * सुन उपदेश याद सम लागे ॥

दोहा

साधु व सुन कर वचन * श्रावक नैम सुधार
आयुप पूर्ण कर गये * सुधर्म लोक मझधारा॥७६८॥

चौपाई

चव कर पुनः महापुर आये * मेरु सेठ गृह जन्म सु पाये ।
पद्मरुची पाया शुभ नामा * श्रावक वन किया शुभ कामा ॥
पद्मरुची हो अश्व सवारा * निज गोकुल की ओर सिधारा ।
देखा वृषभ दुखी अति भारा * दिया मंत्र उसे नवकारा ॥
मंत्र प्रभाव हुवा अति भारी * हुवा भूप सुत अति सुखकारी
वृषभ ध्वजा शुभ नाम सु पाया * भ्रमत वृषभ भूमि पर आया ॥
प्रगटा जाति स्मरण ज्ञाना * वृषभ का यहाँ रचा निशाना ।
रक्षक खड़े किये हर्षाई * सकल व्यवस्था को समझाई ॥

दोहा

ऐसा है आविश्र को * पद्मरुची उस वार ।
विस्मित हुआ मन विषे * बोला वचन सँभार ॥७६६॥

चौपाई

बीता वात सकल मम साथा * सुनी रक्षकों ने यह बाता ।
राज कुँवर को हाल सुनाया * सुन युवराज तुरत यहाँ आया
पृच्छा करी सेठ से आ के * इसका वो सब हाल सुना के ।
पद्मरुची सब भेद बताया * सुन कर राज कुँवर हर्षाया ॥
नमस्कार कर गिरा उच्चारी * तुम मेरे हो अति उपकारी ।
चल कर राज भोग प्रभु कीजे * शुभ शिक्षा सेवक को दीजे ॥
श्रावक व्रत दोनों ने धारे * समय पाय परलोक पधारे ।
पद्मरुची चव नृप ग्रह आया * गिरि वैताढ़ सुधाम सु पाया ॥

दोहा

राजा के ग्रह जन्म, ले * किये सब शुभ काम ।
राज भोग ली दीक्षा * नैनानंद सु नाम ॥७७०॥

चौपाई

आयु भोग अमर पुर धाये * साथे सुर पुर जा हर्षाये ।
क्षेम पुरी पुनः चव कर आये * श्रीचन्द्र शुभ नाम सु पाये ॥
राज भोग पुनः दीक्षा धारी * पंचम सुर पुर के अधिकारी ।
इन्द्र पने का यहाँ सुख पाया * यहाँ से चव दशरथ ग्रह आया
यही जीव राम का जानो * वृषभ जीव सुग्रीव बखानो ।
श्रीकन्त भव भ्रमण कीना * जन्म शम्भु राजा के लीना ॥
वज्र कंठ मिला नाम सु प्यारा * ताकू प्यार होता अति भारा ।
वसुदत्त भव भ्रमण कर के * आया उसी राज में मर के ॥

दोहा

जन्म विजे द्विज के लिया * श्रीभूत तस नाम ।

गुणधर सुत कन्या गुणवन्ती * धन दत्त को दीनी सुख कन्ती

दोहा

माता न धन हित किया * हितु स्वयं श्री कान्त।
याज्ञवल्क को हो गई * इस की मन मे भ्रान्त ॥७६७॥

चौपाई

आय सूचना तुरत सुनाई * क्रोधित मन हुये दोऊ भाई।
श्रीकान्त को मारन हेता * वसुदत्त धाया त्याग निकेता ॥
दोनों घायल हो अति भारे * दोनों तज संसार सिधारे।
विंध्याचटी विपिन में जा के * मृग हुये दोनों वपु पा के ॥
दोनों लड़ कर प्राण गँवाये * भ्रमण रहे करते दुख पाये।
धनदत्त के मन भ्रात वियोगा * हुआ प्रकट छाया अति सोगा ॥
मृगी हुई गुणवती मारी * लड़े वहाँ दोनों अति भारी।
सन्तों को लख भोजन माँगे * सुन उपदेश धर्म मन लागे ॥

दोहा

साधु के सुन कर वचन * श्रावक नेम सुधार
आयुष पूर्ण कर गये * सुधर्म लोक मझधार॥७६८॥

चौपाई

चय कर पुनः महापुर आये * मेरु सेठ गृह जन्म सु पाये।
पद्मरुची पाया शुभ नामा * श्रावक व्रत किया शुभ कामा ॥
पद्मरुची हो भव्य सवारा * निज गोकल की ओर सिधारा।
देखा वृषभ दुखी अति भारा * दिया मंत्र उसे नवकारा ॥
मंत्र प्रभाव हुया अति भारी * हुआ भूप सुत अति सुखकारी
वृषभ ध्वजा शुभ नाम सु पाया * भ्रमत वृषभ भूमि पर आया ॥
प्रगटा जाति स्मरण ज्ञाना * वृषभ का यहाँ रचा निशाना।
रक्षक राखे किये हर्षाई * सकल व्यवस्था को समझाई ॥

चौपाई

वचन मेरे को मन में लाओ * वेगवती मुझ को परनाओ ।
मिथ्यात्वी का हूँ नहीं बेटी * इस में बात हाय मम हेटी ॥
क्रोधित हुवा श्रवण कर राया * श्री भूति को मार गिराया ।
वेगवती को पकड़ भुवाला * शीलखण्ड उसका कर डाला ॥
नृप को श्राप सती ने दीना * निज मन में यह प्रण कर लीना
भवान्तर में तुझे संहारूं * मृत्यु रूप तुझ कारण धारूँ ॥
वेगवती को पुन तज दीना * यह अनात अरू नृप ने कीना ।
वेगवती ने दीक्षा धारी * दीक्षा ले तप कीना भारी ॥

दोहा

मर कर पंचम स्वर्ग में * पैदा हुई ह आय ।
वहँ स चय कर जनक ग्रह * हुई पुत्री आय ॥७७४॥

चौपाई

नृप शंभु हुवा था रावण * वेगवती सिय भई नशावन ।
मुनि पे मिथ्या दोष लगाया * दाप इसी कारण यहाँ पाया ॥
भव भ्रम करके शंभु नृपाला * कुश ध्वज द्विज के हुवा लाला
नाम प्रभास यहाँ पर पाया * विजयसिंह मुनि के तट आया
संयम ले तप कर मन माना * अन्त समय कर किया नियाना
देवलोक तीजे को धाया * चय कर हुवा निशाचर राया
याज्ञवल्क का जी भ्रमण कर * आया भ्रात नृपत का बन कर
श्रीभूती केइ भव कर के * आया यहाँ लक्ष्मण वपु धर के ॥

दोहा

अनग सुन्दरी विशल्या * भई यहाँ पर आय ।
गुणधर भामण्डल हुवा * सिया सहोदर भाय ॥७७५॥

चौपाई

काकन्दी नगरी मनधारा * वामदेव द्विज बुध बल धारा ।

जीव गुणवती का हुआ * पैदा उस ही ग्राम ॥७७१॥

चौपाई

भव भ्रमता के कन्या आई * उसी गाँव में जन्मी भाई।
वेगवती पाया शुभ नामा * युवा अवस्था में रस पामा।
मुनिवर ऐक सुदर्शन आये * नर नारी दर्शन को धाये।
वेगवती अस पाप कमाया * मुनि को मिथ्या दोष लगाया॥
तिय गामी साधू यह भारी * इसा ने कहीं छुपाई नारी।
वेगवती की सुन कर वाता * जग समुदाय सुमन घबराता॥
मुनि को आन कलंकित भारी * कीना कष्ट नगर नर नारी।
मुनि ने मन में अति दुख पाया * करन अभिग्रह मुनि मन चाया

दोहा

किया है मुनि अभिग्रह * मन में एसा धार।
जब तक मिटे कलंक ना * करें न नीर अहार ॥७७२॥

चौपाई

कायोत्सर्ग का ध्यान लगाया * यही कृत मुनि मन भाया।
शासन देव देख रिसियाया * वेगवती को दम्न धमाया॥
दुस्कार पितु कीना भारी * कष्ट पाय मुनि निकट सिधारी
संकट से मन अमना मागी * जन-समूह से कहने लागी॥
मुनि निर्दोष दोष नहिं कोई * मिथ्या दोष लगाया होई।
मम अपराध क्षमा मुनि कीजे * मेरे अवगुण चित्त नहिं दीजै॥
यह सुन कर पुर के नर नारी * कहने लगे मुनि है ब्रह्मचारी।
वेगवती श्रावक मत धारा * मिथ्या मत से किया किनारा॥

दोहा

देखा रूप अनुप जब * शम्भुराय ललचाय।
श्रीभूत दुखपाय कर * वचन कहे समझाय ॥ ७७३ ॥

चौपाई

धवल मेरे को मन में लाओ * वगवती मुझ को परनाओ ।
मिथ्यात्वी का हूं नहीं बेटी * इस में बात होय मम हेटी ॥
क्रोधित हुआ श्रवण कर राया * श्री भूति को मार गिराया ।
वेगवती को पकड़ भुवाला * शीलखंड उसका कर डाला ॥
नृप को श्राप सती न दीना * निज मन में यह प्रण कर लीना
भवान्तर में तुझ सहारू * मृत्यु रूप तुझ कारण धारूं ॥
वगवती को पुन तज दीना * यह अनात भरू नृप ने कीना ।
वगवती ने दीक्षा धारी * दीक्षा ले तप कीना भारी ॥

दोहा

मर कर पञ्चम स्वर्ग में * पदा हुई ह जाय ।
वहां से चय कर जनक ग्रह * हुई पुत्री आय ॥७७४॥

चौपाई

नृप शंभु हुआ था रावण * वेगवती सिय भई नशावन ।
मुनि पे मिथ्या दोष लगाया * दाप इसी कारण यहां पाया ॥
भव भ्रम करके शंभु नृपाला * कुश ध्वज द्विज के हुआ लाला
नाम प्रभास यहां पर पाया * विजयसिंह मुनि के तट आया
संयम ले तप कर मन माना * अन्त समय कर दिया नियाना
देवलोक तीजे को धाया * चय कर हुआ निशाचर राया
याज्ञवल्क्य का जी भ्रमण कर * आया भ्रात नृपत का तन कर
श्रीभूती केई भव कर के * आया यहां लक्षन वपु धर के ॥

दोहा

अनग सुन्दरी विशल्या * भई यहां पर आय ।
गुणधर भामंडल हुआ * सिया सहोदर भाय ॥७७५॥

चौपाई

काकंदी नगरी मझधारा * वामदेव द्विज बुध बल धारा ।

जीव गुणवती का हुआ * पैदा उस ही ग्राम ॥७७१॥

चौपाई

मध भूता के कन्या जाई * उसी गाँव में जन्मी आई।
वेगवती पाया शुभ नामा * युवा अवस्था में रख पामा।
मुनिवर ऐक सुदर्शन आये * नर नारी दर्शन को धाये।
वेगवती अस पाप कमाया * मुनि को मिथ्या दोष लगाया॥
तिय गामी साधू यह भारा * इसा ने कहीं छुपाइ नारी।
वेगवती की सुन कर वाता * जग समुदाय सुमन घबराता॥
मुनि को जान कलंकित भारी * दीना कष्ट नगर नर नारी।
मुनि ने मन में अति दुख पाया * करन अभिग्रह मुनि मन चाया

दोहा

किया है मुनि अभिग्रह * मन में एसा धार।
जब तक मिटे कलंक ना * करें न नीर अहार ॥७७२॥

चौपाई

कायोत्सर्ग का ध्यान लगाया * यही कृत मुनि मन भाया।
शासन देव देख रिसियाया * वेगवता को रुग्न बनाया॥
तस्कार पितु कीना भारी * कष्ट पाय मुनि निकट सिधारी
संकट से मम भमना मागी * जन-समूह से कहने लागी॥
मुनि निर्दोष दोष नहिं कोइ * मिथ्या दोष लगाया होई।
मम अपराध क्षमा मुनि कीजे * मेरे अवगुण चित्त नहिं दीजे॥
यह सुन कर पुर के नर नारी * कहने लगे मुनि है ब्रह्मचारी।
वेगवती श्रावक व्रत धारा * मिथ्यामत से किया किनारा॥

दोहा

देखा रूप अनुज जब * शम्भुराय ललचाय।
श्रीभूत दुलवाय कर * वचन कहे समझाय ॥७७३॥

चौपाई

वचन मेरे को मन में लाओ * वेगवती सुन को परमात्मा ।
मिथ्यात्वी का तूँ नहीं बेटी * इस में बात हाय मम हेटी ॥
क्रोधित हुआ श्रवण कर राया * श्री भूति को मार गिराया ।
वेगवती को पकड़ भुवाला * शील खण्ड उसका कर डाला ॥
नृप को श्राप सती ने दीना * निज मन में यह प्रण कर लीना
भवान्तर में तुम्ह संहारूँ * मृत्यु रूप तुम्ह कारण धारूँ ॥
वेगवती को पुनः तज दीना * यह अनास अरू नृप ने कीना ।
वेगवती ने दीक्षा धारी * दीक्षा ले तप कीना भारी ॥

दोहा

मर कर पञ्चम स्वर्ग में * पैदा हुई [illegible] जाय ।
वहाँ से चय कर जनक गृह * हुई पुत्री आय ॥५५॥

चौपाई

नृप शम्भु हुआ था रावण * वेगवती [illegible]
मुनि पे मिथ्या दोष लगाया * दोष हरी [illegible]
भव भ्रम करके शम्भु नृपाला * कुश [illegible]
नाम प्रभास यहाँ पर पाया * विश्व [illegible]
संयम ले तप कर मन माना * [illegible]
देवलोक तीजे को धाया * [illegible]
याज्ञवल्क्य का जी श्रमण कर [illegible]
श्रीभूती केइ भव कर [illegible]

वसुनन्द अरु द्वितीय सु नन्दा * दो सुत तासु करें आनन्दा ॥
तासु महल मुनि मासाधमी * आये थी जिन पे विश्वासी।
दोनों ने सब हृप वडाया * सादर माघ सादिस पेराया ॥
उस प्रभाव से भय युगलिया * आयु भर कीनी रगरलियाँ।
आयुष पूण कर युग प्यारे * मर कर युग सुर लोक सिधारे
सुर पुर से दोनों चव धाये * वामदव के पुत्र कहाये।
राज भोग कर दीक्षा धारी * नव प्रवेक हुये अवतारी ॥

दोहा

वोनों भाई पुन चवे * लवणांकुश भये आय।
पूर्व मात इनकी भई * सिद्धार्थ नृप धाय ॥ ७७६ ॥

चौपाई

सुन कर हर्ष प्रगट अति कीना * सैनापति ने सयम लीना।
राम लखन वन्दन कर धाये * श्री सीता के सम्मुख आये ॥
सिय लख मन में राम विचारा * शीत ताप का सकट मारा।
कोमलांग सिया राज दुलारी * कैसे सहे परिश्रम भारी ॥
सव भारों से है अधिकारा * अति ही कठिन सु सयम भारा
सदम लिय को है यह काजा * सन्त सती के हृदय विराजा
रावण जिसका कुछ न बिगारा * उसको काम कौन यह मारा।
राम लखन कर वन्दन धाये * सहित कुटुम्ब अयोध्या आये ॥

दोहा

सीताजी ने कठिन तप * साठ वर्ष पर्यन्त।
किया अति मन हर्ष के * कर कर्मों का अन्त ॥७७७॥

चौपाई

तेतीसों दिन कर संथारा * जग समुद्र से किया किनारा।
अच्युतेन्द्र भई सुरपुर जा के * बाइस सागर आयुष पा के ॥

कृतान्त ने तप किया भारा * ब्रह्म देव लोक पग धारा।
गिरि वैताड़ कनकपुर नामा * सुन्दर नगर सुसुन्दर धामा॥
भूप कनक रथ तस अधिकारी * सुन्दर दो कन्या तस नारी।
मन्दाकिनी शशि मुख नामा * सुन्दर रूप अनुप सुधामा॥
रचा स्वयंवर नृप हर्षाये * राम लखन सुत सहित बुलाये।
मन्दाकिन लव के गल माला * अंकुश गल शशि वदन सु डाला

दोहा

लखन पुत्र मम क्रोध कर * ढाई सौ इकधार।
लवणांकुश स युद्ध को * हुये तुरत तैयार॥ ७७८॥

चौपाई

सुन कर लवणांकुश अस बोले* हृदय के सुन्दर पट खोले।
उनके संग न हो संग्रामा * यह भाई आये मम कामा॥
सुन कर लक्ष्मण पुत्र विचारा * धिक धिक् ऐसा भाव हमारा।
मात पिता से आज्ञा पाई * दीक्षा लीनी है सब भाई॥
महाबल मुनि के निकट पधारे * धार महाव्रत हितकर भारे।
लवणांकुश कर व्याह हर्षाये * राम लखन संग निज पुर आये॥
एक समय भामण्डल राया * मन में शुभ भाव निज लाया।
युग श्रेणी वैताड़ सुधारी * दोनों का मैं हूँ अधिकारी॥

दोहा

भोगे हैं संसार के * मैंने सुख अपार।
अब जग को मैं त्याग कर * लूँगा संयम भार॥७७९॥

चौपाई

ऐसा किया विचार भुवाला * बिजली गिरी आन तत्काला।
विद्युति पात मरन नृप पाया * युगल पवे भामंडल भाया॥
एक समय हनुमत बल धीरा * मेरू शिखर गये रण धीरा।

वसुनन्द अरु द्वितीय सु नन्दा * दो सुत तासु करें आनन्दा ॥
तासु महल मुनि मासापासी * आये थी जिन के विश्वासी ।
दोनों मे सख हप चढ़ाया * सादर भाव सहित पैराया ॥
उस प्रभाव स भय युगलिया * आयु भर कीनी रंगरलियाँ ।
आयुष पूर्ण कर युग प्यारे * मर कर युग सुर लोक सिधारे
सुर पुर से दोनों चय धाय * वामदेव के पुत्र कहाये ।
राज भोग कर वाचा धारी * नव ग्रैवेक हुये अवतारी ॥

दोहा

दोनों भाई पुन चये * लवणांकुश भये आय ।
पूर्व भाव इनकी भई * सिद्धार्थ नृप धाय ॥ ७७६ ॥

चौपाई

सुन कर हर्ष प्रगट अति कीना * सेनापति ने संयम लीना ।
राम लखन वन्दन कर धाये * श्री सीता के सन्मुख आये ॥
सिय लख मन में राम विचारा * शीत ताप का संकट भारा ।
कोमलांग सिया राज दुलारी * कैसे सहे परिश्रम भारी ॥
सब भारों से है अधिकारा * अति ही कठिन सु संयम भारा
सुषम स्त्रिय को है यह काजा * सन्त सती के हृदय विराजा
रावण जिसका कुछ न बिगारा * उसको काम कौन यह भारा ।
राम लखन कर वन्दन धाये * सहित कुटुम्ब अयोध्या आये ॥

दोहा

सीताजी ने कठिन तप * साठ वर्ष पर्यन्त ।
किया अति मन हर्ष के * कर कर्मों का अन्त ॥७७७॥

चौपाई

तेतीसों दिन कर संथारा * जग समुद्र से किया किनारा ।
अच्युतेन्द्र भई सुरपुर जा के * बाइस सागर आयुष पा के ॥

बोले राम क्रोध कर भारा * किया अमंगल कैसे आरी।
जीवित भ्रात लखन हलधारी * हुई कोई इनको बीमारी ॥
वैद्यों को अब ही बुलवाऊँ * निज भ्रात को स्वस्थ कराऊँ।
वैद्यों को हरि ने बुलवाया * लखन बन्धु को तुरत दिखाया

दोहा

देखें ज्योतिष ज्योतिषी * गणित करें गणितज्ञ।
जत्र मन्त्र करने लगे * आ आ कर मन्त्रज्ञ ॥७८२॥

चौपाई

असर नहीं मन्त्रों ने कीना * उत्तर सब ने ही दे दीना।
देख राम को मूर्छा आई * रुदन लगे करने रघुराई ॥
रिपु घन और सुग्रीव विभीषण* रुदन करें अपना सिर धुन-धुन
कौशल्या आदिक सब माता * रुदन करें कुछ नहिं बस पाता
शोक छयो पुर में अति भारी * रुदन करें पुर नर अरु नारी॥
शोक शब्द आवें सब कानन * ताले पुर की पड़े दुकानन ॥
बड़े-बड़े नर धीरज धारी * वे हू सुन्न हो गये दुखारी।
सब के आनन शोक समाया * शोक अयोध्या भर में छाया ॥

दोहा

लव कुश अस कहने लगे * सुनो पिता धर ध्यान
यह संसार असार है * हम ने लीना जान ॥७८३॥

चौपाई

आज्ञा दीजे पितु हर्षाई * दीक्षा ग्रहण करें हम आई।
काका बिन जग सूना भारी * हम दीक्षा की मन में धारी ॥
कर प्रणाम चले दोऊ भाई * अमृतघोष जहाँ मुनि राई।
दोनों ने मिल दीक्षा धारी * संयम से किया तप भारी ॥
तप कर मुक्ति पुरी पग धारा * जग समुद्र से किया किनारा।

खिला जहाँ अति ही ऋतुराजा * हनुमत के आनन्द विराजा ॥
होता अस्त विलोका भाना * आखिर रूप मन में जग आना।
नाशवान जग भोग विचारा * निज पुर को आये दस धारा ॥
राज सुतों को आकर दीना * हनुमत संयम धार सु लीना।
साढ़े सात सौ संग नृपाला * ले दीक्षा हनुमत संग चाला ॥

दोहा

पाला है संयम प्रभु * परम भाव हनुमान।
तप कर के अति ही कठिन * पाया पद निर्वान ॥७८०॥

चौपाई

सुन कर राम अचम्भा पाया * हनुमान सुख क्यों विसराया।
सुख का तज कर दुख आराधा * सुख भोग तज जोग सुसाधा ॥
देख सुधर्मा इन्द्र विचारा * कर्म गति का पार न पारा।
चरम शरीरी राम सु जाना * हँसे धर्म पे लख हनुमाना ॥
राम लखन में प्रेम अपारा * इस से उन्हें जगत है प्यारा।
इन्द्र वचन सुन दो सुर धाये * अति ही शीघ्र अवध पुर आये ॥
लछमण के महलों में आ के * निज माया दीनी फैला के।
राम महल में रुदन दिखाया * नाद करत लक्ष्मण के आया ॥

दोहा

छाया राम वियोग अति * मुख से कहता राम।
लछमण मूरछा पाय के * गये अंजना धाम ॥७८१॥

चौपाई

कनक सिंहासन टिका शरीरा * देख भय सुर विकल अधीरा।
यह अन्याय हुया अति भारा * धिक्कार तज जगत् सिधारा ॥
यह लख सुर सुर पुर को धाये * रानिन मे मिल रुदन मचाये।
राम लखन के महलों आ के * देख भ्रात को नयन उठा के ॥

बोले राम क्रोध कर भारा * किया अमंगल कैसे भारी।
जीवित भ्रात लक्ष्मन हलधारी * हुई कोई इनको बीमारी ॥
वैद्यों को अब ही बुलवाऊँ * निज भ्रात को स्वस्थ कराऊँ।
वैद्यों को हरि ने बुलवाया * लक्ष्मन बन्धु को तुरत दिखाया

दोहा

देखे ज्योतिष ज्योतिषी * गणित करें गणितज्ञ।
जन्त्र मन्त्र करने लगे * आ आ कर मन्त्रज्ञ ॥७८२॥

चौपाई

असर नहीं मर्यों ने कीना * उत्तर सब ने ही दे दीना।
देख राम को मूर्छा आई * रुदन लगे करने रघुराई ॥
रिपु दम और सुग्रीव विभीषण * रुदन करें अपना सिर धुन-धुन
कौशल्या आदिक सब माता * रुदन करें कुछ नहिं बस पाता
शोक छयो पुर में अति भारी * रुदन करें पुर नर अरु नारी ॥
शोक शब्द आवें सब कानन * ताले पुर की पड़े दुकानन ॥
बड़े-बड़े नर धीरज धारी * वे हु दुख हो गये दुखारी।
सब के आमन शोक समाया * शोक अयोध्या भर में छाया ॥

दोहा

सब पुत्र अस कहने लगे * सुनो पिता धर ध्यान
यह संसार असार है * हम ने लीना जान ॥७८३॥

चौपाई

आज्ञा दीजे पितु कृपाई * दीक्षा ग्रहण करें हम आई।
काका बिन जग सूना भारी * हम दीक्षा की मन में धारी ॥
कर प्रणाम चले दोऊ भाई * अमृतघोष जहाँ मुनि राई।
दोनों ने मिल दीक्षा धारी * संयम से किया तप भारी ॥
तप कर मुक्ति पुरी पग धारा * जग समुद्र से किया किनारा।

खिला जहाँ अति ही ऋतुराजा * हनुमत के आनद विराजा ॥
होता अस्त विलोका भाना * आथिर रूप मन में जग आना।
नाशवान जग भोग विचारा * निज पुर का आये इस धारा ॥
राज सुतों को आकर दीना * हनुमत संयम धार सु लीना।
साढ़े सात सौ सग नृपाला * ले दीक्षा हनुमत सग चाला ॥

दोहा

पाला है सयम प्रभु * परम भाव हनुमान।
तप कर के अति ही कठिन * पाया पद निर्वान ॥७८०॥

चौपाई

सुन कर राम अचम्भा पाया * हनुमान सुख क्यों विसराया।
सुख को तज कर दुख आराधा * सुख भोग तज जोग सुसाधा ॥
देख सुधर्मा इन्द्र विचारा * कर्म गति का पार न पारा।
चरम शरीरी राम सु जाना * हँसे धर्म पै लख हनुमाना ॥
राम लखन में प्रेम अपारा * इस स उन्हें जगत है प्यारा।
इन्द्र वचन सुन दो सुर धाये * अति ही शीघ्र अवध पुर आये ॥
लक्ष्मण के महलों में आ के * निज माया दीनी फैला के।
राम महल में रुदन दिखाया * नाद करन लक्ष्मण क आया ॥

दोहा

छाया राम व्योग अति * मुख से कहता राम।
लक्ष्मण मृत्यु पाय क * गये अंजमा धाम ॥७८१॥

चौपाई

कनक सिंहासन टिका शरीरा * देख भये सुर विकल अधीरा।
यह अन्याय हुवा अति भारा * विश्वाधार तज जगत् सिधारा ॥
यह लख सुर सुर पुर को धाये * रानिन ने मिल रुदन मचाये।
राम लखन के महलों आ के * देख भ्रात को मचार उठा के ॥

बज्रावत की कर टकोरा * दीनी सघा राम ने घोरा ।
सूचन देव जटायु पाया * देवों को संग लेकर धाया ॥

दोहा

देखा है सुर आगमन * घबराया अरि वृन्द ।
भागे मन भय मान कर * देख सुरों का द्वन्द ॥७८६॥

चौपाई

देखा देव जटायु आ के * सूखे तरु जल सींचे धा के ।
पत्थर ऊपर कमल उगावे * ऊसर भू में बीज बुवावे ॥
करे काज जैसे अज्ञानी * बालू डाल चलावे घानी ।
तब राम बोले झुँझलाई * मूढ़ छन कर कहा अस पाई ॥
बालू से नहीं तेल निकलता * सूखा तरु कब फूलता फलता ।
यह सुन कहे जटायु वचना * समझ आप करते क्या रचना
मुर्दा धरे कन्ध पर डोलो * हाम हमें औरों को बोलो ।
दूर हटि से जा तू भागी * बोले ऐसे बाल अभागी ॥

दोहा

देखा है कृतान्त ने * अवध मान मँझधार ।
आया सुर पुर से तुरत * मुर्दा यमाई भार ॥७८७॥

चौपाई

निकट राम के होकर आया * लख कर रघुवर वचन सुनाया
मूर्ख मरी फिरे ले नारी * मोह में ऐसा हुआ अनारी ॥
हरि के वचन सुने जब काना * नजर उठा मन में मुसकाना ।
लाख कहो मैं सुनूँ न ऐका * सजत न और को देत विवेका॥
कंधे धर मुर्दा क्यों डोले * बिना विचार शब्द यह बोले ।
सुन कर मन में राम विचारा * क्या सच शब्द सुनाये सारा ॥
काँधे से सुन तुरत उतारा * देखा हुआ मन आश्चर्य भारा ।

भ्राता उठो हँसो अरु बोलो * मेरे सग धनु कर रख डोलो ॥
किया न मैं तुमरा अपमाना * तुम्हें प्राण स प्यारा जाना।
नैन खोल मुझ को सुख दीजे * अब तो कहा मेरा तुम कीजे॥

दोहा

देखे राम अधीर जब * सुग्रीवादि नरेश।
सग विभीषण को लिये * हरि तट किया प्रवेश ॥७८४॥

चौपाई

धीरों में जैसे तुम धीरा * ऐसे ही हो धारों में धीरा।
यह सब बातें लज्जा कारी * त्यागो इन्हें जान असुरारी ॥
लखन मुये अब मत विलाओ * इनका अंतिम कृत कराओ।
सुन कर वचन क्रोध मन छाया * राम कटुक अस वचन सुनाया
भ्रात मेरा लछमण है जीता * तुम बोले अस वचन अभीता
दीर्घायु होगा मम भ्राता * मरा होयगा तुमरा भ्राता ॥
बोलो लखन न बार लगाओ * ऐसे वचन न अब सुनवाओ।
तुरत लखन को राम उठाया * अम्ब अगद को वचन बढ़ाया

दोहा

मज्जन निज कर से किये * चन्दन आदि लगाय।
मणि माणिक के थाल में * भोजन रक्खे लाय ॥७८५॥

चौपाई

भोजन करो राजन मम भाई * थाल धरा क्यों बार लगाई।
कभी गोद लेकर पुचकारें * कभी शीश अपने कर धारें ॥
कभी सेज पर देय सुलाई * वस्त्र अमोलक देय उढाई।
राम भ्रात दुख से मदमाते * हुए मोह लखन में राते ॥
इन्द्रजीत सुत खेचर साता * चढ़ आया सुन कर यह बाता
राम सूचना जब यह पाई * लखन कन्ध धर पहुँचे धाई ॥

पद्मावत की कर टकोरा # दीनी मचा राम ने घोरा ।
सूचन देव जटायु पाया # देवों को सग लेकर धाया ॥

दोहा

देखा है सुर आगमन # घबराया अरि वृन्द ।
भागे मन भय मान कर # देख सुरों का द्वन्द ॥७८६॥

चौपाई

देखा देव जटायु आ के # सूखे तरु जल सींचे धा के ।
पत्थर ऊपर कमल उगावे # ऊसर भू में बीज बुवावे ॥
करे काज जैसे अज्ञानी # बालू डाल चलावे घानी ।
तब राम बोले झुँझलाई # मूढ़ कृत कर कहा अस पाई ॥
बालू से नहीं तेल निकलता # सूखा तरु कब फूलता फलता ।
यह सुन कहे जटायु बचना # समझ आप करते क्या रचना
मुर्दा धरे कन्ध पर डोलो # ज्ञान सने औरों को बोलो ।
धूर दृष्टि से जा न भागी # बोले ऐसे बोल अभागी ॥

दोहा

देखा है कृतान्त ने # अवध धाम मँझधार ।
आया सुर पुर से सुरत # मुई बनाई नार ॥७८७॥

चौपाई

निकट राम के होकर आया # लख कर रघुवर वचन सुनाया
मूर्ख मरी फिरे ले नारी # मोह में ऐसा हुआ अनारी ॥
हरि के वचन सुने जब काना # मजर उठा मन में मुसकाना ।
लाख कहो मैं सुनूँ न देखा # लजत न और को देत विवेका॥
कधे धर मुर्दा क्यों डोले # बिना विचार शब्द यह बोले ।
सुन कर मन में राम विचारा # क्या सत्य शब्द सुनाये सारा ॥
काँधे से सुन तुरत उतारा # देखा हुआ मन आश्चर्य मारा ।

भ्राता उठो हँसो अब बोलो * मेरे संग धनु कर रख डोलो ॥
किया न मैं तुमरा अपमाना * तुम्हें प्राण से प्यारा जाना ।
नैन खोल मुझ को सुख दीजे * अब तो कहा मेरा तुम कीजे॥

दोहा

देखे राम अधीर जब * सुग्रीवादि नरेश ।
संग विभीषण को लिये * हरि तट किया प्रवेश ॥७८४॥

चौपाई

धीरों में जैसे तुम धीरा * ऐसे ही हो धारों में धीरा ।
यह सब बातें लज्जा कारी * त्यागो इन्हें जान असुरारी ॥
लखन मुये अब मत बिलखाओ * इनका अंतिम कृत्य कराओ ।
सुन कर वचन क्रोध मन छाया * राम कड़क अस वचन सुनाया
भ्रात मेरा लखमण है जीता * तुम बोले अस वचन अमीता
दीर्घायु होगा मम भ्राता * मरा होयगा तुमरा भ्राता ॥
बोलो लखन न बार लगाओ * ऐसे वचन न अब सुनवाओ ।
तुरत लखन को राम उठाया * अन्य जगह पे चरन बढ़ाया

दोहा

मज्जन निज कर से किये * चन्दन आदि लगाय ।
मणि माणिक के थाल में * भोजन रक्खे लाय ॥७८५॥

चौपाई

भोजन करो लखन मम भाई * थाल धरा क्यों बार लगाई ।
कभी गोद लेकर पुचकारें * कभी शीश अपने कर धारें ॥
कभी सेज पर देय सुलाई * वस्त्र अमोलक देय उढ़ाई ।
राम भ्रात दुख से मदमाते * हुए मोह लखन में राते ॥
इन्द्रजीत सुत खेचर साता * वह आया सुन कर यह बाता
राम सूचना अब यह पाई * लखन कन्ध धर पहुँचे भाई ॥

पद्मावत की कर टकोरा * दीनी मचा राम ने घोरा ।
सुघन देव जटायु पाया * देवों को संग लेकर धाया ॥

दोहा

देखा है सुर आगमन * घबराया अरि वृन्द ।
भाग मन भय मान कर * देख सुरों का द्वन्द ॥७८६॥

चौपाई

देखा देव जटायु आ के * सूखे तरु जल सींचे धा के ।
पत्थर ऊपर कमल उगाये * ऊसर भू में बीज बुवाये ॥
करै काज जैसे अज्ञानी * बालू डाल चलावे घानी ।
तब राम बोले झुँझलाई * मूढ़ कृत कर कहा अस पाई ॥
बालू से नहीं तेल निकलता * सूखा तरु क्य फूलता फलता ।
यह सुन कहे जटायु वचना * समझ आप करते क्या रचना
मुर्दा धरे कंध पर डोलो * ज्ञान दें औरों को बोलो ।
दूर दृष्टि से आ तू भागी * बोले ऐसे बोल अभागी ॥

दोहा

देखा है कृतान्त ने * अवध ज्ञान मँझधार ।
आया सुर पुर से तुरत * मुई बनाई नार ॥७८७॥

चौपाई

निकट राम के होकर आया * लख कर रघुवर वचन सुनाया
मूर्ख मरी फिरे ले नारी * मोह में ऐसा हुआ अनारी ॥
हरि के वचन सुने जब काना * नजर उठा मन में मुसकाना ।
लाख कहो मैं सुनूँ न पेका * सजत न और को देत विवेका ॥
कंधे धर मुर्दा क्यों डोले * बिना विचार शब्द यह बोले ।
सुन कर मन में राम विचारा * क्या सत्य शब्द सुनावे सारा ॥
काँधे से सुन तुरत उतारा * देखा हुआ मन आश्चर्य भारा ।

देवों ने निज रूप दिखाया * परिचय दे निज धाम सिधाया ॥

दोहा

लक्ष्मन समझ के हरि मरा * मृतक काय कर राम ।
पुन मन में यह सोचते * सारो आतम काम ॥७८८॥

चौपाई

बोले राम तुरत यों बानी * रिपुघन करो अवध रजधानी ।
शत्रुघन अस वचन उचारा * दीक्षा का मैंने प्रण धारा ॥
लव सुत को निज पास बुलाया * राज काज उसको समझाया ।
अनग देव को सौंपा भारा * राज महोत्सव किया अपारा ॥
मुनिसोव्रत मुनि अति तप धारी * अनेक तट आय अघहारी ।
शत्रुघन सुग्रीव सु राजा * वार विराध विभीषण काजा ॥
सोलह सहस नरेश्वर भारा * राम संग सब समय धारा ।
सैंतीस सहस गई सग नारी * हृप सहित सब दीक्षा धारी ॥

दोहा

लीनी है दीक्षा तुरत * त्याग दिया संसार ।
श्रीमती साधवी संग * विचरा सब परिवार ॥७८९॥

चौपाई

नाना भाँति राम तप करते * गुरु आज्ञा को सिर पर धरते ।
किये अभिग्रह अति ही भारे * तप से पीछे चरन न धारे ॥
चौदह पूर्व का गुण जाना * ग्यारह अंग पढ़े हर्षाना ।
साठ वर्ष तप कर अति भारा * रघुवर मन में ज्ञान विचारा ॥
गुरु आज्ञा से उग्र विहारी * निर्भयता से विचरे खरारी ।
गिरि कन्दर में ध्यान लगाया * अवध ज्ञान हो प्रकट आया ॥
चौदह राजू लोक निहारे * युग सुर मे लक्ष्मण आ मारे ।
देखा लखन अजमा धामा * सोच बहुत किया मन रामा ॥

दोहा

ऐसा राम दिखाते * मैं था जय घनदत्त ।
भ्रात लक्ष्मण यहाँ रहा था * नाम वहाँ वसुदत्त ॥७६०॥

चौपाई

मम हित वहाँ तजे इन प्राना * भ्रमण किया भव में विधि नाना ।
यहाँ पुन लक्ष्मन हुवा मम भ्राता * रहा सदा ही मेरे साथा ॥
सो वर्ष कुमार पने में बीते * मण्डलिक प्रिय सत वर्ष अभीते
चालीस वर्ष दिग् विजय में लागे * भाग्य अवधपुरी के जागे ॥
ग्यारह सहस पांच सौ साठा * किया बैठ राज पै ठाठा ।
बारह सहस वर्ष की आयु * दीनी बिता न किया कमायू ॥
रहा अव्रती मत न धारा * इसी हेत मम सुख नहिं भारा ।
यह विचार तप किया भारा * कर्मों का काटा मूल सारा ॥

दोहा

बेले का तप कर मुनि * करन पारना कार ।
स्यन्दन स्थल नगर में * आये राम सुजान ॥७६१॥

चौपाई

नगर निवासी सब हर्षाये * कर जोड़ हरि सन्मुख आये ।
भोजन लाय थाल में नारि * निज द्वार आन के ठारी ॥
नगर कोलाहल हुवा भारा * गज सुन सुन स्तम्भ उखारा ।
सुन-सुन अश्व कूदने लागे * इधर उधर खुल खुल कर भागे
राम राजग्रह में जब आये * प्रतिनन्दी नृप ने वैराये ।
पञ्च दिव्य की वर्षा वर्षी * भूपत का भ्राति ही मन सर्षी ॥
जिस वन में आये रामा * पुनः गये मुनि उस ही धामा ।
मन में धी रघुनायक धारा * किया अभिग्रह अति ही भारा ॥

देवों ने निज रूप दिखाया * परिचय दे निज धाम सिधाया॥

दोहा

लक्ष्मन समझ के हरि मरा * मृतक कार्य कर राम।
पुन मन में यह सोचते * सारो आतम काम ॥७८८॥

चौपाई

बोले राम तुरत यों वाणी * रिपुघन करो अवध रजधानी।
शत्रुघ्न अस वचन उचारा * दीक्षा का मैं मन प्रण धारा॥
लव सुत को निज पास बुलाया * राज काज उसको समझाया।
अनग देव को सौंपा भारा * राज महोत्सव किया अपारा॥
मुनिसोव्रत मुनि अति तप धारी * उनके तट आय अघहारी।
शत्रुघ्न सुग्रीव सु राजा * वीर विराध विभीषण काजा॥
सोलह सहस नरेश्वर भारा * राम संग सब संयम धारा।
सेंतीस सहस गई संग नारी * इन सहित सब दीक्षा धारी॥

दोहा

लीनी है दीक्षा तुरत * त्याग दिया संसार।
श्रीमती साध्वी संग * विचरा सब परिवार ॥७८९॥

चौपाई

नाना भाँति राम तप करते * गुरु आज्ञा को सिर पर धरते।
किये अभिग्रह अति ही भारे * तप से पीछे चरण न धारे॥
चौदह पूर्व का श्रुत ज्ञाना * ग्यारह अंग पढ़े इर्याना।
साठ वर्ष तप कर अति भारा * रघुवर मन में ज्ञान विचारा॥
गुरु आज्ञा से उग्र विहारी * निर्भयता से विचर पधारी।
गिरि कन्दर में ध्यान लगाया * अवध ज्ञान हो प्रकट आया॥
चौदह राजू लोक निहारे * पुन सुर ने लक्ष्मण आ मारे।
देखा लक्ष्मन अजमा धामा * सोच बहुत किया मन रामा॥

दोहा

सीता का शुभ रूप धर * सग तिय का परिवार ।
जहाँ राम ध्यामस्थ थे * जाकर करी पुकार ॥७६४॥

चौपाई

दृष्टि उठा देखो हृदयेश्वर * मैं सीता तव प्यारी रघुवर ।
दुख पाये लीनी मैं दिक्षा * प्रेम की अब दीजे प्रभु भिक्षा ॥
अब मैं निज मन में पछता के * विनय करूँ तब सन्मुख आ के ।
विद्याधर कुमारिका आ के * ले आई सिय को समझा के ।
विवाह करो प्रभु इनके सगा * लीला करत सु वदन अनगा ।
क्षमा करो मेरा अपराधा * दीक्षा की सब काटो बाधा ॥
रिमझिम रिमझिम घूँघर बाजे * सन्मुख खड़ी अप्सरा लाजे ।
कोकिल स्वर से लती तानें * कुटिल भृकुटी तनी कमाने ॥

दोहा

सीता की यह परीक्षा * निर्थक हुई तमाम ।
चले राम नहिं रच भर * पूरण कीना काम ॥ ७६५ ॥

चौपाई

शुक्ल पक्ष शुभ माघ सुमासा * पिछला पहर निशा का मासा।
कर्म खपाये मुनि महाना * प्रगटा हरि को केवलज्ञाना ॥
सीतेन्द्र सुर और अनेका * अवधिज्ञान् बल देख से देखा ।
किया महोत्सव अति हर्षाई * जय जय ध्वनि आकाश समाई ॥
सुवर्ण कमल राम बैठारे * बोलो सुर मुख जै जै कारे
करी देशना केवलज्ञानी * अमी समान सुमाइ वानी ॥
सीतेन्द्र कहे राम सुजाना * लक्ष्मण कहाँ गये भगवाना ।
बोले सुन कर के श्रम रामा * लक्ष्मण गये अजना धामा ॥

दोहा

सो पावे आहार यम * तो लेना स्वीकार ।
आबादी में अब नहीं * आना है दरकार ॥ ७१२ ॥

चौपाई

परम अभिग्रह करके रामा * ध्यान मग्न हुये अभिरामा ।
एक बार प्रतिनन्दी राया * हो असवार विपिन में आया ॥
मग्न पुण्य सरोवर तट पै * ठहरी सेना आँचे घट पै ।
राम ध्यान पार के धाये * नृप के शिविर बीच मुनि आये ॥
प्रतिनन्दी लख मन हुलाया * सादर नीर अहार कराया ।
नभ से पुष्प वृष्टि भई भारी * देख प्रसन्न चित्त अधिकारी ॥
रामोपदेश दिया सुखकारा * नृप श्रावक वाहरव्रत धारा ।
वन राम तप करते अति भारे * वृषी देव सेवा करें सारे ॥

दोहा

तप कर वन रहने लगे * मुनिवर राम सुजान ।
एक मास द्विमास त्रिय * मास चतुर्मास ॥ ७१३ ॥

चौपाई

कभी राम करें पर्यंकासन * कभी भुजा लम्बी कर वासन ।
कठिन तपस्या राम सुजाना * तप करते आसन विधि नाना ॥
गिर पर कोट शिला शुभ नामा * विचर राम पहुँचे उस धामा ।
एक शिला पर ध्यान लगाया * शुक्ल ध्यान रघुवर मन भाया ॥
सीतेन्द्र दिया अवधी ज्ञाना * लपक ध्यानी राम सुजाना ।
सुरपति राम निकट जब आया * वन में आ ऋतुराज खिलाया ॥
कोकिल करें किलोल सु भारी * मलियानिल बहती अति प्यारी ।
पुष्प सुगंधित गंध बहाया * मानो पंच मांग ही छाया ॥

दोहा

आयु था पन्द्रह सहस * वर्ष राम पर्यन्त ।
जन्म जरा के दुख का * कर दीना सब अन्त ॥७६८॥

चौपाई

पाया राम परम गति ठामा * श्रद्धा सहित करूं प्रणामा ।
श्रवण करी श्रेणिक हर्षाया * नमस्कार कर स्थान सिधाया ॥
विजय दशहरा मंगलकारा * आनंद घर घर हुआ अपारा ।
पद्म अनल निधि रवि शुभ जाना * दूसर चरण शरद का माना ॥
गुरुवर हीरालाल महात्मा * सरल स्वभावी सुगढ़ सुजाना ।
करुणा दृष्टि उन्हों की भारी * कहाँ तक महिमा करूँ तिहारी ॥
पण्डित परम परम विद्वाना * कवियर महा न मन अभिमाना
'चौथमल' जिन चरन कमल का * सेवक है पद विमल अमल का ॥

दोहा

आदर्श रामायण तहीं * पढ़ें पढ़ावें कोय ।
मन वांछित आशा फलै * आनंद मंगल होय ॥७६६॥

* समाप्तम् *

दोहा

दोनों ही पुन विदेह मे ❁ नृप सुनन्द के आय।
नाम सुदर्श जिन दास पुन ❁ दोनों हो सुखदाय ॥७१६॥

चौपाई

जिन भगवान को वह ध्यायेंगे ❁ सौधर्म देवलोक जायेंगे।
वहाँ से चव श्रावक व्रत धारे ❁ राज भोग छुटे स्वर्ग पधारे॥
तू चव चक्रवर्ती पद पाये ❁ दोनों तेरे पुत्र कहायें।
तू मर जाये अनुत्र विमाना ❁ रावण तीन सुभव प्रमाना॥
गात तीर्थंकर का पावेगा ❁ तू चव कर के पुन आवेगा।
तू गणधर का पद पावेगा ❁ तप कर मोक्ष धाम जावेगा॥
लक्ष्मण अनुक्रम से भव कर के ❁ पुष्कर वर पैदा हो मर के।
चक्रवर्ती के पद को पावे ❁ पुन तीर्थंकर गोत्र उपावे॥

दोहा

सीताजी के जीव ने ❁ सुन सारा अहवाल।
धाया मन चढ़ाय कर ❁ लक्ष्मण तट तत्काल ॥७१७॥

चौपाई

लक्ष्मण को आ के समझाया ❁ पूर्वभव सब आन सुनाया।
फिर लक्ष्मण को हाथ उठाया ❁ देवलोक को लेकर धाया॥
पारे सम चय खिरा शरीरा ❁ पहिले स भयो शेष अधीरा।
सीतेन्द्र ने पुनः उठाया ❁ खिर खिर गिरा हाथ नहिं आया
लखन कहे निज धाम पधारा ❁ जगत जीव भुगतें कृत सारे।
सुन कर सीतेन्द्र पुन धाये ❁ भीरपुर के मनसुप आये॥
राम देव कुरु में सुर आया ❁ भामण्डल से मिल कर धाया
पच्चीस वर्ष सु केवल नामा ❁ पाल राम पुन भये निर्वाना॥

भगवान् महावीर का आदर्श जीवन

लेखक-जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता
पं० मुनि श्री चौथमलजी महाराज

इस पुस्तक में भगवान महावीर का आद्योपान्त जीवन चरित्र है। यह पुस्तक सच्ची ऐतिहासिक घटनाओं का भण्डार है। वैराग्य रस का जीता जागता आदर्श है। राष्ट्र नीति और धर्म नीति का अपूर्व समिश्रण इस पुस्तक में, है। एक बार मंगा कर अवश्य पढ़िये। बड़ी साइज के लगभग ६०० पृष्ठों के सुनहरी जिल्दवाले दलदार ग्रन्थ की कीमत केवल २॥ रु० मात्र।

निर्ग्रन्थ प्रवचन

संग्राहक और अनुवादक
जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता पं० मुनि श्री चौथमलजी म०

बत्तीस सूत्रों में से खोज-खोज कर गृहस्थ धर्म, मुनि धर्म, आत्मशुद्धि, ब्रह्मचर्य, लेश्या, षद् द्रव्य, धर्म, अधर्म, नर्क, स्वर्ग आदि अठारह विषयों पर गाथायें संग्रह की गई हैं। प्रत्येक विषय के लिये एक-एक अध्याय है। प्रत्येक अध्याय में मूल गाथा उसका अन्वयार्थ और भावार्थ दिया गया है। इस पुस्तक के अलग अलग भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं।

१-संस्कृत छाया सहित सजिल्द ॥) २-पद्यानुवाद (हरिगीत छंदों में)।=) ३-मूल-भावार्थ।=) ४ अंग्रेजी अनुवाद॥)

पता-श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम